श्री अन्तकृद्दशांग-सूत्रम्

[पीयूषधारा टीका सहित]

श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार
संचालक
श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर

अनुवादक—
श्री जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य
साहित्यप्रेमी पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

प्रकाशक —
सेठ भिक्खामल छोटेलाल फर्म के मालिक सेठ रतनलाल मित्तल, लोहामण्डी आगरा

प्रथमावृत्ति १०००] मूल्य बारह आने [वीराब्द २४६३ विक्रमाब्द १९९३

निवेदन

भगवान् महावीर स्वामी के मुखारविन्द से भाषित अङ्ग शास्त्रों में यह आठवाँ अङ्ग अन्तकृत सूत्र भी है जिस में आठ वर्ग हैं। वर्षभर में कम से कम एक बार तो इस आद्योपान्त पढ़लेना प्रत्येक जैनियों का परम कर्तव्य है। इस में उन महापुरुषों का उल्लेख है जिन्हों ने सम्पूर्ण कर्मों का अन्त कर मुक्ति प्राप्त की है। इन्हीं महापुरुषों के आदर्शों का अनुकरण करने के लिए इसे आठ दिनों में पढ़लेना परमावश्यक है। मुनि महाराज भी प्रायः इस को पर्यूषण पर्व के आठ दिनों में प्रत्येक चातुर्मास में पढ़ते हैं। परन्तु शुद्ध मूल पाठ और उस का भावार्थ शुद्ध हिन्दी में छपा हुआ ही पर्याप्त नहीं था। इसी लिए प्रातःस्मरणीय पूज्यवर श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के पाटानुपाट शास्त्र विशारद बालब्रह्मचारी पूज्यवर श्री मन्नालालजी महाराज के पट्टाधिकारी शास्त्रज्ञ धैर्यवान् पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज के सम्प्रदायानुयायी जगद्वल्लभ जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य साहित्य प्रेमी गणीवर्य पण्डित मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज ने मूल अन्त कृत सूत्र को संशोधन कर उस का सरल सुबोध गम्य हिन्दी में भावार्थ लिखा है। जिसको मैंने लोकोपयोगी समझ कर अपने निजी खर्च से प्रकाशित कराया है और श्री वीर वाचनालय लोहामण्डी आगरा को भेंट किया है। इस की आमद श्री वाचनालय की उन्नति में सहायक हो। इसे पढ़कर आप अपना आत्मिक लाभ उठावेंगे, इसी में मैं अपना सौभाग्य समझूँगा।

लोहामण्डी, आगरा

प्रथम भाद्रव पर्यूषण पर्वाधिराज संवत् १९९३

आपका

रतनलाल जैन मित्तल

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति, रतलाम

जन्म दाता

श्रीमान् जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनि श्री चौथमलजी महाराज

स्तम्भ

श्रीमान् दानवीर राय बहादुर सेठ कुन्दनमलजी लालचन्दजी सा०	ब्यावर
,, सेठ नेमीचन्दजी सरदारमलजी सा०	नागपुर
,, ,, सरूपचन्दजी भागचन्दजी सा०	कलमसरा
,, ,, पुनमचन्दजी खुबीलालजी सा०	न्यायडोंगरी
,, ,, बहादुरमलजी सूरजमलजी सा०	यादगिरी
,, ,, लक्ष्मलजी सौभागमलजी सा०	आगरा

संरक्षक

,, ,, प्रेमलजी लालचन्दजी सा०	गुलेदगढ़
,, ,, लाला रतनलालजी सा० मित्तल	आगरा

श्रीमान् सेठ उदेचन्दजी छोटमलजी सा० मूथा	उज्जैन
,, ,, छोटेलालजी जेठमलजी सा० कनेरा	(मेवाड़)
,, ,, मोतीलालजी सा० जैन वैद्य	मांगरोल
,, ,, सूरजमलजी साहब	भवानीगंज
,, वकील रतनलालजी सा० सर्राफ	उदयपुर
,, ,, कालूरामजी सा० कोठारी	ब्यावर
,, ,, कुन्दनमलजी सरूपचन्दजी सा०	ब्यावर
,, , देवराजजी सा० सुराना	ब्यावर
,, ,, माधूलालजी छगनलालजी सा० दूगड़	मल्हारगढ़
,, ,, ताराचन्दजी शाहजी पुनमिया	सादड़ी
श्री महावीर जैन नवयुवक मंडल,	चित्तौड़गढ़
श्री श्वे० स्था० श्रीसंघ, बड़ी सादड़ी	(मेवाड़)

श्रीमती पिस्ताबाई, लोहामन्डी	आगरा
,, राजीबाई, परोरा	सी० पी०
,, मनारबाई, लोहामंडी	आगरा
चन्द्रप्रतिबाई	सब्जी मंडी, देहली
श्रीमान् मोहनलालजी सा० वकील	उदयपुर
श्रीमान् सेठ मिश्रीलालजी नाथूलालजी सा० बाफणा	कोटा
,, ,, लक्ष्मीचन्दजी सन्तोकचन्दजी सा०	मु० मुरार
,, ,, चम्पालालजी सा० भलीभार	ब्यावर
,, ,, नमीचन्दजी शीकरचन्दजी सा०	शिवपुरी
,, ,, फूलचन्दजी सा० जैन	कानपुर

श्रीमान् सेठ इन्द्रमलजी जैन	हाथरस

मेम्बर

श्रीमान् मन्नालालजी चाँदमलजी	ताल
,, पन्नालालजी हरकचन्दजी	नसीराबाद
,, गणेशीलालजी चपर	सिवना मालवा
,, सुरजमलजी जैन वैद्य	माँगरोल
,, उम्मेदमलजी भँवरलालजी वैद्य	माँगरोल
,, बालीलालजी श्रीनारायनजी सा०	पेतेड़
,, सेठ रामचन्द्रजी सा० पल्लीवाल जैन	गंगापुर सिटी

चित्र सिर्फ परिचय के लिये

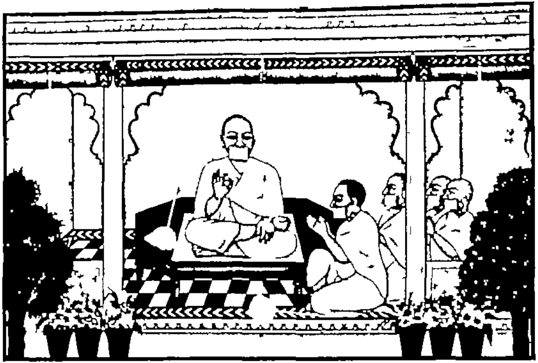

श्रीमान् सुधर्मस्वामीजी श्री जम्बूस्वामी को उपदेश फरमा रहे हैं।

श्री अन्तकृद्दशाङ्ग-सूत्रम् ।

(पीयूषधारा टीका सहित)

प्रथम-वर्ग

मूलः—तेण कालेण तेण समएण चपा णाम नयरी होत्था, वगणत्रो । तत्थ ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसी भाए एत्यण पुगणभद्दे णाम चेइए होत्था । वणसडे वगणत्रो । तीसेण चपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था । महया हिमवत वगणत्रो । तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मे थेरे जाव पचहिं अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चर-माणे गामानुगाम वइज्जमाणे सुह सुहेण विहरमाणे जेणेव चपाए नयरीए जेणेव पुगणभद्दे चेइए तेणेव समोसरिए । परिसया निग्गया जाव परिसया पडिगया । तेण कालेण तेण

समएण अज्जसुहम्मस्स अतेवासी अज्ज जबू जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण जाव सपत्तेण सत्तमस्स अगस्स उवासगदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स ण भन्ते ! अगस्स अतगडदसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

भावार्थ —पञ्चम आरे के प्रारम्भ में, श्री भगवान् महावीर स्वामी के प्रथम पट्टाधीश, सुधर्मस्वामी के समय में, 'चम्पा' नामक एक नगरी थी, जो बड़ी सुन्दर और मनोहर थी। इसकी सुन्दरता का सविस्तर वर्णन, यदि कोई पाठक चाहें तो औपपातिक सूत्र में, अवलोकन करें। इस नगरी के उत्तर और पूर्व दिशा के मध्यस्थ ठीक ईशान्य कोण में, 'पूर्णभद्र' नामक एक मनोहर उपवन, विविध प्रकार के वृक्षों से सुशोभित था। उस 'चम्पा' नगरी में, उस समय 'कोणिक' नामक एक राजा राज करते थे। ये अपने समय के एक बहुत ही बड़े राजा थे। अपने राज-कार्य का सञ्चालन वे न्याय, नियम और नीति के अनुसार करते थ। उसी समय, स्थविर आर्य, श्री सुधर्म स्वामी, अपने पाँच सौ [1]शिष्यों के परिवार के साथ, नियमानुसार एक ग्राम से दूसरे ग्राम में, सुख पूर्वक

[1]— 'पाँच सौ शिष्यों के साथ' का अभिप्राय यह है कि उस समय उनके आधिकार में ५०० शिष्य थे। अर्थात् ५०० शिष्य श्री सुधर्म स्वामी की आज्ञा से विचरते थे। इसका अर्थ यह नहीं है कि ५०० शिष्य हर समय उनके साथ रहते थे।

विहार करते हुए, उसी पूर्व वर्णित ' चम्पा ' नगरी के ' पूर्णभद्र ' उद्यान में पधारे।

श्री सुधर्म स्वामी के पदार्पण का शुभ सन्देश पाकर, नगर निवासी लोग स्वामीजी की अमृतमयी वाणी श्रवण करने के लिए उपस्थित होने लगे। स्वामीजी ने धर्म की खूब ही विवेचना की, जिसे सुनकर श्रोता समाज मुग्ध हो गया। व्याख्यान के समाप्त हो जाने के पश्चात्, जनता पुनः लौट कर शहर में आई।

उसी समय, आर्य श्री सुधर्मस्वामी के शिष्य श्री जम्बू स्वामी ने अपने गुरु की सेवा में विनयपूर्वक कहा, " भगवन् ! धर्म का उत्थान करनेवाले श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने, जो मुक्ति में पधार गये हैं, उन्होंने सातवें अङ्ग उपासकदशाङ्ग का, जो भाव फर्माया है वह तो मैंने आपके श्री-मुख से श्रवण किया, किन्तु आठवाँ अङ्ग जो ' अन्तगड दशा ' है, उसका क्या तात्पर्य है ? अर्थात् उसमें किन-किन बातों का वर्णन है, यह कृपा करके फर्मावें। "

मूलः—एव खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अन्तगड़दसाण अट्ठ वग्गा पण्णत्ता। जइण भंते समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अट्ठ वग्गा पण्णत्ता, पढ़मस्स ण भंते! वग्गस्स अतगडदसाण समणेण जाव सपत्तेण कइइ अज्झ-

यणा पगणत्ता ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पगणत्ता, त-जहा—गोयम समुद्द सागर, गभीरे चेव होइ थिमिते य। अयले कापिल्ले खलु, अक्खोभ पसेणती विग्हू ॥ १ ॥

भावार्थ—हे जम्बू ! भगवान् महावीर स्वामी ने श्री अन्तगढ सूत्र के आठ वर्ग फ़र्माये हैं। तब जम्बू स्वामी ने विनय पूर्वक पूछा, कि 'हे स्वामी ! कृपा कर यह फर्मावें कि प्रथम वर्ग के कितने अध्याय फर्माये हैं ?' तब श्री सुधर्म स्वामी ने फ़र्माया, कि हे जम्बू ! भगवान् महावीर स्वामी ने प्रथम वर्ग के दस अध्याय फ़र्माये हैं। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं —

(१) गौतम (२) समुद्र (३) सागर (४) गम्भीर (५) स्थिमित (६) अचल (७) काम्पिल्य (८) अक्षोभ (९) प्रसेन और (१०) विष्णुकुमार।

मूल.—जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पगणत्ता त जहा गोयम जाव विग्हू। पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स अतगडदसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पगणत्ते ? एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण

समएणं वारवईणाम नयरी होत्था, दुवालस-जोयणायामा णवजोयण वित्थिण्णा धणवइ मइनिम्माया चामीकरपागारा नाणामणिपचवण्णकविसीसगपरिमंडिया सुरम्मा अलकापुरि सकासा पमुदिय पक्कीलिया पच्चक्ख देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

भावार्थ –हे भगवन् ! श्री महावीर स्वामी ने प्रथम वर्ग के गौतम, विष्णु आदि नामवाले, जो ये दस अध्याय फर्माये हैं, इन में से प्रथम अध्ययन में क्या भाव फर्माया ? कृपा करके कहिए ।

" जम्बू ! चौथे आरे में, अरहा अरिष्टनेमि भगवान् के समय में, द्वारिका नामक एक सुन्दर नगरी थी, जिस की लम्बाई बारह योजन और चौड़ाई नौ योजन थी । उस नगरी की रचना कुबेर देव ने की थी। उस का प्राम-कोट (परकोटा) स्वर्ण का बना हुआ था । और उसके उपर पञ्च प्रकार के रत्नों द्वारा जड़ित कङ्गूरे शोभायमान थे । वह द्वारिका नगरी कुबेर की नगरी के समान देदीप्यमान थी । देवलोक के समान दर्शकों के चित्त को आकर्षित करनेवाली तथा परम सुन्दर दर्शनीय नगरी थी । दर्शकों का प्रतिबिम्ब उस नगरी में पड़ता था । और, नगरी का प्रतिबिम्ब, निकटस्थ जलाशय में । इस लिए वह द्वारिका नगरी वास्तव में अपने नाम 'द्वारिका' को सोलह आना सिद्ध कर रही थी ।

मूलः—तीसेण वारवईणयरीए वाहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं रेवयए नाम पव्वए होत्था, वण्णओ। तत्थ ण रेवयए पव्वए नदणवणे नाम उज्जाण होत्था, वण्णओ, सुरप्पिए णाम जक्खायतणे होत्था, पोराणे, से ण एगेण वणसडेण परिक्खित्ते, असोगवर-पायवे। तत्थण वारवईणयरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया परिवसइ। महया रायवण्णओ। से ण तत्थ समुद्दवि जयपामोक्खाण दसण्हं दसाराण, वलदेवपामोक्खाण पचण्ह महावीराण, पज्जुण्णपामोक्खाण अद्धट्ठाण कुमारकोडीण, सवपामोक्खाण सट्ठीए दुद्दतसाहस्सीण, महसेण पामोक्खाण छप्पण्णाए वलवग्गसाहस्सीण, वीरसेणपामोक्खाण एगवीसाए वीर साहस्सीण उग्गसेण पामोक्खाण सोलसण्ह राय साहस्सीण, रुप्पिणिपामोक्खाण सोलसण्ह देवि-साहस्सीण, अणगसेणपामोक्खाणं अणेगाण गणियासाहस्सीण, अण्णेसिं च वहूण ईसर जाव सत्थवाहाण वारवईए नयरीए अद्ध भरहस्स य सीमतयाय समत्थस्स आहेवच्च जाव विहरइ।

भावार्थ -उस द्वारिका नगरी के ईशान्य कोण की ओर, 'रैवत' नामक एक पर्वत था। और उस पर्वत पर 'नन्दन वन' नामक एक उपवन। उस उपवन में, 'सुरप्रिय' नामक एक यक्ष का बड़ा ही प्राचीन स्थान था। उस स्थान के चहुँ ओर एक विशाल वन-खण्ड था। जिसमें अनेक अशोक वृक्षों की अपूर्व छटा लहरा रही थी। उस समय उस द्वारिका नगरी में, श्री वासुदेव 'कृष्ण' राजा राज करते थे। वे तीन खण्ड के सम्राट् थे। वहाँ समुद्र विजय, आदि परस्पर एक दूसरे की समता रखनेवाले दस राजा और भी थे। बलदेवजी, आदि पाँच महावीर पुरुष थे। प्रद्युम्न, आदि-साढे तीन करोड़ कुमार थे। महासेन, आदि छप्पन हजार साहसिक योद्धा पुरुष थे। वीरसेन, आदि इकीस हजार वीर पुरुष थे। उग्रसेन, आदि सोलह हजार माण्डलीक राजा थे। रुक्मणि, आदि सोलह हजार कृष्ण महाराज की रानियाँ थीं। नृत्य-कला में प्रवीण अनगसेना, आदि वेश्याएँ थीं। और भी अनेक धनाढ्य, सेठ, साहूकारादि लोग वहाँ निवास करते थे। ऐसी महान् समृद्धिशाली द्वारिका नगरी में, श्री कृष्ण महाराज अर्द्ध भरत में वैताढ्य गिरि पर्यन्त, अर्थात् तीन खण्ड में राज करते थे।

मूलः-तत्थण वारवईए नयरीए अंधगवरहीणाम राया परिवसइ महया हिमवंत, वण्णयो। तस्सण अंधगवण्हिस्स रण्णोधारिणी नाम देवी होत्था, वण्णओ। तत्तेण सा-धारिणी देवी अण्णया कयाइ तांसि तारिसगांसि सयणिज्जांसि एव जहा महब्बले। सुमिणद-

सण कहणा, जम्म वालत्तण, कलाओ य । जोवणपाणि गाहण, कता पासाय भोगाय ॥१॥ एवर गोयमो नामेण अट्ठरह रायवर कन्नाण एग दिवसेण पाणि गेण्हावेति अट्ठओ दाओ।

भावार्थ—उस द्वारिका नगरी में, अन्धक-विष्णु नामक एक बड़े जागीरदार राजा राज करते थे । उस राजा के 'धारिणी' नामक एक रानी थी । यह रानी एक दिन शयनागार में सो रही थी । पिछली रात्रि में एक शुभ स्वप्न उसे आया । तदनुसार, पूरे नौ मास और दस दिन बीत जाने पर, एक बालक-रत्न का जन्म उसकी कोख से हुआ। बालक का जन्म, बाल्य-काल, शिक्षा-प्राप्ति आदि का वर्णन, पाठकवृन्द महाबल की तरह समझ लें । विशेष केवल इतना ही है, कि उन का नाम गौतम कुमार रक्खा गया । जब वे तरुण हुए, उनका विवाह आठ कन्याओं के साथ कर दिया गया । वधु-पक्ष की ओर से आठ करोड़ का दहेज उन्हें मिला ।

मूल.—तेण कालेण तेण समए ण अरहा अरिट्ठनेमी आइगरे जाव विहरइ, चउव्विहा देवा आगया, कण्हे विणिग्गए । ततेण तस्स गोयमस्स कुमारस्स जहा मेहे तहा णिग्गए, धम्म सोच्चा णिसम्म ज नवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आ पुच्छामी देवाणुप्पियाण अतिए पव्वयामि, एव जहा मेहे जाव अणगारे जाए इरियासमिए जाव इणमेव निग्गथ पावयण

पुरश्रो काश्रो विहरइ। ततेण से गोयमे श्रणगारे श्रणणया कयाइ अरहश्रो अरिट्ठनेमिस्स तहा रूवाण थेराण श्रतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस्स अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहुहिं चउत्थ जाव श्रप्पाण भावे माणे विहरइ। तएण अरिहा अरिट्ठनेमी श्रणणया कयाइ बारवईश्रो नयरीश्रो नदणवणाश्रो उज्जाणाश्रो पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमइ त्ता बहिया जणवय विहार विहरइ।

भावार्थ—उस समय एक बार अरहा अरिष्टनेमि भगवान् ने गाँव-गाँव विचरण करते हुए, द्वारिका के बाग में पदार्पण किया। शहर में सूचना होते ही, वहाँ की जनता भगवान् के दर्शनार्थ बरसाती नदी की भाँति उमड़ पड़ी। भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी, और वैमानिक देव भी उनके दर्शन को आए। सम्राट् श्री कृष्ण महाराज भी पधारे। गौतम कुमार को सूचना मिलने पर वे भी दर्शनार्थ गये। भगवान् का प्रवचन सुन कर, वहीं उन्हें वैराग्य प्राप्त हो गया। तब वे भगवान् से बोले-"प्रभो! मैं अपने माता-पिता से पूछ कर, आप से दीक्षा ग्रहण करूँगा।" ऐसा कह कर कुमार बड़े ही हर्ष के साथ घर पर आये। माता-पिता से आज्ञा उन्होंने माँगी। माता-पिता ने कुमार को बहुत-कुछ समझाया; परन्तु उन्होंने किसी की भी एक बात न मानी, अन्त में बड़े ही समारोह से, मेघ कुमार की भाँति उनकी भी दीक्षा हो गई। अब कुमार साधु बन कर ईर्या समिति, आदि पाँच समिति, तीन गुप्ति, एव निर्ग्रंथों के प्रवचनों को आगे

रख कर विचरने लगे।

उन गौतम अणगार ने अल्प समय में ही अरहा अरिष्टनेमि भगवान् व स्थविर मुनियों से, सामायिक से लगा कर ग्यारह अंग पर्यंत ज्ञान सम्पादन कर लिया। साथ ही साथ,उपवास से लगा कर,अनेकों भाँति,की तपश्चर्या करते हुए आत्मानन्द में लीन वे रहने लगे। भगवान् अरिष्टनेमि एक दिन उस द्वारिका के 'नन्दनवन' से विहार कर, देश-विदेश के भव्य जीवों को उपदेश देते हुए मुक्ति का पथ उन्हें दिखाने के हेतु, अन्यत्र पधार गये।

मूल.—तते ण से गोयमे अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ २ त्ता एव वयासी—इच्छामि ण भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासिय भिक्खु पडिम उवसपज्जित्ताण विहरेत्तए। एव जहा खदओ तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेइ, फासित्ता, गुण रयण पि तवो कम्म तहेव फासेइ निरवसेसं, जहा खदओ तहा चिंतेइ, तहा आपुच्छइ, तहा थेरेहिं सद्धिं सेत्तुजं दुरूहइ, मासियाए सलेहणाए बारस वरिसाइ परिताए १०
जाव सिद्धे।

भावार्थ—एक दिन गौतम अणगार ने भगवान् अरिष्टनेमि के समीप आ कर, उनकी क्रमशः तीन बार प्रदक्षिणा तथा स्तुति की। और विनयपूर्वक वन्दना कर के निवेदन किया—

हे प्रभो! मेरी इच्छा है, कि "मैं 'मासिक-भिक्षु-पडिमा-तप' स्वीकार कर, आप की आज्ञा हो, तो विचरण करूँ।" इस पर भगवान् ने उन्हें फ़र्माया, कि "जिस प्रकार भी तुम्हें सुख हो, वैसा करो।"

फिर गौतम अणगार ने एक पडिमा से बारह भिक्षु की पडिमा पर्यंत, स्वन्दक मुनि की भाँति घोर तप किया। तत्पश्चात् 'गुणरत्न' नामक तपस्या भी उन्होंने की। जिस प्रकार स्वन्दकजी ने संथारा किया था, उसी प्रकार ये भी भगवान् से पूछ कर और स्थविर मुनिवरों को साथ ले, शत्रुञ्जय पहाड़ पर गये। और, वहाँ एक-मास का संथारा कर, अन्तिम समय में, सर्व कर्मों को नष्ट करते हुए मुक्ति में वे पधार गये।

मूलः—एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमवग्गस्स पढमं अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते। एवं जहा गोयमो तहा सेसा वण्हि पिया धारिणी माता समुद्दे, सागरे, गंभीरे, थिमिए, अयले, कंपिल्ले, अक्खोभे, पसेणई विण्हुए एए एगगमा। पढमोवग्गो दस अज्झयणा पण्णत्ता।

भावार्थ—हे जम्बू! भगवान् महावीर स्वामी ने अन्तगड-सूत्र के प्रथम-वर्ग के प्रथम अध्याय में यही

वर्णन किया है । इसी प्रकार उन्होंने दूसरे अध्याय में समुद्र कुमार का, तीसरे में सागर का, चौथे में गम्भीर का, पाँचवें में स्तिमित का, छठे में अचल का, सातवें में काम्पिल्य का, आठवें में अक्षोभ का, नवें में प्रसेन का, और दशवें में विष्णु का वर्णन, किया है। इन सभी की कथा गौतम कुमार की भाँति ही वर्णन की गई है । इन सबों के पिता का नाम 'वृष्णि' और माता का नाम 'धारिणी' था ।

इति प्रथमो-वर्गः ।

द्वितीय-वर्ग

मूल.–जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाण समणेण जाव सपत्तेण कइ अज्झयणा पण्णत्ता ? एव खलु, जंबु ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता । त जहा अक्खोभ, सागरे, खलु समुद्द, हिमवंत, अचल णामे य । धरणे य पूरणे वि य, अभिचंदे चेव अट्ठमए ॥१॥ तेण कालेण तेण समएण बारवईए णयरीए वण्हि पिया धारिणी माया । जहा पढमो वग्गो तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा गुण रयण तवो कम्म सोलसवासाइ परियाओ सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे । एव खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण अमट्ठस्स अंगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

भावार्थः—भगवन् ! श्री अनन्तगढ सूत्र के प्रथम वर्ग में भगवान् महावीर स्वामी ने जो वर्णन किया है, यह
आनन्दपूर्वक आप के श्री मुख से मैंने श्रवण किया । लेकिन, दूसरे वर्ग में कितने अध्याय हैं और उनमें किस
विषय का प्रतिपादन किया गया है, सो कृपा कर के अब फ़र्मावें ।
"हे जम्बू ! भगवान् ने दूसरे-वर्ग-में अक्षोभ,-सागर, समुद्र, हिमवन्त, अचल, धरण, पूरण, और अभिचन्द,
इन-आठ अध्यायों का क्रम-पूर्वक-वर्णन किया है । अतः ध्यान पूर्वक श्रवण करो ।"
श्री अरहा अरिष्टनेमि भगवान् के समय, ' द्वारिका ' में, अन्धक विष्णु नामक एक राजा जागीरदार के रूप
में राज करते थे । उनकी धारिणी नामक एक बड़ी ही आज्ञाकारिणी रानी थी । उनके अक्षोभ सागर, समुद्र,
हिमवन्त, अचल, धरण पूरण और अभिचंद ये आठ पुत्र रत्न थे । इन आठों कुमारों ने भगवान् श्री अरिष्ट नेमि के
सदुपदेश से दीक्षा धारण की । और गुण-रत्न संवत्सर तप, आदि अनेक प्रकार की बड़ी ही घोर तपश्चर्या की । इस
प्रकार सोलह वर्ष पर्यन्त चारित्र-पालन कर कर्मों को क्षय करते हुए वे भी मुक्ति को प्राप्त हुए । जिस प्रकार श्री
गौतम कुमार का वर्णन किया है, उसी प्रकार आठ अध्यायों में इन आठों कुमारों ने भी अपने जीवन को पवित्र
किया । इस प्रकार हे जम्बू ! भगवान् महावीर स्वामी ने अन्तगढ सूत्र के दूसरे वर्ग का वर्णन किया है ।

इति द्वितीयो वर्गः

तृताय-वर्ग

मूलः--जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स अगस्स दोच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पराणत्ते ! तच्चस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पराणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स तच्चस्स वग्गस्स अतगड़दसाण तेरस अज्झयणा पराणत्ता त जहा- अणीयसेण, अणतसेणे, अजियसेण, अणिहयरिउ, देवसेणे, सत्तुसेणे, सारणे, गए, सुमुहे, दुम्मुहे, कूवए, दारुए, अणादिट्ठी। जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स, अतगड़दसाण, तच्चस्स वग्गस्स तेरस अज्झयणा पराणत्ता त जहा अणीयसेण जाव अणादिट्ठी। पढमस्स ण भते अज्झयणस्स अतगड़दसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पराणत्ते।

भावार्थ—हे भगवन्! श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने आठवें अङ्ग के दूसरे वर्ग के आठों अध्यायों में, जिस प्रकार आठ कुमारों की मुक्तावस्था का वर्णन किया है, उसे श्री-मुख से आनन्द पूर्वक मैंने श्रवण कर लिया अब कृपा कर के, तीसरे वर्ग का वर्णन फर्मावें।

हे जम्बू! तीसरे वर्ग में, तेरह-अध्ययन हैं। उन में अणीयसेन, अनन्तसेन, अजितसेन, अनिहत रिपु, देवसेन, शत्रु-सेन, सारण, गज-सुकुमार, सुमुख, दुर्मुख, कूपक, दारुक, और अनादृष्टि इन तेरह कुमारों का वर्णन किया गया है।

भगवन्! इन तेरह अध्यायों में से अब प्रथम अध्याय का क्या तात्पर्य है, सो कृपा कर के फर्मावें।

मूल.—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णामं णयरे होत्था, रिद्धि-थिमिय समिद्धे वण्णओ। तस्स णं भद्दिलपुरस्स नयरस्स बहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए सिरिवणे णामं उज्जाणे होत्था, वण्णओ जियसत्तु राया। तत्थणं भद्दिलपुरे णगरे नागे णामं गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्सणं नागस्स गाहावइस्स सुलसा णामं भारिया होत्था, सुकुमाला जाव सुरूवा। तस्सणं नागस्स गाहावइस्स [illegible] सुलसाए भारि-

याए अत्तए अणीयसेणणाम कुमारे होत्था । सुकुमाले जाव सुरवे पच धाइ परिक्खित्त । त जहा-खीर धाई जहा दढपइन्ने जाव गिरिकंदर मल्लीणेव चपगवरपायवे सुह सुहेण परिवड्ढइ।

भावार्थ –हे जम्बू ! अरहा अरिष्टनेमि भगवान् के समय,भद्दिलपुर-नामक एक नगर अपनी अटूट सम्पत्ति की गुण-गरिमा से सुशोभित था । नगर से कुछ ही दूर पर, ईशान्य दिशा में, अपने नाम को यथार्थ रूप से चरितार्थ करने वाला, समस्त उपवनों की जीवित श्री की भाँति ' श्रीवन ' नामक एक अति ही सुन्दर और सुरम्य उद्यान था । उस समय भद्दिलपुर में राजा जित शत्रु राज करते थे । उसी नगर में 'नाग' नामक-एक महान् समृद्धिशाली गाथापति निवास करता था । वह भी अटूट लक्ष्मी का स्वामी था और, उसके ' सुलसा ' नामक एक बड़ी ही सुकुमार परम सुन्दरी धर्मपत्नि थी । उस ' नाग ' नामक गाथापति के पुत्र अनीयसेन का, पाँच प्रकार की धायों ने दृढ प्रतिज्ञ (दढपइन्ने)की भाँति आधि व्याधियों से रक्षा करते हुए,जिस प्रकार पर्वत की उन्नत गुफाओं में चम्पक वृक्ष सुरक्षित रह कर हरा-भरा होता है, ठीक उसी प्रकार, उस पुत्र का लालन-पालन किया था ।

मूलः—ततेण त अणीयसं कुमार साइरेग अट्ठवासजाय अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाए यावि होत्था । ततेण त अणीयस कुमार उम्मुक बालभाव जाणेत्ता अम्मापियरो सरिसियाण सरिसव्वयाण सरिस लावण्णरूवजोवणगुणोववेयाण सरिसेहिं तो कुलेहिं

तो आणिक्षियाए बत्तीसाए इब्भवरकण्णगाए एगदिवसे पाणिं गेण्हावेइ।

भावार्थः-उस अणीयसेन नामक कुमार को आठ वर्ष की अवस्था के पश्चात् एक कलाकोविद के द्वारा योग्य विद्याध्ययन कराया गया। कुमार बहत्तर कलाओं में निष्णात हो गया। यौवनावस्था प्राप्त होने पर माता पिता ने उसका विवाह, एक बड़े ही श्रेष्ठ कुल के, बत्तीस अर्व-पति सेठ की, कुमार के समान अवस्था, चतुराई, रूप और गुणों में निपुण, ऐसी बत्तीस कन्याओं के साथ कर दिया।

मूलः-ततेण से नागे गाहावई अणीयस्स कुमारस्स इम एयारूवा पीतिदाण दलयइ त जहा-बत्तीस हिरण्णकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोग भोगाइ भुजमाणे विहरइ। तेण कालेण तेण समए ण अरहा अरिट्ठनेमी जाव समासढे सिरिवणे उज्जाणे अहापडिरूव उग्गह जाव विहरइ, परिस्सा णिग्गया। ततेण तस्स अणीयसस्स कुमारस्स महया जणसद्द जहा गोयमे तहा नवर सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ वीस वासाइ परियाओ सेस तहेव जाव सेत्तुजे पव्वए मासियाए सलेहणाए जाव सिद्धे। एव खलु जबू! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण तच्चस्स

वग्गस्स पढ़म अज्झयणस्स अयमट्ठे पएणत्ते।

भावार्थ - विवाह में, प्रत्येक वधु पक्ष की ओर से एक एक करोड़ सोनैये दहेज के रूप में प्राप्त हुए। इसका परिवार धन महाबल के चरित्र से जाना जा सकता है। अणीयसेन कुमार भी विवाह के पश्चात्, अपने विशाल राज-प्रासाद में, अनेक भाँति की अठखेलियाँ करते हुए, मृदङ्ग की ध्वनि से मस्त बन, अपने जीवन को आमोद-प्रमोद में व्यतीत करने लगे। जीवन के इसी स्वच्छन्द समय में, श्री अरहा-अरिष्टनेमि प्रभु उस नगरी के 'श्रीवन' नामक उद्यान में पधारे। जन संख्या दर्शनों के लिए उमड़ पड़ी, यह दृश्य देख कर, अणीयसेन कुमार भी महाबल की तरह भगवान् के दर्शनार्थ 'श्रीवन' उद्यान में उपस्थित हुए। प्रभु के दर्शन कर, उन्होंने उपदेश श्रवण किया। और, गौतम कुमार की भाँति ही, उन्होंने भी दीक्षा धारण कर ली। स्वल्प काल में ही, सामायिक आदि चौदह पूर्व का ज्ञान सम्पादन उन्होंने किया। बीस वर्ष तक चारित्र-पाल कर अन्तिम समय में, एक मास का संथारा करते हुए उन्होंने भी मोक्ष पद को प्राप्त किया। हे जम्बू ! भगवान् ने श्री अन्तगढ सूत्र के तीसरे वर्ग के प्रथम अध्याय में यही वर्णन किया है।

मूलः—एव जहा अणीयसे एव सेसा वि अणतसेणो अजियसेणो अणिहयरिओ देवसेणे सत्तुसेणे छ अज्झयणा एक्कगमा, वत्तीसाओ दाओ, वीसवासा परियाओ, चोद्दस पुव्वाइ

संठाणपरिणयावि, आयतसंठाणपरिणयावि ॥ जेरसओ कडुअरसपरिणया, ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि, फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ-परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्ट-संठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरंस संठाण परिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे रसओ कसाय रस परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि सुक्किल-वण्ण परिणयावि, ॥ गंधओ-सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ फासओ—कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि, उसिणफास

सूत्र

परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफासपरिणयात्रि, णिद्धफासपरिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि ॥ सठाणओ परिमडल सठाण परिणयात्रि, वट्टसठाण परिणयात्रि, तससठाण परिणयात्रि, चउरससठाण परिणयात्रि, आयतसठाण परिणयात्रि ॥ से रसओ तित्तरस परिणया ते वण्णओ-कालवण्ण परिणयात्रि, नीलवण्ण परिणयात्रि, लोहिअवण्ण परिणयात्रि, हालिद्दवण्ण परिणयात्रि, सुक्किलवण्ण परिणयात्रि, ॥ गधओ-सुब्भिगध परिणयात्रि, दुब्भिगध परिणयात्रि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयात्रि, मउअफास परिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुअफास परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफास परिणयात्रि, णिद्धफास परिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि,॥ सठाणओ परिमडलसठाण परिणयात्रि, वट्टसठाण परिणयात्रि, तससठाण परिणयात्रि चउरं

अर्थ

हुए जैसे तिक्त रसके २० भेद हुए वैसे ही कटुक, कषाय, अम्बट व मधुर के भी बीस २ भेद कहना सब मीलाकर पांच वर्ण के १०० भेद हुए. अब स्पर्श आश्री कहते हैं जो कर्कश स्पर्श वाले हैं वे वर्ण से काला, नीला, लाल, पीला व शुक्ल वर्ण वाले हैं, गंध से सुरभिगंध व दुरभिगंध वाले हैं, रस से तिक्त कटुक कषाय, अम्बट व मधुर रस वाले हैं, स्पर्श से गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष और संस्थान

यात्रि, मउअफासपरिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुअफास परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफास परिणयात्रि, णिद्धफास परिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि ॥ सठाणओ परिमडल सठाणपरिणयात्रि, वट्टसंठाणपरिणयात्रि,तससठाणपरिणयात्रि, चउरससठाण परिणयात्रि, आयतसठाण परिणयात्रि ॥ जफासओ कक्खडफास परिणयात्रि वण्णआ कालवण्णपरिणयात्रि, नीलवण्ण परिणयात्रि, लोहिअवण्ण परिणयात्रि, हालिद्दवण्ण परिणयात्रि सुक्किलवण्णपरिणयात्रि ॥ गधओ सुब्भिगध परिणयात्रि दुब्भिगध परिणयात्रि, ॥ रसओ, तित्तरस परिणयात्रि कडुअरसपरिणयात्रि कसायरस परिणयात्रि, अबिलरस परिणयात्रि, महुररसपरिणयात्रि, फासओ-गरुअफासपरिणयात्रि, लहुअफास परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफास परिणयात्रि णिद्धफास परिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि, ॥ सठाणओ परिमडल सठाण परिणयात्रि, वट्टसठाण परिणयात्रि, तससठाण परिणयात्रि चउरंस सठाण परिणयात्रि, आयत सठाण परिणयात्रि, ॥ जफासओ मउयफास परिणया तेवण्णओ

नेवीस बोल, लघु में भी वैसे ही तेवीस, शीत में तवीस, ऊष्ण में तेवीस, स्निग्ध में तेवीस व रूक्ष में

परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि संठाणओ—परिम ंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरस संठाण परिणयावि, आयत संठाण परिणयावि, ॥ जे रसओ अंबिलरस परिणया ते वण्णआ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि दुब्भिगंध परिणयावि फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि सीअफास परिणयावि, उसिणफासपरिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडलसंठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंससंठाण परिणयावि, चउरससंठाण परिणयावि, आयत संठाण परिणयावि ॥ जेरसओ महुररस परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्णपरिणयावि, सुक्किलवण्णपरिणयावि ॥ गंधओसुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफास परिण-

स्पर्श में पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस छ स्पर्श व पांच संस्थान यों २३ बोल पाते हैं, गुरु में भी स्क

उसिणफास परिणयावि, णिद्ध फास परिणयावि लुक्खफासपरिणयावि, सठाणओ परिमडल सठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि, तससठाण परिणयावि, चउरससठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि ॥ जे फासओ लहुअफास परिणयावि, ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि, गधओ सुब्भिगध परिणयावि, दुब्भिगध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ सठाणओ परिमडलसठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि, तससठाण परिणयावि, चउरससठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि ॥ जे फासओ सीयफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि,

स्थान परिणत परमाणु पुद्गल है वे वर्ण से काले, नीले, पीले, लाल व श्वेत वर्ण परिणत हैं गंध से

कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ गरुअफास परिणयावि, लहुअफास परिणयावि, सीअफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि ॥ संठाणओ परिमंडल संठाण परिणयावि, वट्टसंठाण परिणयावि, तंस संठाण परिणयावि चउरंस संठाणपरिणयावि, आयतसंठाण परिणयावि ॥ जे फासओ गरुअफासपरिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्णपरिणयावि, लोहिअवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि, दुब्भिगंधपरिणयावि रसओ-तित्तरसपरिणयावि कडुयरस परिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि,

वर्तीस यों सब मीलकर अठों स्पर्श के १८४ बोल होते हैं अब संस्थान आश्री कहते हैं जो परिमंडल

परिमडल सठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि, तससठाण परिणयावि, चउरस सठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि॥ जे फासओ णिद्धफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि हालिद्दवण्ण परिणयावि सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गधओ सुब्भिगध परिणयावि दुब्भिगध परिणयावि॥ रसओ तित्तरस परिणयावि कडुयरस परिणयावि कसायरस परिणयावि अबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ-कक्खडफास परिणयावि, मउअफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि लहुयफास परिणयावि सीयफास परिणयावि उसिणफास परिणयावि सठाणओ परिमडलसठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि, तससठाण परिणयावि, चउरससठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि॥ जे फासओ लुक्खफास परिणया स वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिय वण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गधओ-सुब्भिगध परिणयावि, दुब्भिगध परिणयावि, ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस

से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्श परिणत है यों परिमंडल संस्थान में म॰

सुक्किलवण्ण परिणयावि ॥ गधओ-सुब्भिगध परिणयावि दुब्भिगध परिणयावि॥ रसओ तित्तरसपरिणयावि, कडुयरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि, अबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि फासओ-कक्खडफासपरिणयावि, मउअफासपरिणयावि, गरुयफास परिणयावि,लहुयफासपरिणयावि,णिद्धफासपरिणयावि,लुक्खफासपरिणयावि॥ सठाणओ परिमडल सठाण परिणयावि, वट्टसठाण परिणयावि,तससठाण परिणयावि चउरस सठाण परिणयावि, आयतसठाण परिणयावि॥ जे फासओ उसिणफास परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि, लोहिय वण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि॥ गधओ-सुब्भि-गध परिणयावि, दुब्भिगध परिणयावि ॥ रसओ-तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि ॥ फासओ कक्खडफास परिणयावि, मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ सठाणओ

सुरभिगंध दुरभिगंध परिणत हैं, रस से तिक्त कटुक कषाय, अम्बट व मधुर रस परिणम हैं और स्पर्श

नीलवण्ण परिणयावि, लोहियवण्ण परिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्णपरिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, ॥ रसओ-तित्तरसपरिणयावि कडुअरसपरिणयावि, कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणयावि, महुररसपरिणयावि, ॥ फासओ कक्खडफासपरिणयावि,मउअफासपरिणयावि, गरुअफासपरिणयावि, लहुअफासपरिणयावि, सीअफासपरिणयावि उसिणफासपरिणयावि णिद्धफासपरिणयावि लुक्खफासपरिणयावि॥ जे संठाणओ तंससंठाण परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणयावि, नीलवण्ण परिणयावि लोहियवण्णपरिणयावि, हालिद्दवण्ण परिणयावि, सुक्किल्लवण्ण परिणयावि ॥ गंधओ सुब्भिगंध परिणयावि, दुब्भिगंध परिणयावि ॥ रसओ तित्तरस परिणयावि, कडुयरस परिणयावि, कसायरस परिणयावि, अंबिलरस परिणयावि, महुररस परिणयावि फासओ कक्खडफासपरिणयावि,मउयफास परिणयावि, गरुयफास परिणयावि, लहुयफास परिणयावि, सीयफास परिणयावि, उसिणफास परिणयावि, णिद्धफास परिणयावि, लुक्खफास परिणयावि ॥ जे संठाणओ चउरंस

परिणयात्रि, अंबिलरस परिणयात्रि, महुररस परिणयात्रि, ॥ फासओ-कक्खड फास परिणयात्रि, मउयफास परिणयात्रि सियफास परिणयात्रि, उसिण फास परिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुय फास परिणयात्रि, ॥ सठाणओ परिमडल सठाण परिणयात्रि, वट्टसठाण परिणयात्रि, तससठाण परिणयात्रि, चउरस सठाण, परिणयत्रि आयत सठाण परिणयात्रि, ॥ जे सठाणओ परिमडल सठाण परिणया तेवण्णओ कालवण्ण परिणयात्रि नीलवण्ण परिणयात्रि, लोहियवण्ण परिणयात्रि हालिद्दवण्ण परिणयत्रि, सुक्किलवण्ण परिणयात्रि ॥ गधओ सुब्भिगध परिणयात्रि, दुब्भिगध परिणयात्रि, ॥ रसओ तित्तरस परिणयात्रि, कडुयरस परिणयात्रि, कसायरस परिणयात्रि अंबिलरस परिणयात्रि, महुररस परिणयात्रि ॥ फासओ कक्खड फास परिणयात्रि, मउअफास परिणयात्रि, गरुअफास परिणयात्रि, लहुअफास परिणयात्रि, सीअफास परिणयात्रि, उसिणफास परिणयात्रि, णिद्धफास परिणयात्रि, लुक्खफास परिणयात्रि जे सठाणओ वट्टसठाण परिणया ते वण्णओ कालवण्ण परिणयात्रि,

पीलकर २० भांगे होते हैं जैसे परिमंडल का कहा वैसे ही वृत्त, त्र्यस, चौरस व आयात के भी बीस २

णिद्धफास परिणयावि लुक्खफास परिणयावि ॥ सेत्त रूवी अजीव पण्णवणा ॥ ७ ॥ सेकिंत जीव पण्णवणा ? जीव पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा संसार समावण्ण जीव पण्णवणाय, असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय ॥ से किंत असंसार समावण्ण जीव पण्णवणा ? असंसार समावण्ण जीव पण्णवणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा-अणंतरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय, परंपरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणाय ॥ से किंत अणंतरसिद्ध असंसार समावण्ण जीव पण्णवणा? अणंतर

प्रज्ञापना हुवा ॥ ७ ॥ अब जीव प्रज्ञापना का स्वरूप कहते हैं जीव प्रज्ञापना किसे कहते हैं ? जीव प्रज्ञापना के दो भेद कहे हैं संसार समापन्नक जीव व असंसार समापन्नक जीव इन में असंसार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? असंसार समापन्नक जीव प्रज्ञापना के दो भेद कहे १ जिन को सिद्ध हुए एक ही समय हुवा है वे अनंतर असंसार समापन्नक जीव और २ जिनको सिद्ध हुए एकसे विशेष समय हुए हैं वे परंपर असंसार समापन्नक सिद्ध अनंतर सिद्ध असंसार समापन्न जीव किसे कहते हैं ? अनंतर असंसार समापन्न जीव के पन्नरह भेद कहे हैं १ तीर्थ की स्थापना हुए पीछे सिद्ध होवे सो तीर्थ सिद्ध २ तीर्थ स्थापन हुए पहिले सिद्ध होवे सो अतीर्थ सिद्ध, ३ ऋषभादि तीर्थंकर सिद्ध हुवे सो तीर्थंकर सिद्ध ४ सामान्य केवली सिद्ध होवे सो अतीर्थंकर सिद्ध ५ स्वतः अन्य किसी के उपदेश विना प्रतिबोध

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति ॥ असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्तापज्जत्तएसु उववज्जति ॥ मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग असंखेज्जवासाउयवज्जेसु पज्जत्ता पज्जत्तएसु उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कतिगतिया कति आगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुगतिया दुआगइया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ॥ सेत्तं सुहुम पुढविकाइया॥ १३॥ सेकिंत बायर पुढविकाइया? बायर पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्ह बादर पुढविकाइया खरबादर पुढवि काइयां ॥ १॥ सेकिंत सण्ह बादर पुढविकाइया? सण्ह बादर पुढविकाइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा कण्हमट्टिया, भेदो जहा

मनुष्य में ये जीवों नहीं उत्पन्न होते हैं प्रश्न इन जीवों की कितनी गति व आगति है ? उत्तर इन जीवों की दो गति व दो आगति है अर्थात् तिर्यंच व मनुष्य इन दो गति में जाते हैं और इन दोमेंसे ही आते हैं सूक्ष्म पृथ्वीकाया के जीवों प्रत्येक शरीरी असंख्याते कहे हैं यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया का स्वरूप हुवा ॥ १३ ॥ अब बादर पृथ्वी काया का कथन करते हैं प्रश्न बादर पृथ्वीकाया क्या है ? बादर पृथ्वीकाया के दो भेद कहे हैं १ कोमल बादर पृथ्वीकाया और २ कठोर बादर पृथ्वीकाय प्रश्न कोमल बादर पृथ्वीकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-कोमल बादर पृथ्वीकाया के सात भेद कहे हैं काली, हरी

काइया दुविहा पण्णत्ता तजहा पजत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते! जीवाण कति सरीरया पण्णत्ता? गोयमा! तउ सरीरया पण्णत्ता तजहा—ओरालिए तेयए कम्मए॥जहेव सुहुम पुढवि काइयाणं, नवर थिवुग सठिया पण्णत्ता सेस तं चेव जाव दुगतिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता॥सेत्तसुहुम आउक्काइया॥ १ ५॥सेकिं त बायर आउक्काइया? बायर आउक्काइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-उसा हिमे जाव जेयावन्ने तहप्पगारा

सूक्ष्म अपूकाया व बादर अपूकाया उनमें से सूक्ष्म अपूकायाके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन सूक्ष्म अपूकायिक जीवोंको कितने शरीर हैं? उत्तर-इन जीवोंको उदारिक तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर हैं इसका सब कथन सूक्ष्म पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही जानना, परन्तु विशेषता यह कि इस का संस्थान पानी के परपोटे जैसे जानना शेष सब पूर्वोक्त जैसे जानना यावत् दो गति व दो आगति वाले हैं, प्रत्येक शरीर असंख्यात हैं ये सूक्ष्म अपूकाया के भेद हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न-बादर अपूकाय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर बादर अपकाया के ओस, हिम गडे का पानी, आकाश का पानी, नदी आदिका पानी, तलाव का का पानी, खारा पानी, मीठा पानी, शीत, उष्ण पानी वगैरह अनेक प्रकार के पानी के भेद मानना इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त इस का सब कथन बादर पृथ्वी काया जैसे जानना

मरेंति ॥ तेण भंते ! जीवा अणंतरे उव्वट्टिता कहिं गच्छइ कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जति, तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति, मणुस्सेसु उववज्जति, नो देवेसु उववज्जति संचेव जाव असंखेज्ज वासाउयवज्जेहिंतो उववज्जति ॥ तेणं भंते ! जीवा कति गतिया कति आगतिया पण्णत्ता? गोयमा! दुगतियातिआगतिया पण्णत्ता परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो! सेत्त बायर पुढविकाइया सेत्तपुढविकाइया॥ १४॥ सेकिंत आउक्काइया? आउक्काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम आउक्काइया बायर आउक्काइया॥ सुहुम आउ-

प्रश्न—वे जीवों क्या समोहया मरण मरते हैं या असमोहया मरते हैं ? उत्तर—समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं प्रश्न-वे जीवों वहां से नीकलकर कहां जाते हैं उत्पन्न होते हैं ? उत्तर-नरक व देव में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले अकर्मभूमि के मनुष्य छोडकर तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं प्रश्न—उन जीवों की कितनी गति व आगति है ? उन जीवों की मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति और देव मनुष्य व तिर्यंच यों तीन की आगति है बादर पृथ्वीकाया प्रत्येक शरीरी असंख्यात है यह बादर पृथ्वी काया हुई यह पृथ्वी काया का कथन हुआ ॥ १४ ॥ प्रश्न अप्काया किसे कहते हैं ? उत्तर—अप्काया के दो भेद कहे हैं, सूक्ष्म

नर्रं अणित्थत्थ साठिया दुगतिया दुआगतिया, अपरित्ता अणत्ता अवसेस जहा पुढविकाइयाण ॥ सेत सुहुम वणस्सइ काइया ॥ १७ ॥ से किंत बायर वणस्सइ काइया? बादर वणस्सइ काइया दुविहा पन्नत्ता तजहा पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ, साहारण सरीर बायर वणस्सइ काइया॥ से किंत पत्तेय सरीर बायर वणस्सइ काइया? पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइया दुवालसविहा पण्णत्ता तजहा रुक्खा, गुच्छा, गुम्मा, लताय, वल्लीय, पव्वगा चेव तण वलय हरित उसहि जलरूह कुहणाय बोधव्वा ॥ स किंत रुक्खा?

पृथ्वीकाया जैसे जानना विशेषता यह है कि इस का सस्थान अनवस्थित है यावत् इस की दो गति व दो आगति है यह साधारण अनंत काया है. यह सूक्ष्म वनस्पतिकाया का भेद कहा ॥ १७ ॥ प्रश्न बादर वनस्पतिकाया किस को कहते हैं ? उत्तर बादर वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया व साधारण शरीरी बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के बारह भेद कहे हैं तद्यथा १ आम्र प्रमुख वृक्ष, २ रिंगनी प्रमुख गुच्छे, ३ नवमालती प्रमुख गुल्म ४ चम्पकादि लता, ५ खरबूज प्रमुख वल्ली, ६ इक्षु प्रमुख पर्व, ७ तृण ८ केतकी प्रमुख वलय, ९ तांदलजा की भाजी प्रमुख हरितकाय, १० शाली प्रमुख अनाज औषधि, ११ कमल प्रमुख जलवृक्ष और १२ भूमि फोड़ वगैरह

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, तं चेव सव्वं, णवरं थिवुग संठिया, चत्तारि लेसाओ, आहारो णियमाछद्दिसिं उववाओ तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेहिं ॥ ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं सत्तवास सहस्साइं, सेसं तं चेव ॥ जहा बायर पुढवि काइयाणं जाव दुगतिआ तिआगतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो । सेत्तं बायर आउक्काइया ॥ सेत्तं आउक्काइया ॥ १६ ॥ से किंतं वणस्सइ काइया ? वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम वणस्सइ काइया बायर वणस्सइ काइया ॥ से किंतं सुहुम वणस्सइ काइया ? सुहुम वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तहेव

परन्तु इस में इतनी विशेषता है इस का संस्थान पानी के परपोटे जैसे जानना, कृष्ण, नील, कापोत व तेजो ऐसी चार लेश्याओं जानना आहार नियमा छ दिशी का, तिर्यंच मनुष्य व देव में से उत्पन्न होवे, इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की, यावत् इन को दो गति व दो आगति है ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों बादर अप्काय के भेद हुए यह अप्काय का कथन हुआ ॥ १६ ॥ प्रश्न-वनस्पतिकाया किस को कहते हैं ? उत्तर-वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म वनस्पतिकाया व बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-सूक्ष्म वनस्पतिकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-सूक्ष्म वनस्पति के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त

फला बहुबीयका ॥ सेत रुक्खा ॥ एव जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्व जाव जेया वण्णे तहप्पगारा सेत कूहणा ॥ णाणाविह सठाणा रुक्खाण एगजीविया पण्णत्ता खधोवि एगजीवा ताल सरल नालियरीणं जह सगल सरिसवाण पत्तेयसरीराण ॥ गाहा—जह वातिलस कुलिया गाहा-सत्त पत्तेयसरीर बायरवणस्सइ- काइया ॥ सेकित साहारण सरीर बादरवणस्सइकाइया ? साहारण सरीर बायर वणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा आलुए मूलते सिंगबेरे हिरिलि सिरिलि सिस्सिरिलि किट्ठिया छिरिया, छिरविरालिया, कण्हकदा, वज्जकदो, सूरणकदो, खल्लूडो, किमिरासि, भद्दमोत्था,

वृक्ष का अधिकार कहा यह वृक्ष का अधिकार हुवा इस का विशेष खुलासा पन्नवणा सूत्र से जानना यहां कूहणा पर्यंत सब अधिकार कह देना प्रश्न वृक्षमें रहे हुवे जीवोंका संस्थान कैसा कहा? उत्तर वृक्ष में रहे हुवे जीवों का संस्थान अनेक प्रकार का कहा है वृक्ष में एक जीव कहा और स्कंध में भी एक जीव कहा, वैसे वृक्षों ताल, सरल, नालियेरी प्रमुख हैं प्रश्न-वृक्षादिक में पृथक् २ अनेक प्रत्येक शरीरी जीवों कैसे रहे हुवे हैं ? उत्तर-जैसे अनेक सरसव के दाने को गुड में मीलाकर उस का लड्डु बनावे वह लड्डु एक पिंड रूप रहता है इस में सब सारिसव प्रतिपूर्ण रूप से रहे हुए हैं अपनी २ अवगाहना से अलग २ है, ऐसे ही प्रत्येक शरीरी जीवों का समुह है वह अलग २ अपनी २ अवगाहना से रहे हैं ऐसे ही तिलों की बनी हुई तिल पपडी एक ही कहलाती है, परंतु उस में तिल के दाने पृथक् २ रहे हुवे हैं, वैसे ही प्रत्येक

रुक्खा दुविहि पन्नत्ता तंजहा एगट्ठियाय बहुबीयाय से किंत एगट्ठिया? एगट्ठिया अनेक विहापण्णत्ता तंजहा-निंबु जंबु जाव पुन्नाग रूक्खे सीवन्नि तहा असोगेय, जेयावन्ने तहप्पगारा एतेसिणं मूलावि असंखेज्ज जीविया एवं कंदा खंधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेय जीवा, पुप्फाइ अणेगजीवाइ फला एगट्ठिया सेत्त एगट्ठिया॥ सेकिंत बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा अत्थिय तिंदुय उंबर कविट्ठे आमलक फणस दाडिम नग्गोह काउं बरीय तिलय लउय लोद्धेधते जेयावन्ने तहप्पगारा, एतेसिणं मूलावि असंखेज्जजीविया जाव

कुहाण प्रश्न-वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-वृक्ष के दो भेद कहे हैं तद्यथा एक बीजवाले व बहुत बीजवाले प्रश्न एक बीजवाले के कितने भेद कहे हैं? एक बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-निंबु, जाम्बु यावत् पुन्नाग वृक्ष, सीवनी वृक्ष तथा अशोक वृक्ष और अन्य भी इस प्रकार के वृक्ष इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हैं ऐसेही कंद, स्कंध, त्वचा, शाल, प्रवाल, पत्र, में प्रत्येक जीवों हैं, पुष्प में अनेक जीवों हैं और फल एक बीजवाला होता है यह एक बीजवाले वृक्ष का वर्णन हुवा प्रश्न बहुबीजवाले वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? बहु बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-अस्थिक, तिंदुक, उम्बर, कविठ, आमला, फणस दाडिम, कदम्ब, न्यग्रोध, (बड) तिलक, लोध्र, और अन्य भी इस प्रकार के बहुत बीजवाले वृक्षों हैं इन के मूल में *संख्यात जीवों कहे हुवे हैं यावत् फल बहुत बीजवाले हैं यह बहुबीजवाले

सरीरगा, अणित्थंत्थ संठिया, ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवास सहस्साई जाव दुगतिया, तिआगतिया, परित्ता अणंता पण्णत्ता ॥ सेत्तं बादरवणस्सइकाइया ॥ सेतं थावरा ॥ १८ ॥ से किंत तसा ? तसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा॥ सेकिंत तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सुहुमतेउकाइयाय बायर तेउकाइयाय ॥ से किंत सुहुम तेउकाइया ? सुहुम तेउकाइया जहा सुहुम पुढविकाइया, णवरं सरीरगा सूयकलाव संठिया, एगगतिया, दुयागतिया, परित्ता, असंखेज्जा, पण्णत्ता सेसं

संस्थान विविध प्रकार का, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की यावत् दो गति व तीन आगति है इस में अनंत जीवों कहे हैं यह बादर वनस्पतिकाया का कथन हुवा यों स्थावर के भेद पूर्ण हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न त्रस के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर त्रस के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तेउकाया, वायुकाया व औदारिक त्रस प्रश्न तेउकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-तेउकाया के दो भेद कहे हैं. सूक्ष्म तेउकाया व बादर तेउकाया प्रश्न सूक्ष्म तेउकाया किसे कहते हैं ? सूक्ष्म तेउकाया का सूक्ष्म पृथ्वीकाय जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का संस्थान सूचिकलाप का है, तेउकायावाले एक तिर्यंच में जाते हैं और मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति में से आते हैं इस में असंख्यात जीवों कहे हैं

पिंडहलिद्दा, लोहारिणी हुटे, हुत्थिभु, अस्सकन्नी, सिंहकन्नी, सिउंढी मुसुंढी, जयावण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तकय अपज्जत्तकाय॥ तेसिण भंते ! जीवाण कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा ओरालिते, तेयते, कम्मते, तहेव जहा बायरपुढविकाइयाण णवर सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग, उक्कोसेण साइरेग जायणसहस्सं

शरीरी जीव वृक्षों में अलग २ रहे हुवे हैं बाह्य में एक ही रूप दीखने पर जीवों पृथक् २ रहे हुवे हैं यह प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए अब साधारन वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर साधारन वनस्पतिकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा आलू, मूले, अदरख, हिरली, सिरली सिसरली, किट्टिका, छिरिया, छिरविरालिया, कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरणकंद, खल्लुडा किमिराशी, भीडमोथ, पिंडहलदी, लोहारिनी, थोहरी, हस्तिमुजा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिहकुंडी, व मुसंढी और इस प्रकार की अन्य वनस्पतिकाया कही हुई है इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन वनस्पतिकायिक जीवों के कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को उदारिक, तेजस व कार्मण ऐसे तीन शरीर कहे हैं एसे ही सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परन्तु विशेषता यह है कि इन की शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट साधिक एक हजार योजन,

सेसं तचेव जाव एगगतिया, दुयाअगतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता॥सेत तेउकाइया ॥१९॥ सेकित वाउकाइया?वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुम वाउकाइया, बायर वाउकाइया ॥ सुहुम वाउकाइया जहा सुहुम तेउकाइया,णवर सरीर पडाग संठिया, एगगतिया दुयागतिया परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता,सेत्त सुहुम वाउकाइया ॥ सेकित बायर वाउकाइया?बायर वाउकाइया अणगविहा पण्णत्ता तजहा-पातीणवाते,पडीणवाते, एव जयावण्ण तहप्पगारा, तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तसिण भते!जीवाण कति सरीरगा पन्नत्ता?गोयमा!चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तजहा

तेउकाया का स्वरूप हुवा ॥ १० ॥ प्रश्न-वायुकाया के कितने भेद कहे हैं? उत्तर वायुकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-सूक्ष्म वायुकाया व बादर वायुकाया सूक्ष्म वायुकाया का सूक्ष्म तेउकाया जैसे जानना परंतु सूक्ष्म वायुकाया का संस्थान पताका का है यावत् एक गति व दो आगति है और इस में असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह सूक्ष्म वायुकाया का स्वरूप हुवा प्रश्न बादर वायुकाया किसे कहते हैं? उत्तर-बादर वायुकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-पूर्व का वायु, पश्चिमका वायु, यों सब वायुकाया के भेद जानना इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा-पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, वैक्रेय,

तेचर ॥ सेत्त सुहुम तेउक्काइया ॥ सेकिंत बायर तेउक्काइया ? बायर तेउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-इंगाल, जाल, मुम्मुरे, जाव सूर,कतमाणि, निस्सिते जेया वण्णे तहप्पगारा त समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा—ओरालिते,तेयते,कम्मते, सेस तचेव, सरीरगा सूयिकलावसठिया, तिन्निलेसा ॥ ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि राइदियाइ॥तिरियमणुस्सेहिंतो उववाउओ,

यह सूक्ष्म तेउकाया का स्वरूप हुआ,प्रश्न-बादर तेउकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर बादर तेउकाया के अनेक भेद कहे हैं अंगार, ज्वाला, मुमुरे यावत् सूर्यकांत मणि और वैसे ही अन्य प्रकार के तेउकाया के जीवों हैं इन के सक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं शेष सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परतु विशेषता यह है कि इस का सस्थान सूई के समुह का है, इन जीवों को तीन लेश्या कही है, स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन रात्रि दिन की, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न है, शेष वैसे ही जानना यावत् एक गति व दो आगति है इस में असख्यात जीवों कहे हुए हैं यह

से किंतं बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा, जेयावण्णे तहप्पगारे, तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तउ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—ओरालिते तेयते कम्मते॥ तेसिणं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भाग, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं, छेवट्ट संघयणी, हुंडसंठिया, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि लेसातो, दोइंदिया, तओ समुग्घाया वेयणा कसाया मारणंतिया॥नो सण्णी असण्णी॥नपुंसक

उत्तर उदार त्रस प्राणियों के चार भेद कहे हैं तद्यथा बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पंचेन्द्रिय॥ २१ ॥ प्रश्न-बेइन्द्रिय किस को कहते हैं ? उत्तर-बेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-कृमी, कीडे, गिंडोल, शंख, कोड, जलो, चंदनक, अलसिया, ईल्ट, फूगारा इत्यादि अनेक प्रकार के कहे हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न इन बेइन्द्रिय जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन का तीन शरीर कहे हैं उदारिक, तेजस व कार्माण प्रश्न इन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारह योजन की, संघयन छेवट, संस्थान हुंडक, चार कषाय, चार संज्ञा, तीन लेश्या, दो इन्द्रिय, वेदना, कषाय व मारणांतिक यों तीन समुद्घात हैं ये जीवों

उरालिते, वउव्वेते, तेयते, कम्मए, सरीरगा पण्णत्ता ठिया, चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा—वेयणा समुग्घ ते, कसाय समुग्घाते, मारणतिय समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घ ते, ॥ आहारो णिव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचद्दिसिं॥ उववज्जति देवमणुया, नेरइतेसु णत्थि॥ठिती जहन्नेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णिवाससहस्साई, सेस तचेव एगगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ? सेत्त बायरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥२०॥ से किंत उराला तसा पाणा ? उराला तसपाणा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पचेंदिया ॥२१॥

तैजस व कार्मण यों चार शरीर कहे हैं इन का संस्थान पताका का है चार समुद्घात-वेदना, कषाय, मारणांतिक व वैक्रेय आहार निर्व्याघात से छ दिशि का और व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशी, क्वचित् चार दिशी व क्वचित् पांच दिशी का आहार करे नरक, मनुष्य व देव में से उत्पन्न नहीं होता है परंतु एक तिर्यंच में से उत्पन्न होता है स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष शेष सब वैसे ही जानना यावत् एक गति व एक आगति इस में असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह बादर वायुकाया का भेद हुआ यह वायुकाया का स्वरूप हुआ ॥ २०॥ प्रश्न-उदार त्रस प्राणियों के कितने भेद कहे हैं ?

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अतोमुहुत्त-उक्कोसेणं बारसमवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसंखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइंदिया ॥ २२ ॥ सेकिंत तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइंदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिण्णिगाउयाइ ठिति जहण्णेण अतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइंदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, घनेरीये, कान खजुरे, पद्मल, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुंथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

वेइका, पज्जत्तीओ पचअपज्जत्तीओ, सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी॥ नो चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी नो ओहिदंसणी नो केवलदंसणी ॥ तेण भंते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि ॥ जे णाणी ते नियमा दुणाणी तंजहा—अभिणिबोहियणाणीय सुयणाणीय ॥ जे अण्णाणी तेनियमा दुअण्णाणी मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणीय ॥ नो मनजोगी, वइजोगी कायजोगीवि, सागरोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि, ॥ आहारो नियमा छद्दिसी, उववातो

संज्ञी नहीं परंतु असंज्ञी है, उन को एक नपुंसक वेद है, पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति है वे जीवों समदृष्टी व मिथ्यादृष्टी भी हैं, चक्षुदर्शन अवधि दर्शन व केवल दर्शन उन को नहीं है परंतु एक अचक्षु दर्शन है अहो भगवन्-वे जीवों क्या ज्ञानी है या अज्ञानी है? उत्तर ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञान में आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान यों दोनों प्रकार के ज्ञान है और अज्ञान में मति व श्रुत अज्ञान है मन योग नहीं है परंतु वचन योग व काया योग है, वे साकारोपयोगी व अनाकारोपयोगी दोनों हैं आहार छ दिशी का ही लेते हैं, मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं परंतु नारकी देव से नहीं उत्पन्न होते हैं और असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य व तिर्यंच भी नहीं उत्पन्न होते हैं

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्तं-उक्कोसेण बारससंवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइदिया ॥ २२ ॥ सेकिंत तेइदिया ? तेइदिया अणगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइं ठिति-जहण्णेण अंतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, घनेरीये, कान खजुरे, खटमल, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

दुगतिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत तेइंदिया ॥ २३ ॥ सेकित चउरिंदिया ? चउरिंदिया अणेग विहा पण्णत्ता तंजहा—अंधिया पोत्तिया जाव गोमयकीडा, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कतिसरीरगाय पण्णत्ता ? गोयमा ! तओसरीरगा पण्णत्ता तहेव, णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ, इंदिया चत्तारि, चक्खुदसणीवि अचक्खु दसणीवि, ठिई—उक्कोसेण छ

मुहूर्त उत्कृष्ट ४९ दिन, शेष सब वैसे ही यावत् दो गति व दो आगति प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों तेइन्द्रिय का कथन हुआ ॥ २३ ॥ प्रश्न—चतुरेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर–चतुरिन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं ? जिन के नाम—अंधिका पोतिका बिच्छू, बग मकडी, भ्रमरी, टीड मक्खिका, दंश, मच्छर कसारी यावत् गोमय कीट और भी चतुरिन्द्रिय जीवों कहे हैं इन के दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न उन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर उन जीवों को तीन शरीर कहे हैं, इनका कथन पूर्वोक्त जैसे मानना, परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट चार गाउ, चार इन्द्रियों, चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन दोनों, स्थिति उत्कृष्ट छ मास की यों सब बेइन्द्रिय जैसे कहना यावत् असंख्यात कहे हैं. यह

ध्मासा, सेस जहा बेइन्दियाण जाव असंखिज्जा पण्णत्ता, सेत चउरिंदिया ॥ २४ ॥ से किंत पचेंदिय ? पचेंदिया चउव्विहा पण्णत्ता तजहा—नरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्स देवा ॥ २५ ॥ से किंत नरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता तजहा-रयणप्पभा पुढवि नेरइया, जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइया ॥ तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भते! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ?गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तजहा-वेउव्विते, तेयते, कम्मए ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

चतुरेन्द्रिय का स्वरूप हुवा ॥ २४ ॥ प्रश्न पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं तद्यथा-नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ॥ २५ ॥ प्रश्न-नारकी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-नारकी के सात भेद कहे हैं तद्यथा रत्नप्रभा नारकी यावत् सातवी तमतम प्रभा नारकी इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे है ? उत्तर—इन जीवों को वैक्रय, तेजस व कार्माण यह तीन शरीर कहे हैं २ इन जीवों की कितनी शरीर की अवगाहना है ? उत्तर—इन के शरीर की अवगाहना के दो भेद कहे हैं जैसे भवधारनीय सो जन्म से शरीर होवे और २ उत्तर वैक्रेय सो अन्य रूप बनावें, इन में से भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की और उत्तर वैक्रेय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के

त्र

के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तजहा भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण पचधणुसयाइं॥तत्थण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जति भार्ग उक्कोसेण धणुसहस्स ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा!छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवछिरा, णेवण्हारु णेवसघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा

संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार धनुष्य की, ३ प्रश्न—इन जीवों के शरीर कौनसे संघयनवाले हैं ? उत्तर—इन जीवों को ६ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इन को हड्डियों, स्नायु, नारु वगैरह कुच्छ भी नहीं है परंतु जो अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ व अमणाम पुद्गलों हैं वे इन के संघातनपने परिणमते हैं ४ प्रश्न—इन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—इन जीवों के शरीर दो प्रकार के संस्थानवाले हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों के हुण्डक संस्थान है, (जैसे पंखि पांख, मरदन के रोम वगैरह नीकालने से कुरूप दीखता है इस से भी विशेष भयकर उन नेरियों के शरीर दीखाते हैं) उत्तर वैक्रेय को बहुत सुंदर रूप बनावे तथापि अशुभ नाम कर्मोदय से अत्यंत अशुभ ही होते हैं. ५ कषाय चार हैं ६ संज्ञा चार हैं, ७ लेश्या तीन हैं (पहिली दूसरी व

अमणुण्णा अमणामा एतेसिं सघातत्ताए परिणमति ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्विया य तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेहुड सठिया, तत्थण जेते उत्तरविउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णत्ता ॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, तिण्णिलेसातो पचइंदिया, चत्तारि समुग्घाया आइल्ला, सण्णीवि असण्णीवि, नपुसकवेदका, छपज्जत्तीओ, तिविहा दिट्ठिओ, तिन्निदसणा ॥ णाणीवि अन्नाणीवि जेणाणी तेनियमा तिन्नाणी पण्णत्ता तजहा—आभिणिवोहियणाणी, सुयणाणी ओहिणाणी, जे

कापोत लेश्या तीसरी में कापुत व नील, चौथी में नील, पांचवी में नील व कृष्ण और छठी सातवी में कृष्ण लश्या)८इन्द्रियों पांच,९समुद्घात चार वेदनीय,कषाय,मारणांतिक और वैक्रेय१०नरकमे सज्ञी असज्ञी दोनों हैं (प्रथम नरकमें असंज्ञी पचेन्द्रिय भी उत्पन्न होते हैं,इसलिये यहां असज्ञी होते हैं)११वेद नपुसक१२पर्याप्ति छ,१३दृष्टि तीन१४दर्शन तीन केवल दर्शनपावे नहीं१५ज्ञानी भी हैं अज्ञानी भी है ज्ञानमें मति, श्रुति व अवधि यों तीनज्ञानहै और अज्ञानमें मति व श्रुति ज्ञान है,दो अज्ञान हैं जो असज्ञी प्रथम नरक में उत्पन्न होतेहैं उनको अपर्याप्तावस्था में मति व श्रुति ऐसे दो अज्ञान ही पाते हैं तथा मति श्रुति व विभंग ज्ञान यों तीन अज्ञान भी हैं १६ योग तीन १७ उपयोग दो १८ आहार छ ही दिशी का लेते हैं, स्वाभाविक कारण से

अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते णियमा मतिअन्नाणी, सुत अन्नाणी जे ति अन्नाणी ते नियम मइअन्नाणीय, सुत अन्नाणीय विभंगणाणीय ॥ तिविधो जोगो, दुविहो उवओगो, छद्दिस आहारो, उसण्णकारणं पडुच्च वण्णतो कालाइ जाव आहार माहारंति, उववाओ तिरिय मणुस्सेसु, ठिती जहण्णेण दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ॥ दुविधा मरंति उव्वट्टणा भाणियव्वा जाता आगता णवर समुच्छिमेसु पडिसेहो, दुगतिआ दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत नेरइया ॥ २६ ॥ सेकिंत पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम पंचिदिय

काले वर्ण के पुद्गल यावत् अन्य भी वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करते हैं, १० नेरीये मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं २० स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की २१ समोहता व असमोहता दोनों प्रकार के मरण मरते हैं २२ मनुष्य तिर्यंच दोनों गति में आते हैं परतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य तिर्यंच व समूर्च्छिम मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह नारकी का दंडक हुवा॥ २६ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज

तिरिक्खजोणियाय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम पंचेंदिय तिरिक्ख जोणिया? समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा पंचविधा पण्णत्ता तजहा—मच्छगा, कच्छगा, मगरा, गाहा, सुसमारा,॥ सेकिंत मच्छा? मच्छा एवं जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता तजहा—ओरालिए तेयए कम्मए ॥ सरीरोगाहणा

तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं १ जलचर २ स्थलचर और ३ खेचर प्रश्न-इसमें से जलचर किसे कहते हैं ? उत्तर-जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ मगर, गाहा, सुसमारा प्रश्न—मत्स्य किसे कहते हैं ? उत्तर—मत्स्य के अनेक भेद कहे हैं इस का वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र में कहा हुआ है, इस के सामान्य से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं—उदारिक, तेजस व कार्माण, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा

जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भागे, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छेवट्ट सघयणी, हुडसंठिना, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तओ लेसाओ इंदियापंच, समुग्घाता तिण्णि, णो सण्णी असण्णी, णपुसकवेदा, पज्जत्तीय अपज्जत्तीओय पचिंदिओ, दो दिट्ठिओ दो दसणा, दोणाणा दो अण्णाणा दुविहे जोगे दुविहे उवओगे, आहारो छद्दिसि, उववातो तिरिय मणुस्सेहिंतो, नो देवेहिंतो, नो नरइएहिंतो तिरिएहिंतो असखेज्जवासाउय वज्जेसु मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अतरदीवग असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिति जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी, मारणंतिय समुग्घातेण दुविहावि मरंति,

भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन सघयन एक छेवट्ठा, सस्थान एक हुंडक, कषाय चार, संज्ञा चार, लेश्या तीन, इन्द्रिय पांचों, पहिली तीन समुद्घात, संज्ञी नहीं परंतु असंज्ञी, वेद एक नपुंसक पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति, दो दृष्टि, दो दर्शन दो, ज्ञान, व अज्ञान दो, योग दो, उपयोग दो, आहार छ दिशी का, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न होवे परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच व अकर्म-भूमि व अंतरद्वीप के मनुष्य में से यहां नहीं उत्पन्न होते हैं, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, मारणांतिक समुद्घात से दोनों मरण मरते हैं, प्रश्न—यहां से नीकलकर कहां उत्पन्न होवे ? उत्तर—असंज्ञी मत्स्य में से नीकलकर नरक, तिर्यंच मनुष्य व देव यों चारों गति में उत्पन्न होते हैं नारकी में

अणतरं उव्वहिता कहिं उववज्जेज्जा ? नेरइएसुवि तिरिक्खजोणिएसुवि, मणुस्सेसुवि, देवेसुवि ॥ नेरइएसु रयणप्पहाए सेसेसु परिसेधो, तिरिएसु सव्वेसु उववज्जति, संखेज्ज-वासाउएसुवि असंखज्जवासाउएसुवि चउप्पएसुवि, पक्खीसुवि, माणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभू-मिएसु नो अकम्मभूमिएसु, अंतरदीवेसुवि, संखेज्जवासउएवि, असंखेज्जवासाउएसुवि, देवेसु जाव वाणमंतरा, चउगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखिज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं जल-यर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥२७॥ से किंतं थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता

उत्पन्न होवे तो रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे शेष नारकी में उत्पन्न होवे नहीं, तिर्यंच में उत्पन्न होवे तो संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे, मनुष्य में उत्पन्न होवे तो कर्मभूमि, अकर्मभूमि अंतर्द्वीप व समूर्च्छिम मनुष्य संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे देव में उत्पन्न होवे तो भवनपति व वाणव्यन्तर में उत्पन्न होवे क्यों कि असन्नी यहां तक ही उत्पन्न होते हैं इस से चार की गति व दो की आगति है ये असंख्यात है यह जलचर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥२७॥ प्रश्न—स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं चतुष्पद स्थलचर समूर्च्छिम

तजहा—चउप्पद थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, परिसप्प थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—एकखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सण्णपदा जाव जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तओ सरीरा, सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउय पुहुत्त, ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण चतुरासीति वाससहस्साइ, सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया

तिर्यंच पचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं यथा १ एक खुरवाले अश्वादि, २ दो खुरवाले गवादि, ३ गंडीपद गोल पाँववाले हस्ति आदि और ४ सन्निपद सो पंजे व नखवाले सिंह व्याघ्रादि इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन को तीन शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ, (कोस) स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चौरासी हजार वर्ष, शेष सब जलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय जैसे जानना यावत् चार गति की

दुआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्तं थलयर चउप्पद समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २८ ॥ सेकिंत थलयर परिसप्प समुच्छिमा ? थलयर परिसप्प समुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्प समुच्छिमा भुयगपरिसप्प समुच्छिमा॥ सेकिंत उरगपरिसप्प समुच्छिमा? उरगपरिसप्प समुच्छिमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-अही अयगरा आसालिया, महोरगा ॥ से किंत अही? अही दुविहा पण्णत्ता तंजहा—दव्वीकरा, मउलिणोय ॥ से किंत दव्वीकरा,? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा आसीविसा, जाव सेत्तं दव्वीकरा ॥ सेकिंत मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा

गति व दो की आगति है वे परित्त असंख्यात हैं यह स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २८ ॥ प्रश्न—स्थलचर परिसर्प संमूर्च्छिम के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर परिसर्प समूर्च्छिम के दो भेद कहे हैं १ उरपरिसर्प व भुजपरिसर्प समूर्च्छिम प्रश्न—उर परिसर्प संमूर्च्छिम तिर्यंचके कितने भेद कहे हैं? उत्तर—उर परिसर्प समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रियके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ अहि, २ अजगर, ३ असालिया, और ४ महोरग प्रश्न—अहि के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहि के दो भेद कहे तद्यथा—१ दर्विकर अर्थात् फणा करनेवाला और फण नहीं करने वाला प्रश्न—दर्वीकर के कितने भेद है ? उत्तर-दर्वीकर के अनेक भेद कहे हैं १ आशीविष,

पण्णत्ता तंजहा—दिव्वा, गोणसा जाव सेत्तं मउलिणो ॥ सेत्तं अही ॥ सेकिंत अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता सेत्तं अयगरा ॥ सेकिंत आसालिया ? आसालिया जहा पण्णवणाए ॥ सेत्तं आसालिया ॥ सेकिंत महोरगा ? महोरगा जहा पण्णवणाए ॥ सेत्तं महोरगा ॥जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा

दृष्टिविष, उग्रविष, भोगविष त्वचाविष, लालविष, श्वासविष, काला सर्प ऐसे अनेक भेद कहे हैं प्रश्न—अजगर के कितने भेद हैं ? उत्तर—अजगर का एक ही भेद है प्रश्न—आसालिया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस का कथन पन्नवणा में है वहां ऐसा कहा है कि आसालिया सर्प मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होवे परंतु इस से बाहिर उत्पन्न होता नहीं है कर्म भूमि क्षेत्र में कर्म भूमि पना प्रवर्तता होवे वहां उत्पन्न होता है चक्रवर्ती, वासुदेव या मंडलिक राजा के पुण्य क्षीण हो गये होवे और उन के नामादिक का विनाश होने का होवे तब वहां आसालिया समूर्च्छिमपने उत्पन्न होता है उत्पत्ति समय उस की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग में होती है परंतु बढते २ बारह योजन की अवगाहना हो जाती है वह जमीन नीचे उत्पन्न होता है जब वह उलटता है तब वहां बडा खड्डा होता है जिस से चक्रवर्ति आदि नगर व सेना सहित नष्ट होजाते हैं इस की स्थिति अंत मुहूर्त की हैं प्रश्न—महोरग किसे कहते हैं ? उत्तर इस का विवेचन भी पन्नवणा सूत्र में हैं महोरग अढाइ द्वीप से बाहिर उत्पन्न होता है

पण्णत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तंचेव णवर सरीरोगाहणा जहण्णण अगुलस्स असखेज्जइ भाग, उक्कोसेण जोयण पहुत्त ॥ ठिति उक्कोसेण तेवण्ण वास सहस्साइ, सेसं जहा जलयराण, जाव चउगातिया, दुयागतिया, परिता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत उरपरिसप्पा ॥ २९ ॥ सेकित भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा ? भुयपरिसप्प समुच्छिम थलयरा अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—गाहा, नउला, जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ सरिरागाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेणं धणु पुहुत्त ठिति उक्कोसेण

इस का शरीर उत्सेध अगुल प्रमाण होता है यह जल स्थल सर्व स्थान में गमन कर सकता है इन चारों प्रकार के उरपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम पचेन्द्रिय के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन का कथन जल चर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय जैसे जानना शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक योजन, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेपन हजार वर्ष की शेष सब जलचर जैसे यावत् चारकी गति व दो की आगति जानना वे परित असंख्याते कहे हैं यह उरपरिसर्प का कथनहुवा ॥२९॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम स्थलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—भुजपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-गो, नकुल, घुस चूहे, गिलहरी और इस

वायालीस वाससहस्साइ सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया दुयागतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त भुयपरिसप्प समुच्छिमा॥सेत थलयरा ॥२•॥ सेकिंत खहयरा? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी,लोमपक्खी,समुग्गपक्खी विततपक्खी ॥ से किंत चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा वग्गुलि जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—ढका केंका जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, सेत्त लोमपक्खी ॥ सेकिंत समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता जहा पण्णवणाए ॥ एव

प्रकार के अन्य सब भुज परिसर्प स्थलचर हैं इन के दो भेद कहे हैं—पर्याप्त व अपर्याप्त इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ४२हजारवर्ष की, शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व दो आगति यह परित्ता असंख्यात है यह भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥३ ॥ प्रश्न—खेचर के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ चर्म पक्षी चर्मकी पांखवाले, २रोम पक्षी राम(बाल)की पांखवाले, समुद्रपक्षी मीडी हुई पांखवाले और वितत पक्षी खुली पांखवाले प्रश्न—चर्म पक्षी किस को कहते हैं? उत्तर—१ चर्म पक्षी के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा चमचाडी वग्गुली व इसप्रकार के अन्य भी होते हैं२ रोम पक्षी के भी

वीततपक्खी, जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-- पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, णाणत्त सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणु पुहुत्त, ठिति उक्कोसेण बावत्तरि वाससहस्साइं सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया दुयागतिया ॥ परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्त खहयरा समुच्छिमा पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेतं समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २० ॥ सेकिंतं गब्भवक्कतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा?

अनेक भेद कहे हैं—ढेक, केक, और इस प्रकार के अन्य पक्षी, प्रश्न—१ समुद्र पक्षी किसे कहते हैं ? उत्त.—समुद्र पक्षी का एक ही प्रकार है यह पक्षी अढाद्वीप की बाहिर होता है इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुआ है और वितत पक्षी का अधिकार भी पन्नवणा सूत्र में कहा है इस के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त विशेष में इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७२ हजार वर्ष शेष सब जलचर जैसे कहना यावत् चार गति के दो आगति जानना यह परित्त असंख्यात हैं यह खेचर समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय

जलयरा पञ्चविहा पण्णत्ता तजहा—मच्छा कच्छमा मगरा गाहा सुसुमारा, सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे, तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता तजहा—उरालिए, वेउव्विते, तेयए, कम्मए ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयण सहस्स, छव्विह सघयणी पण्णत्ता तजहा वइरोसभणाराय सघयणी, उसभनाराय सघयणी, नाराय सघयणी, अद्धनाराय

का अधिकार हुवा यह समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥१०॥ प्रश्न—गर्भ में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच के कितने भेद हैं ? उत्तर-गर्भज के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ जलचर २ स्थलचर व ३ खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ, मगर, गाह व सुसुमार यों सब भेद पन्नवणा में कहा वैसे ही जानना यावत् इनके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों चार शरीर कहे हैं तद्यथा १ औदारिक, २ वैक्रेय, ३ तेजस व ४ कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट एक

सघयणी, कीलिया सघयणी, सेवट्ट सघयणी ॥ छविह सठणीया पण्णत्ता तजहा-- समचउरस संठिया, नग्गोह परिमडले, साति, खुज्ज, वामणे, हुडे,॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, छलेसातो, पंच इंदिया, पंच समुग्घाया आइल्ला, सन्नी नो असण्णी, तिविहावेदावि,पज्जत्तीतो अपज्जत्तीतो,दिट्ठि तिविहा, तिण्णि-दंसणा णाणीवि अण्णावि, जेणाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थगतिया तिणाणी, जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी जे तिण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय ॥ एव अण्णाणीवि ॥ जोगेतिविहे, उवओगे दुविहे, आहारो छदिसि,

हजार योजन, वज्र ऋषभ नाराच वगैरह छ संघयन, समचतुस्रादि छे सस्थान, चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांचों इन्द्रियों पहिली, पांच समुद्घात, संज्ञी है परतु असंज्ञी नहीं है, तीनों वेद, छ पर्याप्ति, छ अपर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन सिवाय दर्शन तीन, ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञानी में कितनेक दो ज्ञानवाले व कितनेक तीन ज्ञानवाले हैं जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान है और जिन के तीन ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञान ऐसे तीन ज्ञान हैं, ऐसे ही तीन अज्ञान का जानना. मन वचन व काया ऐसे तीनों योग हैं, दोनों प्रकारके उपयोग हैं, छ दिशी का आहार करते हैं मगर नारकी में यावत् सातवी नारकी में से, असंख्यात वर्ष के

उववातो नेरइते हैं जाव अहेसत्तमा,पुढवीसु, तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु, असंखे-ज्जवासाउयवज्जेसु, मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग, असंखेज्ज वासाउयवज्जेसु, देवेसु जाव सहस्सारा ठिती—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी,दुविहावि मरंति अणंतरं उव्वट्टित्ता, नेरइतेसु जाव अहे सत्तमा तिरिक्ख जोणिएसु मणुस्सेसु, सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारे॥चउगतिया चउआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं जलयरा ॥२१॥से किंतं थलयरा? थलयरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पया, परिसप्पया ॥ से किंतं चउप्पया ? चउप्पया ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—एगखुरा, सो चेव भेदो जाव

आयुष्यवाले तिर्यंच छोडकर शेष सब तिर्यंच अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य और सहस्रार देवलोक पर्यंत के सब देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड दोनों मरण मरते हैं, वहां से नीकलकर प्रथम नारकी से सातवी नारकी, सब तिर्यंच, सब मनुष्य व सहस्रार देवलोक के पर्यंत सब देवलोक में जाते हैं, चार गति व चार आगति प्रत्येक असंख्याते हैं यह जलचरका स्वरूप हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—स्थलचर किसे कहते हैं? उत्तर—स्थलचर के दो भेद कहे हैं चतुष्पद व उरपरिसर्प प्रश्न—चतुष्पद के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद के चार भेद वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे

जेयाचण्णे तहप्पगारे ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ चत्तारि सरीरगा ॥ ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असंखज्जइ भाग उक्कोसेण छ गाउयाइ,ठिति उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ ॥ णवर उव्वट्ठिता नेरइएसु चउत्थ पुढविं, ताव गच्छति सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया चउ आगतिया, परित्ता असंखज्जा पण्णत्ता सत्त चउप्पया ॥ से किंत परिसप्पा ? परिसप्प ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा— उरपरिसप्पाय भुजपरिसप्पाय ॥ से किंत उरपरिसप्पाय ? उरपरिसप्पाय च आसालिया चउो भेदो भाणियव्वो ॥ चउ सरीरा सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स

दो भेद कहे हैं इन को चार शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट छ गाउ की, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम स्थलचर मरकर चौथी नारकी तक उत्पन्न हो सकते हैं शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व चार आगति जानना परित्ता असंख्याते कहे हुए हैं यह चतुष्पद का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—परिसर्प के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्प व भुज परिसर्प, इन में से उर परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उर परिसर्प में आसालिया पर्यंत सब भेद जानना, इन को चार शरीर, इन की अवगाहना जघन्य अंगुल का

असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, ट्ठिति—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं; उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वाट्टिता नेरइएसु जाव पचमि पुढवि ताव गच्छति, तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारा, सेसं जहा जलयराणं जाव चउगतिया, चउ आगतिया, परित्ता असंखेज्जा सेतं उरपरिसप्पा ॥ ३२ ॥ से किंतं भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा भेदो तहेव चत्तारि सरीरगा सरीरागाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणं गाउयपुहुत्तं, ठिति—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवरं दोच्च पुढविं ताव गच्छति ॥ सेतं भुयपरिसप्पा ॥

असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व, उर परिसर्प का नीकला हुवा पांचवी नारकी तक जा सकता है, शेष सब जलचर जैसे यावत् चार गति व चार आगति वाले हैं, वे परित्ता असंख्याते हैं यह उरपरिसर्प का कथन हुवा ॥ ३२ ॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? भुज परिसर्प के भेद वगैरह सब पूर्वोक्त भणजी जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे दो भेद कहे हैं, इन को चार शरीर, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, भुजपरिसर्प मरकर दूसरी नारकी तक जाते हैं शेष उर परिसर्प जैसे कहना यावत् चार गति में से आवे व चार गति में

सेंत थलधर ॥३३॥ सेकिंत खहचरा ? खहचरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी तहेव, भेदो भाणियव्वो ॥ ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणुपुहुत्त, ठिति जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जति भागो, सेस जहा जलयराण णवरं जाव तच्च पुढविं गच्छति जाव सेत खहयर गब्भवक्कतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, सेच तिरिक्खजोणिया ॥ ३४ ॥ सेकिंत मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्सा, गब्भवक्कतिय मणुस्सा भेदो

जाते वे पारिसा असख्याते हैं यह भुजपरिसर्प का कथन हुवा ये स्थलचर के भेद हुए ॥ ३३ ॥ प्रश्न—खचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर खेचर के चार भेद कहे हैं जिन के नाम-चर्म पक्षी, २ रोमपक्षी, ३ समुद्र पक्षी व ४ वितत पक्षी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे जानना अवगाहना जघन्य अगुलका असख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असख्यातवा भाग शेष सब जलचर जैसे जानना, परतु खेचर में से मरकर जीव तीसरी पृथ्वी तक ही जा सकता है, यह गर्भज खेचर तिर्यंच पचेन्द्रियका कथन हुवा यह तिर्यंच पंचेन्द्रियका अधिकार हुवा॥३४॥प्रश्न-मनुष्यके कितने भेद कहे हैं? उत्तर मनुष्य के दो भेद कहे हैं, तद्यथा १ समूर्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य, इस का सब भेद जैसे पन्नवणा में कहे वैसे ही यहां

जहा पण्णवणा ते तहा निरवसेसं भाणियव्व जाव छउमत्थाय केवलीया॥तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता तंजहा-ओरालिते जाव कम्मते ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि-गाउयाइं, छव्वेव संघयणी, छव्वेव संठिया ॥ तेणं भंते ! जीवा किं कोहकसायी जाव लोभकसायी अकसायी ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं अहारस-ण्णोवउत्ता जाव णो सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि तेणं भंते ! जीवा किं

मानना, यावत् छद्मस्थ केवली पर्यंत कहना, इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को पांच शरीर कहे हैं, औदारिक, वैक्रेय, आहारिक, तेजस व कार्माण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, छ संघयन, छ संस्थान, प्रश्न—वे जीवों क्या क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी व अकषायी ? उत्तर वे जीवों क्रोध कषायी भी हैं यावत् अकषायी भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या आहारसंज्ञी यावत् नो संज्ञी हैं उत्तर व जीवों आहार संज्ञी भी है यावत् नो संज्ञावाले भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या कृष्ण लेशी यावत् अलेशी हैं ? उत्तर—वे जीवों कृष्ण लेशी यावत् अलेशी भी है, प्रश्न—वे जीवों क्या सइन्द्रिय यावत् अने-

किण्हलेसा जाव अलेसा ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ सइंदिओवउत्ता जाव नो इत्थिओ वउत्तावि ॥ सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणा समुग्घाते जाव केवलीसमुग्घाते, सन्नीवि नो सन्नी नो असन्नीवि ॥ इत्थिवेदावि जाव अवेदावि ॥ पंचपज्जत्ती पंचअपज्जत्ती, तिविहा दिट्ठी, चत्तारिदंसणा ॥ णाणीवि अण्णाणीवि, जेणाणी अत्थेगतिया दुणाणी, अत्थेगतिया तिणाणी, अत्थेगतिया चउणाणी, अत्थेगतिया एगणाणी जे दुणाणी ते नियमा अभिणिबोहियणाणीय, सुयणाणीय; जे तिणाणी ते अभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय, अहवा अभिणिबोहियणाणी सुयणाणी

न्द्रिय है ? उत्तर—जो जीवों सइन्द्रिय भी हैं यावत् अनेन्द्रिय भी है, उन जीवों को वेदनीय से केवली पर्यंत सातों समुद्घात कहे हैं वही अपेक्षा नो संज्ञी नो असंज्ञी हैं, वे जीवों स्त्री वेदी भी हैं यावत् अवेद भी हैं, तीनों दृष्टि हैं, चार दर्शन है वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं जो ज्ञानी है उन में से कितनेक को दो ज्ञान, कितनेक को तीन ज्ञान, कितनेक को चार ज्ञान और कितनेक एक ज्ञान है जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक व श्रुत ज्ञान है तीन ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञान अथवा आभिनिबोधिक श्रुत व मनःपर्यव ज्ञान हैं, चार ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत, अवधि व मनःपर्यव ज्ञान है और एक ज्ञानवाले को केवल ज्ञान है. ऐसे ही अज्ञानी में कितनेक दो अज्ञानवाले व कितनेक तीन

मणपज्जवणाणीय,जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणीय,जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी ॥ एवं अण्णाणीवि दुअण्णाणी तिअण्णाणी ॥ मण जोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगीवि, दुविहो उवओगो आहारोछद्दिसिं, उववातो नेरइएहिं अहसत्तम वज्जेहिं, तिरिक्खजोणिएहिं, तेउवाउ असंखेज्ज वासाउअवज्जेहिं, मणुस्सेहिं अकम्म भूमिग अतरदीवग, असंखेज्जवासा-उयवज्जेहिं, देवेहिं सव्वेहिं, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओ-वमाइं, दुविहा विमरति उव्वहित्ता नेरइयाइसु जाव अणुत्तरोववाईएसु, अत्थेगतिया

ज्ञानवाले हैं योग में मन योग,वचन योग,काया योग तीनो योग वाले भी हैं व अयोगी भी है उपयोग दोनों प्रकार का, आहार छही दिशि का, उपपात-सातवी नारकी छोडकर शेष सब नारकी में से,तेउ,वायु व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय छोडकर शेष सब तिर्यंच, अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य में और सब देव में से नीकलकर मनुष्य होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, दोनों प्रकार के मरण मरते हैं, यहां से नीकलकर नारकी यावत् अनुत्तरोपपातिक देव में उत्पन्न होते हैं और कितनेक सीझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का

सिज्झति जाव अंतकरेंति ॥ तेणं भंते ! जीवा कतिगइया कतिआगतिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचगतिया, चउआगतिया परित्ता संखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं मणुस्सा ॥३५॥
सेकिंत देवा ? देवा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा—भवणवासी वाणमंतरा जोइसा
वेमाणिया, सेकिंत भवणवासी? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तंजहा-असुरकुमारा जाव
थणिय कुमारा ॥ सेतं भवणवासी ॥ सेकिंतं वाणमंतरा ? वाणमंतरा देवभेदो सव्वो
भाणियव्वो, जावते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥

अंत करते हैं, प्रश्न—इन जीवों की कितनी गति व कितनी आगति कही ? उत्तर—इन जीवों को पांच
गति व चार आगति है, मनुष्य संख्याते कहे हैं यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ३५ ॥ प्रश्न—देव के
कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक
प्रश्न-भवनवासी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-भवनवासी के दश भेद कहे हैं असुर
कुमार यावत् स्तनित कुमार प्रश्न—वाणव्यंतर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—वाणव्यंतर
ज्योतिषी व वैमानिक सब देव का कथन करना यावत् इन के दो भेद पर्याप्त व अप-
पर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इनजीवों को वैक्रेय, तेजस व कार्माण ऐसे तीन

तेसिण भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—वेउव्विये, तेयते, कम्मए ॥ उगाहणा दुविहा—भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जासा भवधारणिज्जासा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभाग उक्कोसेणं सत्तरयणी, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेण जोयण सतसहस्स ॥ सरीरगा छण्हं संघयण असंघयणा, णेवट्ठि णेवछिरा णेवण्हारु नेव

शरीर कहे हैं अवगाहना के दो भेद भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय, इस में से भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन इन को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इस को हड्डी, शिरा नसें व स्नायु नहीं है परंतु जो इष्ट कांत वगैरह पुद्गलों हैं वे संघयनपने परिणमते हैं प्रश्न—उन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—उन जीवों के संस्थान के दो भेद कहे हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में भवधारनीय को समचतुरस्र संस्थान है और उत्तर वैक्रेय का संस्थान विविध प्रकार का है, इन को चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांच इन्द्रियों, पांच समुद्घात है भवनपति वाणव्यंतर में संज्ञी असंज्ञी दोनों और ज्योतिषी वैमानिक में संज्ञी, वेद दो स्त्री व पुरुष वेद भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व

ण मत्थि, जे पोग्गला इट्ठा कता जीव तेसिं सघायताये परिणमति ॥ तेसिण भत ! जीवाण किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय॥तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेण समचउरस सठिया पण्णत्ता, तत्थण जेते वेउव्विया तेण णाणा सठाण सठिया पण्णत्ता चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा छ-लेसाओ, पचइदिया, पचसमुग्घाया, सण्णीवि असण्णीवि, इत्थिवेदावि पुरिसवेदावि, नो नपुसगवेदा, पज्जत्तापज्जत्तीओ पच, दिट्ठि तिविहा, तिन्निदसणे॥नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते नियमा तिनाणी, अन्नाणी भयणाए, दुविहा उवओगे, तिविहा जोगे आहारो नियमाछद्दिसिं, उसण्णकारण पडुच्च वण्णओ हालिद्द सुक्किलाइ जाव आहार

पहिला दूसरा देवलोक पर्यंत दोनों वेद, आगे एक वेद पांच पर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन वर्ज कर तीन दर्शन, वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं, जो ज्ञानी है वे आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञानी है, और अज्ञानी हैं उनको मति, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान की भजना (क्योंकि असज्ञी उत्पन्न होते हैं तब जबलग पर्याप्ति पूर्ण नहीं करते हैं तब लग मात्र दो अज्ञान ही होते हैं,) दोनों प्रकार के उपयोग, तीनों योग हैं, नियमा छ दिशी का आहार करे, स्वाभाविक कारन से वर्ण से पीला शुक्ल का यावत् आहार करे तिर्यंच व मनुष्य में से आठवे देवलोक तक उत्पन्न होवे, उपर एक मनुष्य ही उत्पन्न होवे,

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिया णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छंति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्तं देवा ॥ सेत्तं पचेंदिया ॥ सेत्तं उराला तसापाणा ॥ ३६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतियं कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतियं कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पंचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ ३६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जघन्य

पण्णत्ता ॥ २७ ॥ तस्सणं भंते ! तसत्ति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण असंखेज्जकाल असंखेज्जाओ उसप्पणि उसप्पिणिओ कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा ॥ थावराण भंते! थावरेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण अणंतकाल अणंताओ उस्सप्पिणीओव सप्पिणीओ, कालतो खेत्तता अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा, तेण पुग्गल परियट्टा आवलियाए असंखेज्जति भागे ॥ २८ ॥ तसस्सण भंते ! केवति काल

की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति है ॥२७॥ प्रश्न-अहो भगवन्! त्रस त्रसपने में कितना कालतक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! त्रस त्रस में जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल, असंख्यात अवसर्पणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रमाण रहे प्रश्न-अहो भगवन् ! स्थावर, स्थावर में कितना काल तक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर, स्थावर में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अनंत लोकाकाश, असंख्यात पुद्गल परावर्त ये पुद्गल परावर्त आवलिका के असंख्यातवे भाग के समय जितने जानना ॥ २८ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! काल से त्रस का अंतर कितना कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रश्न-

माहारंति, उव्वातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टित्ता णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छंति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्तं तसा ॥ सेत्त पचेंदिया ॥ सेत्त उराला तसापाणा ॥ ३६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसवाससहस्साइं ठिति

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ ३६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न-स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-स्थावर

॥ द्वितीया प्रतिपत्ति ॥

तत्थ जेते एव माहसु तिविधासंसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एवं माहसु इत्थी पुरिसा णपुंसगा ॥ १ ॥ सेकिंत इत्थीओ ? इत्थीओ तिविहा पण्णत्ताओ तंजहा तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ॥२॥ सेकिंत तिरिक्खजोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओति विधाओ पण्णत्ताओ तंजहा जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ, सेकिंत जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ तंजहाओ मच्छीओ जाव सुंसुमारीओ, सेत्तं जलयरीओ॥३॥सेकिंत थलयरीओ? थलयरीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा चउप्पदीओ परिसप्पिणीओय॥ सेकिंत चउप्पदीओ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ

जो आचार्य ऐसा कहते हैं कि तीन प्रकार के संसार समापन्नक जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा-स्त्री, पुरुष व नपुंसक ॥ १ ॥ प्रश्न-स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर स्त्री के तीन भेद कहे हैं, तिर्यंच स्त्री, मनुष्य स्त्री व देव स्त्री ॥ २ ॥ प्रश्न-तिर्यंच स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर तिर्यंचणी के तीन भेद कहे हैं जलचरी, स्थलचरी व खेचरी प्रश्न जलचरी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-जलचरी के पांच भेद कहे हैं मच्छी यावत् सुसुमारी यह जलचरी के भेद हुए ॥ ३ ॥ प्रश्न स्थलचरी किसे कहते हैं? उत्तर स्थलचरी के दो भेद कहे हैं तद्यथा चतुष्पदी व परिसर्पिणी प्रश्न चतुष्पदी किसे कहते हैं? उत्तर

अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणरसइ कालो ॥ थावर-रसण भंते ! केवतिय काल अतर होति ? जहा तरस संचिट्ठणाए ॥ ३९ ॥ एतेसिण भंते! तसाणं थावर णय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा ॥ सेच दुविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता दुविहा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ १ ॥ () () ()

अहो भगवन् ! स्थावर का कितना अंतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर का अंतर त्रस की स्थिति जितना है ॥ ३९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इन त्रस व स्थावर में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रस हैं उस से स्थावर अनंतगुने अधिक है यह दो प्रकार के संसार समापन्नक जीवों का वर्णन हुवा यह दो प्रकार के जीव की पहिली प्रतिपत्ति कही ॥ १ ॥

खहयरीओ ? खहयरीओ चउव्विह पण्णत्ताओ तजहा-चम्म पक्खीओ जाव सेत्त खहयरीओ ॥ सेत्त तिरिक्खजोणित्थीयाओ ॥ ५ ॥ सेकिंतं मणुस्सत्थियाओ ? मणुस्सत्थियाओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अतरदीवियाओ ॥ सेकित अतर दीवियाओ ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसतिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-एगरुईओ, आभा-सीओ जाव सुद्धदताओ सेतं अतरदीवे ॥ सेकित अकम्मभूमियाओ ? अकम्मभूमियाओ ती-सति विधाओ पण्णत्ताओ तजहा-पचसु हेमवएसु, पचसु एरण्णवएसु, पचसु हरीवासेसु, पचसु रम्मगवासेसु पचसु देवकुरुसु पचसु उत्तरकुरुसु, सेत्त अकम्मभूमग, मणुस्सीओ ॥ सेकिंतं

इत्यादि यह भुज परिसर्प के भेद जानना ॥ ४ ॥ प्रश्न-खेचरी किसे कहते हैं ? उत्तर-खेचरी के चार भेद कहे हैं, तद्यथा १-चर्म पक्षिणी, २ रोम पक्षिणी, ३ समुद्र पक्षिणी व ४ वितत पक्षिणी यों यह खेचरी के भेद हुए ॥ ८ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री किसे कहते हैं ? उत्तर-मनुष्य स्त्री के तीन भेद कहे हैं कर्म भूमि की, अकर्म भूमि की व अंतर द्वीप की उत्पन्न हुई प्रश्न-अंतर द्वीप की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर अंतर द्वीप की स्त्रियों के अट्ठाइस भेद कहे हैं तद्यथा-एक रूप द्वीप की स्त्रियों यावत् शुद्ध दंत द्वीप की स्त्रियों, यह अंतर द्वीप की स्त्रियों का कथन हुआ प्रश्न अकर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-अकर्म भूमि की स्त्रियों के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच

पण्णत्ताओ तंजहा एगखुरीओ जाव सणप्फइओ॥सेकिंतं परिसप्पीओ?परिसप्पीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-उरगपरिसप्पिणीओय भुयपरिसप्पीणीओय सेकिंत उरगपरिसप्पिणीओ उरग परिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-अहीओ आयगरीओ महोरगीओ, सेत्त उरपरिसप्पिणी ॥ सेकिंतं भुजपरिसप्पिणीओ ? भुजपरिसप्पिणीओ अणगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-गोहीओ, णउलीओ, सेघाओ, सेह्लाओ, सेरढीओ, सेरिंघीओ, साथाओ, खराओ, पंचलोइयाओ, चउप्पइयाओ, मूमियाओ, सुसुसियाओ, घरोलियाओ, गोहियाओ, जोहियाओ, थिराबालियाओ सेत्तं भुयपरिसप्पीओ॥४॥ सेकिंतं

चतुष्पदी के चार भेद कहे हैं १ एक खुरवाली घोडी इत्यादि २ दो खुरवाली गाय भैंस इत्यादि ३ गंडीपदी मोल पांववाली हथनी इत्यादि और सणीपदी नखवाली सिंहनी इत्यादि प्रश्न परिसर्पिनी किसे कहते है ? उत्तर परिसर्पिनी के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्पिनी व भुजपरिसर्पिनी प्रश्न-उर परिसर्पिनी किन कहते हैं ? उत्तर उर परिसर्पिनी के तीन भेद कहे हैं सर्पिणी, अजगरी व महोरगी यह उर परिसर्पिनी हुई, प्रश्न-भुजपरिसर्पिनी किसे कहते हैं ? उत्तर भुज परिसर्पिनी के अनेक भेद कहे हैं गोही, नकुली, रोहिनी, सह यनी, काचरीयों, सेरंधियों, साथियों, खारेयों, पचले‍ई, चंदरी, घरोली

वाणमतर देवित्थियाओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ तजहा पिसाय वाणमंतर देवित्थियाओ जाव सेत्त वाणमतर देवित्थियाओ॥सेकित जोतिसिय देवित्थियाओ? जोतिसियदेवित्थियाओ पचविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—चद विमाणजातिसिदेवित्थियाओ, सूरविमाण देवित्थियाओ, गहविमाण देवित्थियाओ, णक्खत्तविमाण देवित्थियाओ, ताराविमाण जोतिसिय देवित्थियाओ, सेत्त जोतिसिय देवित्थियाओ ॥ सेकित वेमाणिय देवित्थियाओ ? वेमाणिय देवित्थियाओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—सोहम्मकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ,ईसाणकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, सेत्त विमाणित्थिओ ॥७॥ इत्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेण आएसेण जहन्नेण अतोमुहुत्त

देव की स्त्रियों यह वाणव्यतर के भेद हुए प्रश्न-ज्योतिषी देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-ज्योतिषी देव स्त्रियोंके पांच भेद कहे हैं तद्यथा १ चंद्र विमान ज्योतिषीकी स्त्री २ सूर्य विमान ज्योतिषीकी स्त्री, ३ग्रह, विमान ज्योतिषी की स्त्री,४नक्षत्र विमानज्योतिषीका स्त्री,५ व तारा विमान ज्योतिषीकी स्त्री प्रश्न वैमानिक देवकी स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-वैमानिक देव स्त्रियोंके दोभेद कहे हैं तद्यथा-१ सौधर्म देवलोक के वैमानिक देवकी व २ ईशान देवलोक के वैमानिकदेवकी स्त्री यह वैमानिक देवकी स्त्रीका कथन हुवा॥७॥प्रश्न अहो भगवन्! स्त्री वेदकी कितने कालकी स्थिति कही?उत्तर-अहो गौतम!जघन्य अतर्मुहूर्तकी तिर्यंच व मनुष्य स्त्री आश्री उत्कृष्ट पचावन

कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—पचसुभरहेसु, पचसुएरवएसु, पचसुमहाविदेहेसु, सेत कम्मभूमगमणुस्सीओ ॥ सेत्त मणुस्सीओ ॥६॥ सेकिंत देवित्थियाओ? देवित्थियाओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ तजहा—भवनवासिदेवीत्थियाओ,वाणमतर देवित्थियाओ जोतिसि देवित्थियाओ,वेमाणिय देवित्थियाओ सेकिंत भवणवासि देवित्थियाओ ? भवणवासि देवित्थियाओ दसविधाओ पण्णत्ताओ तजहा—असुरकुमार भवणवासि देवित्थियाओ जाव थणितकुमार भवणवासिदेवित्थियाओ सेत भवणवासिदेवित्थियाओ ॥ सेकिंत वाणमतर देवित्थियाओ?

उत्तर कुरु की स्त्रियों यह अकर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा प्रश्न-कर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर कर्म भूमि की स्त्रियों के पन्नरह भेद कहे हैं पांच भरत, पांच एरवत व पांच महा विदेह यह कर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा यह मनुष्यणी का भेद हुवा ॥६॥ प्रश्न-देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-देव स्त्रियोंके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ भवनवासी,२ वाणव्यंतर,३ ज्योतिषी व ४ वैमानिक स्त्रियों प्रश्न भवनवासीनी किसे कहते हैं ? उत्तर भवनवासीनी देव स्त्रियों के दश भेद कहे हैं, असुर कुमार भवनवासी की स्त्री यावत् स्तनित कुमार भवनवासी की स्त्री प्रश्न वाणव्यंतर देव की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-वाणव्यंतर देव की स्त्रियों के आठ भेद कहे हैं पिशाच वाणव्यंतर देव की स्त्रियों यावत् गंधर्व वाणव्यंतर

भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सिथीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं

तिर्यंचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचनी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचनी की जानना खेचर तिर्यंचनी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य

उक्कोसेण पणपन्न पलिओवमाई एकेण आदेसेणं जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं णवपलि-ओवमाइं, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सत्तपलिओवमाइं, ॥ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतमुहुत्त उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइ ॥ ८ ॥ तिरिक्खजोणित्थीणं भंते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोस तिण्णिपलिओवमाइं ॥ जलयर तिरिक्खजोणित्थीण भंते! केवइय कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी॥ चउप्पदथलयर तिरिक्खजोणित्थियणं भंते ! केवतियकाल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो

पल्योपमकी स्थिति ईशान देवलोककी अपरिग्रही देवी आश्री एक आदेशसे जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पचास पल्योपम सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट नव पल्योपम ईशान देवलोक की परिग्रही देवी आश्री एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात पल्योपम सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी आश्री ॥ ८ ॥ प्रश्न तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-जलचर तिर्यंचणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जलचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड प्रश्न चतुष्पद स्थलचर

मुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उरपरिसप्प थलयरा तिरिक्ख जोणित्थिण भंते ! केवइयं कालं ठिइपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीणं जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त

तिर्यचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यचनी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यचनी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यचनी की जानना खेचर तिर्यचनी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य

पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिउवमाइं,धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ भरहेरवय कम्मभूमग मणुस्सित्थीण भते! केवतिय काल ठीती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं, धम्म चरण पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थीण भते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचर पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्री जघन्य अतमुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड भरत व एरवत कर्म भूमि के मनुष्य की स्त्री की कितनी स्थिति कही? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छकम (आठवर्षकम) क्रोड पूर्व प्रश्न-पूर्वविदेह व अपर विदेह कर्मभूमिवाले मनुष्यणी की कितनी स्थिति है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व अकर्म भूमि की मनुष्यणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुव्वकोडि ॥ अकम्मभूमगमणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिउवम पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण, ऊणग उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ हेमवए एरन्नवए जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिउवमस्स असंखेज्जइ भागे ऊणग, उक्कोसेण पलिउवम, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ दोपलिओवमाइ, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेऊणाइ, उक्कोसेण दोपलिउवमाइं, सहरण पडुच्च

साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड, हेमवय एरणवयके क्षेत्रकी मनुष्यणीकी स्थिति जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम, उत्कृष्ट, एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड प्रश्न हरिवर्ष रम्यक वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड प्रश्न-देवकुरु उत्तरकुरुकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री

जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म-भूमगमणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहन्नेण देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखज्जति भागेण ऊणगाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी॥ अतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मग पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिओवमस्स, असंखेज्ज तिभागेणऊणय, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं, सहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥१०॥ देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण दसवास सहस्साइं उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं, भवणवासि देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण दस वाससहस्साइं उक्कोसेणअद्ध पचमाइं पलिओवमाइं

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व प्रश्न अंतर द्वीपकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम के असंख्यातवे भाग में कुछकम और उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड ॥१०॥ प्रश्न देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्य की प्रश्न भवनवासी देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दस हजार वर्ष

एव असुर कुमार भवणवासि देवत्थीयाएवि ॥ नागकुमार भवणवासी देविठियपाए जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिओवम, एव सेसाणवि जाव थाणिय कुमाराण ॥ वाणमतरीण जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेणं अद्ध पलिओवम ॥ जोतिसीणं जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वास सहस्सेहिं अब्भहिय, चदविमाण जोतिसिय देविठियपाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण तचेव, सूरविमाण जोतिसिय देविठियपाए, जहण्णेण चउभाग पलिओवम, उक्कोसेण अद्ध पलिओवम, पचहिं वाससतेहिं, मब्भहिय, गहविमाण

उत्कृष्ट सा ढे चार पल्योपम की ऐसे ही असुर कुमार भवनवासी की देवी की जानना नाग कुमार भवन वासी देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछकम पल्योपम की, ऐसे ही स्तनित कुमार पर्यंत शेष सब भुवनपति की देवी की स्थिति कहना ॥ वाणव्यंतर देवी की जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट आधा पल्योपम ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक, चद्र विमान देवी की जघन्य एक पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक सूर्य विमान ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पांच सो वर्ष अधिक, ग्रह विमान ज्योतिषी की देवी की जघन्य पल्योपम का

जोतिसिय देवित्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम पण्णास-वाससहस्समब्भहियं चंदविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्णं पलिओवमाइं, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवमं उक्कोसेण णवपलिओवमाइं ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट अधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

इत्थिवि कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! एकादेसेणं जहण्णेणं एक्कसमयं, उक्कोसेण देसुत्तरं पलिओवमसत पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ एकेणादेसेणं जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण अट्ठारस पलिओवमाइ, पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ एकेणा-देसेण जहण्णेण एक्कसमयं उक्कोसेण चोद्दसपलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं॥ एक्कणादेसण जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण पलिओवमसय पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहिय॥

उत्तर अहो गोतम ! एक आदेश से जघन्य एक समय (उपशम श्रणी से पीछे पडता हुआ स्त्रीवेदी जीव काल करे इस अपेक्षा) उत्कृष्ट ११० पल्योपम, प्रत्येक पूर्व क्रोड अधिक, कोई स्त्री वेदी जीव दो भव दूसरे देवलोक की अपरिग्रही देवीपने करेतो इस के ११० पल्योपम होवे और बीच में मनुष्यणी का भव कर सो अधिक जानना (देवी वहां से चवकर असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाली स्त्री में नहीं उत्पन्न होती है) दूसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट अठारह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक यहां दूसरे देव लोक की परिग्रहीदेवी के दो भव और अन्य तिर्यंचणी या मनुष्यणी के भव आश्री जानना तीसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौदह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक, पहिले देवलोक की परिग्रही देवी आश्री चौथे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक पहिले देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, पांचवे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट प्रत्येक पल्योपम व प्रत्येक पूर्व

जोतिसिय देवित्थिए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम पण्णास चाविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवम उक्कोसेण णवपलिओवमाइं ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट साधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की पल्योपम नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थीति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण दसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियात्रि भरहेरतियात्रि, णवर खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, दसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

एणेणं आदेसेणं जहण्णेणं एकंसमय उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भ-हियं॥१२॥तिरिक्खजोणिण भंते! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइं, जलचराए जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियं॥चउप्पदथलयरतिरिक्ख जहा उहिता, तिरिक्खीउरगपरिसप्पि भुयगपरिसप्पित्थिण जहा जलयराण ॥ खहयरी जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलितोवमस्स असंखेज्जतिभाग पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियं

क्रोड अधिक सात भव तिर्यंचणी के पूर्व कोडी आयुष्य के और आठवे भव में देवकुरु उत्तर कुरु में तीन पल्योपम के आयुष्य वाली युगलनी होकर सौधर्म देवलोक में जघन्य स्थिति वाली देवी होवे ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंचणी तिर्यंचणीपने कितना काल तक रहती है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक सात भव पूर्व क्रोड की स्थिति के करे आठवा भव तीन पल्योपम की स्थिति का करे और नवमा भव पूर्व क्रोड की स्थिति का करे जलचरी जलचरीपने रहे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड, चतुष्पद स्थलचरी का औधिक जैसे मानना, उर परिसर्प व भुज परिसर्प का जलचरी जैसे मानना खेचरी का जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक मानना ॥१३॥ प्रश्न-अहो भग-

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थित्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियावि भरहेरतियावि, णवर खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं, देसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

एक समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ अकम्मभूमिक मणुस्सित्थिण, अकम्मभूमए कालओ केवच्चिर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखज्जतिभागेणऊग उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ दसूणाए पुव्वकोडिए अब्भहियाइ ॥हेमवतरण्णवे अकम्मभूमिमणुस्सित्थि॰ भते! हेमवतरण्णवे कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखेज्जति भागेण ऊणग उक्कोसेण पलिओवमग, साहारण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

रहती है ? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक, प्रश्न—हेमवय एरणवय की मनुष्यणी हेमवय एरणवय में कितने काल तक रहती है ? उत्तर—जन्म आश्री पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक पल्योपम व कुच्छ कम पूर्व क्रोड अधिक कोई देव कर्मभूमि की स्त्री को हेमवय एरणवय क्षेत्र में साहरन करके लावे वह वहां कुच्छ कम पूर्व क्रोड का आयुष्य भोगव कर काल कर जावे और उस ही क्षेत्र में

पलिओवम देसूणा पुव्वकोडीए अब्भहिय ॥हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भते! कालओ केवचर होई? गोयमा ! जम्मण प - ुच्च जहण्णेण देसूणाइ दो पलितोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणं ऊणगाइ, उक्कोसेण दोपारेतोवमाइ ॥ साहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ पुव्वकोडि अब्भहियाइ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ तिन्नि पलिओवमाइ पलितोवमस्स असखेज्जइ भागेणं ऊ गाइ उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ, सहरण पडुच्च जहण्णण अतोमुहुत्तउक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥अतरदीवा कम्मभूमगमणुस्सि २ जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलितोवमस्स असखेज्जति भागेण ऊण

युगलनीपने उत्पन्न होवे उस आश्री हरिवर्ष रम्यक् वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी जन्म आश्री पल्य का असंख्यातवा भाग दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम की साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक जानना देवकुरु उत्तरकुरु की जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोडपूर्व अधिक अंतर द्वीप की देवीका जन्मय आश्री जघन्य पल्योपम के

सूत्र

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग, सहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिउवमस्स असंखेज्जतिभाग देसूणाए पूव्व कोडीए अब्भहिय ॥१४॥ देविरथीण (देवीणं) भंते! देवित्थित्ति कालओ केवचिरहोइ? गोयमा! जच्चेव संचिट्ठणा ॥१५॥ इत्थीणं (इत्थीएणं) भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अनंतकालं वणस्सति कालो एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीणं ॥ मणु-

अर्थ

असंख्यात वे भाग मे कुच्छकम उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व कुच्छकम क्रोड पूर्व अधिक ॥१४॥ प्रश्न अहो भगवन्! देवता की स्त्री देवी पने कितने काल तक रहती है? उत्तर-अहो गौतम! जैसे देवी की स्थिति कही वैसे ही जानना क्यों की देवी चवकर पुनः देवीपने नहीं उत्पन्न होती है ॥१५॥ प्रश्न-अहो भगवन्? स्त्रीका स्त्रीपने कितना अंतर होता है? अर्थात् स्त्री वेद में से नीकला पुनः कितने समय में स्त्रीपना प्राप्त करे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री इतना स्त्री वेद का अंतर जानना ऐसे ही तिर्यंचणी व मनुष्यणी का जानना मनुष्य में क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम ऐसे ही पूर्व महाविदेह व अपर महाविदेह क्षेत्र आश्री जानना अकर्मभूमि की मनुष्यणी का कितना अंतर

स्सित्थीण मणुस्सित्थिए खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त,उक्कोसेण वणस्सइ कालो॥
धम्म चरण पडुच्च जहण्णेण समउ उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरि
यह देसूण, एव जाव पुव्व विदेह अवर विदेहियाओ ॥ अकम्म भूमगमणुस्सित्थिण
भंते ! केवतिय काल अतर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण
दसवास सहस्साति अतोमुहुत्त मब्भहियाइ उक्कोसेण वणस्सइकालो, सहरणं
पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो एव जाव अतरदीवियाओ ॥

कहा ! उत्तर—जन्म आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अतर्मुहूर्त अधिक क्यों कि अकर्मभूमि की स्त्री
मरकर जघन्य स्थितिवाले देवतापने उत्पन्न होवे वह दशहजारवर्ष का आयुष्य भोगवकर कर्मभूमि में मनुष्यकी स्त्रीपन
उत्पन्न होवे वहां से मरकर अकर्म भूमि में स्त्रीपने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अनत
काल का अंतर पड़े साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल ऐसे ही अतर द्वीप पर्यंत
कहना प्रश्न अहो भगवन् ! देवता की स्त्री मरकर पुनः देवता की स्त्रीपने उत्पन्न होवे तो कितना काल
का अंतर होवे ? उत्तर-अहो गौतम !, जघन्य अंतर मुहूर्त क्योंकि देवी मरकर कर्म भूमि में उत्पन्न होवे
वहां पूर्ण पर्याय बांध कर पुनः स्त्री पने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अनत काल
जानना ऐसे ही असुरकुमार भवन पति की देवी से ईशान देवलोक की देवी पर्यंत सबका कहना ॥

देविरिथण सव्वेसिं जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणरसतिकालो ॥१६॥ एतासिण भते! तिरिक्खजोणियाण मणुस्सित्थियाण देवित्थियाण कयरा २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ? सव्वत्थोवाओ मणुस्सित्थीयाओ, तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, देवित्थियाओ संखज्जगुणाओ, ॥ एतासिण भते ! तिरिक्खजोणित्थियाण जलयरीण थलयरीण खहयरीणय कयरा २ हिंतो अप्पाओवा बहुयाओवा तुल्लाओवा विसेसाहियाओवा? गोयमा! सव्वत्थोवाओ खहयरि तिरिक्खजोणियाओ

मूल तिरिक्खजोणियाओ संखेज्ज गुणाओ, जलयर तिरिक्ख संखज्जगुणाओ ॥ एतासिण भते ! मणुस्सित्थिय कम्म भूमियाण अकरमभूमियाण, अतरदीवियाणय कयरा २

॥ १६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंचणी, मनुष्यणी, व देवी में कौन किस से अल्प, बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी मनुष्य की स्त्री क्यों कि वे संख्यात क्रोडाक्रोड है, इस से तिर्यंच की स्त्री असंख्यातगुनी, इस से देवियों असंख्यातगुनी प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंचणी में जलचरी स्थलचरी व खचरी में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर-अहो गौतम ! सब से थोडी खेचरी तिर्यंचणी, उस से स्थलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी, उस से जलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमि की स्त्रियों, अकर्मभूमि व अतर द्वीप की स्त्रियों में कौन किस से

हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि-तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवय हेरण्णवयवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ, दोवि तुल्लाओ संखेज्ज-गुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ॥

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अन्तर द्वीप की स्त्री, इस से देवकुरु उत्तरकुरु की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक् वर्ष की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी इस से हेमवय एरणवय की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से भरत एरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से पूर्व विदेह व अपर विदेह क्षेत्र की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! देवियों में भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक की देवियों में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडी वैमानिक की देवियों, क्यों की अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशि का दूसरा वर्ग मूल को तीसरे वर्ग मूल से गुनने से जितनी राशि होवे उतने प्रमाण उन को हुई लोक की

एतासिण भंते ! देवित्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियाओ देवित्थियाओ, भवणवासी देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते ! तिरिक्ख-जोणियाण जलयरीण थलयरीण खहयरीण मणुस्सित्थीयाण कम्मभूमियाण अकम्म भूमियाण, अंतरदीवियाणं, देवित्थियाणं, भवणवासिणीण, वाणमंतरीण, जोतिसि-

प्रदेश पंक्ति में जितने आकाश प्रदेश हैं उसे बत्तीसवे भागदेनेसे उतने प्रमाणमें है, इसमें सौधर्म ईशान देवलोक की देवियों असंख्यात गुनी क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशिका प्रथम वर्ग मूल उसे दूसरे वर्ग मूलसे गुणने से जितनी प्रदेश राशि होवे इतने प्रदेश की श्रेणी में जितने प्रदेशराशि होवे, उसे बत्तीसका भागदेने से जो प्राप्त होवे उतनी है, इससे भवन पति की देवियों असंख्यातगुनी क्यों कि असंख्यात योजन प्रमाण एक प्रदेशिक श्रेणी में जितने खण्ड एक प्रतर में हैं उस को भी बत्तीस का भागदेने से जो आवे उतनी व्यन्तर की देवियों हैं उस से ज्योतिषी की देवियों संख्यातगुनी क्यों कि २५६ अंगुल प्रमाण एक प्रदेश की श्रेणी मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से बत्तीसवा भाग रहित करने से जितनी प्रदेश राशि होवे उतनी है. अहो भगवन् ! तिर्यंच स्त्रियों में जलचरी, स्थलचरी, खेचरी, मनुष्य स्त्रियों में कर्म-

याणं वेमाणिणीणय कयरा २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्ला संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवतेरण्णवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेहवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ वेमाणिय

मूमि की, अकर्मभूमि व अंतर द्वीप की स्त्रियों व देव स्त्रियों में भवनवासीनी, वाणव्यन्तरी, ज्योतिषीनी व वैमानिकिनी देव की स्त्रियों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अंतरद्वीप अकर्मभूमिवाले मनुष्य की स्त्रियों हैं इस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक वर्ष के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी इस से हेमवय एरणवय की मनुष्यणीयों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इन से भरत एरवत की मनुष्यणियों संख्यातगुनी, इस से पूर्व विदह व पश्चिम विदह की स्त्रियों संख्यातगुनी, इस से वैमानिक देवता की स्त्रियों असंख्यातगुनी, आकाश प्रदेश राशि प्रमाण होने से, इस से भवनपति देवों की स्त्रियों असंख्यातगुनी, इस से खेचर तिर्यंचणी असंख्यातगुनी, प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही हुई आकाश श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है, इस से स्थलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी, अतिशय बडी

पंचिंदित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, भवणवासि देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, थलचर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ १७ ॥ इत्थिवेदस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंध ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढा सत्तभागाओ पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणं, उक्कोसेणं पण्णरस

प्रतर का असंख्यातवा भाग उस में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से जलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी अतिक्षय प्रदा प्रतर का असंख्यातवा भाग में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से वाणव्यंतर देव की देवियों संख्यातगुनी, संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमान एक प्रदेश श्रेणि मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से १ बत्तीसवा भाग कम करने से जितनी राशी रहे उतनी है इससे ज्योतिषी की देवियों संख्यातगुनी पूर्वोक्त प्रकार ॥ १७ ॥ अब स्त्री वेद की स्थिति कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! स्त्री वेद कर्म की कितने काल पर्यंत स्थिति होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम व एक सागरोपमका सातवा भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम क्यों कि स्त्री वेदादिक कर्म की अपनी २ उत्कृष्ट स्थिति बंध से मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति ७० सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम की प्रमाण से भाग

सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वास सयाइ, अबाधा, अबाहुणिया कम्मठिती कम्मणिसेओ ॥ १८ ॥ इत्थिवेदेण भते ! किंपकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! फुफ अग्गि समाणे पण्णत्ते ॥ सेत्त इत्थियाओ ॥ १९ ॥ सेकिंत पुरिसा ? पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—तिरिक्खजोणिय पुरिसा, मणुस्स पुरिसा, देवपुरिसा ॥ २० ॥ सेकिंत तिरिक्खजोणिय पुरिसा ? तिरिक्खजोणिय पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलचरा थलचरा खहचरा ॥ इत्थि भेदो भ णियव्वो जाव खहयरा॥सेत्त खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा ॥ २१ ॥ सेकिंत मणुस्स पुरिसा ? मणुस्स पुरिसा

करने से इतनी होती है उत्कृष्ट पन्दरह क्रोडाक्रोड सागरोपम अबाधाकाल पन्दरह हजार वर्ष का कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों का विषय कैसे कहा है ? उत्तर—जैसे बकरी की मींगनियों की अग्नि जाज्वल्यमान होती है और छेडने से विशेष दीपायमान होती है, वैसे ही, तथा काष्ट की धगधगती अग्नि समान कामाग्नि है यह स्त्री वेद का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ प्रश्न—पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—पुरुष के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तिर्यंच पुरुष, मनुष्य पुरुष व देव पुरुष ॥२०॥ प्रश्न—तिर्यंच पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पुरुष के तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, व खेचर यावत् स्त्री भेद में जैसा कहा वैसे ही यहां जानना यह तिर्यंच का कथन हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—मनुष्य

तिविहा पण्णत्ता तंजहा-कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा सेत्त मणुस्स पुरिसा ॥ २२ ॥ सेकिंत देव पुरिसा ? देवपुरिसा चउव्विहा इत्थिभेदो भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धा ॥ २३ ॥ पुरिसस्सणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा !

पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—मनुष्य पुरुष के तीन भेद कहे हैं—कर्मभूमि, अकर्मभूमि व अंतरद्वीप यह मनुष्य पुरुष के भेद हुवे ॥ २२ ॥ प्रश्न—देव पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव पुरुष के चार भेद कहे हैं यों जैसे स्त्री भेद में कहा वैसे ही जानना यहां सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत कहना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पुरुष व मनुष्य पुरुष का से जैसे कहना देव पुरुष की यावत् सर्वार्थ सिद्ध देवों की स्थिति पन्नवणा से जानना विशेष में—भवनपति में असुरकुमार देव की जघन्य दशहजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक, नागकुमार दि नवजाति के भुवनपति देवकी जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की वाणव्यंतर देवकी जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, ज्योतिषी देवकी जाति में जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्रमा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की

जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्स पुरिसाण जचेव इत्थिण ठिती साचेव भाणियव्वा ॥ देव पुरिसाणवि जाव

ग्रह की, जघन्य पाव पल्योपम की, उत्कृष्ट एक पल्योपम की, नक्षत्र की, जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की, तारा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट पाव पल्योपम से कुछ अधिक जानना वैमानिक की ओघ से जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की, विशेष से— १ सौधर्म देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की, २ ईशान देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम कुछ अधिक, ३ सनत्कुमार देवलोक के देवता की जघन्य दो सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, ४ माहेन्द्र देवलोक के देवों की जघन्य दो सागर कुछ अधिक उत्कृष्ट सात सागरोपम कुछ अधिक, ५ ब्रह्मदेवलोक के देवता की जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की, ६ लांतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम की उत्कृष्ट चौदह सागरोपम की, ७ महाशुक्र देवलोक के देव की जघन्य चौदह सागरोपम की उत्कृष्ट सतरह सागरोपम की, ८ सहस्रार देवलोक के देव की जघन्य सतरह सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह सागरोपम की ९ आणत देवलोक की जघन्य अठारह सागरोपम की उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम की, १० प्राणत देवलोक की जघन्य उन्नीस सागरोपम की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की, ११ आरण देवलोक के देव की जघन्य

सव्वट्ठसिद्धाण ताव ठिनीए जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा ॥ २४ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसत्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

११ म सागरोपम की उत्कृष्ट इक्कीस सागरोपम की, १२ अच्युत देवलोक की जघन्य इक्कीस सागरोपम की उत्कृष्ट बाईस सागरोपम की (ए कल्पोत्पन्न देव की स्थिति कही) १ भद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम की, २ सुभद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य तेवीस सागरोपम की उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम की, ३ सुजात ग्रैवेयक के देव की जघन्य चौवीस सागरोपमकी उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपमकी, ४ सुमनस ग्रैवेयक के देवकी जघन्य पच्चीस सागरोपम की उत्कृष्ट छव्वीस सागरोपम की, ५ सुदर्शन ग्रैवेयक के देव की जघन्य छव्वीस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम की, ६ प्रिय [illegible]क के देव की जघन्य सत्तावीस सागरोपम की उत्कृष्ट अट्ठावीस सागरोपम की, ७ आ[illegible] के देव की जघन्य अठावीस सागरोपम की उत्कृष्ट गुनतीस सागरोपम की, ८ सुमतिभद्रग्रैवेयक के [illegible]घन्य उन्नतीस सागरोपमकी और उत्कृष्ट तीस सागरोपम की और ९ यशोधरग्रैवेयक के देव की जघन्य [illegible] सागरोपम की उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की ॥ विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान वासी देव की जघन्य एकतीस मध्यम बत्तीस उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की और सर्वार्थ सिद्ध विमान वासी देवताओं की स्थिति जघन्योत्कृष्ट तेतीस ही सागरोपम की ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुषका [illegible]रूप पने निरंतर रहता कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो

सागरोवमसयपुहुत्त सातिरेगं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाण भंते ! कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निपलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मज्झहियाइ ॥ एव तहेव संचिट्ठणा जहा इत्थीण जाव खहयरतिरिक्खजोणिय पुरिसस्स संचिट्ठणा ॥ मणुस्स पुरिस्साण भंते ! कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्त

सागरोपम कुछ अधिक फिर पुरुष वेद का अवश्य पलटा होवे प्रश्न -अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक पुरुष तिर्यंच पुरुषपने रहे तो कितने काल रहे ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऊपर पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक (सात भव पूर्व कोटी आयुष्य वाले तिर्यंच के कर्मभूमि के क्षेत्र आश्रिय और एक भव युगल तिर्यंच का तीन पल्योपम का मानना] यों जिस प्रकार तिर्यंचनी स्त्री का संचिठन काल कहा वैसा ही जलचर स्थलचर पुरुष का भी संचिठना काल जानना अर्थात् जलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, उरपरि सर्प की तथा भुजपर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, खचर पुरुषकी जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व उपर के पल्योपम का असंख्यात भाग पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक सात कर्मभूमी के भव करे आठवा अन्तरद्वीपका भव करे) प्रश्न-मनुष्य का पुरुषपना

मणुस्सहियाइ ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडि, एव सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह अवरविदेह अकम्मभूमक मणुस्स पुरिसाण जहा अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण जाव अतर दीवगाण ॥ देवपुरिसाण जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाण ॥ २५ ॥ पुरिसाण भंते ! केवतिय काल अतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥

कितने काल तक रहे? उत्तर—अहो गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्व कोटि पृथक्त्व अधिक उक्त प्रकार ही जानना, और चारित्र धर्माचरण आश्रित जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष यावत् पूर्व महाविदेह का तथा अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का जैसा अकर्म-भूमि की स्त्री का कहा यावत् अंतरद्वीप का पुरुष का भी अंतरद्वीप की स्त्री जैसा ही कहना और देव पुरुषों का पुरुषपने का काल तो इनका की स्थिति कही उतना ही जानना क्यों कि इन का पुरुष (दूसरा) भव होता नहीं है इस लिये सर्वार्थ सिद्ध तक का पुरुष वेद का काल उन की स्थिति जैसा ही कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष वेद को प्राप्त करने का कितना अन्तर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय का (उपशम श्रेणी में वेद का उपशम कर पश्चात् से पुनः पुरुष वेद को

तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ एव जाव खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसाण ॥ मणुस्स पुरिसाण भते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय उक्कोसेणं अणतकाल अणता

समय मार्ग स्वीकार कर मृत्यु पावे उस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना (प्रश्न—स्त्री और नपुंसक दोनों श्रेणि करते हैं उन का एक समय का अन्तर क्यों न हो ? उत्तर—श्रेणिगत मृत्यु पाकर नियमा से पुरुष देवपने ही उत्पन्न होता है परतु देवीपने या अन्य गति में नहीं जाता है इस लिये) तिर्यच योनिक पुरुष में विशेषता बताते हैं तिर्यंच योनिक पुरुष का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जलचर स्थलचर खेचर पुरुष का भी इतना ही अंतर जानना प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य पुरुष मरकर पीछा पुरुष होवे तो कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! पुरुष का जघन्य से क्षेत्र आश्रिय अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना और चरित्र धर्म आश्रिय जघन्य एक समय [परिणाम के पलटे आश्रिय] उत्कृष्ट देश कम अर्ध पुद्गल परावर्तन, इस ही प्रकार भरत एरावत के मनुष्य पुरुष, पूर्व विदेह पश्चिम विदेह पुरुष का जन्म आश्रिय

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और सहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष सी.. रत यह सूत्र के जैसा जानना यावत् अतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अंतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष सीहार रन पर ही के जैसा जानना यावत् अन्तर्द्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाणं भंते ! केवतियं कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेणं वास पुहुत्त उक्कोसेणं वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढ पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अंतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष वीस रम्य वास की के वैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नवें आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य बिना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे) उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस 'जहित्थीण जावं अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्मभूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर मानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर मानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बोलका रहा सब स्त्री के जैसा जानना यावत् अन्तर्द्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतियं कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण मास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन्' देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

पुरिसस्स जहण्णेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं, अणुत्तराण अंतरे - एक्को आलावओ ॥ २९ ॥ अप्पाबहुयाणि जहेव इत्थीण ॥ एतेसिणं भंते ?

मानना [अनुत्तर विमान के देव मरकर मनुष्य होकर अन्य विमानिक देवके तथा मनुष्य के भवकरे उस आश्रिय मानना और सर्वार्थ सिद्ध के देवकी उत्पत्ति तो एक ही वक्त होती है वे मनुष्य हो निश्चय से मोक्ष जाते हैं, इस लिये वहां का अन्तर नहीं कहा है + ॥२६॥ अब पुरुषों की अल्पाबहुत्व पांच प्रकारसे कहते हैं (१) सब से थोडे मनुष्य, क्यों कि संख्यात कोटा-कोटी प्रमाण है, उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग में रहकर असंख्यात श्रेणि में रही हुई जो आकाश प्रदेश की राशि उस प्रमाण है, उस से देव पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि अतिशय बडा प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही जो असंख्यात श्रेणि की आकाश प्रदेशकी राशी है उतने हैं तिर्यंच योनिक पुरुष की अल्पाबहुत्व तिर्यंच योनिक स्त्रीके जैसा ही कहना और मनुष्य पुरुष की अल्पाबहुत मनुष्य की स्त्रियों जैसे कहना (४) देव पुरुष की

+ यहां कितनेक भवनपति देव से ईशान देवलोक तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, सनत्कुमार से सहस्रार पर्यन्त नव दिन का, आनत देवलोक से अच्युत देवलोकतक नव महीने का, नव ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान तक नववर्ष का पुरुष वेद का अन्तर कहते हैं.

देवपुरिसाण भवणवासिण वाणमंतराण जोतिसियाणं वेमाणियाण कयरे २ हिंतो

अल्पाबहुत्व सब से थोडे अनुत्तर विमान के पुरुष क्योंकि जो क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भागमें है उस में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमाने हैं, २ उन से ऊपर की ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने क्यों की जो बहुत बडा क्षेत्र पल्योपम उस के असंख्यातवे भाग में रहे, जो आकाश प्रदेश उस की राशि जितने हैं, विमान की बहुलता कर अनुत्तर विमान पांच ही है और ऊपर के त्रिक में सो विमान है, उस में प्रत्येक विमान में अलग २ असंख्यात देवता हैं, (ऐसे ही आगे में भी २ नीचे २ विमान आगए हैं उन में देवता भी ज्यादा २ है ऐसी कल्पना आगे भी करना,) ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुना, ४ उस से नीचे की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरण देवलोक के देवता संख्यातगुने, +७ उस से प्राणत देवलोक के देवता संख्यातगुना, ८ उस से आनत देवलोक के देवता संख्यातगुने, उक्त प्रकार से ही इन को भी कहना ९ उन से सहस्रार कल्पवासी देव असंख्यातगुना, [क्यों कि घनाकार लोक उस की

+ यद्यपि आरण और अच्युत कल्प बराबरी से हैं और उन की विमान की संख्या भी एकसी है तथापि उत्तर दिशा से दक्षिण में कृष्ण पक्षिक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं इस आश्रिय जानना जिन का अर्ध पुद्गल परावर्त से अधिक संसार भ्रमण होता है वे कृष्ण पक्षी कहे जाते हैं और कमी संसारवाले शुक्लपक्षी कहे जाते हैं.

अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवपुरिसा

एक प्रदेश की श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने यह होते हैं] १० उस से महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने क्यों कि जो बहुत बडी ऐसी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमान जानना और सहस्रार कल्प में छ हजार विमान है, महा शुक्र में चालीस हजार विमान है इस लिये, ११ उस से लांतक देवलोक के देवता असंख्यातगुन क्यों कि उस से भी बडी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में उसका प्रमान है १२ उस से ब्रह्मदेवलोक के देवता असंख्यातगुने, उक्त प्रकार से भी बहुत बडी श्रेणि उस के असंख्यातवे भागमें रहे जो आकाश प्रदेशकी १३ उस से माहेन्द्र कल्प के देवता असंख्यात गुने, १४ उस से सनत्कुमार के देवता असंख्यात गुने, सनत्कुमार में बारलाख विमान है और माहेन्द्र देवलोक में आठलाख विमान हैं इस आश्रिय तथा दक्षिण में कृष्ण पक्षी जीव अधिक उत्पन्न होवे उस आश्रिय [सनत्कुमार से लगाकर सहस्रार देवलोक तक अलग २ अपने २ स्थान में विचारने से घन कर लोककी एक श्रेणिके असंख्यात वे भाग में आकाश प्रदेश की राशी है उस के प्रमाण इन का प्रमाण जानना एक श्रेणिकेही असंख्यात भाग किये हैं वह इस लिये कि उस के असंख्यात भेद हैं इस लिये इस प्रकार ज्यादा बहुत कहीं हैं] १५ उस से ईशान देवलोक के देवता असंख्यात

भवणवाति देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, जोतिसिय

गुने [क्योंकि प्रमाण मात्र क्षेत्र प्रदेश की राशी का दूसरा वर्ग मूल उसे तीसरे वर्ग मूल के वर्ग से गुना करने से जितनी प्रदेश की राशि हो उतनी संख्यावाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितन आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमान उन का प्रमान) १६ उस से सौधर्म देवलोक के देवता संख्यात गुन (विमान के अधिक पने से सौधर्म में बत्तीस लाख और ईशान देवलोक में अठाईस लाख विमान हैं, तथा सौधर्म देवलोक दक्षिण दिशा में होने से वहां कृष्ण पक्षीक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं और ऊपर के सब देवलोक में असंख्यात गुना कह कर यहां संख्यात गुने ही कहे यह वस्तु स्वभाव जानना) १७ उस से भवनपति देवता असंख्यात गुन) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशि का प्रथम वर्ग मूल दूसरे वर्ग मूल से गिनते हुवे जितनी प्रदेश राशी होवे उतनी संख्या वाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि उस में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमान उन का प्रमान जानना) १८ उन से वाणव्यन्तर देव पुरुष संख्यात गुने [क्यों कि संख्यात योजन कोटा कोटि प्रमाण की जो एक प्रदेश श्रेणी मात्र जो टुकडे के एक प्रतर में जितने होवे उसका ही बत्तीसवा भाग उस प्रमान उन का प्रमान है) और १९ उन से ज्योतिषी देवता संख्यात गुना क्यों कि से दो सो छप्पन अंगुल प्रमान का एक प्रदेश श्रेणि मात्र टुकडा उस एक प्रतर में जितने होवे उस के

दवपुरिसा सखेज्जगुणा ॥ २७ ॥ एतेसिण भंते-तिरिक्खजोणिय पुरिसाण जलयराण थलयराण खहयराण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमगाण अकम्मभूमगाण अतरदीवगाण, देव पुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसियाण वेमाणियाण सोधम्माण जाव सव्वट्ठसिद्धगाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अतरदीवग मणुस्स पुरिसा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि तुल्ला सखेज्जगुणा, हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग पुरिसा दोवि तुल्ला सखेज्जगुणा, हेमवय हेरणवएवास अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, भरहएरवयवास कम्मभूमग

सपीमधे गाग निसने हैं॥२७॥ प्रश्न अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक के पुरुष तथा जलचर खेचर पुरुष तथा कर्मभूमि के पुरुष में कर्मभूमि के पुरुष अकर्मभूमि के पुरुष, अतरद्वीप के, तथा देव पुरुष में भवनपतिदेव, वाणव्यंतरदेव ज्योतिषी देव, वैमानिक देव सौधर्म देव का पुरुष यावत् सर्वार्थ सिद्ध के देव इन में कौन २ कमी ज्यादा यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे अतरद्वीप के पुरुष, २ उन से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उन से हरीवास रम्यकवास के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ४ उस से हेमवय एरणवय के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ५ उन से भरत क्षेत्र एरवत क्षेत्र के पुरुष संख्यातगुने, ६ उन से पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह के पुरुष

मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, अणुत्तरोववाति देव पुरिसा असखेज्जगुणा, उवरिमगेवेज्जग देव पुरिसा सखेज्जगुणा, मज्झिम गेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, हिट्ठिमगेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, आरणकप्पेदेव पुरिसा सखेज्जगुणा, पाणयकप्प देव पुरिसा सखेज्जगुणा, आणतकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, सहस्सार कप्पेदेव पुरिसा असखेज्जगुणा, महसुक्ककप्पेदेव पुरिसा असखेज्जगुणा, जाव माहिंद कप्पे देव पुरिसा असखेज्जगुणा, सणकुमार कप्पे देव पुरिसा असखेज्जगुणा, ईसाणकप्पे देव

सख्यातगुने, ७ उन से अनुत्तर विमान के देवता असंख्यातगुने, ८ उन से ऊपर के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ९ उन से मध्यम ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने, १० उन से नीचे के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से अच्युत देवलोक के देव संख्यातगुने, १२ उन से आरण देवलोक के देव संख्यातगुने, १३ उन से प्राणत कल्प के देव संख्यातगुने, १४ उनसे आणत कल्प के देव संख्यातगुने, १५ उन से सहस्रार देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उन से महाशुक्र कल्प के देव असंख्यातगुने, १७ उन से लंतक देवलोक के देव असंख्यातगुना, १८ उन से माहेन्द्र देवलोक के देव असंख्यातगुना, १९ उन से सनत्कुमार देवलोक के देव असंख्यातगुना, २० उन से ईशान देवलोक के देव असंख्यातगुने,

पुरिसा असखेज्जगुणा, सोधम्मकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, भवणवासि देव पुरिसा असखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, वाणमतर देव पुरिसा सखेज्जगुणा, जोतिसिय देव पुरिसा सखेज्जगुणा ॥ २८ ॥ पुरिस वेदस्सण भते! कम्मस्स केवइय काल बधठिती पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेण अट्ठ सवच्छराणि, उक्कोसण दस सागरोवम कोडाकोडीओ दस वाससयाइ अवाहा अवाधूणिया, कम्मट्ठिती कम्मणिसेओ ॥ २९ ॥ पुरिस वेदस्सण भते ! किं पगारे पण्णत्ते ?

२१ उस से सौधर्म देवलोक के देव असंख्यातगुने, २२ उन से भवनपति के देव पुरुष असंख्यातगुना, २३ उन से खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यातगुना, २४ उन से स्थलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २५ उन से जलचर तिर्यंच पुरुष संख्यातगुना, २६ उन से वाणव्यंतर देव पुरुष संख्यातगुना, २७ उन से ज्योतिषी देव पुरुष संख्यातगुना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद कर्म बन्ध की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य से आठ वर्ष (इस से कमी अच्छे बुरे अध्यवसाय का अभाव है) उत्कृष्ट दश सागरोपम कोडाकोडी उस में से एक वर्ष का जो इस का अबाधा काल है उतना कम मानना, इतनी कर्म बन्ध की स्थिति जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पुरुष वेद

गोयमा ! वणदवग्गिजाल समाणे पण्णत्ते ॥ सेत पुरिसा ॥ ३० ॥ से किंतं णपुसगा २ तिविहा पण्णत्ता तंजहा—णेरइय णपुसका, तिरिक्खजोणिय णपुसका, मणुस्स णपुसका ॥३१॥ से किंत णेरइय णपुंसका २ सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रतण-प्पभा पुढवि णेरइय णपुसका जाव अहे सत्तमा पुढवि णेरइय णपुसका ॥ सेत णेरइय णपुसका॥से किंत तिरिक्खजोणिय णपुसका? तिरिक्खजोणिय णपुसका पंचविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका,बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय तिरिक्ख-

का विषय किस प्रकार का होता है ? उत्तर-अहो गौतम ! दावानल की ज्वाला समान अर्थात् आरंभ काल में तीव्र कामाग्नि दाह होता है और फिर कभी पडजावे ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुसक कितने प्रकार के कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ नारकी नपुंसक, २ तिर्यंच नपुसक, और ३ मनुष्य नपुंसक ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक के कितने प्रकार कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नरक नपुसक के सात प्रकार कहे हैं, वे यथा रत्नप्रभा पृथ्वी यावत् तमस्तम पृथ्वी यह नरक नपुंसक के भेद जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! पांच प्रकार कहे हैं वे यथा—१ एकेन्द्रिय नपुसक, २ बेइन्द्रिय नपुंसक, ३ तेइन्द्रिय नपुंसक, ४ चौरिन्द्रिय नपुंसक, और ५ तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जोणिय णपुंसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुंसका॥एवं तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—१ पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सण भते ! केवतिय कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ॥ नेरइय णपुंसकस्सण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सण भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुसका, पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्तासेत्त बइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुसका॥एव तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—जे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक. इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि यह नपुंसकी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकित मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

जोणिय णपुंसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणेगविहा पण्णत्तासेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुंसका॥एवं तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंतं पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—वे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्ख सव्वेसिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ मणुस्स णपुंसगस्सणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ कम्मभूमग भरहेरवय पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सणपुंसकस्सवि तहेव, अकम्मभूमक मणुस्सणपुंसकस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अंतोमुहुत्त, साहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं जाव अंतरदीवकाण ॥ ३३ ॥ णपुंसएणं भंते ! णपुंसएत्ति कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं

भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष की और चारित्र धर्माचरन आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्षकी युगल नपुंसक नहीं होते हैं; परंतु युगल मनुष्यके उच्चार प्रस्रवणादि चवदह स्थान में जो समूर्च्छिम मनुष्य होते हैं उन में नपुंसक वेद पाता है उन की स्थिति अन्तरमुहूर्त की ही होती है और संहरण आश्रित भी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष की ही मानना ऐसे ही अंतरद्वीप मनुष्य तक कहदेना ॥ ३३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक का नपुंसक

उक्कोसेण पुव्वकोडी एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सण भंते केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइ सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुंसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥ एव जलयर तिरिक्ख, चउप्पद थलयर, उरगपरिसप्प, भुयगपरिसप्प, खहयर

की उत्कृष्ट पूर्व कोटि की प्रश्न— अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष, अप्काय की सात हजार वर्ष, तेउकाय की तीन अहोरात्रि, वायुकाय की तीन हजार वर्ष की, वनस्पतिकाय की दश हजार वर्ष की, बेइन्द्रिय की बारह वर्ष की, तेइन्द्रिय की ४९ दिन की, चौरिन्द्रिय की छ महीने की, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनी की क्रोड पूर्व की युगल तिर्यंच नपुंसक नहीं होते हैं इसलिये, और इन तिर्यंच की जघन्य स्थिति अन्तरमुहूर्त की जानना प्रश्न—अहो

कायए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण सखेज्जकाल पण्णत्ता; पचेंदिय तिरिक्ख जोणिय नपुसएण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी पुहुत्त, एव जलयर तिरियचउप्पय थलयर उरपरिसप्प, महोयरगाणवि । मणुस्स णपुसकस्सण भते ? गोयमा! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडिय पुहुत्त, धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एव कम्म भूमभरहेरवय पुव्वविदह अवरविदेहेसुवि भाणियव्व, अकम्मभूमक मणुस्सणपुसएण भते !

जानना विशेष में पृथ्व्यादि चारों स्थावर की असंख्यात काल की, वनस्पति की अनत काल की, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष पृथक्त्व की (आठ भव पूर्व कोटी का जानना) इस प्रकार ही जलचर, स्थलचर, उरपरकी, भुजपरकी तथा महोरग तिर्यंच नपुंसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की कायास्थिति कितने काल की है ? - उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व जानना. धर्माचरण आश्रिय जघन्य एक समय की उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटी वर्ष की जानना इस ही प्रकार भरत एरवत क्षेत्र में तथा पूर्व पश्चिम महा विदेह के मनुष्य नपुसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक की स्थिति कितनी है ! उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य भी अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट भी अंत-

एक समय उक्कोसेण तरुकालो ॥ नेरइय णपुसएण भतेत्ति ? गोयमा ! जहण्णेण, दसवास सहस्साइ उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं, एवं पुढवीआ ठिती भाणियव्वा ॥ तिरिक्खजोणिय णपुंसएण भतेत्ति ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय नपुसएण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव एगिंदियनपुसकस्स, वणस्सइ कायस्सवि एवमेव सेसाण जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल असखेज्जाओ उस्सप्पिणिओ कालतो, खेत्ततो असखेज्जा लोया ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय नपुस-

पने रहे तो कितने काल तक रहता है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय (उपशम श्रेणि से पडकर आश्रिय एक समय वेद को स्पर्श मनुष्य पूर्ण करे देव होवे इस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति का काल मानना (आवलिका के असंख्यातवे भाग में जो समय की राशी है उस प्रमाण पुद्गल परावर्तन को वनस्पति का काल कहते हैं) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक का जीव नपुंसक नरक के नपुंसकपने रहे तो कितना काल रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम (नरक मरकर पुन नरक का भव नहीं करता है इस आश्रिय मानना) ऐसे ही भवस्थिति जैसे सातों नरक का कथन कहना अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक नपुंसकपने रहे तो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के जितना काल

एव सव्वासि जाव अहे सत्तमा तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्त सातिरगा॥एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोसागरोवम सहस्साइ सखज्जवास मब्भहियाइ,पुढवि आउतेउ वाऊण जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो, वणस्सति काइयाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज कालं जाव असखज्जालोया, सेसाण बेंदियादीण जाव खहयराण

मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम ॥ एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट संख्यात वर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का [त्रस काय की कायस्थिति इतने काल की है इस लिये एकेन्द्रिय का इतना अन्तर पड़े] पृथ्वी, पानी, तेऊ, वायु इन चार स्थावरों का जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना वनस्पति काय का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट असंख्यात काल का, और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रदेशों का समय २ एकेक प्रदेश एकेक समय में हरन करते उस में जितनी उत्सर्पिनी अवसर्पिनी होवे उतना वनस्पति के भव से मरकर दूसरे में उत्कृष्ट इतने काल रहने का समय है, फिर संसारी जीव नियमा से वनस्पति में आवे बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसक का तथा जलचर स्थलचर खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का

गोयमा! जम्मग पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त (अंतोमुहुत्तपुहुत्त) सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीवगाण ॥ २४ ॥ णपुंसगस्सणं भंते! केवतियं काल अंतर होति? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग ॥ नेरइय णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अंतरं होति? गो० जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तरुकालो ॥ रयणप्पमा पुढवि नेरइय णपुंसकस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तरुकालो ॥

मुहूर्त पृथक्त्व की, संहरन आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटि वर्ष की ऐसे ही हेमवय एरणवय हरीवास रम्यक्वास देवकुरु उत्तरकुरु में संमूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य की स्थिति जानना ॥२४॥ प्रश्न—अहो भगवन्! नपुंसक नपुंसकपने को छोडकर पीछा नपुंसक होवे उसके बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम का प्रश्न—अहो भगवन्! नारकी नपुंसक मरकर पीछा नारकी नपुंसक होवे उस के बीच में कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त (नारकी मर तिर्यंच या मनुष्य का भव अंतर्मुहूर्त की स्थिति का कर पीछा नरक में उत्पन्न होवे इस आश्रिय,) उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अन्तर जानना इस ही प्रकार रत्नप्रभा आदि सातों ही नरक का अन्तर जानना ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक का जघन्य अन्तर

वणस्सतिकालो, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो;
एवं जाव अंतरदीवगावि ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजो-
णिय णपुंसकाणं मणुस्स णपुंसकाणय कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा !
सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय
णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि
नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमाण में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतनी प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत है

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेण एगं समय उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवडु पोग्गलपरियट्टं, देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सणं भंते! केवतिय कालं अंतरं होति? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण

तथा सामान्य मे मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन्! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, सहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना; ऐसे ही हेमवंत हेरण्यवंत हरीवर्ष रम्यक्वर्ष देव-

वणस्सतिकालो, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, एवं जाव अतरदीवगावि ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं मणुस्स णपुंसकाणय कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर–अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमान में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत है

जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं, देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सणं भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

तथा सामान्य से मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश ऊण आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन्! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, ऐसे ही हेमवय हेरण्णवय हरिवर्ष रम्यक्वर्ष देव-

जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका, थलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, जलचर तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिय तेइंदिय विसेसाहिया, बेइंदिय विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा पुढविकाइय एगेंदिय तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, एवं आउ वाउ वणस्सति काइया एगेंदिय तिरिक्खजोणिय

चौरिन्द्रिय में पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक में व जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ! अहो गौतम ! १ सब से थोडे खेचर नपुंसक, २ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ३ उससे जलचर नपुंसक संख्यात गुने, ४ उस से चतुरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक ५ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ६ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ७ उस से तेउकायिक एकेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, ८ उस से पृथवीकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ८ उस से अप्काय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ९ उस से वायुकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, और १० उस से वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! कर्मभूमि मनुष्य के नपुंसक, अकर्मभूमि मनुष्य नपुंसक, और अंतरद्वीप के नपुंसक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे अंतरद्वीप के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक, २ उस से देव कुरु

अहेसत्तमपुढवि नेरइय णपुंसका, छट्ठपुढवि णेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, जाव दोच्च पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ॥ एतेसिण भंते ! तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण पुढविकाइय एगिंदिय णपुंसकाणं जाव वणस्सकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण तेइंदिय चउरिंदिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयर थलयर खहयराणय कयरे २ हिंतो

प्रश्न अहो भगवन् ! नरक के नपुंसक में रत्नप्रभा से लगाकर तमस्तम प्रभा तक परस्पर कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे नीचे की सातवी नरक के नपुंसक क्यों कि वे अति थोडी श्रेणिक असंख्यात भाग में रहे हुवे जो आकाश प्रदेश राशी होवे उस प्रमान हैं २ उस से छठी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यात गुने, ४ उस से चौथी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने और उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने, ७ उस से प्रथम नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, इन सातों नरक में पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये से दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुने हैं, क्यों कि कृष्ण पक्षी जीव दक्षिण दिशा में अधिक उत्पन्न होते हैं ॥ १ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय पांचों-स्थावर के, बेन्द्रिय तेन्द्रिय

क्खजोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुंसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अंतर दीविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुंसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, अंतरदीवग मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

मुष्ये अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छट्ठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणंतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्म-भूमिक णपुंसकाण अंतर दीवकाणय कतरे२ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अंतरदीवगा अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदह अवरविदेह कम्म भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ २६ ॥ एतेसिण भंते! नेरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुन, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक ॥ २६ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यावत् पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

क्खजोणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीवकाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि सखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

पुर्वे अंतर्द्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छट्ठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतर्द्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

णपुंसका अणतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं अकम्मभूमिक णपुंसकाणं अंतर दीवकाणय कतरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अंतरदीवगा अकम्मभूमगा मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एवं जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्म भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥ एतेसिणं भंते! नेरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाणं जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यकवास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक ॥ ३९ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्न प्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यानिक पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

वेदस्सणं भते ! केवइकालं ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोन्निय वाससहस्साइ, अबाधा अबाहूणिया कम्माट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पात्रा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे यह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बड़ा नगर आग्नि कर प्रज्वलित हुआ बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्तों ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर संखेज्जगुणा जलयर संखेज्जगुणा, चतुरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय णपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया एगिंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइय विसेसाहिया वणस्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ ३७ ॥ णपुंसक

पीछे वैसे संख्यातगुने, १२ उस से पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से प्रथम नरक के नेरीये नपुंसक असंख्यातगुने, १४ उस से खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, १५ उस से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुने, १६ उस से जलचर तिर्यंच नपुंसक असंख्यातगुने, १७ उस से चौरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, १८ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक १९ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक. २० उस से तेउकाय असंख्यातगुने, २१ उस से पृथ्वीकाय नपुंसक विशेषाधिक, २२ उससे अपकाय नपुंसक विशेषाधिक, २३ उससे वायुकाय नपुंसक विशेषाधिक और २४ उससे वनस्पतिकाय नपुंसक अनंतगुने ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! नपुंसक वेद कर्म की स्थिति

वेदस्सणं भते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोन्निय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुसकवेदेण भते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिण भते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट वीस क्रोडाकोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे वह नपुसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बडा नगर आग्नि कर प्रज्वलित हुआ बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, प्रश्न अहो श्रमण आयुष्मन्ओ ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

सव्वत्थोवा पुरिसा, इत्थीओ संखेज्जगुणाओ, णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण तिरिक्खजोणिय, पुरिसाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिय पुरिसा, तिरिक्खजोणिइत्थीओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणतगुणा ॥ एतेसिण भंते ! मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्स णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा मणुस्सित्थीओ

कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष वेदी, उस से स्त्री वेदी संख्यातगुने हैं, उस से नपुंसक वेदी अनंतगुने हैं (२) अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ कमी ज्यादा विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तिर्यंच योनिक पुरुष, २ उस से तिर्यंचनी स्त्रीयों संख्यातगुनी और ३ उस से तिर्यंच नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य की स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ ज्यादा कमी विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष हैं, २ उस से मनुष्य की स्त्री संख्यातगुनी, सत्तावीसगुनी है ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, संमूर्छिम आश्रिय (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! देवकी स्त्रीयों पुरुष और (देवता में नपुंसक वेद नहीं पाता है इसलिये नरक लिखाती है) नारकी के नपुंसक इन में अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक कौन २ हैं ?

सखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भंते ! देवित्थीण देव पुरिसाण नेरइय नपुंसकाणय, कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थे वा नेरइय नपुंसगा, देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थीओ संखेज्जगुणीओ ॥ एतेसिण भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाण तिरिक्खजोणिय नपुंसगाणं, मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्सनपुंसगाण, देवित्थीण देव पुरिसाण, नेरइय नपुंसकाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा,

उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे नरक के नपुंसक (नरक में स्त्री वेद पुरुष वेद का अभाव है) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशी का प्रथम वर्ग मूल का गुना करने से जितने प्रदेश की राशी होवे उस का घन किया सो लोक उस की प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उतने प्रमाण में उन का प्रमाण है, २ उन से देव पुरुष असंख्यात गुने, क्यों कि असंख्यात योजन की क्रोडाक्रोडी प्रमान सूची में जितने आकाश प्रदेश होवें उतने घनकरे हुवे लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में उन का प्रमान है, और उस से देवता की स्त्री संख्यातगुनी, क्यों कि बत्तीस गुनी, है (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्रीयों पुरुषों तथा नपुंसक वैसे ही मनुष्य योनिक स्त्री पुरुष तथा नपुंसकों, वैसे ही देवकी स्त्री तथा पुरुषों और वैसे ही नारकी के नपुंसकों इन में कौन २ कमी ज्यादा

मणुस्सित्थिओ संखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतासिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण जलयरीण, थलयरीण खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण पुढवि काइय एगिंदिय तिरिक्ख-

तथा विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे मनुष्य पुरुष, २ उस से मनुष्य स्त्रियों संख्यात गुनी, ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, ४ उस से नारकी नपुंसक असंख्यातगुने, क्योंकि संख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश की राशी प्रमाण है ५ उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुने, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश की राशी उस प्रमाण हैं, ६ उससे तिर्यंच योनिक स्त्री संख्यातगुनी क्यों कि तीन गुनी हैं, ७ उस से देव पुरुष असंख्यातगुने क्यों कि वहुत वडी प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाणे हैं, ८ उस से देवीयों संख्यातगुनी क्यों कि बत्तीसगुनी है, ९ उस से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनन्तगुने, निगोद आश्रिय (५) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक जीवों जलचर की

जोणिय णपुसकाण जाव वणस्सतिकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय नपुसगाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण, तेइंदिय चउरिंदिय पचेंइदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्ज गुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा थलयर तिरिक्खजोणित्थीओ सखेज्जगुणाओ, जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्ख-

स्थलचर की तथा खेचर की स्त्रीयों, तैसे ही तिर्यंच परुषों जलचर स्थलचर तथा खेचर पुरुषों, तैसे ही तिर्यंच नपुसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया, बेइन्द्रिय यावत् पचेन्द्रिय नपुंसक, जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक, इन सब में कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब मे थोडे खेचर पुरुष, २ उस से खेचरनी सख्यातगुनी, ३ उस से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४ उस स स्थलचरनी सख्यातगुनी, ५ उस से जलचर पुरुष सख्यातगुने, ६ उस से जलचरनी सख्यात-गुनी, ७ उस से खेचर नपुसक सख्यातगुने, ८ उस से स्थलचर नपुंसक सख्यातगुने, ९ उस से जलचर नपुंसक सख्यातगुने, १० उस से चउरिन्द्रिय विशेष धिक, ११ उस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, १२ उस से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, १३ उस से तेउकाया असंख्यातगुनी, १४ उस से पृथ्वीकाया विशे

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा, थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पंचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पतिकाया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न—अहो भगवन्! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है? उत्तर—अहो गौतम! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

अणतगुणा ॥ एतासिण भते ! मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाण अकम्मभूमियाण अतरदीवियाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतरदीविकाणं मणुस्स णपुसकाण कम्मभूमगाणं, अकम्मभूमगाण अतरदीविकाणय कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमक मणुसित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाए एतेसिण दोण्णि तुल्ला सव्वत्थोवा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाओ एतेसिण दोण्णावि तुल्ला सखज्जगुणा, हरिवास रम्मकवास अकम्म-

६ उस से भरत एरवत क्षेत्र की स्त्रीयों परस्पर तुल्य और संख्यातगुनी क्यों कि सत्तावीस गुनी हैं ७ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य भरत एरवत से सख्यातगुने अधिक, ८ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह स्त्री यों परस्पर तुल्य उस से सख्यातगुनी अधिक हैं क्योंकि सत्ताइस गुनी हैं, ९ उस से अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक असंख्यातगुने, १० उस से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य नपुंसक दोनों असख्यातगुने अधिक, ११ उस से हरीवास रम्यक वास के मनुष्य नपुंसकों दोनों परस्पर तुल्य सख्यातगुने अधिक, १२ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य नपुसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से भरतेरावत के मनुष्य नपुसको परस्पर तुल्य सख्यातगुन, १४ उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के मनुष्य नपुंसको परस्पर तुल्य भरतएरावत से सख्यातगुने अधिक [७] प्रश्न—अहो भगवन् ! देवता की स्त्रीयों सामान्य

ॐ

जोणिणीयाओ संखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका, संखेज्जगुणा, थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पंचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

पाधिक, १६ उस से अप्काया विशेषाधिक, १८ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (६) प्रश्न—अहो भगवन्! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतर्द्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतर्द्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है ? उत्तर—अहो गौतम ! अंतर्द्वीप के मनुष्य स्त्री व पुरुषों तथा मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य हैं और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिक हैं, २ उनसे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उन से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, एव तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमक मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा ॥ एतासिण भंते ! देवित्थीण भवणवासीण वाणमंतरीण जोइसिण वेमाणिणीण देवपुरिसाण भवणवासीण जाव वेमाणियाण सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाण अणुत्तरोववाइयाण, नेरइय णपुंसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय

नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १२ उस से आठवे सहस्रार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १३ उस से सातवे महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १४ उस से पांचवी नरके नेरीये असंख्यातगुने, १५ उस से छठे लांतक देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उस से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने १७ उस से पांचवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १८ उस से तीसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुन, १९ उस से चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उस से तीसरे सनत्कुमार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उस से दूसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उस से दूसरे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उस से दूसरे देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २४ उस से प्रथम देवलोक के देवता संख्यात गुने, २५ उस से प्रथम देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २६ उस से भवनपति देवता असंख्यात

भूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाय एतेण दोण्णिवि तुल्ला सखेज्जगुणा, हमवते हेरण्णवते अकम्मभूमक मणुस्सित्थीओ मणुस्स पुरिसाय दोवितुल्ला सखेज्जगुणा, भरहेरवत कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, भरहेरवय मणुस्सित्थीयाओ दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि सखेज्जगुणा, अतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्स णपुसका

पने, भवनपति की स्त्रीयों वाणव्यन्तर की स्त्रीयों ज्योतिषी की स्त्रीयों तथा वैमानिक की स्त्रीयों तथा देवता पुरुषो भवनपति से वैमानिक तक तथा सौधर्म देवलोक से लगाकर सर्वार्थसिद्ध तक, तथा नारकी नपुसकों रत्नप्रभा से सातवी नरक तक इन सब में कौन २ कम ज्यादा बराबर विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! १ सब से थोडे अनुत्तर विमान वासी देव पुरुषों, २ उन से ऊपरकी ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ४ उस से नीचे के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरन देवलोक के देवता संख्यातगुने, ७ उस से दशवे प्राणत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ८ उस से नववे आणत देवलोक के देवता संख्यातगुना, ९ उस से सातवी नारकी के नेरीये नपुसक असंख्यातगुना, १० उस से छठी

असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए नेरइया अस-
खेज्जगुणा महिंदे कप्पे देवपुरिसा असखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवपुरिसा सखेज्जगुणा
दोच्चा पुढविनेरइय णपुसका असखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देव पुरिसा असखेज्जगुणा ईसाणे,
कप्पे देवित्थियाओ सखेज्जगुणीओ सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा, सखेज्जगणा, सोधम्मे कप्पे देवि-
त्थियाओं सखेज्जगुणाओ भवनवासि देवपुरिसा असखेज्जगुणा, भवणवासि देवित्थियाओ
सखेज्जगुणीओ, इमीसे रयणप्पभा पुढवि नेरइया असखेज्जगुणा, वाणमतर देवपुरिसा अस-

मनुष्य की स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों, कर्मभूमी अकर्मभूमी अतर्द्वीप के पुरुषों, देवता की स्त्रीयों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा प्रथम दूसरे देवलोक की स्त्रीयों, तथा देव पुरुषों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी सौधर्म देवलोक यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक के देवता नरक के नपुंसको तथा रत्नप्रभा से यावत् तमस्तमः प्रभा नरक के नेरीये, इन में कौन २ किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतरद्वीप के मनुष्य और स्त्रीयों परस्पर तुल्य है, २ देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक हैं, ३ हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और कुरु क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ४ हेमवय

णपुंसकाण जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइय णपुसगाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया देवपुरिसा, उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा, तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, अहे सत्तमाए पुढविए नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, छट्ठीए पुढवीए नेरइय नपुसका असंखेज्जगुणा, सहस्सारेकप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पेदेवा असंखेज्जगुणा, पंचमाए पुढवीए नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, लंतएकप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए नेरइय णपुसका

गुने, २७ उस से भवनपति की देवीयों संख्यातगुनी, २८ उस से पहिली नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २९ उस से वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुने, ३० उस से वाणव्यन्तर की देवीयों संख्यातगुनी, ३१ उस से ज्योतिषी देवता संख्यातगुने, ३२ उस से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिकी स्त्रीयों जलचर स्थलचर और खेचर की स्त्रीयों, तिर्यंच योनिक पुरुष, जलचर स्थलचर और खेचर पुरुष, तिर्यंच योनिक नपुंसक पृथ्वीकाय—अपकाय—तेउकाय—वायुकाय वनस्पतिकाया तिर्यंच योनिक नपुंसक, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय नपुंसक, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक जलचर स्थलचर और खेचर नपुंसक, कर्मभूमी मनुष्य की अकर्मभूमी मनुष्य की यावत् अन्तर्द्वीप

संहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमकाण अकम्मभूमकाणं अतरदीवकाण मणुस्स णपुंसकाण, कर्म्मभूमिकाण अकम्मभूमि काण अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाणमंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीण, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसियाण वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइयणपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिस्सय एतेण दोवितुल्ला

सख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारहवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठा देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

खेज्जगुणा वाणमंतरदेवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवपुरिसा सखेज्जगुणा, जोतिसिय देवित्थीओ सखेज्जगुणाओ॥ एतेसिण भंते! तिरिक्खजोणित्थिणं जलयरीण थलयरीण खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाण जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सइकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणियणपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसकाण तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाण चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, पचेंदिय णपुंसकाण, जलयराण थलयराण

एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और वास क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ५ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य के पुरुषों परस्पर तुल्य है और इस क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ६ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रीयों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक हैं, ७ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य है और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक है, ८ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह की मनुष्य स्त्रीयों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक है, ९ उन से अनुत्तर विमान के देवता संख्यातगुने, १० उन से ऊपर की त्रिक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से मध्य की त्रिक के देवता संख्यातगुने, १२ उन से नीचे की त्रिक के देवता

खहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अंतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमकाणं अकम्मभूमकाण अंतरदीवकाण मणुस्स णपुंसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाणं अंतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाणमंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीणं, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमंतराण जोतिसियाण वेमाणियाण, सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइयणपुंसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अंतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसाय एतेण दोवितुल्ला

संख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठा देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

भवनवासि देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवपुरिसा संखेज्जगुणा, वाणमंतर देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा जोइसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका संखेज्जगुणा

४४ उन से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४५ उन से स्थलचरनी संख्यातगुनी, ४६ उन से जलचर पुरुष असंख्यातगुना, ४७ उस से जलचरनी संख्यातगुनी, ४८ उन से वाणव्यंतरदेव संख्यातगुना, ४९ उन से वाणव्यंतर की देवी संख्यातगुनी, ५० उन से ज्योतिषी देव संख्यातगुने, ५१ उन से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी, ५२ उन से खेचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५३ उन से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५४ उन से जलचर नपुंसक संख्यातगुना, ५५ उन से चौरिंद्रिय विशेषाधिक, ५६ उन से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५७ उन से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५८ उन से तेउकाया असंख्यातगुना,

थलयर णपुंसका संखेज्जगुणा जलयर णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिया णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया णपुंसगा विसेसाहिय, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइया णपुंसका विसेसाहिया, वणस्सइकाइया एगिंदिए तिरिक्खजोणिय णपुंसका अनंतगुणा ॥ ४० ॥ इत्थीणं भंते ! केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भाणिय, एव पुरिसस्सवि णपुंसकस्सवि संचिट्ठणा पुणरवि तिण्हपि जहा पुव्विं भाणिया अतर तिण्हपि जहा पुव्विं भणिय, तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणिय पुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरुवाहियाओ, मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाओ

५९ उस से पृथ्वीकाया विशेषाधिक, ६० उस से अप्काया विशेषाधिक, ६१ उस से वाउकाया विशेषाधिक, ६२ उस से वनस्पतिकाया एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुना ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेद की कितने काल की स्थिति है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार पहिले एकादेश आदेश कही वैसे ही यहां भी स्त्री पुरुष नपुंसक वेद की अलग २ स्थिति कह देना वैसे ही अंतर भी कह देना ॥४१॥

स वातीसइरूत्ता|हियाओ देविस्थियाओ देवपुरिसेहिंतो, भत्तीसगुणाओ बत्तीसइरूत्ताधियाओ
तिविहस्सु होइ भेदो ठिई संचिट्ठणंतरप्पबहु वेयाण बंधठिई वेदेतहाकिंपगारय ॥ सेच तिविहा
ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥इति जीवाभिगम बितिओ पडिवत्तीओ सम्मत्त॥ २॥ *

तिर्यंचणी तिर्यंच से तिगुनी, मनुष्यणी मनुष्य से सत्ताइसगुनी, और देवांगना देवता से बत्तीसगुनी जानना
यह १ वेद के भेद, २ स्थिति, ३ संचिठन, ४ अंतर, ५ अल्पाबहुत्व, ६ बन्ध स्थिति, ७ और विषय
यह सात द्वार कर वेद नामक जीवाभिगम शास्त्र की दूसरी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ २ ॥ ० ०

॥ तृतिया पडिवृत्ति ॥

तत्थ जे ते एव माहसु चउविधा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तजहा—नेरतिया, तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा ॥ १ ॥ से किंत नेरइया ? नरइया सत्तविधा पण्णत्ता तजहा—पढम पुढवि नेरइया, दोच्चा पुढवि नेरइया, तच्चा पुढवि नेरइया, चउत्था पुढवि नेरइया, पचमा पुढवि नेरइया, छट्ठा पुढवि नेरइया, सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ २ ॥ पढमेण भते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता

अब तीसरी प्रतिपत्ति कहते हैं जो ऐसा कहते हैं कि चार प्रकार के ससारी जीवों हैं वे ऐसा कहते हैं कि नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ये चार प्रकार के जीवों हैं ॥ १ ॥ प्रश्न—नारकी किसे कहते हैं ? उत्तर—नारकी के सात भेद कहे हैं जिन के नाम प्रथम पृथ्वी के नारकी, दूसरी पृथ्वी के नारकी, तीसरी पृथ्वी के नारकी, चौथी पृथ्वी के नारकी, पांचवी पृथ्वी के नारकी, छठो, पृथ्वीके नारकी व सातवी पृथ्वी के नारकी ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! प्रथम पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! प्रथम पृथ्वी का नाम धम्मा और गोत्र रत्नप्रभा है + प्रश्न—अहो भगवन् !

+ जो अनादि काल से अर्थ रहित प्रसिद्धिमें आये हैं उसे नाम कहना और अर्थ सहित होवे सो गोत्र है

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एव एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥२॥इमाण रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व बालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिष्टा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तमः प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभावर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, बालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख बीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीतं बत्तीसं अट्ठावीसं-तहेव वीसच अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकंडे, पंकबहुले कंडे, आव बहुलेकंडे ॥५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे, वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वीपिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो अपन रहते है सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, २ वज्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रत्नप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एवं एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥ २॥इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व बालु प्रभा गोत्र है चौथी का अजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिठा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तम प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभाचर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, बालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख वीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेण पण्णत्ता ॥ एव एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीस-तहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकडे,पंकब-हुले कडे, आव बहुलेकडे ॥५॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे,वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है,तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वीपिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो अपन रहते हैं सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

स्ते, अके फलिहे, रिट्ठेकंडे ॥ ६ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते, एव जाव रिट्ठे ॥ ७ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पकबहुले कंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ आव बहुले कंडे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकागारे पण्णत्ते ॥ ८ ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवी कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ता, एव

काण्ड, ३ वैडूर्य काण्ड, ४ लोहिताक्ष काण्ड, ५ मसारगल्ल काण्ड, ६ हंसगर्भ काण्ड, ७ पुलाक काण्ड, ८ सोगंधिक काण्ड, ९ ज्योतिरत्न काण्ड, १० अंजन काण्ड, ११ अंजन पुलाक काण्ड, १२ रजत काण्ड, १३ जातरूप काण्ड, १४ अंक काण्ड और १६ रिष्ट काण्ड यह सोलह भेद खर काण्ड के हुए ॥ ६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में पहिला रत्न काण्ड कितने प्रकार का है ! उत्तर—अहो गौतम ! रत्न काण्ड का एकही आकार कहा है, यों रिष्ट काण्ड पर्यंत सब का जानना ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वह एकही प्रकार का है प्रश्न—अहो भगवन् ! अप्बहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! उस का भी एकही भेद कहा है ॥ ८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के कितने

जाव अहेसत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता, एवं एतेण अभिलावेणं सव्वासि पुच्छा ? ॥ इमा गाहा अणुगन्तव्वा—तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवंति पचूण सतसहस्सं पचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे ॥ १० ॥ अत्थिण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अह

भेद कहे हैं ? उत्तर–अहो गौतम ! शर्कर प्रभा पृथ्वी एक प्रकार की है यों नीचे की सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ९ ॥ प्रश्न–अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं यों शर्कर प्रभा में पच्चीस लाख, वालुकप्रभा में पन्नरह लाख, पंक प्रभा में दश लाख, धूम्रप्रभा में तीन लाख, तमःप्रभा में एक लाख, नरकावास में पांच कम और तमस्तमःप्रभा में पांच नरकावास हैं ये अनुत्तर, महालय व महा नरकावास हैं इन के नाम—काल, महा काल, रौरव, महा रौरव और अप्रतिष्ठान ॥ १० ॥ प्रत्येक पृथ्वी नीचे घनोदधि आदि का सद्भाव है या नहीं इस का प्रश्न करते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे पिण्डभूत पानी का समूह रूप घनोदधि, पिण्डभूत वायु का समूह रूप घनवात, विरल परिणाम को

घमोदधितित्रा घणवातेतित्रा तणुवातेसित्रा, उवासतरेतित्रा ? हृता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेणं भते ! रयणप्पमाए पुढवीए खरकन्डे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेणं भते ! रयप्पमाए पुढवीए रयणकन्डे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कजोयण सहस्स बाहल्लेण पण्णत्ते ? एव जाव रिट्ठे ॥ इमीसेण भते ! रयप्पमाए पुढवीए पकबहुले कन्डे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असीति जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भते ! रयण-

घन वायु के समूह रूप तनुवात और शुद्ध आकाश रूप अवकाशांतर है क्या ? उत्तर—हां गौतम ! ऐसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी संबंधी जो खरकाण्ड है उस का जाडपना कितना है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का जाडपना सोलह हजार योजन का है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकांड कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का जाडपना है यों रिष्ट पर्यंत कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का पंक बहुल काण्ड की कितनी जाडाइ है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का चौरासी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! अपबहुल काण्ड की जाडाइ कितनी है ? उत्तर—

प्पभाए पुढवीए आयबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असीतिं जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयण सहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात केवइय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, एव तणुवातेति उवासंतरेवि ॥१२॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्करप्पभाए पुढवीए, घणवाते केवइए पण्णत्ते?

अहो गौतम ! अस्सी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का घनोदधि जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! असंख्यात हजार योजन का जाडा है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वीस हजार योजन का जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा कहा ? उत्तर—अहो गौतम !

गोयमा ! असखेज्ज इ जोयणसहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ, एव तणुवाएवि उवास-
तरेवि जहा सक्करप्पभाए पुढवीए, एव जाव अहेसत्तमा ॥ १३ ॥ इमीसेण भंते !
रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए खेतछिन्नेण छिज्जमाणाए
अत्थि दव्वाइ वण्णओ काल नील लोहित हालिद्द सुक्किलाइ, गधतो—सुब्भिगधाइ
दुब्भिगधाइ, रसतो—तित्त कडुय कसाय अबिल महुराइ, फासओ—कक्खड मउय
गरुय लहुय सीत उसिण णिद्ध लुक्खाइ, सठाणतो परिमडल वट्ट तस चउरस
आययसठाण परिणयाइ, अण्णमण्णबद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ अण्णमण्णउगाढाइ

असख्यात हजार योजन का है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमाःपृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस के विभाग करते हुवे उन के द्रव्य क्या वर्ण से काले, नीले, लाल, पीले व शुक्ल हैं, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले हैं, रस से तिक्त, कटुक, कषाय, अम्बिल व मधुर हैं, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रुक्ष स्पर्शवाले हैं, संस्थान से और परिमडल, वर्तुल, त्र्यस, चोरस व लम्बगोल है ? और क्या वे परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे, परस्पर अवगाहे हुवे, परस्पर स्नेह से बंधे

अण्णमण्णासिणेह पडिबद्धाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कडस्स सोलस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त छिएण छिज्ज तचेव जाव ? हता अत्थि एव जाव रिट्ठस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पकबहुलस्स कडस्स चउरासिति जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ एव आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्स बाहल्लस्स ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिस्स वीस जोयणस्ससहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेदे त व एव घणवातस्स असखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेण छिज्जमाणाए

हुवे व परस्पर संबध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं ऐसे ही खर काण्ड सोलह हजार योजन का है उस का प्रश्न करना और उस के द्रव्य भी वैसे ही यावत् परस्पर बंधे हुए हैं ऐसेही रिष्ट काण्ड पर्यंत कहना इसी तरह रत्नप्रभा पृथ्वीका चौरासी हजार योजनका पंक बहुल काण्ड का मानना और अस्सी हजार योजन का अप्बहुल काण्ड का भी जानना रत्नप्रभा पृथ्वी का बीस हजार योजन का घनोदधि असख्यात हजार योजन का घनवात तनुवात व आकाशांतर जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है उस के

अत्थि दव्वाइ वण्णतो जाव घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि एवं घणोदहिस्स, वीसजोयणसहस्स बाहल्लस्स, घणवातस्स असंखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स, एवं उवासंतरस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरि संठिया पण्णत्ता॥इमीसेणं भंते!रयणप्पभा पुढवि खरकंड किं संठिते पण्णत्ता?गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते। इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किं संठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते, एवं जाव रिट्ठ, एवं पंकबहुले

विभाग करते हुवे उन के द्रव्य वर्ण से काले, नीले, पीले, लाल व सफेद यावत् परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही रहे हुवे हैं ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी के बीस हजार योजन का घनोदधि, असंख्यात हजार योजन का घनवात, तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमः पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है? उत्तर—अहो गौतम! इसका संस्थान झालर के आकार है अर्थात् विस्तीर्ण वलयाकार है प्रश्न—अहो भगवन ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का खर काण्ड का संस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है ?

आठबहुलेवि घणोदधिवि घणवाएवि उवासतरेवि, सव्वे झल्लरिसंठिया पण्णत्ता, सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवी किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरिसंठिया पण्णत्ता ॥ सक्करप्पभाएणं भंते ! पुढवी घणोदधि किं संठिये पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिये पण्णत्ते एवं जाव उवासतरे जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वता, एवं जाव अहे सत्तमाएवि ॥ १५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ केवतिय अबाधाए लोयंते पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसहिं जोयणेहिं

उत्तर—अहो गौतम ! झालर का है, ऐसे ही रिष्ठ पर्यंत सोलह प्रकार के रत्नों का, पंक बहुल, अप्-बहुल काण्ड का, घनोदधि घनवात, तनुवात व आकाशांतर सब का झालर का संस्थान जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का क्या संस्थान कहा है? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान कहा ऐसे ही शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि यावत् आकाशांतर पर्यंत कहना जैसे शर्करप्रभा की वक्तव्यता कही वैसे ही सातवीं तमस्तमः प्रभा पर्यंत सब का कहना ॥ १८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के अन्त से कितना दूर लोक का अन्त (पर्यन्त) कहा है? उत्तर अहो गौतम ! बारह योजन लोक का अन्त कहा हुआ है ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा के अन्त से दूर

अमावल्लोयते पण्णत्ते एवं दाहिणिल्लातो पुरत्थिमिल्लातो, उत्तरिल्लाओ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! तिभागूणेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एवं चतुद्दिसिं॥ वालुयप्पभाएण भंते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ पुच्छा ? गोयमा ! सतिभागेहिं तेरसेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एवं चउदिसिंपि एवं सव्वासिं चउसुविदिसासु पुच्छियव्वं, पंकप्पभाए चोद्दसहिं जोयणहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, छट्ठी सतिभागेहिं पण्णरसहिं

जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरिमांत से कितने दूर लोकांत कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक योजन के तीन भाग करे वैसा एक भाग कम तेरह योजन लोकांत कहा है ऐसे ही चारों दिशा का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! वालु प्रभा की पूर्व दिशा से लोकांत कितना दूर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! तेरह योजन व एक योजन का तीसरा भाग इतना दूर लोकांत रहा हुवा है ऐसे ही वालुप्रभा नारकी की शेष तीनों दिशा का जानना पंकप्रभा की चारों दिशाओं से चौदह योजन पर लोकांत रहा हुवा है, धूम्रप्रभा की चारों दिशाओं से पन्नरह योजन में एक योजन का तीसरा भाग कम का लोकांत रहा हुवा है, तमःप्रभा की चारों दिशाओं से

जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते सत्तमाए सोलसएहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते एवं जाव उत्तरिल्लातो॥१६॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—घणोदधिवलये, घणवायवलये, तणुवाय वलये, ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमंते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तंजहा—एवं चेव जाव उत्तरिल्ले एवं सव्वासिं जाव अहेसत्तमाए उत्तरिल्ल ॥ १७ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छज्जोयणाणि बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

पन्नरह योजन व एक योजन का तीसरा भाग लोकांत रहा हुवा है और सातवी तमस्तमःप्रभा से सोलह योजन पर लोकांत रहा हुवा है ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की पूर्व दिशा के चरमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के तीन भेद कहे हैं घनोदधि वलय, घनवात वलय, व तनुवात वलय प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी की दक्षिण दिशा के चरिमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं घनोदधि, घनवात व तनुवात ऐसे ही सब पृथ्वी की चारों दिशाओं में तीन २ वलय रहे हुवे हैं यों सातवी पृथ्वी का जानना ॥ १७ ॥ प्रश्न— अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की जाडाइ कितनी कही है ? उत्तर—

सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सतिभागाइं छज्जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ वालुयप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं एतेण अभिलावेण पंकप्पभाए सत्तजोयणाइं बाहल्लेण, धूमप्पभाए सतिभागाइं, सत्तजोयणाइं पण्णत्ते, तमप्पभाए तिभागूणाइं अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, अहेसत्तमाए अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, ॥ १८ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्कर-

अहो गौतम ! छ योजन की जाडाइ कही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ योजन व एक योजन का तीसरा भाग की जाडाइ कही है वालुक प्रभा की पृच्छा ? सात योजन में तीसरा भाग कम की जाडाइ है पंक प्रभाकी सात योजनकी है धूम्रप्रभा की सात योजन व तीसरा भाग अधिक की, तमःप्रभा की तीसरा भाग कम आठ योजन की व तमस्तम प्रभा की घनोदधि की आठ योजन की जाडाइ है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनवात वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार

प्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! कोसूणाइं पंचजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं, एवं एएणं अभिलावेणं वालुयप्पभाए पंच जोयणाइं बाहल्लेणं प० पंकप्पभाए सक्कोसाइं पंचजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं धूमप्पभाए अद्धछट्ठाइं जोयणाइं, बाहल्लेणं, पण्णत्ताइं, तमप्पभाए कोसूणाइं छजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं अहेसत्तमाए छ जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं ॥ १९ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवायवलये केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! छक्कोसेणं बाहल्लेणं पण्णत्ते एवं एतेणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभाग छक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते वालुप्पभाए तिभागूणे सत्तक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते, पंकप्पभाए पुढवीए सत्तक्कोसे बाहल्लेण

योजन की जाडाइ है, शर्कर प्रभा की पृच्छा, पांच योजन में एक कोश कम की जाडाइ है, ऐसे ही बालुप्रभा की पांच योजन की, पंक प्रभा की पांच योजन व एक कोश, धूम्रप्रभा की पांच योजन दो कोश (साडे पांच योजन,) तमःप्रभा की एक कोश कम छ योजन और तमस्तम प्रभा की छ योजन की जाडाइ कही है ॥ १९ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तनुवात वलयाकार की कितनी जाडाइ कही ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्न प्रभा के तनुवात की छ कोश की जाडाइ है, ऐसे ही शर्कर प्रभा के तनुवात की छ कोश तीसरा भाग, बालुकप्रभा में तीसरा भाग कम सात कोश, पंक प्रभा के

पण्णत्ते, धूमप्पमाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, तमाए तिभागूणे अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, अहे सत्तमाए पुढवीए अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ २० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि वलयस्स छजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएण छिज्जमाणस्स अत्थिदव्वाइ वणउ काल जाव ? हंता अत्थि॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि वलयस्स सतिभाग छजोयण बाहल्लस्स खेत्तछेएण छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि॥एवं जाव अहे सत्तमाए ज जस्स बहल्ल॥

तनुवात की सात कोश की जाडाइ, धूम्रप्रभा में सात कोश व तीसरा भाग, तम:प्रभा में तीसरा भाग कम आठ कोश और तमस्तम प्रभा में आठ कोश की जाडाइ जानना ॥ २० ॥ प्रश्न–अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय छ योजन का जाडा है उस को क्षेत्र छेद से छेद देने से उन के द्रव्यों से वर्ण काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या हैं ? उत्तर–हां गौतम ! वैसे ही है प्रश्न–अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का वलय की जाडाइ छ योजन व एक योजन के तीसरा भाग अधिक की है इस का छेद देने से इस के द्रव्य वर्ण से काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या है ? उत्तर-हां गौतम! वैसेही हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना, इस में जहां २ जितना जाडपना है उतना जानना प्रश्न–अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात साडेचार योजन का जाडा है

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवायवलयस्स अद्ध पंचजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेदेण छिज्ज जाव हंता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमाए जजस्स बाहल्लेण, एव तणुवात बलयस्सवि जाव अहे सत्तमा जजस्स बाहल्ल ॥ २१ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलये किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार संठाण संठित पण्णत्ते, जेण इम रयणप्पभ पुढविं सव्वतो समं तास परिक्खिवित्ताण चिट्ठति एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधि वलये णवर अप्पाण पुढविं सपरिखिवि-त्ताण चिट्ठति ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात वलए किं संठिते पण्णत्ते गोयमा ! वट्टवलयागारे तहेव जाव जेण इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि-वात

उस का छेद करने से उस के द्रव्य वर्ण से काले वर्णवाले यावत् परस्पर संबंधवाले हैं क्या ? उत्तर-हां गौतम ! वैसे ही हैं यों सातवी नारकी के घनवात का कहना, परंतु जितना जितना जाडपना है उन को उतना जाडपना कहना ऐसे ही तनुवात वलय का सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि का संस्थान कैसा है ? उत्तर अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार (चूडी जैसा) संस्थान है यह घनोदधि रत्नप्रभा पृथ्वी के चारों तरफ घेर कर रहा हुवा है ऐसे ही सातों पृथ्वी के घनोदधि का जानना प्रश्न—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का

खिवलय सव्वतो सम तास परिक्खिवित्ताण चिट्ठइ, एव जाव अहे सत्तमाए घणवातवलय ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए तणुवातवलये किं सठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार सठाण सठिए जाव जेण इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलय सव्वतो सम तास परिक्खिवित्ताण चिट्ठति, एव जाव अहेसत्तमाए तणुवात वलय ॥ २२ ॥ इमाण भते ! रयणप्पभा पुढवी केवतिय आयामविक्खभेण पण्णत्ता ? गोयमा ! असखेज्जाइ जोयण सहस्साइ आयामविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता एव जाव

घनवात का संस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि चारों तरफ घेराया हुवा रहा है यों सातों पृथ्वी के घनवात का जानना प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का तनुवात वलय का क्या संस्थान कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार संस्थान कहा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात चारों तरफ से घेराया हुवा है यों सातों पृथ्वी के तनुवात का जानना ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की लम्बाइ चौडाइ कितनी कही है? अहो गौतम ! असंख्यात योजन की लम्बाइ चौडाइ कही प्रश्न—अहो भगवन् ! इसकी परिधि कितनी कही ? उत्तर अहो गौतम! असंख्यात

अहे सत्तमा ॥ २३ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी अतेय मज्झेय सव्वत्थ समा बाहल्लेण पण्णत्ता ? हंता गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी अतेय मज्झेय सव्वत्थसमा बाहल्लेण, एव जाव अधो सत्तमा ॥ २४ ॥ इमीसेण भंते ! रयप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववन्नपुव्वा सव्वजीवा उववन्ना ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा, नो चेवण सव्वजीवा उववण्णा, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए॥इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढ पुव्वा सव्व

सातवी पृथ्वीतक सब का जानना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में क्या समान है ? उत्तर—हां गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में समान है ऐसे ही सातों पृथ्वी का जानना ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सब जीवों सामान्यपना से काल के अनुक्रम से पहिले उत्पन्न हुवे अथवा अथवा सब जीवों समकाल में उत्पन्न हुवे ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें काल के अनुक्रम से सब जीवों उत्पन्न हुए परंतु समकाल में सब जीवों नहीं उत्पन्न हुवे हैं क्यों कि सब जीव एक ही काल में रत्नप्रभा नारकी में उत्पन्न होजावे तो अन्य देव नारकी के भेद का अभाव होवे यों सातवी नारकी तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का सब जीवने काल के अनुक्रम

जीवेहिं विजढा? गोयमा! इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्वजीवेहिं विजढा, एवं जाव अहेसत्तमा॥२५॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठ पुव्वा सव्व पोग्गला पविट्ठा? गोयमा! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा, नो चेवण सव्वपोग्गला पविट्ठा, एवं जाव अहेसत्तमाए॥ इमाणं भंते! रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्व पोग्गला विजढा? गोयमा! इमाण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो

स पहिले परित्याग किया अथवा समकाल में क्या परित्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालक्रम से सब जीवोंने परित्याग किया परंतु एक समय में सब जीवोंने परित्याग नहीं किया, ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना॥ २८॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कालानुक्रम से क्या सब पुद्गलोंने प्रवेश किया अथवा समकाल में सब पुद्गलोंने प्रवेश किया? उत्तर—अहो गौतम! कालानुक्रम से रत्नप्रभा पृथ्वी में पुद्गलोंने प्रवेश किया परन्तु एक काल में सब पुद्गलोंने प्रवेश नहीं किया यों सातवी पृथ्वी तक कहना प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालानुक्रम से सब पुद्गलोंने क्या त्याग किया अथवा एककाल में सब पुद्गलोंने त्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा का कालानुक्रम से पहिले सब पुद्गलोंने त्याग किया परन्तु एक

चेत्रण सव्वपोग्गलेहिं विजढा एव जाव अहेसत्तमा ॥ २६ ॥ इमाण भंते ! रयण-प्पभा पुढवी किं सासता असासता ? गोयमा ! सिय सासता सिय असासता ॥ से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ सिय सासता सिय असासता? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासता वण्ण पज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं फास पज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ तचेव जाव सिय सासया सिय असासया, एव जाव अहेसत्तमा ॥ २७ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी कालओ केवचिर होइ? गोयमा ! ण कदाथि णआसि, णकदायि

समय में सब पुद्गलों का त्याग किया नहीं, यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! यह रत्नप्रभा पृथ्वी क्या शाश्वत है या अशाश्वत है? उत्तर—अहो गौतम! स्यात् शाश्वत है स्यात् अशाश्वत है प्रश्न—अहो भगवन्! ऐसा कैसे होवे? उत्तर—अहो गौतम! द्रव्य आश्री शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव आश्री अशाश्वत है इस से अहो गौतम! ऐसा कहा कि रत्न प्रभा पृथ्वी स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! यह रत्नप्रभा पृथ्वी काल से कितनी है? उत्तर-अहो गौतम! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अतीत काल में नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान काल में नहीं है वैसा नहीं और भविष्य काल में नहीं होगी वैसा

णत्थि, णकदाइ णभविस्सइ, भुविंच भवतिय भविस्सइय, धुवा णितया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिता णिच्चा, एवं जाव अहे सत्तमाए॥२८॥इमीसेणं भंते! रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंताओ हेट्ठिल्ले चरिमंते एसणं केवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! असिउत्तर जोयण सतसहस्स अबाधाए अंतरं पण्णत्ते॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ खरकंडस्स हेट्ठिल्ले चारिमंते एसणं केवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ

भी नहीं परंतु यह अतीत काल में थी, वर्तमान काल में है और भविष्य काल में होगी यह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित है, यों सातवी पृथ्वी तक कहना॥२८॥ प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से नीचे के चरिमांत तक अबाधा से कितना अंतर कहा? उत्तर-अहो गौतम! एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से खर कांड के नीचे के चरिमांत तक कितना अंतर कहा? अहो गौतम! सोलह हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से

चरिमताओ रयणस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्क जोयणसहस्स अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरिमताओ वइरस्स कडस्स उवरिल्ल चरिमते, एसण केवइय अबाधाए अतर पण्णत्ते ? गोयमा! एक्क जोयण सहस्स अबाधाए अतरे पण्णते। इमीसेण भत ! रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ वइरस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणसहस्साइ अबाधाए अतरे पण्णत्ते एव जाव रिट्ठस्स ॥ उवरिल्ले पण्णरस जोयणसहस्साइ हेट्ठिल्ले चारिमते सोलस जोयणसहस्साइ ॥ इमीसेण भते !

रत्नकाण्ड के नीचे के चरिमांत तक में कितना अतर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरिमांत से वज्र रत्न काण्ड के उपर के चरिमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर-अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के उपर के चरमांत से वज्र रत्न काण्ड के नीचे के चरमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! दो हजार योजन का अतर कहा यों रिष्ट पर्यंत सब कहना रिष्ट के उपर के चरिमांत तक में पन्नरह हजार योजन, नीचे के चरमांत में सोलह हजार योजन।

रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ पकबहुलस्स कडस्स उवरिल्ले चरिमते एसण अबाधाए केवतिय अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइ अबाहाए अतरे पण्णत्ते हेट्ठिल्ले चरिमते एक्क जोयणसयसहस्सं आवबहुलस्स उवरि एक्क जोयणसयसहस्स हेट्ठिल्ले चरिमते असीउत्तर जोयणसयसहस्स घणोदधिस्स उवरिल्ले असीउत्तर जोयणसयसहस्स हेट्ठिल्ले चरिमते दो जोयणसयसहस्साइ ॥ इमीसण मत ! रयणप्पमाए पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चरिमते दो जोयण सयसहस्साइ हेट्ठिल्ले चरिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ ॥ इमीसेण मते ! रयण-

का अतर कहा प्रश्न इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से पकबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत पर्यंत अबाधा से कितना अतर कहा है ? उत्तर अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अतर कहा है इसके नीचे के चरमांत तक में एक लाख योजन का अबाधा से अतर कहा है अपबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत तक में एक लाख योजन का अतर कहा है और इस के नीचे के चरमांत तक में एक लाख अस्सी हजार योजन का अतर कहा है घनोदधि के ऊपर के चरमांत तक एक लाख अस्सी हजार योजन का अतर और घनोदधि के नीचेका चरमांत तक दो लाख योजनका अतर कहा है रत्नप्रभा पृथ्वी के

प्पभाए पुढवीए तणुवायस्स उवरिल्ले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ अवाधाए अतर पण्णत्ते ॥ हेट्ठिल्ले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ, एव, उवासतरेवि ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरिल्लाओ चारिमताओ हेट्ठिल्ल, चारिमते एसण केवतिए अवाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तर जोयण सयसहस्स अवाहाए अतरे पण्णत्त सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरि घणोदधिस्स हेट्ठिल्ले चारिमते बावण्णुत्तर जोयण सयसहस्स अवाधाए घणवायस्स असखेज्जाइ जोयणसय सहस्साइ पण्णत्ताइ, एव जाव उवासतरस्सवि जाव अहे सत्तमाए, णवर जीसे ज

ऊपर के चरमांत से घनवात के ऊपर के चरमांत तक लाख योजन का अतर होता है और इस के नीचे के चरमांत तक असख्यात लाख योजन का अतर जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से तनुवात के ऊपर के चरमांत तक असख्यात लाख योजन का अतर है और नीचे के चरमांत तक भी असख्यात लाख योजन का अंतर है ऐसे ही आकाशांतर का जानना प्रश्न-अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से नीचे के चरमांत तक कितना अतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख बत्तीस हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से घनोदधि के नीचे के चरमांत तक कितना अंतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्वियों कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तमः प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अन्दर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

उगाहित्ता, हेट्ठावि एग जोयण सहस्स वज्जेत्ता मज्झे अट्ठुत्तरे जोयण सय सहस्से एत्थण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण तीस णिरयावास सयसहस्सा भवतित्ति मक्खाया तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभा णरयेसु वेयणा, एव एएण अभिलावेण उववाजिऊण भाणियव्व ठाणप्पयाणुसारेण जत्थ ज बाहल्ल जत्थिया वा नेरइयावास सयसहस्सा जाव अहे सत्तमाए पुढवीए अहे सत्तमाए मज्झे

विविध प्रकार के सस्थानवाले हैं नीचे का पृथ्वी तल क्षुर जैसा कठोर है, वहां सदैव अधकार है, मात्र तीर्थंकर के जन्म व दीक्षा काल में प्रकाश होता है, तीर्थंकर के कल्याण समय में प्रकाश होता है वहां चद्र सूर्यादि ज्योतिषी का प्रकाश नहीं है, रुधिर, मांस, राध वगैरह के कीचड से नरक का भूमितल लीपा हुवा है, नरकावास बहुत बीभत्स है, अत्यत दुर्गंधमय है, मृत पशु के कलेवर से भी अधिक दुर्गंधमय है काली अग्नि की ज्वालायों नीकलती है, धगधगती कपोत वर्ण जैसे अग्नि की कांति है, वहां का गध रस व स्पर्श अति दु सह व अशुभ है यह असाता वेदना सब नरक में रहा हुई है सब पृथ्वी में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे उन के जाडपने में से नीकालकर शेष रहे सो पोलार समजना और पहिले कहे सो नरकावास जानना यों नीचे की सातवी पृथ्वी में पांच स्थानवाले नरकावास

कहइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तम. प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात

अर्थ

पिहडगसठिया किण्णपुडएसठिया, मुखसंठिया, मुइगसंठिया, णदिमुईगसंठिया, आलिंगसठिया, सुग्घोससठिया, दद्दरसठिया, पणवसठिया, पडहसठिया, भेरीसठिया, झल्लरिसठिया- कतुबकसठिया, नालिसठिया, एव जाव तमाए अहे सत्तमाएण भंते ! पुढवीए नरगा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा-वट्टेय तसाय ॥ २ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरया केवइय बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसहस्साइ

काष्ठा कुटज (तापस लोगों को रहने का स्थान) मुरज [मृदंग विशेष] मृदगं, नदीमुख मृदग, सुघोष (देवलोक की घंटा विशेष) दर्दर वादित्र, पणव-चमड का वादित्र, पडह, भेरी, झल्लरी, कुडरू व घटिका इत्यादि अनेक प्रकार के सस्थानवाले हैं यों छठी तमःप्रभा पृथ्वी पर्यंत कहना प्रश्न—तमस्तमःप्रभा पृथ्वी में नरकावास के सस्थान कौनसे कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं वर्तुलाकार व त्रिकूनाकार है सातवी पृथ्वी में पांच नरकावास आवलिकागत है जिस में अप्रतिष्ठान नरकावास गोल है और शेष चार नरकावास त्रिकून आकारवाले हैं ॥ २ ॥ अब नरकावास का जाडपना कहते हैं

१ मृदंग दो प्रकार की है १ मुकुंद व २ मर्दल जो उपर से संकुचित व नीचे से विस्तार वाली है उसे मुकुंद कहना और उपर नीचे जो समान है वह मर्दल है. इस स्थान मुकुंद मृदंग ग्रहण करना

केवइए कइ अणुत्तरा महति महालया महाणिरया पण्णत्ता, एवं पुच्छियव्वं वागरेयव्वंपि तहेव छट्ठी सत्तमासु काऊ अगणिवण्णा भाणियव्वा॥ २॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका किं संठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-आवलियप्पविट्ठाय आवलिय बाहिराय॥ तत्थणं जे ते आवलियपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा-वट्टा तंसा चउरंसा तत्थणं जे ते आवलियबाहिरा ते णाणा संठाण संठिया पण्णत्ता तंजहा अयकोट्ठ संठिया पिट्ठ पयणग संठिया, कंडूसंठिया लोहीसंठिया, कडाहसंठिया, थालीसंठिया

है सब में प्रश्नोत्तर रत्नप्रभा जैसे ही कहना यावत् छठी सातवी पृथ्वी में कापोत वर्ण जैसा अग्नि जानना ॥ २ ॥ प्रश्न अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे तीस लाख नरकावास का कौनसा संस्थान कहा है? उत्तर-अहो गौतम! नरकावास दो प्रकार के कहे हैं-१ आवलिकागत अर्थात् श्रेणी में रहे हुवे और २ आवलिका से बाहिर उन में आठों दिशि में श्रेणि से रहे हुवे नरकावास के तीन भेद कहे हैं १ वर्तुलाकार २ त्रिकून व ३ चोकून और जो आवलिका से बाहिर आठों दिशासे पृथक् रहे उन के संस्थान विविध प्रकारके कहे हैं जिनके नाम-कहते हैं, अयकोष्ट-लोहेका गोला जैसे, रिष्ट पचनक (मदिरा पकाने के लिये जिस भाजन में भाग पकाया जावे वैसा) जैसा, पाक स्थान, रसोइ गृह के आकार से, कडाइ, कडाह यहा कडाइया, स्थाली, पकाने की हंडी, पिहडग जिस में बहुत मनुष्यों के लिये धान्य पकाया जावे,

अद्दे सत्तमाएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—संखेज्जवित्थडेय, असंखेज्जवित्थडाय ॥ तत्थण जे से संखेज्जवित्थडे, सेण एक्क जोयणसहस्स आयाम विक्खंभेण, तिन्नि जोयण सयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं दोण्णिय सत्तावीस जोयणसये तिण्णिकोसे अट्ठावीस धणुसयाइं तेरसय अंगुलाइं अद्धंगुलय च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ तत्थण जे ते असंखेज्जवित्थडा तेण असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेण असंखेज्जाइं जाव परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ ४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

के लम्बे चौडे हैं उनकी परिधि असंख्यात योजनकी है यों तम पृथ्वी पर्यंत कहना सातवी पृथ्वीकी पृच्छा, अहो गौतम ! इसके दो भेद कहे हैं कितनेक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं और कितनेक असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं उस में संख्यात योजन का विस्तार व संख्यात योजन की परिधिवाला एक अप्रतिष्ठान नरकावास है उसकी लम्बाइ चौडाइ एकलाख योजनकी है और तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीनगाउ, एकसो अठ्ठाइस धनुष्य, साढे तेरह अंगुल से कुच्छ अधिक की परिधि है और जो असंख्यात योजन के विस्तारवाले चार नरकावास हैं वे असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और असंख्यात योजन की परिधि है ॥४॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कैसे वर्णवाले

बाहल्लेण पण्णत्ता तंजहा हेट्ठिल्ले चरिमंत घणसहस्स मज्झ झुसिरासहस्स उर्दि संकुइया सहस्स॥ एव जाव अहे सत्तमाए ॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केवइयं आयाम विक्खंभेण केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संखेज्जवित्थडाय, असंखेज्जवित्थडाय । तत्थण जे ते संखेज्जवित्थडा तेण संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ता, तत्थण जे ते असंखेज्जवित्थडा तेण असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ता, एव जाव तमाए ॥

प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास का जाडपना कितना कहा ? उत्तर अहो गौतम ! तीन हजार योजन का जाडपना है उस में एक हजार योजन की नीचे की पीठिका है, एक हजार योजन की पोलार है और एक हजार योजन का ऊपर का मुख संकुचित होता हुआ रहा है यों सब मिलकर तीन हजार योजन का जानना यों सातवी पृथ्वी तक के नरकावास का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास लम्बे, चौडाई व परिधि में कितने कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! कितनेक संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और कितनेक असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं जो संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं उन की परिधि संख्यात योजन की है और जो असंख्यात योजन

एयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरा चेव अकंततराचेव जाव अमणामतराचेव ॥ गंधेण पण्णत्ता ॥ एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ६ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए असिपत्तेइवा, खुरपत्तेइवा, कलंबचीरियापत्तेइवा, कुंतग्गेइवा, तोमरग्गेइवा, नारायग्गेइवा, सूलग्गेइवा, लउडग्गेइवा, भिंडिमालग्गेतिवा सूचिकलाएतिवा, कविअच्छूइवा, विच्छुयकंटइवा, इंगालेइवा जालाइवा, मुम्मुरेतिवा, अच्चेइवा, आलाएतिवा, सुद्धाग-

मृतक देखनेवाला होवे उस की दुर्गंध जैसी क्या नारकी की दुर्गंध है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो गौतम ! नरकावास में इस से भी अधिक अनिष्ट, अकंत यावत् अमनामकारी दुर्गंध है यों सातवी पृथ्वी तक कह देना ॥ ६ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! नरकावास का स्पर्श कैसा है ? अहो गौतम ! जैसे असिपत्र, क्षुरपत्र, कदंब चीरिका (तृण विशेष) भाले की अणी तीर का अग्रभाग, सूल का अग्रभाग, व सोटे का अग्रभाग, सूई का अग्रभाग, भिंडमाल का अग्रभाग, सूई के समूह का अग्रभाग, कवच की

नरया केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालावभासा, गंभीरा लोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा, वण्णेणं पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए अहिमडेतिवा, गोमडेतिवा, सूणगमडेतिवा, मज्जारमडेतिवा, मणुस्स-मडेतिवा, महिसमडेतिवा, मूसगमडेतिवा, आसमडेइवा, हत्थिमडेइवा, सीहमडेइवा वग्घमडेइवा, विगडमडेइवा दीवयमडेइवा, मयकुहिय चिरविणट्ठे, कुणिमवावण्ण दुब्भिगंध किमिजालाउलससत्ते, असुयविलीणविगय बीभत्स दरिसणिज्जे, भवे

करे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! काले, कालाभासवाले, गंभीर लोमहर्षवाले, भयकर, त्रास उत्पन्न करनेवाले व परम कृष्णवर्ण वाले कहे हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना ॥५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कैसे गंधवाले कहे हैं ? उत्तर—जैसे सर्प का मृत कलेवर, गाय का, कुत्ते का, मार्जार का, मनुष्य, का भैंस का, चूहे का, घोडे का, हाथी का, सिंह का व्याघ्र का, विगड का, व चित्त का मृत कलेवर कि जो बहुत काल से पड़ा हुआ होवे, विनष्ट होवे, जिस का मांस सडकर विगड गया होवे, जिस में बहुत कीडे पड गये होवे, अशुचि वमन के क्लेश परिणाम का कारनवाला

देवे ण महिड्ढीए जाव महाणुभावे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्टु इम केवलकप्प जंबुद्दीव दीव तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ताण हव्वमागच्छेज्जा, सेण देवे ताए उक्किट्ठाये तुरिताए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धूयाए ताए जइणाए दिव्वाए देवगइये वीईवयमाणे २ जहण्णेण एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण छम्मास वीतिवएज्जा, अत्थेगइए णरगे वीइवएज्जा, अत्थगइये णरगा नो वीइवएज्जा ए महालयाण गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए नरगा पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए अत्थेगतिय नरग विइवएज्जा अत्थगइए नरग

कुच्छ अधिक परिधिवाला यह जम्बूद्वीप है ऐसा जम्बूद्वीप को कोई महर्धिक यावत् महानुभाव देवता तीन चप्पुटि बजावे उतने समय में इक्कीसवार परिभ्रमण करके आजावे ऐसी त्वरित, चपल, प्रचण्ड, शीघ्र, तथा उद्धूत जयवंत दीव्य देवगति से जाते हुए जघन्य एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक नरकावास का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अहो गौतम ! नरकावास इतने बडे कहे हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना उस में कितनेक नरकावास का उल्लंघन करते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं करते हैं अप्रतिष्ठान नरकावास एक लक्ष योजन का है इस से उस का उल्लंघन होवे, परंतु अन्य चार असंख्यात योजन के हैं जिस का उल्लंघन

सूत्र

फासेणं, भवे एतारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतराचेव जाव अमणामतराचेव फासेणं पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ७ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरका कं महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण्णं जंबूद्दीवे दीवे सव्वदीव समुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे, तेल्लपूव संठाण संठिय वट्टे पुक्खरकण्णिया संठाण संठिये वट्टे, पडिपुण्ण चंद संठाण संठिए, वट्टे रहचक्कवाल संठाण संठिए एक्कं जोयणसयसहस्सं आयाम विक्खंभेणं जाव किंचि विसेसाहियं परिक्खेवेणं

अर्थ

फलों का अग्रभाग वृश्चिक का कांटा धूम्ररहित अग्नि, अग्नि की ज्वाला, अग्नि के कन, अग्नि से भिन्न बनी हुई ज्वाला, जला हुआ कोयला और शुद्धाग्नि इस प्रकार का क्या नरक का स्पर्श है ? अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर यावत् अमनापतर स्पर्श नरकावास का कहा है ॥ ७ ॥ पहिले नरकावास का विस्तार बतलाया था, इस का विशेष विवरण के लिये पुनः उपमा से जानने के लिये प्रश्न करते हैं प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कितने बडे कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र के मध्य में रहा हुआ सब से छोटा, तेल से तला हुवा पुवा समान रथ चक्र जैसा गोल अथवा कमल की कर्णिका अथवा प्रतिपूर्ण चंद्र के आकार जैसा गोल, एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा यावत् तीन लक्ष योजन से

उरगेहिंतो उववज्जाति, इत्थियाहिंतो उववज्जाति, मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति ? गोयमा ! असण्णिहिंतो उववज्जाति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति एव एतेण अभिलावेण इमा गाहा घोसेयव्वा असण्णी खलु पढम दोच्च चसिरीसिवा, ततियपक्खी सीहा ज्वंति चउत्थी उरगा पुण पचमीजति, छट्ठी च इत्थियाओ, मच्छा मणुयाय सत्त मिजंति जाव अह सत्तमा पुढवी णेरइया णो असण्णीहिंतो उववज्जाते जाव णो इत्थियाहिंतो उववज्जाति मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति ॥ १० ॥ इमीसण भते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया एक समएण केवइया उववज्जाति ? गोयमा !

आकर उत्पन्न होते हैं, मत्स्य में से उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं ? उत्तर असन्नी से यावत् मत्स्य व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं इस का खुलासा निम्नोक्त गाथा कर करते हैं असन्नी पचेन्द्रिय पहिली नरक में आवे, सरिसर्प से गोधा, नकुल प्रमुख दूसरी नरक तक आवे, पक्षी तीसरी तक जाते हैं सिंह व्याघ्रादि चतुष्पद चौथी नरक तक जाते हैं, उरपरिसर्प पांचवी तक जाते हैं, स्त्री छठी में है, और मत्स्य व मनुष्य सातवी में जाते हैं यावत् सातवी पृथ्वी में असन्नी तिर्यंच पचेन्द्रिय यावत् स्त्री उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु मत्स्य व मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! एक समय में रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक दो

मो वीइवएज्जा ॥ ८ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववइरामया पण्णत्ता, तत्थण नरएसु बहवे जीवाय पोग्गलाय अवक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासताण ते नरगा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कतो हिंतो उववज्जंति? उववातो सव्वो भाणिऊण, ततो पुच्छा किं असण्णीहिंतो उववज्जंति, सिरिसवेहिंतो उववज्जंति, पक्खीहिंतो उववज्जंति, चउप्पएहिंतो उववज्जंति,

नहीं कर सकते हैं ॥ ८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास किस वस्तु मय हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! सब वज्र रत्नमय है उस में बहुत सूक्ष्म बादर पृथ्वी काया के जीव व पुद्गल आते हैं और जाते हैं परंतु उनका संस्थान एकही रूप सदैव रहता है, इससे द्रव्य से शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक मानना ॥ ९ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या असंज्ञी में से उत्पन्न होते हैं परिसर्प अर्थात् गोधा, नकुलादि में से उत्पन्न होवे हैं, पक्षी में से आकार उत्पन्न होवे हैं चतुष्पद में से आकर उत्पन्न होवे स्त्री में से

पुढवीए नेरइयाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरो-गाहणा पण्णत्ता तंजहा-भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थणं जासा भवधा-रणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं सत्तधणूइ, तिण्णिरयणीओ छच्च अंगुलाइं, तत्थणं जसा उत्तरवेउव्विए से जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओरयणीओ दोच्चाए भवधारणिज्जे जहण्णए

की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य अढाइ हाथ की है और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ तीसरी वालुकप्रभा की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट बांसठ धनुष्य दो हाथ ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत सब की भव धारनीय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग व उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग और उत्कृष्ट पंकप्रभा की भवधारनीय ६२ धनुष्य २ हाथ उत्तर वैक्रेय १२५ धनुष्य, धूम्र प्रभा की भव धारनीय १२५ धनुष्य उत्तर वैक्रेय २५० धनुष्य तमःप्रभा की भव धारणीय २५० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय ५०० धनुष्य तमस्तमःप्रभा की भव धारनीय ५०० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय १००० धनुष्य की भव पाथड़े की संख्या कहते हैं पहिली नरक के १३, दूसरी में ११, तीसरी में ९, चौथी में ७, पांचवी

जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जति, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया समय समय अवहीर माणा २ केवइय कालेण अवहिता सिया ? गोयमा ! तेण असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेवण अवहिता सिया जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए

तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से समय २ में एक २ नीकालते कितने समय में सब नारकी पूर्ण हो जावे ? उत्तर—अहो गौतम ! नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से प्रति समय एक २ नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पर्यंत नीकाले तथापि नारकी के जीव कभी होवे नहीं, होवे नहीं व होवेंगे भी नहीं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी की शरीर अवगाहना कितनी बडी कही ? उत्तर—अहो गौतम ! उस के शरीर की अवगाहना दो प्रकार की कही, भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में जो भवधारनीय अवगाहना है, वह जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात धनुष्य तीन हाथ व छ अंगुल की है, और उत्तर वैक्रय जघन्य अंगुलका संख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्दरह धनुष्य व अढाइ हाथकी है शर्करप्रभा पृथ्वी

धणुसयं, उत्तरवेउव्विया अड्डाइज्जाइ धणुसयाइ, छट्ठीए भवधारणिज्जे अड्डाइज्जाइ धणुसयाइ उत्तरविउव्विया पंचधणुसयाइ, सत्तमाए भवधारणिज्जे, पंचधणुसयाइ उत्तरवेउव्विया धणुसहस्स ॥१२॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए नेरइयाण सरीरया किं

अंगुल और तेरवे पाथडे में ७ धनुष्य, तीन हाथ ६ अंगुलकी यह उत्कृष्ट भवधारनीय अवगाहना हुइ उत्तर वैक्रेय स्थान से दुगुनी जानना इसी तरह आगे नरक में पाथडे के नारकी की अवगाहना जानना जिस नरक में जितनी अवगाहना का अधिकपना होवे उसको उस नरक के पाथडे से भाग देना जो भाग आवे वह प्रत्येक पात्थडे में बढाना ॥१२॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! नारकी के शरीरका संघयन क्या

१ रत्नप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हाथ	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जातो रयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहण्णेण अंगुलस्ससंखेयभाग उक्कोसेण एक्कतीसधणूइं एक्कारयणी ॥ तच्चाए भवधारणिज्जे, एक्कतीस धणूइं एक्का रयणी, उत्तर वेउव्विया बासट्ठिधणूइं दोण्णियरयणीओ ॥ चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठि धणूइं दोण्णिरयणीओ, उत्तरवेउव्विया पणवीस धणुसय, पंचमीए भवधारणिज्जे पणवीस

में ९ छठी में तीन व सातवी में एक पाथडा है यों सब मीलाकर ४९ पाथडे हुवे इन में सब की भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग इस में पहिली नरक के प्रथम पाथडे की उत्कृष्ट अवगाहना तीन हाथ की इस के आगे प्रत्येक पाथडे में ५६॥ बढते जाना जिस से दुसरे पाथडे में एक धनुष्य एक हाथ व साडे आठ अंगुल की हुई, तीसरे में एक धनुष्य तीन हाथ व १७ अंगुल की चौथे पाथडे में दो धनुष्य दो हाथ १॥ अंगुल की, पांचवे पाथडे में तीन धनुष्य दश अंगुल की, छठे पाथडे में तीन धनुष्य दो हाथ १८॥ अंगुल की, सातवे में चार धनुष्य एक हाथ व तीन अंगुल की, आठवे पाथडे में चार धनुष्य तीन हाथ व ११॥ अंगुल की नववे पाथडे में पांच धनुष्य एक हाथ २० अंगुल की, दशवे पाथडे में ६ धनुष्य ४॥ अंगुल का, इग्यारवे पाथडे ६ धनुष्य २ हाथ १३ अंगुल की बारहवे पाथडे में ७ धनुष्य २१॥

संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव संघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर संघायत्ताए परिणमंति, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेणं भंते ! रयण-प्पभाए पुढवीए णेरइयाणं सरीरा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थणं जेते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता ॥ तत्थणं जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंड संठिया पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसणं भंते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाणं सरीरगा केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेणं पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ संघयण में से एक भी संघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परंतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयंकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा संस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! संस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुंड संस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

२ शर्करप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
धनुष्य	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हाथ	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ बालुकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
धनुष्य	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
हाथ	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अंगुल	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७
धनुष्य	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
हाथ	१	१	२	३	०	१	२
अंगुल	०	२०	१६	१२	८	४	०

७ तमस्तम प्रभा

पाथडा	१
धनुष्य	५००
हाथ	०
अंगुल	०

५ धूम्रप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५
धनुष्य	६२	७८	९३	१०९	१२५
हाथ	२	०	३	१	०
अंगुल	०	१२	०	१२	०

६ तम प्रभा

पाथडा	१	२	३
धनुष्य	१२५	१८७	२५०
हाथ	०	२	०
अंगुल	०	०	०

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेर्सि सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेत उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ! उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

एव जाव अहेसत्तमा ॥ १५ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण सरीरया केरिसया गधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेतिवा तंचेव जाव अहे सत्तमा ॥ १६ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरइयाणं सरीरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडितत्थविविच्छाविया, खरफरुसा ज्झाम झुसिरा फासेण पण्णत्ता एव जाव अहे सत्तमा॥ १७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरइयाण केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमति ? गोयमा !

वाला, यावत् परम कृष्ण वर्ण कहा है यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥१५॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी के शरीर की कैसी गंध कही ? उत्तर–अहो गौतम ! जैसे मृत सर्प का कलेवर वगैरह जैसा पाठ्ठे नरक स्थान की गंध कही वैसे ही जानना यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इन रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का कैसा स्पर्श कहा है ? उत्तर–अहो गौतम ! फटी हुई कांति रहित, अति कठिन दग्ध छाया व बहुत छिद्रवाली चमडी उन नेरियों की कही है ॥ १७ ॥ प्रश्न–अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसे पुद्गलों श्वासपने ग्रहण करते हैं ? उत्तर–अहो गौतम ! जो अनिष्ट, यावत् अमनाप पुद्गलों हैं उन को श्वासोश्वासपने ग्रहण करते हैं

गाउयाइं उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइं, सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेण तिण्णिगाउयाइं उक्कोसेण अद्धुट्ठाइं गाउयाइं एवं अद्धगाउयाइं २ परिहायति जाव अहे सत्तमाए, जहण्णेण अद्धगाउयं उक्कोसेण गाउयं ॥ २४ ॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा-वेदणा समुग्घाए कसाय समुग्घाए, मरणातिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥२५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया केरिसयं खुह-पिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? गोयमा! एकमेकस्सणं रयणप्पभा पुढवी निरइयस्स

साढे तीन गाउ, वालुक प्रभा के नारकी जघन्य अढाइ गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ पंक प्रभा के नारकी जघन्य दो गाउ उत्कृष्ट अढाइ गाउ, धूम्रप्रभा के नारकी जघन्य देढ गाउ उत्कृष्ट दो गाउ, तम प्रभा के नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट देढ गाउ और तमस्तमप्रभा के नारकी जघन्य आधा गाउ उत्कृष्ट एक गाउ ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी को कितनी समुद्घात कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार समुद्घात कही हैं जिन का नाम वेदना कषाय, मारणांतिक व वैक्रय यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसी क्षुधा पिपासा

असम्भाव पथवणाए सव्वोदधीवा सव्व पोग्गलेवा आसयसि पक्खिवज्जा णो चेवण से रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए त्रितिचे वासित्ताधि तण्हे वासिचा, एरिसियेण गोयमा! रयण-प्पभाए जे णेरइया खुहप्पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाए ॥२६॥ छमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया किं एकत्त पभू विउव्वित्तए पुहुत्तपि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एकत्तपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तपि पभू विउव्वित्तए, एगत्त विउव्वेमाणा एगमह मोग्गररूवेवा, मुसुढरूवेवा, एव मोग्गर मुसुढि करकत्त आसि

अनुभवते हुवे विचरते हैं। उत्तर—अहो गौतम! असत्य कल्पना से सब समुद्र का पानी अथवा सब पुद्गल उन के मुख में डाल देने से वे तृप्त नहीं होते हैं, तृषा रहित नहीं होते हैं अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी ऐसी क्षुधा पिपासा का अनुभव करते हुवे विचरते हैं यों सातों पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ अब वैक्रेय शरीर की वक्तव्यता कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है या अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक रूप की विकुर्वणा करने में भी समर्थ हैं और अनेक रूपकी विकुर्वणा करने भी में समर्थ हैं जब एक रूप की विकुर्वणा करते हैं तब एक बडा मुद्गर, मुसढी, करवत, खड्ग, शक्ति, हल, गदा, मुशल

सत्ती हल गया मुसल चक्क णाराय कुंत तोमर सूल लउड भिंडिमालाय जाव भिंडमाल रूवा जाव पुहुत्तंपि विउव्वेमाणा मोग्गर रूवाणिवा जाव भिंडमालरूवाणिवा ताइं सखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं संबद्धाइं नो असंबद्धाइं, सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहणमाणा वेदण उदीरति उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडूय, फरुस णिठुर चंड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास एव जाव धूमप्पमाए पुढवीए छट्ठ सत्तमासुण पुढवीसु नेरइया पभू महंताइं लोहिय कुंथुरूवाइं वयरामयतुंडाइं गोमय

चक्र, बाण, भाला, तोमर, त्रिशूल, लकुट, भिंडिमाल के रूप बनाने में समर्थ हैं और बहुत रूप वैक्रेय करते हुवे बहुत मुद्गर यावत् बहुत भिंडिमाल के रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है वे संख्यात रूप बना सकते हैं, परंतु असंख्यात नहीं बना सकते हैं, अपने शरीर की साथ संबंधवाले बना सकते हैं परंतु संबंध बिना के नहीं बना सकते हैं, अपने रूप जैसे रूप बनावे परंतु असदृश रूप बनावे नहीं, एसे रूप की विकुर्वणा करके परस्पर काया की घात करते हुए वेदना की उदीरणा करे उज्वल, विपुल, प्रगाढ, कर्कश, कटुक, कठोर, निष्ठुर, चंड, तीव्र, दुःखकारी, विषम व असुरूप सहन नहीं होसके वैसी वेदना अनुभवते हुवे विचरते हैं एसे ही पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी तक जानना छठी व सातवी पृथ्वी में नारकी लाल कुंथुरूप वज्रमय,

कीडसमाणाइं विउव्वति कीड समाणाइं विउव्विचा अन्नमन्नस्सकाय समतुरंगेमाणा २ खायमाणा २ सयपोरगाकिमियाइ चालेमाणे २ अतो २ अणुप्पाविगमाणा २ वेयण उदीरयति उज्जल जाव दुरहियास ॥२७॥ इमीसेण भते! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया किं सीय वेयण वयति, उसिण वेयण वेयाति, सिउसिण वेयण वेयति? गोयमा! णोसीय वेयण वेयति उसिणवेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति अप्पयरा उण्ह-जोणिया एव जाव वालुप्पभाए, ॥ पकप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! सीयवेयण वेयति उसिणवेयण वेयति नो सीउसिण वयण वेयति, ते बहुयरगा, जे

पांचवाले गोमय के कीडे समान रूप की विकुर्वणा करके परस्पर एक दूसरे के शरीर में प्रवेश करे, नीकले, आरोहण करे, समान घोडे जैसे आक्रमण करे, एक२ के शरीर का भक्षण करते हुए पूर्वोक्त उज्वल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना प्रगट भोगवते हुवे विचरते हैं॥२७॥ प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या सीत वेदना वेदते हैं, ऊष्ण वेदना वेदते हैं या शीतोष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! शीत व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं परतु उष्ण वेदना वेदते हैं ऐसे ही शर्करप्रभा तथा वालुक प्रभा का जानना पंकप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत वेदना व ऊष्ण वेदना यों दो प्रकारकी वेदते हैं परतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इसमें ऊष्ण वेदना वेदनेवाले बहुत हैं और शीत वेदना वेदनेवाले थोडे हैं

सूत्र

उसिणवेयण वेयति ते थोवयरगा, जे सीयवेयण वेयति ॥ धूमप्पभाए पुच्छा? गोयमा ! सीयपि वेयण वेयति उसणपि वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति ॥ ते बहुयरगा जे सिय वेयण वेयति ते थोवयरका जे उसिण वेयण वेयति ॥ तमाए पुच्छा ? गोयमा ! सीय वेयणा वेयति, नो उसिण वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयणा वेयति एव अह सत्तमाए, णवर परमसीय ॥२८॥ इमीसेण भते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइए केरिसय निरयभव पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! तेण तत्थ निच्च भीया निच्चवहिया निच्चतासिया निच्च तत्था निच्चउव्विग्गा निच्चउद्दुया निच्चपरमसुभमतुल-

अर्थ

धूम्रप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत व उष्ण वेदना वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इस में शीत वेदना वेदनवाले बहुत जीव हैं और उष्ण वेदना वेदनेवाले थोडे जीव हैं तम प्रभा की पृच्छा? अहो गौतम ! शीत वेदना वेदते हैं परंतु उष्ण व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वी में कहना परंतु इस में परम शीत वेदना का कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा नरक भव का अनुभव करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वे वहां सदैव भय भीत बने हुवे, निरंतर चकाक्षोल, स्वतः ही त्रास पाते हुए परमाधामी से निरंतर त्रास पाये हुवे निरंतर उद्वेगवाले, निरंतर उपद्रववाले, किंचिन्मात्र सुख को नहीं प्राप्त करते हुवे अशुभ, अतुल व अनुपद

मणुभवं निरयभवं पच्चणुभवमाणा विहरंति एवं जाव अहे सत्तमाएण पुढवीए ॥२९॥ अहे सत्तमाएण पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे ॥ तत्थ इमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दंड समादाणेहिं कालमासे कालकिच्चा अप्पइट्ठाणे निरए नेरइयत्ताए उववन्नाए तंजहा—रामे जमदग्गिपुत्ते, दढाऊले छइपुत्ते, वसू उवरिचरे, सुभूमे कोरव्वे, बंभदत्ते चुलणीसुए, तेणं तत्थ णेरइया जाया, काला कालो जाव परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, तेणं तत्थ वेयणं वेयंति

मत्र का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत जानना ॥ २९ ॥ सातवी पृथ्वी में अनुत्तर महान महा आलयवाले पांच नरकावास कहे हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, रोरुप, महा रोरुप व अप्रतिष्ठान इन पांच नरकावास में पांच महान पुरुषों, अनुत्तर, प्राणी हिंसा करने वाले, क्रूर अध्यवसाय स काल के अवसर में काल कर के उत्पन्न हुए जिन के नाम—१ जमदग्नि का पुत्र राम जिस को परशुराम कहते हैं, २ छाया पुत्र दाढाक ३ वसुराजा उपरिचर ४ कौरवा सुभूम चक्रवर्ती और ५ बारहवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती चूलणी का पुत्र ये पांचों वहां कृष्ण वर्णवाले यावत् परम कृष्ण वर्णवाले नारकीपने उत्पन्न हुए वे वहां

उज्जल विउल जाव दुरहियास ॥ ३० ॥ उसिण वेयणिज्जेसुण भंते ! नेरइया केरिसय उसिणवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा! से जहा नामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलव जुगव अप्पायंके थिरग्ग हत्थे दढपाणिपायपासपिट्ठंतरो परिणए लवणपवणजइण (वायामण) पमद्दण समत्थे तल जमल जुयल बाहु (फलिह-निभबाहु) घणणिचित वलिय वट्ट खंधे चम्मेट्ठग दुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते (कायगुत्ते) उरस्स बलसमन्नागए छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावि णिउण, सिप्पोवगए एग मह अयपिंड उदगवारसमाण गहाय त ताविय कोट्टिय २ उब्भिंदिय २

उज्जल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना का अनुभव करते हैं ॥ ३० ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! नारकी कैसी उष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर अहो गौतम ! जैसे कोई तरुण बलवंत, युवान, अल्प रोगवाला, हाथ का अग्रभाग जिस का स्थिर है, हाथ, पाँव, पीठ, पार्श्व व जंघा जिस की दृढ है, अतिशय गोल स्वरूपवाला, चमडे के गोटिके धन मुस्त्यादिक से घडे हुवे गात्रोंवाला, अतरिक उत्साह वीर्य से युक्त, दृढ हृदयवाला, बेतालवृक्ष का युगल होवे वैसा समान सरल, लम्बे पुष्ट दो हाथवाला, अति शीघ्र गति व परिश्रम में समर्थ, किसी वस्तु के मर्दन करने में समर्थ, बहत्तर कला में निपुण, विरुद्ध रहित कार्य का करनेवाला, अच्छी तरह क्रिया का करनेवाला, अनुसंधान करने में निपुण ऐसा लोहकार का पुत्र, एक

मुणिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण अद्धमास साहणेज्जा, सेण त सीयभूय आउमयेण सडासएण गहाय असब्भाव पट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेसुय नरएसु पक्खिवेज्जा, सेण त उम्मिसिय णिमिसिएण णिमिसियतरेण पुणरवि पच्चु-द्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव फासेज्जा पविलीणामेव फासेज्जा पविद्धत्थमेव फासेज्जा (पासेज्जा) नो चेवण सचाएइ अविरायवा अविलीणवा अविद्धत्थवा पुणरवि पच्चुद्ध-रित्तए से जहा वा मत्तमातगे दुपाए कुजरे सट्ठिहायणे पढम सरय काल समयसिवा चरिम

घाटे घडे जैसा लोहे का गोला अग्नि में तपाकर उसे घन से कूटकर बारबार बनावे यों एक दिन, दो दिन यावत् पन्नरह दिन तक उस लोहे के गोले को अग्नि में तपाकर घन से घडे पीछे अच्छी तरह उसे ठंडा किये बाद उसे सडासी से पकड कर ऊष्ण वेदनावाले नारकी के शरीर में रखे रखते समय ऐसा विचार करे कि मैं बाब मेषोन्मेष (पलक) में उस गोलेको शरीरमें से नीकालूंगा परंतु इतने में उस गोलेको उस शरीरकी अग्निसे मक्खन जैसे गलता पिगलता हुआ भस्म होता हुवा देखे परतु उसे ऐसाही नीकाल सके नहीं नरकमें ऐसी ऊष्ण वेदना कही है यह दृष्टान्त असद्भाव (काल्पित) है इसके विशेष खुलासाके लिये दूसरा दृष्टान्त कहते हैं जैसे साठ वर्षकी वयवाला तरुण मयम शरत्कालमें अथवा चरिम ग्रीष्म-ऋतु(ज्येष्ठ मास)में

निदाहकाल समयसिवा, उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउर झुसिए (झुसिए) पिवासिए दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरिणिं पासिज्जा चाउक्कोण समतीर अणुपुव्वसुजाय वप्पगंभीर सीतल जल सछन्न (पउम) पत्तभिसमुणाल बहुउप्पलकुमुय णलिण सुभग सोगंधिय पुंडरीय (महापुंडरीय) सयपत्त सहस्स-पत्त केसर फुल्लोवचिय छप्पयपरिभुज्जमाण कमल अच्छ विमल सलिल पुण्ण परिहत्थ भमत मच्छकच्छभ अणेग सउणगण मिहुण विचरिय (विरइय) सद्दुन्नइ महुर सरनाइय (तं पासइ) पासित्ता तं उगाहइ उग्गाहित्ता, सेणं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तिण्हंपि

कृष्णता से तप्त बना हुवा, तृषा से पीड़ित बना हुवा, दावाग्नि की ज्वाला से डराया हुवा, आतूर अवस्था दुर्बल, व थका हुवा, मदोन्मत्त, सूंडादंड से पानी पीने का इच्छित ऐसा हस्ती एक चार कोनावाली, विषमपना रहित, अनुक्रम से नीचा गई अच्छा, गंभीर व शीतल जलवाला पानी से ढकाते हुवे कमलपत्रों व कमलनालवाली (किसी मत में पद्मलता) बहुत सूर्य विकासी, चंद्र विकासी, वैसे ही अन्य कमल, पुंडरिक कमल, महा कमल शत कमल, श्याम कमल, सो पांखड़ो का कमल, केसर समान कमल, भ्रमर जिनके पास रहे वैसे कमलवाली, स्वच्छ स्फटिक समान निर्मल पानी से परिपूर्ण, अविधय मत्स्य कच्छ से भरी हुई, अनेक पक्षियों के समुह व उस के गुंजन से गुंजायमान बनी हुई बावड़ी को देखकर

पविणज्जा, खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुतिंवा रतिंवा धितिंवा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए सकममाणे२ सायासुक्ख बहुले-यावि विहरिज्जा एवामेव गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति तंजहा-अयागराणिवा, तंबागराणिवा, तउगराणिवा, सीसागराणिवा, रुप्पागराणिवा, हिरण्णागराणिवा, सुवण्णागराणिवा, कुंभागराणिवा, [कुंभारागराणीवा कुंभारागिणीवा] तवागिणीवा, इट्टयागिणीवा, कवेलुयागिणीवा, लोहारंबरीसेवा, जंतवाडचुल्लीवा, हंडयालिच्छाणिवा, सोंडियालिच्छाणिवा, णलागणीतिवा, तिलागणीतिवा, कुसागणीतिवा

उन में बैठे उस में अपनी तृषा शांत करे, वहां रहे हुवे सहुक प्रमुख तृण विशेष उस में अपनी क्षुधा शांत करे, जलपान से परिताप भी शांत करे, सब तृषा शांत होने से सुखपूर्वक निद्रा लेवे, प्रचला करे और उस में शरीर स्वस्थ करे, उठावेठ करने रूप धृति प्राप्त करे, बाहिर व अंतर से शीतल होवे, निवृत्ति में सात्ता की प्राप्ति कर, आति से उत्पन्न हुवा जो दाह उस रहित बन सुख भोगवता हुवा विचरे अहो गौतम ! ऐसे ही असद्भाव कल्पना से उष्ण वेदना भोगते हुए नरक के नेरियों को नरक से निकालकर इस मनुष्य लोक में लोह को गालने का महा भुगा नामक पात्र, ताम्बा गालने का पात्र, साम्बा गालने का पात्र, चांदी गालने का पात्र, सुवर्ण गालने का पात्र, कुंभकार का निभाड़,

तत्ताइ समजोइभूयाई फुल्लकिंसुयसमाणाइ उक्का सहस्साई विणिमुयमाणाइ जाला सहस्साइ, मुच्चमाणाइ, इंगाल सहस्साइ पविक्खरमाणाइ अतो२ हुहूयमाणाइ चिट्ठति ताइ पासति ताइ पासित्ता ताइ उगाहइ ताइ उगाहित्ता सेण तत्थ उण्हपि पावणिज्जा तण्हपि पविणिज्जा, खुहपि पविणिज्जा, जरंपि पविणिज्जा दाहपि पविणिज्जा, णिदाएज्जवा पयलाएज्जवा सइवा रइवा धिइवा मतिवा उवलब्भेज्जा सीए सीयभूए सकममाणे२ सायसुक्ख बहुलेयावि विहरेज्जा, भवे एयारूवो सिया? णोइणट्ठे समट्ठे गोयमा! उसिणवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियचेव उसिण वेयण पच्चणुब्भव

इटों पकाने का स्थान, कुंभकार की अग्नि, तुषा की अग्नि, इटपकाने की अग्नि, कवेलु पकाने की अग्नि, लोहा तपाने की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाने की अग्नि, हटों की अग्नि, सोंडक अग्नि, नडाग्नि, तिल की अग्नि तीळसरों की आग, इत्यादि सब ज्योतिभूत बनी हुई किंशुक पुष्प समान रक्त बनी हुई, हजारों गुल्ले जिस में से नीकळती हावे वैसी हजारों ज्वालायों नीकालती हुई, हजारों अंगार फेलाती हुई एसी धगधगायमान अग्नि देखकर उस में नरक के जीव प्रवेश करे तो वे जीवों वहां उष्णता, तृषा, क्षुधा, ज्वर, दाह शांत करे और इस से वहां निद्रा लेवे, साता प्राप्त करे, रति, धृति, मति प्राप्त करे उस का शीत, शीतभूत मानते हुवे सुख पूर्वक रहे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर उष्ण वेदना

माणा विहरति ॥३१॥ सीय वेयणिज्जेसुण भंते! नरएसु नेरइया केरिसय सीयवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! से जहा नामए कम्मारदारएसिया तरुणे जुगवं बलवं जाव सिप्पोवगए एक मह अयपिंड दगवारसमाण गहाय ताविय २ कुट्टिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण मास हणिज्जा सेण त उसिण उसिणब्भूय आयामएण सडासएण गहाय असब्भावपट्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु नरएसु पक्खिविज्जा सेय ओम्मिसियनिम्मिसिएण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव पासिज्जा त चेवण जाव णो सचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए॥से जहा नामए मत मायगेवा तहेव जाव सुक्खबहुलयावि विहरेज्जा एवामेव गोयमा! असब्भाव पट्ठवणाए सीयवेयणेहिंतो णेरइए उवट्टिएसमाणे जाइ इमाइ इहमणुस्स लोए हवति तजहा

नारकी के जीव वेदते हैं ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शीत वेदना वेदते हुवे नारकी कैसी शीत वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे कोई युवावस्थावाला, बलवंत यावत् सब कला में निपुण लोहकार एक लोहे का गोला को अग्नि में डालकर कुटे. यों एक दिन, दो दिन, तीन दिन यावत् एक मास पर्यंत कूटे, फीर उसे लोह की सडासी से पकडकर शीत वेदना वाले नारकी के शरीर पर इस विचार से रख कि मेषोन्मेष (पल) मात्र में पीछा ले लेऊगा, परतु वह तत्काल विखर जाने से उसे पीछा लेने को समर्थ नहीं हो

हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपडलाणिवा हिमपडलपुंजाणिवा तुसाराणिवा, तुसार पुंजाणिवा हिमकूडाणिवा हिमकूडपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासइ पासित्ता ताइं उग्गाहइ उग्गाहित्ता से तत्थ सीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए सकममाणे२ साय सुक्ख बहुले यावि विहरेज्जा गोयमा ! सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइयातो अणिट्ठतरियं चेव सियवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥२२॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहन्नणवि उक्कोसेणवि ठिई भाणि-

प्रकता है अथवा जैसे साठ वर्षवाला हस्ती यावत् बावडी की पास आकर सुख पूर्वक रहे वैसे ही शीत वेदनावाले नारकी को वहां से उठा कर इस मनुष्य लोक में हिम, हिम का समुह, हिम के पडल, तुषार, तुषारपुंज, हिम के कूट व हिमकूट के समु' में प्रवेश करावे तो वहां उस की शीत, तृषा, क्षुधा व ज्वर शांत होवे इस से वह वहां निद्रा व प्रचला करे यावत् उष्ण उष्णभूत बनकर सुख भोगता हुवा विचरे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर शीत वेदना नारकी के जीव वेदते हुवे विचरते हैं ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा में नारकी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम की, शर्करप्रभा में जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम,

याव्वा जाव अहे सत्तमाए ॥ ३३ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए नेरइया अणतर वालुकप्रभा में जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, पंकप्रभा में जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपम, धूम्रप्रभा में जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम, तमःप्रभा में जघन्य सत्तरह सागरोपम उत्कृष्ट बावीस सागरोपम और तमस्तमःप्रभा में जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अब साथों नरक के ४९ पाथडे की पृथक् २ स्थिति कहते हैं रत्नप्रभा पृथ्वी के पहिले पाथडे की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की दूसरे में जघन्य दश लाख वर्ष उत्कृष्ट ९० लाख वर्ष, तीसरे में जघन्य ९० लाख वर्षकी उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्षकी, चौथे में जघन्य पूर्व क्रोड वर्ष उत्कृष्ट एक सागर के दश भाग कर वैसा एक भाग की, पांचवे में जघन्य सागरोपम का दशवा भाग उत्कृष्ट दो दशवा भाग, छठे में जघन्य सागरोपम का दो दशवा भाग उत्कृष्ट तीन दशवा भाग, सातवे में जघन्य तीन दशवा भाग उत्कृष्ट चार दशवा भाग, आठवे में जघन्य चार दशवा भाग उत्कृष्ट पांच दशवा भाग, नववे में जघन्य पांच दशवाभाग उत्कृष्ट छ दशवा भाग, दशवे में जघन्य छ दशवाभाग उत्कृष्ट सात दशवा भाग, इग्यारहवे में जघन्य सातदश भाग उत्कृष्ट आठदश भाग बारहवे में जघन्य आठदश भाग उत्कृष्ट नवदश भाग और तेरहवे पाथडेमें जघन्य एक सागरोपम के९दशवे भाग, उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति है ऐसेही अन्यनरक में जितनी स्थिति होवे उसे जितने पाथडे होवे उतने से भागकर फिर प्रत्येक पाथडे में एक २भाग बढाते हुवे सब पाथड स्थिति कहना यों सब पृथ्वी में जानना जिस का यंत्र ॥ ३३ ॥ अहे

१

रत्नप्रभा १३ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार	१० लाख	९० लाख	क्रोड									
	विभाग	वर्ष	वर्ष	वर्ष	पूर्व	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	३/७	१/८	१/९
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार	९० लाख	क्रोड पूर्व	०									
	विभाग	वर्ष	वर्ष		० १/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	१/७	१/८	१/९	१

२

सर्करप्रभा ११ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सागर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	विभाग	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
उत्कृष्ट	सागर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	विभाग	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०

३

वालुक प्रभा ९ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९
	सागर	३	३	३	४	४	५	५	६	६
जघन्य	विभाग	०	४/९	-/९	३/९	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९
	सागर	३	३	४	४	५	५	६	६	७
उत्कृष्ट	विभाग	४/९	८/९	३/९	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९	

४

पंक प्रभा ७ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७
	सागर	७	७	७	८	८	९	९
जघन्य	विभाग	-	३/७	६/७	-/७	५/७	१/७	४/७
	सागर	७	७	८	८	९	९	१०
उत्कृष्ट	विभाग	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७	

५

धूम्रप्रभा ५ पाथडे		१	२	३	४	५
जघन्य	सागर	१०	११	१२	१४	१५
	विभाग	०	२/५	४/५	१/५	३/५
उत्कृष्ट	सागर	११	१२	१४	१५	१७
	विभाग	२/५	४/५	१/५	३/५	०

६

तमःप्रभा ३ पाथडे		१	२	३
जघन्य	सागर	१७	१८	२०
	विभाग	०	२/३	१/३
उत्कृष्ट	सागर	१८	२०	२२
	विभाग	२/३	१/३	०

७

तमस्तमःप्रभा १ पा०
जघन्य सागर २२
उत्कृष्ट सागर ३३

उव्वट्टिय कहिं गच्छति कहिं उववजति किं नेरइएसु उववज्जति किं तिरिक्ख जोणिएसु उववजाति एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिय तहा इहवि जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पुढवी फास पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय आउफास पच्चणुब्भवमाणा विहराते ? गोयमा ! अनिट्ठं जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए एवं जाव वणस्सई फास अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ १६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभा

भगवन् ! रत्नप्रभा नरक में से नारकी नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे उद्वर्तना व्युत्क्रांति (पन्नवणा) में कही, वैसे ही उद्वर्तना यहां कहना यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा अप्काया के स्पर्श का अनुभव करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनाम अप्काया का स्पर्श करते हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ऐसे ही वनस्पतिकाया के स्पर्श पर्यंत सातवी नरकी तक सब पृथ्वीयों में कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

पुढवीए दोच्चं पुढविं पणिहाय सव्व महंतिया बाहल्लेणं सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ? हंता गोयमा ! इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए दोच्चपुढविं पणिहाए जाव सव्व खुड्डिय सव्वंतेसु? हंता गोयमा ! दोच्चाणं भंते ! पुढवी तच्च पुढवी पणिहाय सव्व महंतिया बाहल्लेणं पुच्छा? हंता गोयमा ! दोच्चाणं पुढवी जाव खुड्डिया सव्वंतेसु ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी ॥ अहे सत्तमिं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ॥ २७ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया तेणं भंते ! जीवा महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा चेव महावेयण तरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामंतेसु तहेव

यह रत्नप्रभा पृथ्वी दूसरी शर्कर प्रभा से लम्बाइ में क्या बडी है व चौडाइ में क्या छोटी है ? हां गौतम! वैसे ही है, क्यों कि रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और शर्कर-प्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और रत्नप्रभा पृथ्वी एक रज्जु की लम्बी चौडी है और शर्करप्रभा पृथ्वी दो रज्जु की लम्बी चौडी है यों इस अभिप्राय से छठी पृथ्वी तक कहना यावत् सातवी पृथ्वी की अपेक्षा छठी पृथ्वी लम्बाइ चौडाइ में सब से छोटी है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में जो पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक जीवों हैं वे क्या महा कर्म महा आश्रव

जाव महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा- चेव एव जाव अहेसत्तमाए ॥ २८ ॥- इमीसेण भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एक्कमेक्कंसि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणत खुत्तो, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवी णवर जत्थ जत्तिया णरक ॥ गाहा ॥ पुढवी ओगाहित्ता नरगा सठाणमेव बाहल्ले विक्खभ परिक्खेवो वण्णो गधोय फासोय ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए

व महा वेदनावाले क्या है ? हां गौतम ! वे भी वैसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के एक २ नरकावास में सब प्राण, भूत, जीव व सत्व पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार वे जीवों उत्पन्न हुए यों सातवी पृथ्वी तक के पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया का जानना विशेष में जहां जितने नरकावास हैं वहां उतने कहना. अब गाथा का अर्थ करते हैं पृथ्वियों कितनी, पृथ्वी में अवगाह कर जो नरक स्थान हैं सो बतलाया, नरक का संस्थान, उस का जाडपना, चौडाइ, परिधि, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, नरक कितनी बडी है सो उपमा से बतलाए, जीव व पुद्गल

उवमा, देवेण होइ कायव्वा जीवाय पोग्गलावक्कमति, तहसासया निरया ॥ २ ॥ उववाय परिमाण, अवहारुच्चत्तमेव संघयण ॥ संठाण वण्ण गंधे फासे उसास माहारे ॥३॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे तहा समुग्घाए ॥ तत्तोय खुप्पिवासा विउव्वणा वेयणायभए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाण उवम्मं वेयणाय दुविहाय ॥ ठिई उवट्टणा पुढवी उववाओ सव्व जीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ संगहणिगाहाओ ॥ बीउद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ २ ॥ * * * * *

इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया केरिसय पुग्गल परिणाम पच्चणुभव

नरक में उत्पन्न होते हैं, शाश्वत नरकावास, उपपात—एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं और व यहां से उद्वर्तते हैं, नरकावास की ऊंचाइ, नारकी का संघयन, संस्थान, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, श्वासोश्वास, आहार, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, समुद्घात, क्षुधा, तृषा, विकुर्वणा, वेदना, भय, पांच पुरुषों नीचे सातवी नरक में उत्पन्न हुए उन के दृष्टान्त, दो प्रकार की वेदना, स्थिति, उद्वर्तना, पृथव्यादिक के स्पर्श और सब जीवों का उत्पन्न होना इत्यादि कथन इस उद्देशे में कहा है॥ इस तरह नरक के अधिकार का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ४ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसे पुद्गल परिणाम का अनुभव करते हुए विचरते हैं ?

णाणा विहरति ? गोयमा अणिट्ठ जाव अमणामे ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए, एवं णेयव्वं पुग्गल परिणाम ॥गाहा॥ वेयणाय लेसाय णाम गोएय अरई॥भएय सोगे खुहा पिवासाय वाहीय ॥ १ ॥ उस्सासे अणुभावे कोहे माणेय माया लोभेय ॥ चत्तारिय सन्नाओ णेरइयाण तु परिणामा ॥ २ ॥ एत्थ किर अतिवतती नर वसभा केसवा जलयराय । रायाणो मंडलिया जेय महारंभ कोडुंबी ॥ ३ ॥ भिन्नमुहुत्तो नरएसु तिरिय मणुएसु होइ चत्तारि ॥ देवेसु अद्धमासो उक्कोस विउव्वणा भणिया ॥ ४ ॥ असुभा विउव्वणा, खलु नेरइयाणतु होइ सव्वेसिं ॥ सठाणं पिय तेसिं नियमा

अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम पुद्गल का अनुभव करते हुए विचर रहे हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना इस तरह वेदना, लेश्या, नामकर्म, गोत्र कर्म, अरति, भय, शोक, क्षुधा, तृषा, व्याधि, उश्वास, अनुताप, क्रोध, मान, माया, लोभ, आहार, मैथुन, परिग्रह, ये १४ बोल में जानना अब सातवी नरक में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनका कथन करते हैं इस नरक में नरवृषभ केशव (वासुदेव) जलचर मत्स्य मंडलिक राजा कि जो महाआरंभ करनेवाले हैं, सौकरिक, (कसाई) कौटुम्बिक, ऐसे पुरुषों नरक में जाते हैं ॥३॥ अब उत्तर वैक्रेय का व्याख्यान करते हैं नेरीए का वैक्रेय किया अंतर्मुहूर्त तक रहे तिर्यंच मनुष्य का वैक्रेय किया चार अंतर्मुहूर्त तक रहे, और देवका उत्कृष्ट जिनका उत्तर वैक्रेय रहने का काल है॥४॥

हड तु णायव्व ॥ ५ ॥ जे पोग्गला अणिट्ठ, णियमा सो तेसिं होइ अहारो ॥ वेउव्वियं सरीर असंघयण हुंडसंठाण ॥ ६ ॥ असाओ (उप्पाओ) उववन्नो असाओ चेव जहइ निरयभव ॥ सव्वपुढवीसु जीवा, सव्वेसु ठिइविसेसेसु ॥ ७ ॥ उववाएण व साता, नरइओ देवकम्मुणावावि ॥ अज्झवसाणा निमित्त, अहवाकम्माणु भावेण ॥ ८ ॥ तेया कम्मसरीरा, सुहुमसरीराय जे अपज्जत्ता ॥ जीवेण विप्पमुक्का, वच्चंति सहस्ससोभेद ॥ ९ ॥ नरइयाणुप्पाओ, उक्कोस पचजोयण सयाइ ॥ दुक्खेण

सब नारकी को अशुभ विकुर्वणा कही है और उन का संस्थान भी हुंडक जानना ॥ ५ ॥ जो अनिष्ट पुद्गलों हैं उन का आहार नारकी का होता है वैक्रय शरीर होने से संघयन नहीं है और संस्थान हुंडक जानना ॥ ६ ॥ सब नारकी स्थिती में जीव असाता से उत्पन्न होवे और असाता से नरक भव का त्याग करे ॥ ७ ॥ कोइक नारकी का जीव अपने पूर्व भव के परिचित देव के प्रसंग से सुख पावे अथवा समद्दृष्टि होवे तो अध्यवसाय से भी सुख की प्राप्ति करे, अथवा कर्म के अनुभव से अर्थात् तीर्थंकर के जन्म दीक्षा, केवल ज्ञान इत्यादि कल्याण में प्रकाश होने से नारकी सुख का अनुभव करते हैं ॥ ८ ॥ नारीये के मृत्युकालमें तेजस और कार्माण शरीर बिना जो वैक्रय शरीर है वह सूक्ष्म नामकर्म के उदय से बिखर कर हजारों भेद (टुकडे) रूपवन बिखर जाता है ॥ ९ ॥ नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट पांच सो गाउ पर्यंत ऊंचे उछलते हैं नारकी दुःख से भयभीत बने हुए हैं व सदसागम

मिदुयाण, वेयण सतत गाढाण ॥ १० ॥ अच्छिनमीलियमेत्त, नत्थिसुहं दुक्खमेव अणुबद्ध ॥ नरए नेरइयाण, अहोनिस पच्चमाणाण ॥ ११ ॥ अतिसीय अतिउण्ह, अइतण्हा अइखुहा अइभयच ॥ नरए नेरइयाण, दुक्खसताइं अविस्साम ॥ १२ ॥ एत्थय भिन्नमुहुत्तो, पुग्गल असुभायहोइ अस्साओ॥ उववाओउपाओ, अत्थि सरीराय नायव्वा (बोधव्वा) ॥१३॥ सेत नरइया॥तइओ नारय उद्देसओ सम्मत्तो ॥४॥३॥ से किंत तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-एगिंदिय तिरिक्खजोणिया, बेइंदिय तिरिक्खजोणिया, तेइंदिय तिरिक्ख जोणिया, चउरिंदिय

वेदना सहित है ॥ १० ॥ नरक के जीवों को चक्षु टमकावे जितना भी दुःख नहीं है वे दुःख में ही रहे हुवे अहर्निश पचते रहते हैं ॥ ११ ॥ अति शीत, अति उष्णता, अति तृषा, अति क्षुधा, अति भय, ये सब प्रकार के दुःख नारकी को सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ उक्त सब गाथा का संक्षेप में अर्थ बताने के लिये संग्रहणी गाथा कहते हैं भिन्न मुहूर्त पुद्गल, अशुभ, वैक्रय, असाता, उपपात और आंखका टमकाना, यों इस उद्देशे के द्वारों जानना॥१३॥यह नारकीका तीसरा उद्देशा संपूर्ण हुवा॥४॥३॥

प्रश्न—तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—एकेन्द्रिय तिर्यंच

तिरिक्ख जोणिया पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ १ ॥ से किंत एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया? एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया पंचविहा पण्णत्ता तंजहा-पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वणस्सइ काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुम पुढविकाइया एगिंदिया तिरिक्ख जोणिया, बादर पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया। से किं तं सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय

बेइन्द्रिय तिर्यंच, तेइन्द्रिय तिर्यंच चतुरेन्द्रिय तिर्यंच व पंचेन्द्रिय तिर्यंच ॥ १ ॥ प्रश्न एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—एकेन्द्रिय तिर्यंच के पांच भेद कहे पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच प्रश्न—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच, प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त सुहुम पुढविकाइया ॥ सेकिंत बादरपुढविकाइया ? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्ता बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया॥ से त्त बादरपुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २ ॥ सेकिंत आउकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया ? आउकाइयाएकिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता एव जहेव पुढविकाइयाण तहेव चउभेदो ॥ एव जाव वणस्सइकाइया, सेत्त वणस्सइ काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया॥२॥ सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिया?

एकेन्द्रिय तिर्यंच यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया के भेद हुए प्रश्न—बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उन के दो भेद कहे हैं—पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय व अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय यह बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय का कथन कहा यह पृथ्वीकाया एकेन्द्रिय का वर्णन हुआ ॥ २ ॥ प्रश्न—अप्काया एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं जैसे पृथ्वीकाया के चार भेद कहे वैसे ही अप्काया के चार भेद कहना ऐसे ही तेउकाया, वायुकाया व वनस्पतिकाया के भेद जानना ॥ २ ॥ प्रश्न—बेइन्द्रिय तिर्यंच के कितने

बेइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ ४ ॥ सेकिंत पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, थलयर पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय, गब्भवक्कंतिय जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम जलयर पचेंदिय

भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच और अपर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत दो २ भेद कहना ॥ ४ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! तिर्यंच पचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—जलचर, स्थलचर व खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—जलचर के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की पृच्छा, उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—गर्भज जलचर

तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त समुच्छिम पचइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत गब्भवक्कतिया जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कतिय जलयर पचेंइदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तग गब्भवक्कतिय जलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त गब्भवक्कतिय जलयर तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—चउप्पय थलयर पचिंदिय तिरिक्ख-जोणिया, परिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिय ॥ सेकिंत चउप्पय थलयर पचें-

तिर्यंच पचेन्द्रिय के, कितने भेद कहे हैं ? उत्तर दो भेद—पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय यह जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियका कथन हुवा प्रश्न-स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं यथा-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय संमूर्छिम स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त

दिय तिरिक्खजोणिया ? चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया,जहव जलयराण तहेव चउक्कओ भेदो,सेत्त चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं त परिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? परिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा-उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया, भुयपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं त उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता जहेव जलयराण तहेव चउक्कओ भेओ,एव भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्वा [1] ॥ सेत्त भुयगपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्त

व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज के दो भेद मीलाकर चार भेद जानना यह चतुष्पद स्थलचर का कथन हुवा प्रश्न—परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस के दो भेद कहे हैं—उरपरिसर्प स्थलचर और भुज परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं—समु-

थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्त समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं गब्भवक्कंतियावि जाव पज्जत्तग गब्भवक्कंतिया अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियावि ॥ ४ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते !

च्छिम व गर्भज इन दोनों के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे चार भेद मानना ऐसे ही भुजपरिसर्प का कहना यों स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-समूर्च्छिम व गर्भज प्रश्न—संमूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना॥ ४ ॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कितने प्रकार का [illegible]

कइविहे जोणिसगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णत्ते तजहा अडया पोयया समुच्छिमा ॥ अडया तिविहा पण्णत्ता तजहा-इत्थी पुरिसा नपुसका। पोयया तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुसया ॥ तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ तेण भते ! जीवा किं सम्मदिट्ठि मिच्छदिट्ठि सम्मामिच्छादिट्ठि ? गोयमा ! सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि॥तेण भते!जीवा किं नाणि अन्नाणि?गोयमा!नाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि

उत्तर—तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ अंडज अंड में से उत्पन्न होवे २ पोतज थेली से उत्पन्न होवे और ३ समूर्च्छिम उन में से अंडज के तीन भेद, स्त्री, पुरुष व नपुसक पोतज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुसक और जो समूर्च्छिम होते हैं वे नपुसक ही होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्याओं कही हैं कृष्ण, नील यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टि हैं मिथ्यादृष्टि है या समामिथ्यादृष्टि हैं ? उत्तर अहो गौतम ! समदृष्टि व समामिथ्या दृष्टि हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी

नाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए जहा दुविहेसु गब्भवक्कंतियाण ॥ तेण भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! तिविहावि ॥ तेण भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ तेण भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! असंखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अंतरदीवग वज्जेहिं उववज्जति ॥ तेसिणं भंते ! जीवाण केवइय कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइ भाग ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

दोनों हैं ज्ञान में तीन ज्ञान व अज्ञान में तीन अज्ञान की भजना है अहो भगवन् ! वे जीवों क्या मन योगी, वचन योगी व काययोगी हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के योग कहे हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ? अहो गौतम ! साकार व अनाकार दोनों उपयोगयुक्त हैं अहो भगवन् ! वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या नरक में से, तिर्यंच में से वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले युगलिये व अंतरद्वीप के युगलिये वर्जकर अन्य सब गति के जीव उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! उनकी जघन्य

कइ समुग्धाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसमुग्धाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए जाव तेया समुग्घाए ॥ तेणं भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं किं समोहता मरंति असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ॥ तेणं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति किं नरइएसु उववज्जंति पुच्छा ? गोयमा ! एवं उवट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहेव ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बारसजाइ कुलकोडि जोणिपमुह सयसहस्साइ ॥ ५ ॥ भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-

अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग की स्थिति कही अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी समुद्घात कही ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कही तद्यथा-वेदना, कषाय, मारणांति, वैक्रेय व तेजस अहो भगवन् ! वे क्या समोहया मरण मरते हैं या असमोहता मरण मरते हैं ? अहो गौतम ! वे समोहता व असमोहता ऐसे दोनों प्रकार के मरण मरते हैं अहो भगवन् ! वे वहां से नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! उत्पत्ति जैसे उद्वर्तना कहना अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी कुलकोडी कही है ? अहो गौतम ! उन की बारह लाख योनि प्रमुख कुल कोडी कही हैं ॥ ६ ॥

क्खजोणियाणं भंते ! कइविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तंजहा- अंडया पोयया समुच्छिमा ॥ एवं जहा खहयराणं तहेव णाणत्तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गच्छइ, णवजाइ कुलकोडी जोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंतितिमक्खाया, सेसं तहेव ॥ ६ ॥ उरग परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा ? जहेव भुयग परिसप्पाणं तहेव णवरं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता जाव पंचमिं पुढविं गच्छइ, दसजाई कुलकोडी ॥ ७ ॥ चउप्पय थलयर पंचिंदिय

अहो भगवन् ! भुजपरिसर्प चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच को कितने प्रकार का योनिसंग्रह कहा है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है, अंडज, पोतज व संमूर्च्छिम इस का सब कथन खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष वहां से नीकलकर दूसरी नरक तक जाते हैं इस की नव लाख कुल कोडी कही है ॥ ६ ॥ उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष, वहां से नीकलकर पांचवी नरक तक जाते हैं इस की दश लाख कुल क्रोड कही है ॥ ७ ॥

तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा जराओया समुच्छिमया ॥ जराओया तिविहा पण्णत्ता तजहा-इत्थी पुरिसा नपुसका ॥ तत्थण ज ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुसका ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ? सेस जहा पक्खीण, णाणत्त ठिई जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ उव्वट्टिता, चउत्थ पुढवि गच्छति, दस जाई कुलकोडी ॥८॥ जलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाण भते ! पुच्छा ? जहा भुयगपरिसप्पाण,णवर उव्वट्टित्ता जाव अहेसत्तमि, पुढवि अद्ध तेरसजाइ कुलकोडी जोणिय पमुह जाव पण्णत्ता

चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! दो प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ जरायुज अंड से उत्पन्न होवे और २ संमूर्च्छिम इन में से जरायुज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुसक और समूर्च्छिम सब नपुसक हैं अहो भगवन् ! उन को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! जैसे खेचर का कहा वैसे ही जानना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम, वहां से नीकलकर चौथी नारकी तक उत्पन्न होवे हैं इस की कुल कोडी दश लाख है ॥ ८ ॥ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प जैसे जानना विशेष में इन में से नीकला हुआ नीचे सातवी पृथ्वी तक जाता है साढे बारह लाख कुल कोडी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चतुरेन्द्रिय की कितनी कुल कोडी कही

॥ ९ ॥ चउरिंदियाणं भंते ! केइजाइ कुलकोडी जोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! नवजाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा जाव समक्खाया ॥ तेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठजाइकुल जाव समक्खाया ॥ बेइंदियाणं भंते ! केइ जाइ पुच्छा ? गोयमा ! सत्तजाइ कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा ॥ १० ॥ कइणं भंते ! गंधगा पण्णत्ता, कइणं भंते ! गंधसया ? गोयमा ! सत्तगंधगा सत्तगंधसया

है ? अहो गौतम ! नव लाख कुल क्रोडी कही है तेइन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! आठ लाख कुल क्रोड, बेइन्द्रिय की कितनी कुल क्रोड कही है ? अहो गौतम ! सात लाख कुल क्रोड कही है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! गंधांग [गंध के अंग] कितने कहे हैं व गंधांग शत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात गंधांग व सात गंधांगशत कहे हैं अब गंधांग जाति के भेद कहते हैं १ मूल, २ त्वचा, ३ काष्ट, निर्यास, ४ रस, ५ पत्र, ६ पुष्प, ७ फल इन में मूल, अर्थात् मोथवाला, २ त्वचा अर्थात् सुवर्णछाल ३ काष्ट अर्थात् चंदन अगुरु ४ निर्यास अर्थात् कपुर प्रमुख ज नना ५ पत्र अर्थात् जाति का तमाल पत्र, ६ पुष्प सो प्रियंगु वगैरह, और ७ फल सो जाति फल ककोलादि इन सब को काला प्रमुख पांच वर्ण से गुणा करने से ३५ होवे, उसे एक गंध से गुणने से ३५ ही रहे इसे पांच रस से गुणने से १७५ होवे फीर इसे मृदु, लघु, शीत व रुक्ष ऐसे चार

सूत्र

पण्णत्ता ॥ ११ ॥ कइण भंते ! पुप्फ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस पुप्फ जाइ कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता तंजहा चत्तारिजलयराण, चत्तारिथलयराण, चत्तारि महारुक्खाण, चत्तारि महा गुम्मियाण ॥ १२ ॥ कइण भंते ! वल्लीउ कइवल्लीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिवल्लीउ चत्तारिवल्लिसया पण्णत्ता ॥ १३ ॥ कइण भंते ! लयाउ कइलयसय. पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठलयाउ अट्ठलयसया पण्णत्ता ॥ १४ ॥ कइण भंते !

अर्थ

स्पर्श से गुणने से ७०० होवे हैं यों सात सो गंधांग हुवे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पुष्प जाति की कुल कोड कितनी कही ? अहो गौतम ! सोलह लाख कुल कोड कही जिस में चार लाख जल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख स्थल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख महुडे प्रमुख महा वृक्ष के और चार लाख जाइ प्रमुख महा गुल्म के ॥१२॥ अहो भगवन् ! वल्लियों की कितनी जाति कही और वल्लीशत कितने कहे है ? अहो गौतम! चार जाति की वल्ली चार वल्लीशत ॥१३॥ अहो भगवन् ! कितनी लताओं व कितनी लताशत कही हैं ? अहो गौतम ! आठ लता व आठ लताशत कही ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी हरिकाय व कितनी हरिकाय शत कही है ? अहो गौतम ! तीन हरितकाय व तीन हरितकायशत जानना एक २ के अवांतर सो २ भेद से तीन के तीन सो भेद होते हैं वृत से बंधे हुए के हजारों फल वृंताक प्रमुख और नाल स

वीईवइज्जा अत्थेगइय विमाण नो वीईवइज्जा ए महालयाण ? गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता ॥ १६ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ अच्चीणि अच्चिरावत्ताइ तहेव जाव अच्चुत्तर वडिंसकाइ ? हंता अत्थि ॥ तेविमाणा के महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहा सोत्थिणी णवर एव इयाइ पंचउवासंतराइ अत्थेगइयस्स देवस्स एके विक्कमे सिया सेस तचेव ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ कामाइ कामवत्ताइ जाव कामुत्तर विडंसगाइ ? हंता अत्थि ॥ तेण भंते ! विमाणा के महालया पण्णत्ता?

एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक विमान को वे उल्लंघ सकते हैं और कितनेक विमान को नहीं उल्लंघ सकते हैं अहो गौतम ! इतने बडे विमान कहे हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! अर्चि, अर्चिआवर्त यावत् अर्चिरावतंस विमान हैं ? अहो गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! य विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! वे विमान स्वस्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में पांच आकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना ऐसा एक देवता का विक्रम होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! काम, कामावर्त यावत् कामोत्तरावतंसक नामक विमान क्या हैं ? अहो गौतम ! वैसे ही विमानों हैं अहो भगवन् ! वे विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्वस्तिक विमान का कहा वैसे ही जानना परंतु इस में सात

गोयमा ! जहा सोत्थीणि नवर सत्तउवासतराइ विक्कमे सेस तहेव ॥ १८ ॥ अत्थिण भते ! विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराइयाइ ? हता अत्थि ॥ तण भते ! विमाणा के महालया ? गोयमा ! जावतिय सूरिए उदेइ, एवइयाइ नव उवासतराइ सेस तचेव, नो चेवण ते विमाणा वीईवइज्जा एमहालयाण विमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! तिरिक्खजोणिय पढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ १ ॥

कइविहाण भत ! ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छविहा ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता तजहा—पुढवी काइया, जाव तसकाइया ॥१॥ सेकिं

अवकाशांतर करना इतना देवता का विक्रम यहां जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! विजय, वैजयत जयत, अपराजित क्या विमानों हैं ? अहो गौतम ! वे विमानों हैं अहो भगवन् ! वे कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! स्वास्तिक विमान जैसे जानना परतु इस में नव अवकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना इतना देवता का विक्रम जानना परतु किसी भी विमान को उल्लघ नहीं कर सकते है + यह तिर्यंच योनीक जीवों का पहिला उद्देशा हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! ससार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार के संसार,

+ विमानों पृथ्वीकाया के बने हुए हैं इस से इन का कथन भी इस उद्देशे में किया है

पुढवी, खरपुढवी ॥ ४ ॥ सण्हपुढवीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण एग वाससहस्स ॥ सुद्धपुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बारसवाससहस्सा ! वालुयापुढवी पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण चउदसवास सहस्सा ॥ मणोसिलापुढवीए-पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सोलसवास सहस्साइ ॥ सक्करा-पुढवी पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अट्ठारस वास सहस्साइ ॥ खर पुढवि पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वास सहस्साइं

२ शुद्ध पृथ्वी, ३ वालुक पृथ्वी, ४ मनःशिला पृथ्वी, ५ शर्कर पृथ्वी और ६ खर पृथ्वी ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सूक्ष्म पृथ्वी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष की, शुद्ध पृथ्वी की पृच्छा ? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह हजार वर्ष वालुक पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चउदह हजार वर्ष, मन शिला पृथ्वी की पृच्छा, ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सोलह हजार वर्ष शर्कर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठारह हजार वर्ष की, खर पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की

॥ ५ ॥ नेरइयाण भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई, एवं सव्वं भाणियव्वं जाव सव्वट्ठसिद्ध देवति ॥ ६ ॥ जीवेणं भंते ! जीवेति कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! सव्वद्धा ॥ ७ ॥ पुढविकाइएणं भंते ! पुढविकाइएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं एवं जाव तसकाइए ॥ ८ ॥ पडुप्पन्न पुढविकाइयाणं भंते ! केवति कालस्स निल्लेवा सिया ? गोयमा ! जहण्णपदे असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि ओसप्पिणीहिं उक्कोसपए असंखेज्जाहिं ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहिं, जहण्णपदातो उक्कोसपदं असंखेज्जगुणा, एवं जाव पडुप्पन्न वाउका-

है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है यों सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत सब की स्थिति कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीव जीवपने कितना काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जीव जीवपने सदैव रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया पृथ्वीकायपने कितने काल तक रहती है ? अहो गौतम ! सदैव रहता है यों त्रस काया पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुवे पृथ्वीकायिक सार कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! समय २ में एक २ जीव निकाले तो जघन्य तथा उत्कृष्ट पद से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे तो भी उन जीवों का अंत नहीं होता है ऐसेही अप्

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहण्णपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धले सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारं जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ यह भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेणं भंते ! अणगारे समोहयासमोहएणं विसुद्धलेस्सं देवदेविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा!

अर्थ

रहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाला देव तथा देवी को अपने ज्ञान से क्या जाने देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ३ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अविशुद्ध लेश्यावाला देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, ४ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्या-वाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ५ अहो भगवन् ! अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदनादि समुद्घात से सहित अथवा रहित अविशुद्ध लेश्या वाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ६ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात रहित

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहन्नपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारिं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धले सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवं देविं अणगारे जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ यह भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

सूत्र

किरिय पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरेणयाए मिच्छत्त किरिय पकरेइ, मिच्छत्त किरिया पकरेणयाए समत्त किरिय पकरेइ एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तजहा-सम्मत्त किरिय मिच्छत्त किरिय, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अन्नउत्थिया एवं माइक्खति एवं भासति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति एवं खलु एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्त किरियच मिच्छत्त किरियच जेतेएवं माहसु तण्णमिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ तजहा-सम्मत्तकिरियंवा मिच्छत्त-

अर्थ

क्रिया करता है उस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है, और जिस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है उस समय में सम्यक्त्व की क्रिया करता है सम्यक्त्व की क्रिया करते हुवे, मिथ्यात्व की क्रिया करता है और मिथ्यात्व की क्रिया करते हुए सम्यक्त्व की क्रिया करता है इस तरह एक समय में एक जीव दो क्रिया करता है सो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि एक समय में एक जीव सम्यक् व मिथ्या ऐसी दो क्रिया करता है उन का कथन मिथ्या है अहो गौतम ! उस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में एक जीव एक ही क्रिया करता है इयथा-सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया जिस समय

नो इणट्ठे समट्ठे ॥ विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहतेण अप्पाणेण अविसुद्ध लेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, जहा अविसुद्धलेस्सेण छ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि छ आलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १० ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खइ एवं भासेइ, एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाओ पकरेइ तंजहा सम्मत्त किरियंच मिच्छत्त किरियंच, जं समयं सम्मत्त किरियं पकरेइ तं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ, जं समयं मिच्छत्त किरियं पकरेइ तं समयं सम्मत्त

अथवा सं इन अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने अथवा देखे? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अब विशुद्ध लेश्या (तेजो पद्म शुक्ल) का कहते हैं अहो भगवन्! विशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदना आदि समुद्घात रहित अपने आत्मा से विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे? हां गौतम! वैसे जाने व देखे यों जैसे अविशुद्ध लेश्या के छ आलापक कहे वैसे विशुद्ध लेश्या के छ आलापक जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कितनेक अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं, यावत् प्ररूपते हैं कि एक जीव एक समय में दो क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया व मिथ्या क्रिया, जिस समय में सम्यक्त्व की

सूत्र

॥ १ ॥ कहिण भंते ! समुच्छिम मणुस्सा समुच्छांति ? गोयमा ! अंतो मणुयखेत्ते जहा पण्णवणाए जाव सेत्त समुच्छिम मणुस्सा॥२॥ से किंत गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा ॥ ३ ॥ सेकिंत अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा पण्णत्ता तंजहा एगरुआ, आभासिया, वसाणिया, णंगोली, हयकण्णगा, आयसमुहा, आसमुहा, आसकण्णगा, उक्कामुहा, घणदंता, जाव सुद्धदंता ॥ ४ ॥ कहिण्णं भंते !

अर्थ

कहे हैं ! संमूर्च्छिम मनुष्य एक रूप ही है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! संमूर्च्छिम मनुष्य कहां उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पन्नवणा में संमूर्च्छिम मनुष्य का अधिकार कहा वैसा ही यहां जानना यावत् यह संमूर्च्छिम मनुष्य का कथन हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गर्भज मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य के तीन भेद कहे हैं कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के व अंतरद्वीप के ॥ ३ ॥ उस में अंतरद्वीप के कितने भेद कहे हैं ? अंतरद्वीप के अट्ठाइस भेद कहे हैं १ एक रूक, २ आभासिक, ३ वेसाणिक, ४ नांगोलिक, ५ हयकर्ण, ६ आयसमुख, ७ आसकर्ण, ८ उल्कामुख, ९ घनदंत यावत् शुद्धदंत ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के एक रूक मनुष्य का एक रूक द्वीप कहां कहा है ?

किरियत्रा, ज समय सम्मत्तकिरिय पकरेइ णो त समयमिच्छत्तकिरिय पकरेइ, ज समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ नो त समय सम्मत्तकिरिय पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरणत्ताए नो मिच्छत्त किरिय पकरेति, मिच्छत्तकिरिया पकरणत्ताए नो सम्मत्त किरिय पकरेति, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ तजहा- सम्मत्तकिरिय वा मिच्छत्तकिरियवा ॥ सेत्त तिरिक्खजोणी तउद्देसउबीओ ॥ ४ ॥ २ ॥ सेकिंत मणुस्सा? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्साय गब्भवक्कंतिय मणुस्साय ॥ सेकिंत समुच्छिम मणुस्सा ? समुच्छिम मणुस्सा एगागारा पण्णत्ता

सम्यक् क्रिया करता है उस समय मिथ्या क्रिया नहीं करता है और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया नहीं करता है सम्यक् क्रिया करने में मिथ्या क्रिया का अभाव है और मिथ्या क्रिया करने में सम्यक् क्रिया का अभाव है इस तरह एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया यह तिर्यंच का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुवा॥४॥२॥

अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य इन में समूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद

वणसडेण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ सेणं वणसंडे देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खभेण वेइया समए परिक्खेवेण पन्नत्ते ॥ सेण वणसडे किण्हे किण्हो भासे एव जहा रायपसेणइज्जे, वणसडवन्नउ तहेव निरविसेस भाणियव्वं ॥ तणाणय वन्नगधफासो सद्दो, तणाण वावीओप्पाय पव्वयगा, पुढविसिला पट्टगाय भाणियव्वा जाव तत्थण बहवे वाणमतरा देवाय देवीओय आसयति जाव विहरति ॥ ४ ॥ एगुरुय दीवस्सण दीवस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते—से जहा नामए अलिंगपुक्खरेइवा, एव सयणीए भाणियव्वे जाव पुढवि सिलापट्टगाति तत्थण

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना इस प्रकार वेदिका को चारों तरफ जो वनखण्ड रहा हुवा है वह दो योजन में कुच्छ कम गोलाकार चौडाइ में है यह वनखण्ड कृष्ण वर्णवाला कृष्णाभासवाला यों इस का सब कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना तृण व मणिका वर्ण, गंध, रस व स्पर्श वैसे ही वावडियों, पर्वत, व पृथ्वी शिलापट्ट सब कहना वहां अनेक वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥४॥ उस एकरूप द्वीप की अंदर बहुत सम रमणीय भूमि भाग रहा हुवा है जैसे मृदंग का तल, यों वैयणा का कहना यावत् पृथ्वीशिलापट्ट का कहना उस में अनेक एकरूक द्वीप के मनुष्य व मनु-

दाहिणिल्लाणं एगरुयमणुस्साणं एगुरुयदीवेणाम दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिण्णि जोयण सयाइं उगाहित्ता, एत्थणं दाहिणिल्लाणं एगुरुय मणुस्साणं एगुरुय दीवे नामदीवे पण्णत्ते, तिण्णिजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं णवएकूणपण्णे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं ॥ सेणं एगाए पउमवरं वेइयाए एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ॥ सेणं पउमवर वेइया अद्धजोयणं उड्डुउच्चत्तेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, एगुरूय दीवं समंता परिक्खेवेणं पन्नत्ता तीसेणं पउमवर वेइयाए अयमेयारूवे वन्नवासे पन्नत्ते तंजहा-वइरामयानिम्मा, एवं वेतिया, वन्नओ जहा रायपसेणइए जहा भाणियव्वा, सेणं पउमवर वेइया एगेणं

अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत को ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे तब एकरूक नाम द्वीप रहा है यह तीन सो योजन का लम्बा चौडा है ९४९ योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की चारों तरफ एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊँची है, पांच सो धनुष्य की चौडी है और एकरूक द्वीप को चारों तरफ घेर कर रही हुई है यह पद्मवर वेदि का वर्ण स्वरूप है इत्यादि सब

सूत्र

खज्जूरीवणा णालिएरवणा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ ७ ॥ एगरुय दीवेण तत्थ २ बहव तिलयालयआ नग्गोहा जाव रायरुक्खा णंदिरुक्खा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ एगरुय दीवेण दीवे तत्थ बहुओ पउमलयाओ, नागलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ एवं लयावन्नओ जहा उववाइए जाव पडिरूवाओ ॥ एगुरुय दीवेण दीवे तत्थ बहवे सिरियगुम्मा जाव महा जाइगुम्मा तणगुम्मा दसद्धवन्न कुसुम कुसुमेंति जेण वायविहुलग्ग साला एगुरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहुओ वणराईओ पन्नत्ताओ

अर्थ

व नालीयेरी के वन, पुष्प फलवाले यावत् रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ उस एकरुक द्वीप में बहुत तिलक वृक्ष के वन यावत् रायण नंदीवृक्षप्रमुख दर्भादिक से रहित पुष्प फल वाले, यावत् रहे हुवे हैं और भी वहां पद्मलता यावत् श्यामलता पुष्प फल वाली रही हुई है इस का वर्णन उववाई सूत्र में कहा वैसे जानना यावत् प्रतिरूप है, और भी वहां बहुत सिरिक वृक्ष के गुल्म यावत् महाजाति के गुल्म पांचों वर्ण के पुष्पों व फलों से फलित हुए हैं, वहां मंद वायु चलता है जिस से उस निर्मल वृक्षकी शाखा कंपायमान होती है उस से एकरुक द्वीप के बहुत मनोहर समभूमि भाग में पुष्प के समुह (ढग) होते हैं और भी

बहवे एगुरूय दीवया मणुस्साय मणुस्सीओय आसयति जाव विहरति ॥ ५ ॥ एगरूय दीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उद्दालका मोद्दालका कोद्दालका कतमाला नतमाला णट्टमाला सिंगमाला सखमाला दतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूला मूलमतो कदमतो जाव बीयमतो, पत्तेहिय पुप्फेहिय अच्छन्न पडिच्छन्ना सिरिए अईव २ सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥६॥ एगुरूय दीवेण दीवे तत्थ बहवे हेरुयालवणा, भेरुयालवणा मेरुयालवणा, सेरुयालवणा, सालवणा, सरलवणा, सत्तपण्णवणा पूयफलिवणा,

व्यणी बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ५ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत उद्दालक मोद्दालक, कोद्दालक, कतमाल, नतमाल, नट्टमाल, सिंगमाल, शंखमाल, दंतमाल व शैलमाल नामक वृक्षों कहे हुवे हैं वे वृक्षों फल फुल से सहित हैं, उन के मूल शुद्ध हैं, दर्भादिक से रहित हैं, मूल, कंद यावत् बीज सहित हैं, पत्र पुष्प से आच्छादित बने हुए हैं, विशेष वृक्ष की शोभासे अती २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ६ ॥ उस एकरूप द्वीप में हेरुताल वनस्पति के वन, भेरुताल वनस्पति के वन, मेरुताल वनस्पति के वन, सेरुताल वनस्पति के वन, शाली के वृक्ष के वन, सरसव के वन, सोपारी के वन, आम्र के वन, खजुरी के वन

सूत्र

विसायण सुपक्क खोयरसवरसुरा वण्णरसगंधफासजुत्त ... बहुविहिह वीससा परिणयाए मज्जविहीए उववेया फलेहि पुण्णाविव विसट्टति, कुसविकुसविशुद्ध रुक्खमूला जाव चिट्ठति ॥ १ ॥ एगुरुय दीवे तत्थ बहवे भिंगगाणामदुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से वारगघडकरग कलस कक्करि पायकंचणि उल्लूकवद्धणि सुपइट्ठकविट्ठा पारीचसगा भिंगारकरोडि सरग परगपत्ती थालमिल्लग चवलिय अयपलगवाल विचित्तवट्टकमणि

अर्थ

प्रकार से भरा रहते हैं. ऐसा मत्तांग वृक्ष का समुह है, वे अनेक प्रकार के मद्य स्वभाव से ही होते हैं, परिपाकपने परिणमते हैं, फल से परिपूर्ण रहते हैं अथवा फल पक्व होकर फूटे हो जाते हैं तब उस में से मद्य झरता है बहुत विस्तारवाले श्रेष्ठ व शुद्ध उस के मूल रहे हैं ऐसे वृक्षों वहां रहेहुए हैं यह पहिला मत्तांग कल्पवृक्ष का वर्णन हुआ ॥ २ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणो! वहां बहुत प्रकार के भृंगारक नाम कल्प वृक्षों (भाजन के वृक्षों) हैं जैसे घट, बट, कलश, कक्करी, कंचनीका, उदकवर्धनी, सुप्रतिष्ठक, विष्टर, पारिचषक, भृंगार लोटा, करोडिक, सरक, भरक पात्री, थाल, मल्लक, चपलक, अपर, दकवारक, मणिपट्टक, शुक्तिक, थोरपिडका, कंचनमणि भाजन रत्नादिक मनोहर भाजनों होते हैं वे भाजनों सुवर्ण मणि रत्नों से विचित्र हैं जैसे इस क्षेत्र में पूर्वोक्त

ताओ वि समराईओ ... जाव ...

कूवाओ जाव महुरा गवघाण मुयताओ पासाइयाओ ॥ ८ ॥ एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे मत्तंगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से चदप्पभमणि सिलागवर सीधु पवरवारुणि सुजायफल पुप्फचोयणिज्जा ससारबहुदव्वजुत्ति ससार काल सधय आसवमहुमे रगरिट्ठाभदुद्धजाइपसन्नेलगासताओ, खज्जुरमूदिया सारका

एकरुक द्वीप में बहुत वनश्रेणी है वे वनश्रेणि कृष्ण यावत् मनोहर है इस की महागंध समान शोभा है यावत् महागंध ध्वनि करने वाला, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ८ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणो ! वहां एकरुक नामक द्वीप में बहुत मातंग वृक्षों कहे हैं वे चंद्र प्रभादिक विविध प्रकार के मद्य, चंद्र जैसी कांति मणशिला जैसी कांति, प्रधान सिधु मद्य विशेष व प्रधान मदिरा वारुणी विशेष जैसे ही हैं अच्छे परिपक्व फल, पत्र व पुष्प निर्यास (रससार) उस में रहा हुआ है जिस में बहुत द्रव्यों का मीलन किया हुवा हो वैसे हैं, अपने२ समय में जहां जिस का अनुपान होवे वैसे आसव, (मदिरा विशेष) मधु मेरक (मद्य विशेष) रिष्टाभक व अरिष्ट रत्न जैसी कांति है, दुग्ध जैसी व जाति प्रसन्न मदिरा, खजुरी सार, द्राक्षसार, कपिशायन, अच्छी तरह परिपक्व हुवा इक्षुरस जैसे जो मदिरा प्रधान वर्ण गंध रस व स्पर्श हैं उस से युक्त है. बल व वीर्य रूप उस का परिणाम है, मद्य विधि युक्त है, बहुत

सूत्र

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झुसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टति। कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से संझाविराग समए नवनिहिपतिणो दीविया चक्कवालचंद पभूय वट्टिपलितज्झणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कुसुमिय पारिजाय घणप्पगासे, कंचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दंडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

अर्थ

वादित्र की जाति को प्राप्त करते हैं वैसे ही तुटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, घन व झुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तुटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के यहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत बडी व तेल से परिपूर्ण होती है जिस का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीवी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उत्तम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजवंत मनोहर

तद्धकक्षिप्पिसारपिणय, कयग्गमणिरयणभत्ति विचित्तविभायणविहि बहुप्पगारा, तहेव तेसि भिगंगयावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए भायण विहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विवसिमट्टति, कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १० ॥ एगरुय दीवेण तत्थ बहवे तुडियगानाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो! जहा से आलिंग पणव दद्दर पडह डिंडिमा भंभा तहोरम्भ किणिय खरमुहि मुयंग संखिय परिछए पच्चगा परिवायणिज्ज मंसवुणीगो सुघोसनंदिघोस महतिकच्छ तिरिक्खमत कलोला कसाल तालक ससपरोड आते घावेधीये णिउण गंधव्व समय कुसलेहिं

भाजन होते हैं वैसे ही भृगार वृक्ष के समुह अनेक प्रकार के भाजन सहित हैं स्वभाव से परिणामित हैं, पुष्प फल से परिपूर्ण हैं, य वृक्ष पत्र पुष्पवाले यावत् मनोहर हैं यह दूसरा भृगांङ्ग कल्प वृक्ष का वर्णन हुआ ॥ १० ॥ अहो आयुष्मन् श्रमणो! उस एकरूक द्वीप में त्रुटितांग नामक कल्प वृक्ष के समुह हैं, जैसे आलिंगक नामक बड़ा वादिंत्र, लघुमादल, पणव, पडह, ददर करटी, डींडिम, भेरी, बड़ा भेरी, कणिका खरमुखी, मुरज, संख, परिलिय, परिवाइय, ससवन्सी, वीणा, धर्व, विपुवन, विघेव, मुपे या, वियवो तेवी, वीणावंसी, वीणा विसप शततन्त्री वीणा, रगसीका नामक बाजा, हस्तभाल, कास्यताल इनमें वादिंत्र के भेद कहे हैं—जैसे गायन विद्या में प्रवीण वादिंत्र बजाने आदि बाध्य व वंशरूप विद्युत—इसे

सूत्र

फलिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टंति। कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठंति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से संझाविराग समए नवनिहिपतिणो दीविया चक्कवालचंद पभूय वट्टिपलितज्झणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कुसुमिय पारिजाय घणप्पगासे कंचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दंडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

अर्थ

वादिंत्र की प्राप्ति को प्राप्त करते हैं वैसे ही तुटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, ताल व शुषिर यों चारों प्रकार के वादिंत्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तुटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के वहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे उस की बत्ती बहुत जाडी व तैल से परिपूर्ण होती है शिवा का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीवी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उच्चम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में उसमें मनोहर

ल्लिठस विधमिंद तयदिप्पताविमल गहगण समय प्पदाहिं वितिमिरकरवसूर पसरि उज्जोयविल्लियाहिं जालाउज्जलपहसियाभिरामाहिं सोभमाणाहिं सोभमाणा, तहेव ते दीवसिहावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहीएओ उववेया फलाहिं कुसविकुसजाव चिट्ठंति ॥ १२ ॥ एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे जोइसिया नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहासे अचिरुग्गय सरयसूर मंडल पडत उक्का सहस्स दिप्पतविज्जुज्जल हुयवह निद्धूमजालिय निद्धंतधोय तत्ततवणिज्जकिंसुया

देदीप्यमान तेज होता है, निर्मल ग्रह चंद्र जैसी उस की कांति होती है, अंधकार को नष्ट करनेवाले सूर्य के किरण समान उद्योत करनेवाली होती है, उन दीपों की ज्योति में श्वेत प्रकाशित विस्तारयुक्त मनोहर शोभनिक कांति प्रसरती है इस तरह की कांतिवाले दीपशिखावाले व अनेक विविध प्रकार से उद्योत करनेवाले वृक्षों फलपूर्ण पत्र पुष्प सहित रहे हुए हैं यह दीप शिखा नामक कल्पवृक्ष का कथन हुआ ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! एकरुक दीप में बहुत ज्योतिषी के वृक्ष कहे हैं जैसे तत्काल का उदित हुआ शरदऋतु का सहस्र किरणों से देदीप्यमान सूर्य, विद्युत का चमत्कार, निर्धूम अग्नि, आग से तप्त किया हुआ सुवर्ण, किंशुक वृक्ष के पुष्प, अशोक वृक्ष के पुष्प, जपा वृक्ष के

सूत्र

संगजासुमण कुसुमविमउलियपुंज मणिरयणकिरण जवाहिंगुलय तिरयरुवाइरेगरुवा, तहेव तजातिसिहाविदुमगणा अणगवहु विविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहाए उवबेया, सुहलेसा मंदलेसा मंदातवलेसा कूडाट्ठाणट्ठिया, अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं सएरभाए तेएएमे सव्वओसमताओ भासति उज्जोवति पभासति कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १२ ॥एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तगानामए दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ।जहा से पेच्छाघरेव्व चितरामेव कुसुमदाममाला कुज्जललेसा भासत मुक्कपुप्फ पुजावयार किलिए विरल्लिय विचित्तमल्लसिरि समुदयपगाब्भे गथिम वेढिम पूरिम

अर्थ

पुष्प, विकसित पुष्पों का समूह, मणिरत्न के कीरण, जातवंत हिंगुल का समूह इन सब के रूप से अधिक रूप वाले ज्योतिष वृक्ष के समूह अनेक विविधाके उद्योत सहित शुभ व मंद लेश्या वाले कहे हैं इन का स्थान कूटाकार है परस्पर लेश्या के मेद रहे हुवे हैं, लेश्या के प्रवेश से सब दिशि में शोभते हैं उद्योत करते हैं कांति बढाते हैं, यावत् पुष्प फल से शोभनिक व मनोहर हैं यह ज्योतिष कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! एक रूक द्वीप में बहुत प्रकार के चित्रांगक नामक कल्पवृक्षों के समूह हैं जैसे प्रेक्षागृह विचित्र मनोहर उत्तम पुष्प की मालाओं से संयुक्त, देदीप्यमान, व उज्ज्वल है, विकसित पांच वर्ण के पुष्पों के पुंज सहित हैं, विविध पुष्प व माला से सहित है, ग्रथीप, वेढिम,

सपयमेण मल्लण छेयसिप्पियं विभागरइएण सव्वओसमता चेव समणुबद्धे अविरल लंबत विप्पइट्ठेहिं पंचवन्नेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणा वनमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे, तहेव ते चित्तगयाविदुमगणा, अणेगबहुविविहवीससा परिणयाए मल्लविहीए उववेया कुसविकुसविसुद्ध जाव चिट्ठंति ॥१४॥ एगोरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तरसा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से सुगंधवरकलमसालितंदुलविसिट्ठणिरुवयदुद्धरद्धे सारयघयगुडखंडमहुमेलिए अइरसे परमन्ने होज्ज तमेगवन्नगंधमंतेरण्णो जहा वा वि

पूर्वोक्त, व सपाटीय यों चार प्रकार से निपजा सब दिशाओं में विभाग करके अविरलपने लंबमान अव्वर रहित पांच वर्ण के पुष्पों की माला से भी शोभायमान है व वनमालाओं से उस के द्वार शोभनीक बन हुवे होते हैं वैसे ही यह चित्रांग वृक्ष का समुह अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमा हुवा है पुष्प व पुष्पमाला के गुणों से सहित है, वे वृक्ष यावत् फल फूल वाले रहते हैं यह चित्रांग नाम वृक्ष का कथन हुवा ॥१४॥ अहो आयुष्यवन्त श्रमणो ! इस एकरुक द्वीप में चित्ररस नाम वृक्ष कहे हुवे हैं जैसे इस क्षेत्र में उत्तम शालि धान्य के चांवल को गाय के दुध में पकाकर उस में घृत, व शक्कर डालने से वह खीर बने, गव व रस से रसवन्त बनती है, पसे ही ७ खण्ड का स्वामी चक्रवर्ती के लिये रसोई बनाने में निपुण पुरुषों रस

सूत्र

चक्कवट्टिसहोज्ज्वा निउणेहिं सूयपुरिसेहिं, सज्जिए चाउरकप्प सेयासितेव उदणे कलमसालि णिव्वत्तिए विसक्के सेवप्फमिउ विसय सगलसित्थे अणेगसालणग संजुत्ते अहवा पडिपुण्ण दव्वुवक्खड सुसक्कए वण्णगंधरसफासजुत्त बलविरिय परिणामे इंदियबलवद्धणे खुप्पिवासा महणे पहाणगुलकढिय खडमच्छंडिउवणीयव्वमोयगे, सण्हसमितिगब्भ हवेज्जा, परमइट्ठगसंजुत्ते, तहव ते चित्तरसा वि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए भायणविहीए उववेया कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १५ ॥ एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहवे मणियगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से हारद्धहार वट्टणग

अर्थ

युक्त चार कल्पिक अनेक मसाले सहित बनाये जैसे मोदक अथवा परिपूर्ण सब द्रव्य सहित, यथायोग्य अग्नि मे पका हुवा, उत्तम वर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त बल वीर्य को बढाने वाले शरीर की पुष्टि करने वाले, क्षुधा तृष्णा मिटाने वाले मोदक समान उस में उत्तमगुड अथवा शक्कर डाले वैसा सिंह केसरी नामक मोदक स्पर्श में सुकुमाल व सूक्ष्म दल वाले व अच्छे स्वाद वाले होते हैं वैसे ही चित्र रस वृक्ष अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमित भोजन देता है वे भोजन विधिवाले कल्प वृक्ष पुष्प फल सहित रहते हैं यह चित्र रस नामक कल्प वृक्ष हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! एकरुक द्वीप में मणिअंग नाम कल्प वृक्ष कहे हैं- जैसे हार, अर्धहार, उत्तरा, मुकुट, कुण्डल, वामोत्तक, हेमजाल

मउड कुंडलवासुमूम हेमजाल मणिजाल कणग जालग सुत्तग उचितियकडग खुडुयएगा वली कंठसुत्त मगर उरत्थगेवेज सोणिसुत्त मचूलामणि कणग तिलग फुल्लग सिद्धत्थिय कण्णवालि ससिसूरउसम चक्कगतल मगेय तुडिय हत्थमालगवलख दीनारमालिया चंदसूरमालिया हरिसय केयूर वलिय पालंब अंगुलिज्जग कंचीमेहला कलाव पयर कपाय जाल घंटिय खिंखिणि रयणोरुजालछडियवरनेउर चलणमालिया कणगणिगल-मालिया कणगमणिरयण भत्तिविसत्थ भूसण विही बहुप्पगारा तहेव ते मणियगा दुमगणा अणेग बहुविविहा वीससा परिणयाए भूसणविहीए उववेया कुसविकुसवि

मणिजाल, कनकजाल, सूत्रक, रूपी, कटक, क्षुद्र, एकावली, कंठसूत्रक, मकरीका, उरथ, ग्रैवेयक, श्रोणीसूत्रक, चूडामणि आभरण, कनकतिलक, पुष्प, सरसव कनकावली, चंद्र चक्र, सूर्य चक्र, वृषभ चक्र, तलभलक, तुडिय, हस्तमालक, विक्षप, दीनारमालिका, चंद्र मालिका, सूर्य मालिका, हर्षक, केयूर, वीरवलय, अन्य भूषणे अंगुठी कटिमेखला, कलाप, प्रतरक, पादोजाल, घंटिका, घुघुरमाल रत्नमाल,पांव के झांझर चरणमालिका,सुवर्ण समुह की माला, ये सर्व सुवर्ण मणिरत्नके विविध प्रकारके होते हैं वैसे ये वहां भरतादि क्षेत्र के हैं वैसे ही वहां मणिकांग वृक्ष समुह अनेक प्रकार के कनिष्ठ आभूषणों से शोभित होते हैं. स्वभाव से आभूषण की विधि कहते हैं वे वृक्षों मूल कन्द कुछ

मूल

जाव चिट्ठंति ॥ १५ ॥ एगुरुयदीवे २ तत्थ बहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णत्ता' समणाउसो ! जहा से पागारट्टालग चरिया गोपुर पासायागास तलगमंडव एगसालग बिसालग गब्भघर मोहणघर वलभिघर चित्तसालग मालिय भत्तिघर वट्टतंस नंदियावत्तसंठियायत्तपंडुरतल मुंडमाल हम्मिय अद्धवण धवलहर अद्धमागह विब्भमसेलद्धसेलसंठिय कूडागार सुविहि कोट्ठग अणेगघरसरणलेण आवण विडंग जालचंद निज्जूह अपवरक कपोताली चंदसालिरूव भत्तिकलिता

अर्थ

रहते हैं यों मणिकांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १६ ॥ अहो आयुष्मन् श्रमणों वहां एकोरुकद्वीप में बहुत गृहाकार वृक्षों रहे हुए हैं. जैसे प्राकार अट्टालक, चरिकाद्वार, प्रासाद, आकाशतल (चांदनी) मंडप, एकशालिया, दो शालिया, तीन शालिया, चार शालिया, गर्भगृह, वल्लभीगृह, चित्रशाला, मालिक, भूमिगृह वर्तुलाकार गृह, तीन कूनेवाले, चारकूने वाले नंदावर्त, चतुरस्र वाले, मुंडमाल, धवल गृह, अर्थ मागध गृह, विभ्रम गृह, शैल आकार गृह, शिखर के आकारवाले गृह, अच्छा कोठे के आकारवाले, अनेक गृह, शरण, लयन, दुकान, विडंबक, चंद्र निर्यूह गृह, ओरडा, चंद्रशालीगृह, ऐसे अनेक प्रकार के विचित्र मनोहर गृह हैं जैसे गृह यहां भरत क्षेत्र में अनेक प्रकारे होते हैं वैसे ही गृहाकार वृक्ष के समुह भी अनेक प्रकार के हैं अनेक प्रकार के गृह के गुणों से विशेष स्वभाव से यावत् परिणमते हैं वह वृक्ष पर सुख पूर्वक चढ सकते हैं व उतर सकते हैं, उस वृक्ष में सुख से प्रवेश कर सकते हैं

१८ सुवणविही बहुविहिप्पा । तहव ते गहागारा विदुमगणा अणेग बहुविह विरसमा- परिणयाए सुहारुहणे सुहोत्ताराए सुहनिक्खमणपवेसाए ददरसोपाणपंति कलियाए पइरिक्काए सुहविहाराए मणाणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ॥१७॥ एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे अणिगणा णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो। जहा से अणग आइग खोम तणुय कंबल दुगल्लकोसेज्ज कालमिय पट्टचीण असुतवण्णावरणात वारवाणग पच्छुत्तामरणचित्त सहिणग कल्लाणग भिंग मेहलकज्जल बहुवन्नरत्तपीय सुक्किलमक्कय मिगलोम हेमप्फरुन्नग अवरुत्तगलिधु उसभदामिलविंग कलिंग

व खण्ड में । सुख से नीकल सकते हैं उसको पंक्तियों लगी हुई हैं एकान्त सुख का स्थान है ऐसे आसन रूप से युक्त मनोहर गृह विधि से युक्त ऐसे वृक्षों फल फूलवाले यावत् रहे हुए हैं यह गृहाकार कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १७ ॥ एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के नग्नक वृक्षों कहे हुए हैं. जैसे आभा- चर्मरूप वस्त्र, कपास वस्त्र, तृण वस्त्र, कंबल, दुकूल, कोसेयक, मृग चर्म, काल मृग का चर्म एवं, कुरु विशेष आभरण से चित्रित, सुकुमाल, कल्याणकारी, मृगभीम वृक्ष समान हरे, काजल समान काले, शोभनीक, बहु वर्णवाले, रक्त, पीत व श्वेत मृग रोम के वस्त्र, जरी के वस्त्र, व ऊन के वस्त्र अनेक प्रकार की भांति से विचित्र प्रकार, व मनोहर हैं और भी यहां इन वस्त्र में पवन के बनाये हुवे अनेक हैं

नलिण सतुमय भत्तिचित्ता तत्थ बहुप्पगारा हवेअवर पट्टणुग्गता वण्णराग कलिया तहेव ते अणियाणात्रि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए तत्थ विहीए उववेया कुसाविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १८ ॥ एगरुयदीवेण भते दीवे मणुयाण करिसए आगारभावए पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेण मणुया अणतिवर सोमचारुरुवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा, भोगसस्सिरिया सुजाय सव्वंगसुदरगा सुपइठिय कुम्मचारुचलणा, रत्तुप्पलपत्तमउय सुकुमाल कोमलतला नग णगर मगर

अर्थ

ऐसे ही मणयक नामक वृक्षों के समुह भी अनेक प्रकार के परिणमे हुवे वस्त्र विधि सहित फल फुलवाले पाकर रहे हुवे हैं यह दशवा अणियगण नामक कल्प वृक्ष का कथन हुआ यह दश जाति के कल्प वृक्ष का कथन किया ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में मनुष्य का आकार कैसा है ! अहो गौतम ! उन मनुष्यों को अत्यंत सौम्यकारी मनोहर रूप है, भोग में उत्तम, भोग के लक्षण धारण करनेवाले, व भोग में मनोहर हैं, उन के अंग सब अवयव से सुंदर मनोहर हैं, मनोहर सुस्थित काचबे जैसे पांव हैं रक्त कमल जैसे सुकोमल पांव के तले हैं; उन के पगतल में पर्वत, नगर, समुद्र, मगरमच्छ चक्र मृग इत्यादि लक्षणों हैं, अनुक्रम से अंतर रहित पांव की अंगुलियां है; पांव की पानी ऊंची है, ताम्रवर्ण अम

सागर मक्करहरंक लक्खणंकियचलणा, अणुपुव्वसु साहयंगुलियाउण्णाय, तणुय तंबणि-द्धणक्खा, सट्ठिय सुसलिट्ठ गुढगुप्फएणी कुरुविंदावत्त वट्टणुपुव्वजंघा, सामुग्ग निमग्ग गुढजाणू, गतससण सुजात सण्णिभोरुवरवारणमत्त तुल्लाविक्कम विलासितगती सुजात वरतुरग गुज्झदेसा आइण्णहतोव्व णिरुवलेवा पमुइय वर तुरग सीह अइरेग-वट्टियकडी, साहयसोणिंद मुसलदप्पणणिगरित वरकणगच्छरुसरिस वर वइरवलित-मज्झा उज्जुअसम सहित सुजाय जच्चतणुकसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुकुमाल मउय

नख हैं, अच्छे आकारवाली पुष्ट नहीं दीख सके वैसी पांव की घुंटी है, हरिणी के शरीर जैसे वर्तुलाकार जंघाओं हैं, डब्बे के ढक्कन जैसे गाढ घुटने हैं, हस्ती समान विलास विलासवंत गति है, जातिवन्त अश्व समान गुप्त देश गुप्त रहा हुवा है, जैसे जातिवंत अश्वों के गुप्त भाग लीद करते हुए खराब होते नहीं वैसे ही पुतलियों का गुप्त प्रदेश मल करते हुए खराब होता नहीं प्रमुदित अश्व अथवा सिंह उस का कटि से अधिक वर्तुलाकार कटिभाग हैं, वज्र मुशल, आरिसा, निर्मल सुवर्ण तथा खड्ग की मूठ समान उन के कटि भाग है, उदर में त्रिवली पड़ती है, मत परिणाम सहित, उत्तम जातिवंत, सूक्ष्म, कृष्ण, स्निग्ध, शोभायमान मनोहर, सुकुमाल, कोमल व रमणिक उनके शरीरकी रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त व सूर्य के उदय होने से

सूत्र

रमणिज्ज रोमराइ, गंगावत्तय पयाहिणावत्त तरंग भंगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसा तय पउम गंभीर वियडणाभी झस विहंगसुजाय पीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणी पम्ह वियडणाभी, सुन्नतपासा, संगतपासा, सुंदरपासा सुजातपासा, मितमाइत पीणरइत पासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय निरुवहय देहधारी, पसत्थबत्तीस लक्खणधारा, कणगसिलातलुज्जल पसत्थ समतल उवचिय विच्छिन्न पिहुलवच्छा, सिरिवच्छंकित वच्छा, पुरवरफलिह वट्टिमुया, भुयगी सरविपुलभोग, आयाण फलिह

अर्थ

जैसे कमल विकसित होता है वैसी नाभी है, मच्छ व पक्षी जैसी सुजात कुक्षि है, झख मत्स्य समान उदर है, शुचि पवित्र शरीर है, पद्म समान विकट नाभी है, किंचित् नीचे नमते हुए, मनोहर, गुण सहित, प्रमाण सहित, यथोक्त प्रमाण मांस से पुष्ट रचित पास है, पसली नहीं दीख सके वैसा कनक समान निर्मल शरीर है, उत्तम बत्तीस लक्षण धारण करनेवाले हैं, सुवर्णशीलतल समान उज्ज्वल, प्रशस्त, समतल विस्तीर्ण उन के हृदय हैं, नगर द्वार की भोगल समान गोल प्रलम्ब दो भुजाओं हैं, कपाट के भोगल समान लम्बी दो बाहाओं हैं, वे भुजंग समान रमणिक अच्छे संस्थानवाली हैं उन के हस्ततल की सर्पों, सुमी हुए मनोहर विशिष्ट निकट हैं मांस सहित पुष्ट, पुष्ट हो मध उत्तम लक्षणों सहित छिद्र रहित उन के

उक्कुडदेव हु, जुगसन्निभ पीणरइय पीवरपउट्ठ संठिय उवचिय घणथिर सुबद्ध सुसलिट्ठ पव्वसंधी, रत्ततलोवइत मउय मंसल पसत्थ लक्खण सुजाय अच्छिद्द जालपाणी, पीवर वट्टिय सुजाय कोमल वरंगुलीआ, तंबतलिण सुतिरातिल (रूचिर) निद्धलुक्खा नखा, चंदपाणिलेहा, सूरपाणिलेहा, संखपाणिलेहा, चक्कपाणिलेहा, दिसासोवत्थियपाणिलेहा, चंद सूर संख चक्क दिसा सोवत्थिय पाणिलेहा, अणेगवर लक्खणुत्तम पसत्थ सुविरइयपाणिलेहा, वर महिस वराहसीह सद्दूल उसभ णागवर विउल उत्तम इदखंधा, चउरंगुलसुप्पमाण कंबुवरसरिस गीवा, अवट्ठित सुविभित सुजातापचमंसु

प्रशस्त हैं, पुष्ट वर्तुलाकार प्रशस्त प्रधान अंगुलियों हैं, ताम्बे के वर्ण समान अच्छे पवित्र देदीप्यमान हाथ के नख हैं, हथेली में चन्द्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्रवर्ती का-चक्र, शुभ सीधा स्वस्तिक, इन का आकार रहा हुआ है और अन्य लक्षणों से संपूर्ण रचित उन की हथेलियों रही हुई हैं, अच्छा महिष, वराह, सूअर, सिंह, शार्दूल, महावृषभ, हस्ती समान घन के बड़े स्कंध हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी गरदन है, यथावस्थित विभाग समान मूच्छों हैं, मांस सहित सिंह समान हडपची (दाढी) है, परवाला अथवा बिंबफल समान घन के रक्त ओष्ठ हैं, पांडुर चन्द्र समान निर्मल व दक्षिणावर्त शंख, गोक्षीर, कुन्द पुष्प, मचकुन्द का पुष्प, पानी के कण अथवा कमल समान प्रकाशवंत उनके दांत की श्रेणी है

मसल सट्ठिय पसत्थ सद्दल विउल हणुयाओ अवितसिलप्पवाल बिंबफल सन्निभाधरोट्ठा, पंडूर ससि सगल विमल निम्मल संख दधिघण गोखीर फेण दगरय मुणालिया धवलदंतसेढी अखंडदंता, अफुडियदंता, अविरलदंता, सुसिणिद्धदंता, सुजाइदंता, एगदंतसेढीव्व अणेगदंता, हुतवहनिद्धंत धोत तत्त तवणिज्जरत्त तलतालुजीहा, गरुलायत उज्जुतुंगणासा, अवदालिय पोंडरीयणयणा, कोकासित धवलपत्तलच्छा, आणामिय चावरुइल किण्हभराइय संठिय संगत आयत सुजात तणुकसिण निद्धभमुया, अल्लीणपमाणजुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमंसल कवोलदेसभागा, अइरुग्गय बालचंद

अर्थ

घन के दांत समान, फटे व अंतर रहित चीकने, व अच्छी तरह रहे हुवे हैं दो श्रेणी में जैसा एक दांत है वैसे अनेक दांत रहे हुवे हैं, अग्नि से तपाया हुवा निर्मल सुवर्ण जैसा लाल तालु व जीभा है, गरुड पक्षी जैसी नासिका है, विकसित पुंडरीक कमल समान चक्षुओं हैं, विकसित कमल की कर्णिका समान मधूर है, किंचित् नमाये हुए धनुष्य के आकार में काले वर्णवाली बरल समान अच्छे संस्थानवाली मनोहर काली उत्तर वर्णवाली भ्रमर वाले हैं, प्रमाण युक्त कर्ण हैं, मांस से पुष्ट ऐसे कपोल हैं, तत्काल का उदित हुवा बाल सूर्य जैसा ललाट है प्रतिपूर्ण पूर्णिमा के चंद्र समान मुख है, छत्र के आकार में मस्तक है, निबिड नाडियों से बंधा हुवा अच्छे लक्षणों युक्त ऊंचे शिखर समान नभ पीडाग्र शिखर होवे, वैसा

मद्दिय पसत्थ विछिन्न समणिढाला, उत्तुंग पाडिपन्न सोमवयणा, छत्तागारोत्तमगदेसा, घण निचिय सुबद्ध लक्खणुन्नय कुडागारणिभ पिंडियसिरा, हुतवह निद्धतधोय तत्त-तवणिज्जरत्तकसतकेससूमि, सामलि- पोंडघणणिचिय छोडिय मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण सुगंध सुंदर भुयमोयग भिंग णीलकज्जल पहट्ठभमरगणणिद्ध णिकुरंब णिचिय कुंचिय पयाहिणावत्त मुद्धसिरिया, लक्खण वंजण गुणोववेया, सुजायसुविभत्त सुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा॥तेणं मणुया उहस्सरा हंसस्सरा कोंचस्सरा णंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा, सुस्सरा निग्घोसा

मस्तक है, शालिम के पुष्प अथवा उष्ण जैसी लाल टंट है, सामली वृक्ष के पुष्प सेंपान पंहुत मोस मे उपचित सुकोमल विषय प्रशस्त सूक्ष्म, लक्षणवत, सुगंध से मनोहर कृष्ण वर्ण जैसा, काजल का समूह भ्रमरा भ्रमर के समूह समान श्याम चीकने दक्षिणावर्तवाले बहुत घटे नहीं ऐसे मस्तक के बाल हैं, उनका सब शरीर सर्वांग लक्षण से संपन्न है, उन के अंग उपांग अच्छे हैं स्वरूपवन्त देखने योग्य है, अभिरूप व प्रतिरूप है-और भी उन का स्वर हंस क्रौंच पक्षी, वीणा व सिंह के स्वर समान है सिंह समान घोष (गर्जना) है, मधुर स्वर मधुर घोष है, सुस्वर सुघोष है, कांति से देदीप्यमान उन का शरीर है वज्रऋषभ नाराच संघयण-वाले हैं, समचतुरस्र संस्थानवाले हैं, उन की चमडी निर्मली व रोग रहित है उत्तम प्रशंसनीय है, जिस को

छाया उज्जोइयगमणा, वज्जरिसह नारायसंघयणा समचउरस - संठाण संठिया, सिणिद्धछवी, निरायंका उत्तमपसत्थ अइसेसनिरुवम तणूजल्ल मल कलंक सेयरय दोसवज्जिय सरीरा, निरुवमलेवा, अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कपोतपरिणामा, सउनिव्वोस पिठंतरोरुपरिणया विग्गहिय उन्नयकुच्छी पउमुप्पल सरिसगंध निस्सास सुरहिवयणा, अट्ठधणुसय ऊसिया तेसिं मणुयाणं चउसट्ठिपिट्ठि करंडगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ तेणं मणुया पगइभद्दया पगइविणीया, पगइउवसंता पगइपयणु कोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीण भद्दगा विणीया अप्पिच्छा असंणिहि

अन्य उपमा नहीं देसके वैसा शरीर है, लघु गोत पक्षी जैसे ऐ पावे नहीं व प्रस्वेद रहित शरीर है, मल प्रमुख उन के शरीर पर नहीं है, अनुकूल वायु वेग उनके शरीर का है, कंक पक्षी समान आहार ग्रहण करते हैं पारावत समान पाचन होता है, शकुन पक्षी समान विहार करते हैं, रोग रहित कुक्षी उदर भाग है पद्म अथवा कमल की गंध समान श्वासोश्वास है उन का वदन मनोहर है आठसो धनुष्य की ऊंची काया है, उन को ६४ पांसलियों होती हैं, अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्यों स्वभाव से भद्रिक, विनीत उपशांत हैं क्रोध मान माया व लोभ को पतले किये हैं, कोमलता व विनीत भाव सहित हैं, माया रहित भद्रिक स्वभावी विनीत प्रेम बंधन रहित, धनादिक संचय रहित वृक्षक घरोंमें रहने वाले, वांच्छित वस्तुकी

सचया अचड्ढा विडिमतरपविसणा जहिरियय कामगामिणोय तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १९ ॥ तेसिण भते ! मणुयाण केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २० ॥ एगुरुयमणुईण भते ! केरिसए आगारभाववडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! ताओण मणुइओ सुजायसव्वंग सुदरिआ, पहाणमहिलागुणेहिंजुत्ता, अच्चत विसप्पमाण पउमसूमाल कुम्मसठिय विसिठचलणा, उज्जुमउयपीवरनिरतर सुसातचलणगुलीओ, अब्भुण्णय रतियसालिण तवणुसिणिद्धणक्खा, • रोमरहिय वट्टलठसठिय

प्राप्त करने वाले युगलनी से मनो वांछित काम भोग भोगते हुवे विचरते हैं अहो आयुष्यवत श्रमणों! वैसे मनुष्य के समूह कहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन मनुष्यों को आहार की इच्छा कितने काल में होती है? अहो गौतम! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२०॥ अहो भगवन्! एकरुक द्वीपमें स्त्रियों का आकार भाव कैसा कहा ? अहो गौतम ! उन स्त्रियों का आकार अच्छा व मनोहर है उन के सब अंग मनोहर हैं, प्रधान उत्तम स्त्री गुणों सहित है, अत्यंत मनोहर कमल जैसे व कोमल कछुवे जैसे पांव हैं सरल, कोमल पुष्ट अंतर रहित व मांस सहित पांव की अंगुलियों हैं, ऊंचे सुखदायी कमल के आकार से ताम्र वर्ण के पवित्र चिकने नख हैं, रोम रहित कुंकुमकार से उत्तम मनोहर मांस सहित जंघाका युगल

अब्भुन्नय पसत्थ लक्खण अकोप्पजघजुयला, सुणिमियसुगूढजाणु, मसलसुबद्ध सधी कयलिखंभातिरेग संठिया णिव्वणसुमाल मउय कोमल अविरल समसहत सुजातवट्ट पीवर निरतर रोरुआमट्ठावयवीवियट्टसठिया, पसत्थ विच्छिण्ण पिहुल सोणि वदणायामप्पमाण दगुणिय विसाल मसल सुबद्ध जहण्णवरधारिणिउत्तम विराइय पसत्थ लक्खण णिरोदरा, तिवलिय तणुणमियज्झियाउ उज्जुय समसहिय जच्चतण कामणाभिरू आदज्जलहड सुविभत्त कन्त सुजाय सामत रुइल रमणिज्ज रोमराई, गगावत्तकपयाहिणावत्तत्तर। भगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसायत

अर्थ — हैं, कच्छुए तरह नमते हुए दो घूंटण हैं, मांस से मच्छी तरह बधाई हुए पन की संधी है केलस्तम से अधिक आकारवाली व्रण रहित सुकुमाल मृदु, परस्पर मीलती हुई, पुष्ट वर्तुलाकार जघा है, अष्टापद नामक पत्थरोंका समान प्रशस्त लम्बी चौडी श्रोणि (कटी का पूर्वभाग-नीतिम्ब) है मुख का जो प्रमाण बारह अंगुलका होता है उस से दुगुनी करते जो होवे उतनी मांसल सहित व शिथिलता रहित धन की जघन है, उस विकार रहित उदर है, जिसकी वलय कुच्छ नमे हुए है सरल समवत, पतली काली, चिकनी मनोहर अंतराय रहित रमणिक, सुविभक्त रोमराजी है, गगावर्त, दक्षिणावर्त घल कल्लोल जैसे गंभीर, उदित-होवे सूर्य समान तेज व विकसित कमल समान गंभीर विकट नाभी है उत्तम मांस वाली कुक्षि है,

पउम गंभीर विगडणाभा, अणुव्भड पसत्थ पीण कुच्छी, सन्नयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाईय पीणरइयपासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय णिरुवहय गायलट्ठी, कंचण कलस पमाण सममहिय सुजायालट्ठ चुचुय आमेल जमल जुगल वट्टिय अब्भुण्णय रतिय सट्ठिय पयोधराओ भुजंग अणुपुव्वतणुय गोपुच्छवट्ट समसंहिय णमिय आएज्ज ललिय बाहाओ, तंबणहा, मंसलग्ग हत्था, पीवर कोमल वरंगुलीओ, णिद्ध पाणिलेहा, रविससि संख चक्क सोत्थिय विभत्त सुविरातिय पाणिलेहा, पीणुण्णय कक्खवत्थिय पदेसा पडिपुण्णगलकवोला, चउरंगुल सुप्पमाण कंबुवर सरिसगीवा,

नम हुए धनुष्य समान मर्यादा सहित मनोहर दो पास हैं, उनकी हड्डियों नहीं दीखती हैं, सुवर्ण की कांति समान निर्मल रोग रहित काया है सुवर्ण कलश समान प्रमाण सहित दोनों स्पष्ट कठिन स्तन हैं, बराबर समश्रेणि में साथ दोनों गोलाकार में स्तन हैं, सर्प समान अनुक्रम से पतली होती गोपुच्छ के आकार से पतली नमती हुई गोपवाली बाहु है ताम्र समान नख हैं, मांस सहित पुष्ट सुकोमल शोभनीक अंगुली हाथ की रेखा है, चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्र, स्वस्तिक, प्रमुख की हाथ में रेखाओं हैं, मारव, कंधा, कुक्षि हृदय व बस्ति रूप प्रदेश मांसपूर्ण है मांस से पुष्ट गर्दन दो कपोल हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी ग्रीवा है, मांस सहित अच्छे आकारवाली दाढी (हड्डी) है,

मसलसाठय पसत्थहणुगा, दालिम पुष्फ पगासधअर पलम्ब कुंचिय बराधरा सुंदराचराट्ठा दधि दगरय चंद कुंद वासंति मउल अ छिद्द विमल दसणा रत्तुप्पल रत्तमउय सूमालतालु जीहा, कणयर मउल-अकुडिल अब्भुगगय उज्जुतुगणासा, सारयनव कमल कुमुद कुवलय विमुक्क मउल दलनिगर सरिस लक्खण अंकिय कंत नयणा, पत्तलधवलायततबलोयणाओ, आणमित चावरुइल किण्हभराइ संठिय संगय आयय सुंजायतणकसिण निद्धभुमया अल्लीण पमाणजुत्त सवणा, सुस्सवणा, पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमणिडाला, कोमुतिरयणिकरविमल

अर्थ

दाडिम के पुष्प समान लाल वर्ण के सुंदर ओष्ठ है, दधि, पानी, चांदी, चंद्र, मचकुंद के पुष्प, मालती के पुष्प, अशोक वृक्ष के पुष्प समान श्वेत वर्णवाले छिद्र रहित, निर्मल दांत अपणे है रक्त कमल व रक्त पद्म समान रक्त वर्णवाले मृदु जिव्हा व तालु है कणर अथवा अशोक वृक्ष समान रूप है सरल लम्बी नासिका है, शरदकाल के उत्पन्न हुए कमल, चंद्र विकासी कमल, नीलोत्पल अहो गौतम ! कर्णिका समान लक्षण युक्त मनोहर नयन है, लावण्य सहित नयन के कोने ताम्र जैसे आहार करती हैं ? धनुष्य समान मनोहर काले केश सहित संगत, सुजात कृष्ण वर्णवाली भृकुटी है। श्रमणों ! यह मनुष्य पुष्ट मनोहर कपोल है, चार अंगुल प्रमाण विशाल ललाट है, कार्तिक पूर्णिमा की चंद्र कहा ! अहो गौतम !

जयपासा सगयपासा

पडिपुन्नसोमवयणा, छत्तुण्णयउत्तिमंगा, कुडिलसुसिणिद्धदी... मुजाय जिणवहुय जूवथुमदामिणि कमंडलुकलस वावि सोत्थिय पडाग जवमच्छ कु... जमल जुगल मुकुपाल अंकुस अट्ठावय वीईसुपइट्ठ कम्मऊर ...ममसहिय तारणमइणि उदधिवर भवणगिरिवर आय सलिलवगय ठमभ सीह चामर उत्तम...आओ, छत्तीसलक्खणधारीओ, हससरिसगईओ, कोइलमुहुरगिरसुसराउकत्ताओ सव्व... अणुमयाउ ववगय वलिपलियावग दुव्वलवाही, दामग्ग सोगमुक्का, आव्वत्तणयनराण थोवूणमूसियाओ सम्भावसिंगारचारुवसा, सगतगतहसिय भणिय चिट्ठिय

है छत्र जैसे मस्तक है, सच्चे चीकने श्याम वर्ण के मस्तक के केश हैं, १ छत्र २ ध्वजा ३ युग ४ स्तूप ५ दामनी ६ कमंडल ७ कलश ८ वावडी ९ स्वस्तिक १० मोटी ध्वजा ११ यवन १२ मत्स्य १३ काचवा १४ रथ १५ मगर १६ थाल १७ अंकुश १८ अष्टापद १९ श्रीदाम २० सुप्रतिष्ठक, २१ मयूर २२ लक्ष्मी का अभिषेक २३ तोरण २४ पृथ्वी २५ समुद्र २६ देव भवन २७ पर्वत २८ दर्पण २९ क्रीडा करता हस्ती ३० वृषभ ३१ सिंह और ३२ चमर इन बत्तीस लक्षणों से युक्त है. हंस समान चाले है, कोकिला समान मधुर स्वर है, मनोहर सब को सम्मत बल्लभ हैं [illegible] केश, खुल वर्ण, कुरूप, व्याधि, दौर्भाग्य, शोक इन सब से रहित है, ऊंचाई में पुरुष से थोडी कमती है, स्वभाव से ही

विलाससल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला, सुन्दरथणजहणवयणकरचरणणयण लावण्ण-
वण्णरूवजोवणविलासकलिया, नन्दणवणविवर चारिणीउव्व अच्छराओ
अच्छेरग पिच्छणिज्जा, पासाईयाता दरिसणिजातो अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २१ ॥
तासिण भंते! मणुईणं केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थ
भत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २३ ॥ तेण भंते मणुया किं आहारंति ? गोयमा !
पुढवी पुप्फफलाहारा ते मणुयगण पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तासेण भंते !

सोलह शृंगार व आचार से मनोहर है, बोलना, बैठना, हसना व विलासवार्ता करना यह सब क्रिया
युक्त है, मनोहर नितम्ब पृष्ठ है, सुंदर स्तन, जघन, वदन, हाथ, पाँव चक्षु, लावण्य, रूप व योवन
विलास सहित है, नंद वन में रहनेवाली अप्सरा समान रूप से देखने योग्य, अभिरूप व प्रतिरूप है
॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! युगल की स्त्री को कितने काल में आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम !
एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२२॥ अहो भगवन्! वे किस वस्तु का आहार करती हैं ?
अहो गौतम ! वे पृथ्वी पर के फल पुष्प का आहार करती हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! यह मनुष्य
गण का कथन हुवा ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! वहां पृथ्वी का कैसा आस्वाद कहा ? अहो गौतम !

पुढवीए केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नामए गुलइवा खंडइवा सक्कराइवा मच्छंडियाइवा, भिसकंदइवा, पप्पडमोततीतिवा, पुप्फतराइवा, पउमतराइवा अकामियातिवा, विजयातिवा महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अण्णोवमाइवा चउरक्केगोक्खीरे चउट्ठाणेपरिणए गुडखंडमच्छंडिउवणाए मदग्गिकढिए वण्णेण उववेए जाव फासेण मवेए एतारूवे सिता? नो इणट्ठे समट्ठे, तीसेण पुढवीए एत्तो इट्ठतराए चेव जाव मणामतरा चेव ॥ २५ ॥ आसाएणं भंते ! पुप्फफलाण केरिसए अस्साए पण्णत्ते ?

जैसे गुड, शक्कर, मिश्री, मुचकंद, मोदक, पुष्पोत्तर अथवा पद्मोत्तर, आक्रोशिका, विजयापाक, महाविजयापाक, भिन्न २ मिश्रण, अनुपम गोक्षीर चार गाय को पीलाना, फीर उन चारों गायों का दूध तीन गायों को पीलावे, फीर तीन गायों का दूध दो गायों को पीलावे और दो गायों का दुध एक गाय का पीलावे और इस एक गाय का जो दुध होवे उस में गुड शक्कर वगैरह डालकर मंद आग से पकावे यह जैसा वर्ण से पर्यंत योग्य यावत् स्पर्श से वर्णन् योग्य होवे वैसा रत्नप्रभा द्वीप के पृथ्वी का स्वाद कैसा होता है? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस इस से भी इष्ट व मनोहर उस का स्वाद है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! यहां के पुष्प फल का स्वाद कैसा ...

गोयमा ! से जहा नामए रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्स निप्फन्ने वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे बीहणिज्जे मयणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे भवे तारूवेसिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, तेसिणं पुप्फफलाणं इत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पन्नत्ते ॥२६॥ तेणं भंते! मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति ? गोयमा! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ तेणं भंते ! रुक्खा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! कूडागार संठिया, पेच्छाघरसंठिया छत्तागार

भव करनेवाले चक्रवर्ती राजा का परम कल्याणकारी लाखों वस्तुओं के संयोग से बनाया हुवा, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श से वर्णन योग्य, खाने योग्य, दीप्यमान, दर्प योग्य, मद इन्द्रियों व गात्रोंको सुख कर्ता व आनंद कर्ता, ऐसा भोजन जैसा क्या होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी इष्टतर यावत् आस्वादनीय उन पुष्प व फल का आस्वाद कहा है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्य आहार करके कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! वे मनुष्य वृक्ष रूप गृह में रहते हैं अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! वहां के वृक्षों कैसे आकारवाले कहे हैं ? अहो गौतम ! कूटाकार, प्रेक्षागृह, छत्राकार, ध्वजाकार,

संठिया, झयसंठिया, थूभसंठिया, तोरणसंठिया, गोपुरसंठिया, वेलगसंठिया, अट्टालग संठिया, पासायसंठिया, हम्मितलसंठिया, गवक्खसंठिया, वालग्गपोतियसंठिया, वलभी संठिया, अण्णे तत्थ बहवे वरभवणसयणासण विसिट्ठ संठाण संठिया, सुभसीतल छायाणं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ अत्थिणं भंते ! ते एगुरुय दीवे दीवे गेहाणिवा गेहावणाणिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालयाणं मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २८ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ गामाइवा नगराइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, जहत्थिय कामगामिणोणं ते मणुयगणा पण्णत्ता

स्तूप के आकार, तोरण का आकार गोपुर का आकार, मकर का आकार, अट्टालक का आकार, प्रासाद के आकार, हर्म्यतल के आकार, गवाक्ष के आकार, बालाग्रपोत के आकार, वलभि घर के आकार, रसोई बनाने के गृह के आकारवाले हैं, और अन्य अनेक वृक्ष भवन, शैय्या, आसन के संस्थानवाले हैं उन की छाया अति शीतल है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में गृह वृन अथवा गृह हैं क्या ? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! वहां के मनुष्यों का वृक्ष ही गृहरूप बतलाये हैं ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में ग्राम नगर, यावत् सन्निवेश हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे

सूत्र

समणाउसो ॥ २९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीवे असीइवा मसीइवा किसीइवा विवणीइवा पणीइवा वाणिज्जाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय असि मसि कसि विवाणिपणियवज्जाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ ३० ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ हिरण्णेइवा सुवण्णेइवा कंसेइवा दूसइवा मणीइवा मोत्तिएइवा विपुल-धण कणग रयण मणि मोत्तिय-सख सिलप्पवाल संतसार सावएज्जेवा ? हंता अत्थि, णो चेवणं तेसिं मणुयाणं तिव्वममत्तिभावे समुप्पज्जइ ॥ ३१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ रायाइवा जुवरायाइवा, ईसरेइवा तलवरेइवा माडंबिएइवा कोडुंबिएइवा

अर्थ

मनुष्यों स्वेच्छा पूर्वक विचरनेवाले हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूप द्वीप में असी (शस्त्र का व्यापार) मसि (स्याही कलम का व्यापार) और कृषि (खेती का व्यापार) अथवा लेन देन का व्यापार है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों असि, मसि, कृषि व लेन देन के व्यापार से रहित हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, दूष्य, मणि मौक्तिक, व विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिलप, व प्रधान स्वापतेय है क्या ? हां गौतम ! वे सब हैं, परंतु उन मनुष्यों को उस पर तीव्र ममत्वभाव नहीं होता है ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति,

इब्भेइवा, सेट्ठीइवा, सेणावईइवा, सत्थवाहिइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय इड्ढि सक्कारएण ते मणुयगणा पण्णत्ता ? समणाउसो ! ॥ ३२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे दासाइवा, पेसाइवा, सिस्साइवा भयगतिवा भाइल्लगाइवा कम्मगाराइवा भोगपुरिसाइवा ? णो इणट्ठसमट्ठे, ववगय आभोगियाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ मातातिवा पियाइवा भाया इवा भयणीइवा भज्जाइवा पुत्ताइवा धूयाइवा सुण्हाइवा ? हंता अत्थि, णोचेवणं तासिणं मणुयाणं तिव्वपेज्जबंधणे समुप्पज्जइ, पयणुपज्जबंधणा ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ अरीइवा वेरियइवा घायगा-

व सार्थवाह है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य ऋद्धि सत्कार समुदाय से रहित हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुकद्वीप में दास प्रेषक, शिष्य, भाजक, (दास कर्मचारी) भागीदार [विभागकर्ता] कर्मकर, (नौकर) व भोग पुरुष हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वहांपर मनुष्य रहित वे मनुष्यों हैं ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुकद्वीप में माता, पिता, भ्राता, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू हैं क्या ? हां गौतम ! हैं परंतु उन में उनका प्रेम बंधन नहीं होता है स्वभाव से ही उन का मन बंधन पतला होता है ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुकद्वीप में अरि, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक

सूत्र

इवा वहगाइवा पडणीइवा पच्चामित्ताइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय वेराणुबंधाण ते मणुयागणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २५ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुय दीव २ मित्ताइवा वयसाइवा घडियातिवा सुहीतिवा, सुहीयाइवा, महाभागातिवा, सगतियातिवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय पेमाणुरागाय तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २६ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ आवाहाइवा विवाहाइवा जन्नाइवा सड्ढाइवा थालिपागाइवा चोलोवणतणाइवा सीमंतोवणतणाइवा, पितिपिंडनिवेदनाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय आवाहविवाह

अर्थ

व शत्रु है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वैर के अनुबंध रहित वे मनुष्य कहे हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में वयस्य, मित्र, समान वने हुए, सदैव साथ रहनेवाले सखा, महा भागवाले व संगतिक है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य प्रेमानुराग में रक्त नहीं हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में आवाह (स्वजनों को आमंत्रण) विवाह (लग्न क्रिया) यज्ञ विधि, श्राद्ध क्रिया, स्थालीपाक, (पकाने की क्रिया) बालक को वस्त्र पहिना, चूडामंडन संस्कार, उपनयन, मस्तक मुंडन का उत्सव, श्रीमंत, पितृपिंड व नैवेद्यादिक क्रियाओं

जन्नरुद्दयालपागि चोलावण सीमतोवणतणापितिपिंडनिवेदणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ इंदमहाइवा रुद्दमहाइवा खंदमहाइवा सिवमहाइवा वेसमणमहाइवा मुगुंदमहातिवा नागमहातिवा जक्खमहाइवा भूतमहाइवा कूवमहाइवा तलागमहाइवा नदिमहाइवा दहमहाइवा, पव्वयमहाइवा रुक्खमहाइवा, चेतियमहाइवा, थूभमहाइवा ? णो इणट्ठेसमट्ठे, ववगयमहामहिमाण तमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥३८॥ अत्थिणं भंते! एगुरुयदीवे २ नडपेच्छाइवा णट्टपेच्छातिवा मल्लपेच्छातिवा मुट्ठियपेच्छाइवा विडंबगपेच्छातिवा कहक्पेच्छातिवा

हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य पूर्वोक्त सब क्रियाओं से रहित हैं ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में इन्द्र महोत्सव, रुद्र महोत्सव, स्कंद महोत्सव, शिव महोत्सव वैश्रमण महोत्सव, मुकुंद महोत्सव, नाग महोत्सव, यक्ष महोत्सव, भूत महोत्सव, कूप महोत्सव, तलाव महोत्सव, नदि महोत्सव, द्रह महोत्सव, पर्वत महोत्सव, वृक्ष महोत्सव, चैत्य महोत्सव व स्तूप महोत्सव है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है पूर्वोक्त सब प्रकार के महोत्सव रहित वे पुरुषों हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में नट के खेल, नृत्य करना, मल्ल क्रीडा, मुष्टि युद्ध, विदूषक कथा करनेवाले, वार्ता करनेवाले, आख्यान कर

पवगपेच्छातिवा अक्खवाइगपेच्छातिवा लासगपेच्छातिवा लखपेच्छातिवा मखपेच्छातिवा तणइल्लपेच्छातिवा,तुमवीणपेच्छातिवा, कीवपेच्छातिवा मागहपेच्छातिवा,जल्लपेच्छातिवा, कहगपेच्छाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय कोऊहल्लाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सगडाइवा रहाइवा जाणाइवा जुगाइवा गिल्लीतिवा थल्लीतिवा थिल्लीतिवा पवहणाइवा सीयाइवा सदमाणियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे पादचार विहारणोण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ४० ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे आसाइवा हत्थिइवा उट्टातिवा

नेवाले, कुवा बावडी में कूदनेवाले, हास्य वचन कहनेवाले, अच्छा बुरा गानेवाले, वांस पर चढकर खेलने वाले, विविध मत से भिक्षा मांगनेवाले, वीणा बजानेवाले, रूमी बजानेवाले, क्रीड़ की क्रीडा, मागधा सो मंगलीक वीणा बजानेवाले, कावड उठानेवाले, और स्तोत्र कहनेवाले ये पूर्वोक्त सब नाटक वहां हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि उन को कौतुक नाव नहीं होता है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाडे, रथ यान, पालखी, गिल्ली, थल्ली, थिल्ली महाजन, शीबिका व सदमाणि हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों पांव से ही चलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीतिवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तचिल्लाइवा चिल्लगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवणं अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाणं किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाणं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व मारर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परन्तु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व भेडी प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) परस्सर, शृगाल, बिडाल, श्वान, कोल्हा, कोकतिय, शशक, चित्ता व चिल्लक आदि के जीव हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परन्तु वे [illegible] एक दूसरे को अथवा मनुष्य को किसी प्रकार की बाधा, विबाध

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विज्जलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणूइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उपद्रव व परितापना नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुक द्वीप में शाली, व्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, मल सहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि एकोरुक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकोरुक द्वीप में खीला कंटक, रजयुक्त, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राध मुक्त, दुर्गंध व अन्य अशुचिवाली

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तचित्तलाइवा चिल्ललगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवण अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाण किंचि आबाहंवा विवाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाण ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख हैं क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व भेडी प्रमुख हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रीछ) तरक्षु, शृगाल, बिलाड, श्वान, कोलश्वा, कोकंतिय, शशक, चित्ता व चिल्लक आदि के समूह हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे का अथवा मनुष्य का किसी प्रकार की बाधा, विबाध

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयवराइवा पत्तकयवराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पर्वछेद नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ५३ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में शाली, ब्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि एकरूक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में ठूंठ, कंटक, हीरक, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राख, मलमूत्र

अस्रोक्खाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय खाणुकण्टक हीरसक्करतण कयवर असुइपूईय दुब्भिगंध मचोक्खवज्जिएण एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४६ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ दसाइवा मसगातिवा पिसुगाइवा जूवाइवा लिक्खाइवा ढिंकुणाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय दसमसग पिसुते जुवा लिक्ख ढिंकुण परिवज्जिएण एगुरुयदीवे पन्नत्ते समणाउसो ! ॥ ४७ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ अहीइवा अयगराइवा महोरगातिवा ? हंता अत्थि नो चेवण ते अन्नमन्नस्स तेसिं वा मणुयाण किंचि आवाहवा विवाहवा छविच्छेयवा पकरेंति पगइ भद्दगाण ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥४८॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीव २

वस्तु है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकी वहां की भूमि खीला कटक वगैरह सब अशुचिमय वस्तु से रहित है ॥ ४६ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दंश मशक, पिस्सूर, यूका, लिख, अथवा ढकुण (खटमल) अयुक्त है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वह द्वीप पूर्वोक्त दंश मशकादि रहित है ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अहि, अजगर व महोरग है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा वहां के मनुष्यों को किसी प्रकार से बाधा पीडा अथवा उपद्रव नहीं करते हैं वे व्याल जीवों प्रकृति के भद्रिक होते हैं ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक

गहदण्डातिवा गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा, गहजुद्धाइवा गहसंघाडाइवा गहअ-सव्वा अब्भाइवा अब्भरुक्खाइवा सञ्झाइवा, गंधव्वणगराइवा, गज्जियाइवा विज्जुयाइवा उक्कापयाइवा दिसादाहाइवा णिग्घाइवा पंसुविट्ठीइवा जूवाइवा जक्खालि-त्ताइवा धूमियाइवा महियातिवा रउग्घायायाइवा चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवेसाइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा, इंदधणूआइवा उदगमच्छा-इवा अमोहाइवा कविहसीयाइवा पाईणवायाइवा, पडीणवायाइवा जाव सुद्धवायाइवा

अर्थ

द्वीप में ग्रह दण्ड (शिखावाला ग्रह का उदय होना) ग्रह मुशल [पूछवाला ग्रह] ग्रह सबंधी गर्जारव, ग्रह युद्ध, ग्रह संघाटक, ग्रह अपसव्य [ग्रह का वक्रमार्ग में उदय होना] बादल समुख, वृक्षाकार से बादल होना, पांचवर्ण संध्या, गंधर्व नगर सो आकाश में नगरों का होना, देवों के प्रासाद, गर्जारव, विद्युत, उल्कापात, दिशादाह, (किसी दिशा में बिना मूल से अग्नि की ज्वालाओं दीखे) निर्घात, रजावृष्टि भूमिकंप यक्ष मनुष्य का कोप, धूम, धूंवर रजोघात, चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण चन्द्र परिवेष [चन्द्र पीछे मण्डलाकार होवे सो] सूर्य परिवेश (सूर्य पीछे मण्डलाकार होवे सो) प्रतिचन्द्र दो चन्द्र दीखे, प्रतिसूर्य दो सूर्य दीखे, इन्द्र धनुष्य, उदक मत्स्य [वर्षा में मत्स्य का गिरना] पूर्व दिशा का प्रतिकूल वायु, पश्चिम दिशा का प्रतिकूल वायु यावत् शुद्ध वायु, ग्राम दाह, नगर दाह यावत् सन्निवेश दाह, प्राणियों का क्षय,

गामदाहाइवा नगरदाहाइवा जाव सन्निवेसदाहाइवा पाणक्खय जणक्खय कुलक्खय धणक्खय वसणभूतमणारयाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगरुयदीवे डिंबाइवा डमराइवा कलहाइवा बोलाइवा खाराइवा वेराइवा विरुद्धरज्जाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय डिंबडमर कलह बोलखार वेरविरुद्धरज्जविवज्जियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५० ॥ अत्थिणं भंते ! एगरुयदीवे २ महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थपडणाइवा महापुरिसपडणाइवा महारुधिरपडणाइवा, नागबाणातिवा, खलबाणातिवा, तामसबाणातिवा, दुब्भूइयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा, नगररोगाइवा मंडलरोगाइवा

मनुष्य का क्षय, कुल का क्षय, धन क्षय, व्यसन कष्टभूत ऐसे दुष्ट उत्पात हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उक्त कुच्छ भी नहीं है ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में डिम्ब-स्वदेश का नाश डमर-अन्यदेशों की तरफ से हुवा उपद्रव, क्लेश, दुःखियों का कलकलाट परस्पर इर्षा परस्पर हिंसक भाव व राज्य विरुद्ध कर्तव्य है क्या ? यह समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य उक्त सब बातों से रहित हैं ॥ ५० ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में बडा युद्ध महा संग्राम महा शस्त्र पतन, महा पुरुष का मरण बहुत रुधिर का पडना नागबाण बाण तामस (आकाश में अन्धकार)

सीसवेयणाइवा, अच्छिवेयणाइवा कण्णवेयणाइवा नक्कवेयणाइवा, दंतवेयणाइवा, कासाइवा, सासाइवा, जराइवा दाह इवा कच्छूइवा, खसराइवा, कोट्ठाइवा, कुडासिवा, दगोदराइवा, अरिसाइवा, अजिरगाइवा, भगंदलाइवा इंदग्गहाइवा, खंदग्गहाइवा कुमारग्गाहाइवा, नागग्गहाइवा अक्खग्गहाइवा भूयग्गहाइवा, उव्वेगग्गाहाइवा धणुग्गहाइवा एगाहियाइवा, वेयाहियाइवा, तेयाहिय इवा, चउत्थगाहियावा हिययसूलाइवा, मत्थगसूलाइवा, पाससूलाइवा कुच्छिसूलाइवा, जोणिसूलाइवा, गाममारीवा जाव सन्निवेसमारीवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणायरि यवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायंकाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता

व सायस प्राण है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! वहां दुर्भूत, कुल रोग, ग्राम राग, नगर रोग, मंडल राग, मस्तक वेदना, आंखों की वेदना, कान की वेदना, नासिका की वेदना, दांत की वेदना खांसी, श्वास, ज्वर, दाह, खुजली, खसर, कोढ दकरुत्राय, मसा, अजीर्ण, भगदर, इंद्रग्रह, स्कंध ग्रह, कमार ग्रह, नाग ग्रह, यक्ष ग्रह, भूत ग्रह, उद्वेग ग्रह, धनुर्वायु एकांतर ज्वर, दो दिन के अंतर से ज्वर, तीन दिन के अंतर से ज्वर, चार दिन के अंतर से ज्वर, हृदय शूल, मस्तक शूल, पार्श्व शूल, कुक्षिशूल, योनि शूल, ग्राम में मरकी यावत् सन्निवेश में मरकी कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसन भूत

समणाउसो ! ॥ ५१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुट्ठीइवा, मंदवुट्ठीइवा उदवाहाइवा पवाहाइवा, दगुब्भेयाइवा, दगुप्पीलाइवा, गामवहाइवा जाव सन्निवेसवहाइवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणारियाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायंका णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥५२॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ अयागराइवा तंबागराइवा सीसागराइवा सुवन्नागराइवा, रयणागराइवा वइरागराइवा, वसुहाराइवा हिरण्णवासाइवा, सुवन्नवासाइवा, रयणवासाइवा, वइरवासाइवा, आभरणवासाइवा, पत्तवास पुप्फवास फलवास बीयवास गंधवास

कष्टरूप अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य रोग रहित हैं॥५१॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में अतिवृष्टि मंद वृष्टि, उत्तम वृष्टि, अधम वृष्टि, पानी का प्रवाह, (गांव डूबे वैसा) यावत् सन्निवेश प्रवाह कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसनभूत दुष्ट अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां मनुष्यों पानी के उपद्रव रहित है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में लोहे के आगर, ताम्बे के आगर, सीसे के आगर, सुवर्ण के आगर, रत्न के आगर, हीरे के आगर, वसुधारा धन की वर्षा, चांदी की वर्षा, सुवर्ण की वर्षा, रत्न की वर्षा वज्र हीरे की वर्षा, आभरण की वर्षा, पत्र की वर्षा, बीज की वर्षा, पुष्प, फल, माल्य, गंध, चूर्ण, छीला, की वर्षा, रत्नकी

मज्जवास वत्थवास चुन्नवास खीरवुट्ठीइ रयणवुट्ठीइवा हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण तहेव जाव चुन्नवुट्ठीइवा सुकालाइवा दुकालाइवा सुभिक्खाइवा दुभिक्खाइवा अप्पग्घाइवा महग्घाइवा कयाइवा विक्कयाइवा, सणिहीइवा, सन्नयाइवा, निधिइवा, निहाणाइवा, चिरपोराणाइवा, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीणगोत्तागाइ जाइ इमइ गामागर नगर खेड कब्बड मडंब दोणमुह पट्टणासम संवाह सन्निवेसेसु सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह महेसु नगरानिद्धमणेसु सुसाण गिरिकंदर संति सलोवट्ठाण भवणगिहेसु सन्निखित्ता चिट्ठंति? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५३ ॥ एगुरुय दीवेण

अर्थ वृष्टि, चांदी की वृष्टि, सुवर्ण की वृष्टि यावत् चूर्ण की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, अल्प मूल्य वाली व बहु मूल्य वाली वस्तु, लेना व देना संग्रह करना अथवा संग्रह कर बेचना, धन प्रमुख निधान प्रमुख ऐसे धन के भोगने वाले का नाश हुवा होवे उन के गोत्र का भी विच्छेद होवे वैसे धन ग्राम नगर, खेट, कर्बट, मडप द्रोण मुख, पाटण संबाह व सन्निवेश के शृंगाटक के स्थान, तीन रास्ते मीले वैसे स्थान, चार रास्ते मीले वैसे स्थान, चच्चर, चतुर्मुख, राज्य मार्ग नगर की खाल, स्मशान पर्वत की शीला, गुफा व भवन में गडे हुवे धन इत्यादि सब है क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है उक्त सब वस्तुओं वहां नहीं है ॥ ५३ ॥ अहो भगवन्! एकरुक द्वीप में मनुष्य की कितनी स्थिति कही

भंते ! दीवे मणुयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ॥ ५४ ॥ तेणं भंते ! मणुया कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! तए मणुया छम्मासा सेसाउआ मिहुणाइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खंति संगोवंति सारक्खित्ता उस्सासित्ता णिस्सासित्ता कासित्ता छिंतित्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरियाविया सुहंसुहेणं कालमासे कालंकिच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, देवलोग परिग्गहियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के असंख्यातवे भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवा भाग ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्यों काल के अवसर में काल करके कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जब उन का छ मास आयुष्य शेष रहता है तब उनका मिथुनक (पुत्र व पुत्री) का जोडा प्रसव होता है ७९ दिन पर्यंत उनकी प्रतिपालना करते हैं, अच्छी तरह रखते हैं यों अच्छी तरह रक्षा करते हुए व युगल युगलनी श्वासोश्वास लेते हुए खांस व छींक खाते हुए किंचिन्मात्र भी बाधा पीडा बिना सुख पूर्वक काल के अवसर में काल करके भुवनपति वाणव्यंतरदेव में उत्पन्न होते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों !

सूत्र

॥ ५५ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं आभासिय मणुयाणं आभासिय दीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुदीवे २ तहेव चेव चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लातो चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयण सेसं जहा एगुरुयाणं निरवसेसं सव्वं ॥ ५६ ॥ कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं वेसाणिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणपच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दंति तिन्निजोयणा सेसे जहा एगुरुयाणं

अर्थ

द्वीपों में उत्पन्न होने का यह मनुष्य समुदाय कहा ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के आभासिक मनुष्यका आभासिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में चुल्लहिमवन्त पर्वत रहा हुवा है, उस के दक्षिणपूर्व ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में तीन सो योजन जावे वहां आभासिक द्वीप कहा है सब अधिकार सब एकरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के वेषाणिक मनुष्यों का वेषाणिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरु पर्वत से दक्षिणदिशा में चुल्लहिमवन्त वर्षधर पर्वत से दक्षिणपश्चिम नैऋत्यकून के चरिमांत से तीनसो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां वेषाणिक द्वीप रहा हुवा है इस का शेष सब अधिकार एकरुक द्वीप

॥ ५७ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणं नंगोलियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तर पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिन्निजोयण सयाइं सेसं जहा एगूरुय मणुस्साणं ॥ ५८ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणं हयकण्णमणुस्साणं हयकन्नदीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगुरुदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवण समुद्दं चत्तारि जोयणसयाइं उगाहित्ता एत्थणं दाहिणिल्लाणं हयकन्नमणुस्साणं हयकन्न दीवे नाम दीवे पण्णत्ते, चत्तारि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं बारससया पन्नट्ठा किंचि

जैसे जानना ॥५७॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के नांगोलिक मनुष्य का नांगोलिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम! मेरुपर्वत का दक्षिण में चुल्लहिमवंत पर्वत की उत्तर पश्चिम चरमान्त से लवण समुद्र में जावे तो यहां नांगोलिक द्वीप कहा हुवा है इस का कथन एकोरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के हय कर्ण मनुष्य का हय कर्ण द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! एकोरुक द्वीप के चरिमान्त से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे तब यहां हयकर्ण द्वीप चार सो योजन का लम्बा चौडा है बारह सो पेंसठ योजन में कुच्छ कम की परिधि कही है, एक पद्मवर वेदिका व

सूत्र

त्रिसेसूणाइ परिक्खेवेण एगाए पउमवर वेइयाए अवसेस जहा एगुरुयाण ॥ ५९ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण गयकन्नमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! आभासियदीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ, सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६० ॥ एव गोकन्नमणुस्साण पुच्छा ? वेसालिय दीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६१ ॥ सुकुलिकन्नाण पुच्छा ? गोयमा ! नंगोलियदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ

अर्थ

वनखण्ड सहित है शेष अधिकार एकरूकद्वीप जैसे जानना ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के गजकर्ण मनुष्य का गजकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! आभासिकद्वीप के अग्निकून के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे वो वहां गजकर्ण नामकद्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ! गोकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! वैशालिक द्वीप के नैऋत्यकूने के चरिमांत से चार सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां गोकर्ण द्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६१ ॥ सकुलिकर्ण द्वीप की पृच्छा, अहो गौतम ! नांगोलिक द्वीप के वायव्यकून के चरिमांत से चार सो योजन लवण

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा· हयकन्नाण ॥ ६२ ॥ आयसमुहाण पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पचजोयण सयाइ उगाहित्ता इत्थण दाहिल्लाण आयसमुह मणुस्साण आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्त, पचजोयणसयाइ आयामविक्खभण आसमुहाईण छसया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामुहाईण अट्ठ घणदताईण जाव नवजोयणसयाइ, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइ, अउणपन्नाइ बारसवनट्ठ इ हयकन्नाण आसकन्नाईण परिक्खेवो आयसमुहाईण

समुद्र में जावे वो वहां सकुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरि- मांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पन्नरसेकासिए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, एवं एतेण कमेण उवउज्जिय २ णेयव्वा, चत्तारि २ एगप्पमाणा णाणत्त, उग्गाह विक्खंभे परिक्खेवे पढमबिति ततिय चउक्काण उग्गाहो विक्खंभो परिक्खेवोय भाणिओ, चउत्थे चउक्के छ जोयण सयाइं, आयाम विक्खंभेण, अट्ठारसत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेण ॥ पंचम चउक्के सत जोयण सयाइं आयामविक्खंभेण, बावीसंतेरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण ॥ छट्ठ चउक्क अट्ठ जोयण आयाम विक्खंभेण पणवीस अगुणत्तीसे

अर्थ

आठ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, घणदत, लष्टदंत, गूढदंत व शुद्धदंत, ये चार द्वीप नव सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं अब इन की परिधि कहते हैं एकरुकादि चारों द्वीप की नव सो गुनपचास योजन की परिधि कही, दूसरा हयकर्णादि चारों द्वीप की बारहसो पैंसठ योजन की परिधि है तीसरा आदर्श मुखादिक चारों द्वीप की पनरह सो इक्यासी योजन स कुच्छ अधिक की परिधि है, चौथा चौक अश्व मुखादिक चारों द्वीप में अठारहसो सत्ताणव योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, पांचवा चौक अश्वकर्णादिक द्वीप की बावीस सो तेरह योजन की परिधि है, छट्ठा चौक उल्कामुखादिक अंतर्द्वीप की पचीस सो उनतीस योजन की परिधि है सातवा चौक घनदंतादिक चार अंतरद्वीप की नव सो योजन का लम्बा चौडा व दो हजार आठसो पैंतालीस योजन की परिधि है, और भी द्वीप की जितनी चौडाइ है उतने योजन की

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं सेस जहा हयकन्नाणं ॥ ६२ ॥ आयसमुहाणं पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पंचजोयण सयाइं उगाहित्ता इत्थणं दाहिणिल्लाणं आयसमुहमणुस्साणं आयसमुह दीवेनामं दीवे पण्णत्ते, पंचजोयणसयाइं आयामविक्खभेणं आसमुहाईणं छसया, आसकन्नाईणं सत्त, उक्कामुहाईणं अट्ठ घणदंताईणं जाव नवजोयणसयाइं, ॥ एगुरुय परिक्खेवो नवचेव सयाइं, अउणपन्नाइं बारसवनट्ठ इ हयकन्नाणं आमकन्नाईणं परिक्खेवो आयसमुहाईणं

समुद्र में जावे तो वहां शष्कुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौड़ा है आदर्शमुख, मेषमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौड़े हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौड़े हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौड़े हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयणसयाइ उगाहित्ता एत्र जहा दाहिणिल्लाण तहा उत्तरिल्लाण भाणियव्व, णवर सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स विदिसासु, एत्र जाव सुद्धदत दीवेति जाव सेत अतरदीवका ॥ ६४ ॥ सेकित अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तिसतिविहा पण्णत्ता तजहा-पचहिं हेमवएहिं एव जहा पन्नवणापदे जाव पचहिं उत्तरकुराहिं ॥ सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६५ ॥ से किं त कम्मभूमगा? कम्मभूमगा पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा पचहिं भरहेहिं पचहिं एरवएहिं पचहिं महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा आयरिया मिलच्छा, एत्र

अर्थ

पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां एकरुकद्वीप कहा हुवा है यों जैसे दक्षिण दिशा के एकरुकद्वीप का अधिकार कहा वैसे ही उत्तर दिशा के एकरुकद्वीप का जानना परंतु यहां शिखरी पर्वत का कथन करना यावत् शुद्धदंत पर्यंत कहना यह अंतरद्वीप का कथन हुवा ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अकर्मभूमि के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु यह अकर्म भूमि का कथन हुवा ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! कर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कर्म-भूमि के पन्नरह भेद कहे हैं तद्यथा पांच भरत, पांच एरवत व पांच महाविदेह इन के संक्षेप से दो भेद कहे

जोयणसते परिक्खेवेण ॥ सत्तमचउक्के णव जोयण सयइ आयामविक्खंभेण दो जोयण सहस्साइ अट्ठपणताले जोयणसए परिक्खेवेण, जस्सय जो विक्खंभो उगाहो तस्स तत्तिओचेव पढम बीताण परिरतो ऊणो, सेसाण अहिउउ, सेसाजहा एगुरुय दीवस्स जाव सुद्धदत दीव, देवलोग परिग्गहाण ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ ६२ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुयदीवे नामदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर

लवण समुद्र में अवगाहे हुवे हैं जैसे भगती से तीनसो योजन लवण समुद्र में प्रथम चौक के अंतर्द्वीप तीनसो योजन के लम्बे चौड़े हैं, उस से चारसो योजन लवण समुद्र में जावे तो दूसरा चौक के अंतर्द्वीप चारसो योजन के लम्बे चौड़े हैं यों यावत् छठे चौक से नवसो योजन लवण समुद्र में जावे तब सातवा चौक के अंतर्द्वीप नवसो योजन के लम्बे चौड़े हैं प्रथम चौक की लम्बाइ चौड़ाइ से दूसरे चौक की लम्बाइ चौड़ाइ सो योजन की अधिक, इस से तीसरे चौक की सो योजन की अधिक यों अधिक २ सब चौक की जानना यह सब अधिकार एकरुक द्वीप जैसे जानना ये मनुष्य देवलोकगामी कहे हुए हैं अर्थात् मरकर देवता में उत्पन्न होते हैं ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरदिशा के एकरुक मनुष्य का एकरुक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में शिखरी

कहिण भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए एवं जहा पन्नवणाए जाव भवणा पासाइया॥ तत्थण भवणवासीण देवाणं सत्तभवण कोडीओ बावत्तरिं भवणवाससयसहस्सा भवंति तिमक्खाया ॥ तत्थण बहवे भवणवासी देवा परिवसंति, असुरा नाग सुवन्नाय जहापन्नवण्णाए जाव विहरंति ॥ कहिण भंते! असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता पुच्छा ? गोयमा ! एवं जहा पन्नवणा ठाणपदे जाव विहरंति ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पुच्छा ? एवं जहा ठाणपदे जाव चमरे तत्थ

अर्थ

अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है वहां से लगाकर यावत् भवनपति के भवन उन को रहने योग्य कहे हैं वहां तक सब पन्नवणा सूत्र अनुसार जानना यहां सात क्रोड बहत्तर लाख भवन कहे हैं इन सब भवनों में असुरकुमार नागकुमार वगैरह दश जाति के भवनवासी देव रहते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा के स्थान पद में जैसा कथन किया वह सब यहां जानना अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के असुरकुमार के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इसका कथन पन्नवणा सूत्र से ...

जहा पण्णवणापद जाव सेत्त गब्भवक्कंतिया ॥ सेत्त मणुस्सा ॥ ४ ॥ १ ॥
सेकिंत देवा? देवा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा भवणवासी, वाणमंतर, जोइसिया वेमाणिया
॥ १ ॥ सेकिंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तंजहा-असुरकुमारा
जहा पन्नवणापदे देवाण भेओ तहा भाणियव्वा जाव अणुत्तरो-
ववातिया पंचविहा प० तंजहा-विजया वेजयंता जाव सव्वट्ठसिद्धगा ॥ सेत्त
अणुत्तरोववाइया ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! भवनवासि देवाणं भवणा पण्णत्ता ?

है आर्य व म्लेच्छ यों जैसे पन्नवणा पद में कथन किया वैसे ही यहां जानना यह गर्भज मनुष्य का
कथन हुवा यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥
अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी,
वाणव्यन्तर, ज्योतिषी व वैमानिक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देव किस को कहते हैं ? अहो
गौतम ! भवनवासी देव के दश भेद कहे हैं तद्यथा—असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार वगैरह सब
पन्नवणा पद में जैसे देवता का भेद कहा वैसे ही सब अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक के
पांच भेद कहे हैं विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध यह अनुत्तरोपपातिक का भेद हुवा
॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देवों के भवन कहां कहे हैं ? और भवनवासी देव कहां रहते हैं ?

बत्तीस देवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ ॥ ५ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धट्ठादेवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अड्ढाइज्जा देवीसया पण्णत्ता ॥ ६ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? अब्भिंतरियाए

अर्थ

हजारदेव व बाह्य परिषदों में बत्तीस हजारदेव कहे हैं॥५॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदामें कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हुई हैं? अहो गौतम !, उनको आभ्यंतर परिषदा में ३५० देवी, मध्य परिषदा में ३०० देवी और बाह्य परिषदा में २५० देवियों कही है ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा के देवताओं की कितनी स्थिति कही है ? मध्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही और बाह्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही ? आभ्यंतर परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की देवी

असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥३॥ असुरिंदस्स असुररन्नो कति-परिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिया चंडा, जाया अब्भिंतरिया समिया, मज्झचंडा, बाहिं जाया ॥ ४ ॥ चमरस्सणं भंते! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भंतर परिसाए कतिदेवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ, मज्झिम परिसाए कतिदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिर परिसाए कतिदेव साहस्सीतो पण्णत्ताओ? गोयमा! चमरस्सणं असुरिंदस्स अब्भिंतर परिसाए चउवीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए अट्ठावीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ, बाहिरयाए परिसाए

यावत् यहां असुरकुमार का चमर नामक इन्द्र रहता है यावत् विचरता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुर का इन्द्र व असुर का राजा को कितनी परिषदा कही है? अहो गौतम! तीन परिषदा कही है तद्यथा—समिता, चण्डा व जाया आभ्यंतर परिषदा समिता, मध्य परिषदा चण्डा व बाह्य परिषदा जाया ॥४॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा की आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं मध्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं व बाह्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में चउवीस हजार देव, मध्य परिषदा में अठारस

सूत्र

तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा-समिया चंडा जाया, अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुर रन्नो अब्भितर परिसा देवाण वाहिता हव्वमागच्छति णो अव्वाहिता, मज्झिम परिसाए देवा वाहिता हव्वमागच्छति अव्वाहितावि, बाहिर परिसादेवा अव्वाहिता हव्वमागच्छति॥ अदुत्तरचण गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया अण्णयरेसु उच्चावएसु कज्जे कोडुबेसु समुप्पन्नेसु अब्भितरियाए सद्धिं समइ सपुच्छणा बहुले विहरइ, मज्झिमियाए परिसाए सद्धिंमपय एवचमाण विहराति, बाहिरयाए परिसाए सार्द्धं पय पचंडमाणे २ विहरइ,

अर्थ

परिषदा किस लिये कही जिस में आभ्यतर समिता, मध्य की चंडा व बाह्य की जाया ? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा के आभ्यतर परिषदा के देव बोलाये हुवे आते हैं परतु विना बोलाये हुवे नहीं आते हैं, मध्य परिषदावाले बोलाये हुवे व विना बोलाये हुवे दोनों तरह आते हैं और बाह्य परिषदावाले विना बोलाये हुवे आते हैं, दूसरा कारन यह है कि चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को उत्तम, मध्यम कार्य, अपनी राजधानी का कार्य, कुटुंब सबधी कार्य इत्यादि कार्य होने पर वे आभ्यतर परिषदा के देवों साथ सपति मीलाते हुवे और उनको पूछते हुवे रहते हैं, मध्य परिषदावाले देवों को सक्षेप में कह देते हैं और बाह्य परिषदा वाले देवों को बात कह कर कार्य करने का आदेश

परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाण परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण अड्डाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स

की कितनी स्थिति कही, व बाह्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की स्थिति कही, मध्य परिषदा के देवों की दो पल्योपम की स्थिति कही व बाह्य परिषदा के देवों की देढ पल्योपम की स्थिति कही आभ्यंतर परिषदा की देवी की देढ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की एक पल्योपम व बाह्य परिषदा की देवी की आधे पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र की तीन

ताओ चेव जहा चमरस्स ॥ १३ ॥ धरणस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भितरियाए परिसाए सट्ठिं देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए सत्तरिदेवसहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए असिति देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितर परिसाए पण्णतर देवीसय पण्णत्त मज्झिमियाए परिसाए पन्नास देवीसय पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए पणवीस देवीसय पण्णत्त ॥ १४ ॥ धरणस्सण रन्नो अब्भितरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता? अब्भितरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए

अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है इस का सब कथन चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १३ ॥ धरणेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में ६० हजार देव, मध्य परिषदा में ७० हजार देव व बाह्य परिषदा में ८० हजारदेव आभ्यंतर परिषदा में १७५ मध्य परिषदा में १५० व बाह्य परिषदा में १२५ देवियों कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! धरणेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा के देवों की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की कितनी स्थिति कही ? आभ्यंतर परिषदा के देवी की कितनी स्थिति कही मध्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की देवीकी कितनी

मज्झिमाए परिसाए तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण दोपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता॥ सेस जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो ॥ ११॥ कहिण भंते! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव दाहिणावि पुच्छिया वा जाव धरण नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥ १२ ॥ धरणस्सण भंते! णागकुमारिंदस्स णागकुमार रन्नो कइपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तिन्निपरिसाओ

॥ बाहिर की परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की आभ्यंतर परिषदा की देवी की अढाइ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की दो पल्योपम व बाहिर की परिषदा की देवी की देढ पल्योपम की स्थिति कही शेष चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन्! नागकुमार देवता के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा में स्थान पद में जैसा कहा वैसा यहां सब जानना यावत् दक्षिण दिशा की भी पृच्छा करना यहां धरण नामक नागकुमार का इन्द्र व नागकुमार का राजा रहता है यावत् विचरता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! धरण नामक नागकुमारेन्द्र को कितनी परिषदा कही हैं ?

कइदेव साहस्सियाओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए कइदेव सहस्सियाओ पण्णत्ताओ, अब्भितरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणिंदस्सण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भितरियाए परिसाए पन्नास देव सहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए सट्ठिदेव सहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए दो पणवीस देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए दो देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पण्णत्तरि देविसय पण्णत्त ॥ १६ ॥ भुयाणंदस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमार

अर्थ

कहा वैसे ही यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! भूतान नामक नाग कुमार का इन्द्र व नाग कुमार का राजा को आभ्यतर परिषदा में कितने देव, मध्य परिषदा में कितने देव व बाह्य परिषदा में कितने देव कहे हैं आभ्यतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हैं ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र को आभ्यतर परिषदा में ५० हजार मध्य में ६० हजार व बाह्य परिषदा में ७० हजार देव कहे हैं आभ्यतर परिषदा में २२५, मध्य परिषदा में २०० व बाह्य परिषदा में १७५ देवियों कही हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भूतानेन्द्र के

देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! धरणस्सरन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण साइरेग अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता। अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमाए परिसाए देवीण साइरेग चउब्भागपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण चउभागपलिओवम ठिई अट्ठो जहाचमरस्स, ॥ १५ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण जहा ठाणपदे, जाव विहरइ॥भूयाणदस्सण भंते।नागकुमारस्स णागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए

स्थिति कही ? अहो गौतम ! धरणेन्द्र के आभ्यंतर परिषदा के देवों की साधिक आधा पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों की आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा के देवों की कुच्छ कम आधा पल्योपम आभ्यंतर परिषदा की देवी की कुच्छ कम आधा पल्योपम मध्य परिषदा की देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग व बाहिर की परिषदा की चौथा भाग की स्थिति कही शेष सब चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के नाग कुमार देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में

चउभाग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अट्ठो जहा चमरस्स, ॥ १७ ॥ अवसेसाण वेणुदेवादीण महाघोस पज्जवसाणाण ठाणपय वत्तव्वयाणिरवसेस भाणियव्वा, परिसाओ जहा धरणभूयाणदाण दाहिणिल्लाण जहा धरणस्स उत्तरिल्लाण जहा भूयाणदस्स परिमाणवि ठितीवि ॥ १८ ॥ कहिण भत ! वाणमतराण देवाण भवण पण्णत्ता जहा ठाणपदे जाव विहरति ॥ कहिण भते ! पिसायकुमाराण भवणा पण्णत्ता? जहा ठाणपद जाव विहरति ॥ काल माहाकालाय तत्थ दुवे पिसाय कुमार रायाणो परिवसति जाव विहरति ॥ कहिण भते ! दाहिणिल्लाण पिसाय कुमाराण जाव विहरति ॥ काले यत्थ पिसाय कुमारिंदे पिसाय कुमार राया परिवसति महिड्डिए जाव

देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ॥ १७ ॥ शेप वेणुदेवेन्द्र से महाघोपेन्द्र पर्यंत सब वक्तव्यता स्थानपद जैसे जानना परिषदाका अधिकार दक्षिण दिशा का धरणेन्द्र व उत्तर दिशा का भूतानेन्द्र जैसे जानना यह भवनपति का अधिकार हुवा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यतर देवों के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा सूत्र के स्थानपद में जैसा अधिकार है वह सब यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! पिशाच कुमार के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इस का कथन भी पन्नवणा सूत्र के स्थानपद से जानना यावत् काल व महा काल ऐसे

रस्तो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणदस्सणं अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण देसूण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण सातिरेग अद्ध पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण सातिरेग

आभ्यंतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की, बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यंतर परिषदा की देवियों की, मध्य परिषदा की देवियों की व बाह्य परिषदा की देवियों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र के आभ्यंतर परिषदा के देवों की कुछ कम एक पल्योपम की, मध्य परिषदा-वाले की साधिक आधा पल्योपम व बाह्य परिषदावाले की आधा पल्योपम की स्थिति कही है आभ्यंतर परिषदा की देवी की आधा पल्योपम, मध्य परिषदा की कुछ कम आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा की

सूत्र

अब्भिंतरियाए परिसाए एक देवीसय पण्णत्त, मज्झिमियाए परिसाए एक्कदेवीसय पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए एक्क देवीसय पन्नत्त ॥ कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अब्भिंतर परिसाए देवाण केवतिय कालठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता बाहिरियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्सण पिसाय कुमारिंदस्स पिसाय कुमाररण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता, मज्झिमाए देवाण देसूण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता,

अर्थ

कही है ? अहो गौतम ! कालेन्द्र को आभ्यतर परिषदा के आठ हजार देव, मध्य परिषदा के दश हजार देव व बाह्य परिषदा के बारह हजार देव कहे हैं और तीनों परिषदा में बाम एकसो २ देवियों कही हैं अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच राजा को आभ्यतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की व बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यतर परिषदा की देवीयों की, मध्य परिषदा की देवीयों की व बाह्य परिषदा की देवीयों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! आभ्यतर परिषदा के देवों की आध

विहरति। कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा ईसा तुडिआ दढरहा अब्भितरिया ईसा, मज्झिमिया तुडिया बाहिरिया दढरहा कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ जाव बाहिरिया परिसाए कतिदवीसया पण्णत्ता? गोयमा ! कालस्सण पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमार रायस्स अब्भितर परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमाए परिसाए दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ,

दो पिशाच कुमार के राजा कहे हुवे हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के पिशाच कुमार के वास कहां कहे हैं? स्थानपद जैसे कहना यावत् विचरते हैं, वहां काल नामक पिशाचकुमारेन्द्र व पिशाचकुमार राजा है, वह महर्द्धिक यावत् विचरता है अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच कुमारेन्द्र पिशाच राजा को कितनी परिषदा कही है ! अहो गौतम ! तीन परिषदा कही हैं ईषा, त्रुटिता व दृढरथा जिन में आभ्यंतर ईषा, मध्य त्रुटिता व बाह्य दृढरथा अहो भगवन् ! काल नामक पिशाचेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं यावत् बाह्य परिषदा की कितनी देवियों

सूत्र

सउद उप्पित्ता दसुत्तरे जोयणसए बाहल्लेण एत्थण जोतिसियाण देवाण तिरियमस-
खिज्जा जातिसिय विमाणावास सयसहस्सा भवतीति, मक्खाय, तेण विमाणा अद्ध
कविट्ठ सठाण सठिया एव जाव जहाठाणपदे जाव चदिम सूरिया तत्थ जोतिसिंदा
जोइसरायाणो परिवसति महिड्डिया जाव विहरति ॥ सूरस्सण भते ! जोतिसिंदस्स
जोतिसरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा-
तुबा तुडिया पव्वा, अब्भतरिया तुबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया, पव्वा, सेस जहा
कालस्स परिमाण, ठितीवि अठो जहा चमरस्स चदस्सवि एवचेव ॥ २० ॥ कहिण भते! दीव
समुद्दा के महालयाण भते! दीवसमुद्दा कि सठियाण भते ! दीवसमुद्दा किमाकार भाव

अर्थ

कविठ के सस्थानवाले हैं यावत् इस का सब कथन स्थानपद जैसे कहना यावत् उन के चद्र व सूर्य दो
इन्द्र हैं वे यहां रहते हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा सूर्य को
कितनी परिषदाओं कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदाओं कही है तुम्बा, तुडिया व पर्वा आभ्य-
तर तुम्बा, मध्य तुडिया व बाह्य पर्वा, शेष सब काल इन्द्र जैसे जानना आयु सब चमरेन्द्र जैसे जानना
जैसे सूर्य का कहा वैसे ही चद्र का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र कहां है, द्वीप समुद्र

बाहिरियाए परिसाए देवाण सातिरेग चउब्भाग पलिउवम ठिती पण्णत्ता, अब्भित-रियाए परिसाए देवीण सातिरेग चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता मज्झिम परि-साए देवीण चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता बाहिर परिसाए देवीण देसूण चउ-ब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो जाव चमरस्स एव उत्तरिल्लस्सवि एव निरतर जाव गीयजसस्स ॥ १९ ॥ कहिण भते ! जोतिसियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता, कहिण जोतिसिया देवा परिवसति ? गोयमा ! उप्पिंदिव समुद्दाण, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागातो सत्तणउते जोयण

पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों को कुच्छ कम आधा पल्योपम, व बाह्य परिषदा के देवों की साधिक पल्योपम का चौथा भाग आभ्यतर परिषदा की देवीयों की साधिक पल्योपम का व चौथा भाग, मध्य परिषदा की देवीयों की चौथा भाग व बाह्य परिषदा की देवीयोंकी पल्योपम के चौथे भागमें कुच्छ कमकी स्थिति है कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ऐसे ही उत्तर दिशा के इन्द्रका कहना यों गीतयश पर्यंत सब इन्द्रों का कहना॥१९॥ अहो भगवन्! ज्योतिषी देव के विमान कहां कहे हैं व ज्योतिषी देव कहां रहते हैं? अहो गौतम ! द्वीप समुद्र की ऊपर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ७९० योजन ऊंचे जावे तब वहां ११० योजन के जाडपन में तीर्च्छे असंख्यात लाख ज्योतिषी के विमान कहे हुए हैं वे विमानों अर्ध

सूत्र

॥ २१ ॥ तत्थण अय जबुद्दीवेणाम दीवे सव्वदीव समुद्दाण अब्भितरए सव्व खुड्डाए वट्टे तेल्लापूय सठाण सठिये वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिये, वट्टे, पुक्खर कण्णिया सठाण सठिये वट्टे पाडिपुन्नचद सठाण सठिये, एक्क जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण, तिण्णिजोयण सयसहस्साइ सोलसहस्साइ दोण्णियसया सत्तावीसे जोयणसते तिण्णियकोसे अट्ठावीसच धणुसय तेरस अगुलाइ अद्ध अगुलच किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता॥ सेण एकाए जगतीए सव्वतो समता सपरिक्खित्ते, साण जगती अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण मूले बारस जोयणाइ विक्खभेण, मज्झे अट्ठजोयणाइ विक्खभेण, उप्पि चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण, मूलविच्छिण्णा, मज्झे

अर्थ

पद्मवर वेदिका और एक२ वनखण्ड वेष्टित है लोक में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप व समुद्र है ॥२१॥इन सबकी बीच में सब से छोटा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है, यह तेल पूडे के संस्थानवाला है, रथ चक्र जैसा गोलाकार, पुष्कर की कर्णिका जैसा, प्रति पूर्ण चन्द्र जैसा संस्थानवाला है एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है तीन लक्ष सोलह हजार दो सत्तावीस योजन तीन कोश, एकसो अट्ठाइस धनुष्य व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक उस की परिधि है इस की चारों तरफ एक जगती है यह जगति आधा योजन की ऊंची है, मूल में बारह योजन की चौडी, मध्य में आठ योजन की, चौडी व ऊपर चार

पहोयाराण भंते ! दीव समुद्दा पण्णत्ता? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवा लवणादियासमुद्दा सठाणया ता एकविहिविहाणा वित्थारतो अणेगाविहिविहाणा दुगुणादुगुण पडुप्पाए माणा २ पवित्थरमाणा २ ओभासमाणा वीयीया, बहुउप्पल पउम कुमुद णलिण सुभगा सोगंधिया पोंडरीया महापोंडरीय सतपत्त सहस्सपत्तय फुल्लकेसरोवयिता, पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता, अब्भिंतरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयंभुरमण पज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो

कितने कहे हैं ? द्वीप समुद्र कैसे संस्थानवाले हैं, ? और उन का कैसा आकार भाव (स्वरूप) कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप व लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं वे सब एक संस्थानवाले हैं और विस्तार में अनेक प्रकार के हैं विस्तार में प्रथम द्वीप से प्रथम समुद्र दुगुना, प्रथम समुद्र से दूसरा द्वीप दुगुना, उस से दूसरा समुद्र दुगुना यों एक द्वीप से दूसरा समुद्र दुगुना और समुद्र से द्वीप दुगुना विस्तार में रहे हुवे हैं उन में जो समुद्र हैं वे कल्लोल से सुशोभित हैं और द्वीप में अनेक द्रह प्रमुख रहे हुवे हैं उन में उत्पल पद्म, चंद्र विकासी, सूर्य विकासी, कमल, नलिन, सुभग, सोगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगैरह कमल, पुष्प केसरा सहित हैं प्रत्येक द्वीप को एक २

सूत्र

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण,पंचधणुसायाइं विक्खंभेण,सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेण तीसेण पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खंभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी संधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलेवरा, कलेवरसंघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसंघाडा अंकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतिरसामयावंसा वंसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

अर्थ

जगती के चारों तरफ वींटृत हैं,अर्थात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, आरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, सोने चांदी के पटिये हैं, उस की संधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों हैं, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के मार्ग हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप संघात हैं, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा हैं, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुंटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

सखित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छ संठाण संठिया,सव्ववइरामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका णिक्ककडछाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ २२ ॥ साण जगती एकेण जालकडएण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, सेण जालकडएण अद्धजोयण उड्ढ उच्चत्तेण पचधणुसयाइ विक्खभेण,सव्वरयणामए, अच्छे सण्हे घट्ठे मट्ठे नीरये निम्मले निप्पंके निक्ककडच्छाए सप्पभे ससिरीय सउज्जोत पासादीये दरिसणिज्ज अभिरूवे पडिरूवे ॥ २३ ॥ तीसेण जगतीए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगा मह पउमवर वेदिया पण्णत्ता, साण

योजन की चौडी है मूल में विस्तारवाली, मध्य में संक्षिप्त बनी हुई व ऊपर संकुचित बनी हुई है,सब वज्र रत्नमय, सुकुमाल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, रज रहित, कांति की व्याघात रहित, प्रभा सहित, शोभा व उद्योत सहित,प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २२ ॥ उस जगती की चारों तरफ एक जाल कटक (गवाक्ष) है यह अर्ध योजन का ऊंचा पांच सो धनुष्य का चौडा व सब रत्नमय, स्वच्छ, मृदु, घटारा, मठारा, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाला, प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २३ ॥ उस जगती की मध्य बीच में एक पद्मवर वेदिका है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची व पांच सो धनुष्य की चौडी है, सब रत्न मय है

सूत्र

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पचधणुसायाइ विक्खभेण, सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेण तीसेण पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी सधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलेवरा, कलेवरसघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसघाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतरसामयावसा वसकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

अर्थ

जगती के चारों तरफ वींटित हैं, अथात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, अरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैदूर्य रत्नमय स्तभ हैं, सोने चांदी के पटिये हैं, उस की सधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के सांचे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप सघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबिड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

एगमेगेण हेमजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण, एव घंटाजालेण जाव मणिजालेण, एगमेगेण पउमवर जालेण सव्वरयणामएण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण जाल तवणिज्जलंबूसगा सुवण्ण पयरगमंडिया णाणा मणिरयण विविधहार सोहित समुदया, ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावर दाहिण उत्तरा गतेहिं वाएहिं मंदाय मंदाय एतिया वतिया कंपिता खोभिता चालिया फंदिया घट्टिया उदीरिया एतेसिं उरालेणं मणुण्णेण कण्णमन निव्वुत्ति करेण सद्देण सव्वतो समता आपूरेमाणा २ सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥ २५ ॥ तीसेण पउमवर

सुवर्ण की माला, घुघरे की माला, यावत् मोतियों की माला, व कमल की माला से परिवेष्टित है ये मालाओं सब रत्नमय हैं उन मालाओं का रक्त सुवर्ण के झूमखे है, सुवर्ण का मकरक [सूत्र] हैं, विविध प्रकार के मणि, रत्नों के विविध प्रकार के हार व अर्ध हार से शोभित है किंचित् परस्पर अलग २ है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के मंदर वायु से कंपायमान होती हुई, क्षुब्ध होती हुई, चलित होती हुई, किंचित् चलती हुई, व उदीरणा करती हुई वे मालाओं उदार मनोज्ञ कर्ण व मन को प्रियकारी शब्द से चारों तरफ पूरती हुई अतीव २ शोभती है ॥ २५ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत

वेइयाए तत्थतत्थ देसे देसे तहिंतहिं बहवे हयसंघाडा गयसंघाडा, नरसंघाडा किण्णरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ २६ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे १ तहिं २ बहवे हयपंतीओ तहेव जाव पडिरूवाओ ॥ एव हयवीहीओ जाव पडिरूवाओ ॥ एव हयमिहुणाइ जाव पडिरूवाइ ॥ २७ ॥ तीसेण पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमलयाओ नागलयाओ एव असोग चंपग चूय वण वसंतिय अतिमुत्तग-कुंद-सामलयाओ णिच्चकुसुमियाओ जाव सुविभत्त

अर्थ

घोडे के युगल, गज के युगल, नर के युगल, किन्नर के युगल, किंपुरुष के युगल, महोरग के युगल, गंधर्व के युगल, व वृषभ के युगल रहे हुवे हैं य सब रत्नमय स्वच्छ, मृदु, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत छायावाले प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २६ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत हय की पंक्तियों यावत् प्रतिरूप हैं ऐसे ही हय वीथि यावत् प्रतिरूप है सो कहना ऐसे ही हय मिथुन यावत् प्रतिरूप है सो कहना ॥ २७ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत पद्मलता, नागलता, ऐसे ही अशोक, चंपक, आम्र, लता, छण नामक वृक्ष,

विंडमजरीवडेमक धरीओ सव्वरयणामतीओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ णिम्मलाओ निप्पंकाओ निक्ककम छायाओ सप्पभाओ ससिरियाउ सउज्जाेयाओ पासादिआओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २८ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे अक्खया सोत्थिया पण्णत्ता, सव्वरयणामया अच्छा ॥ २९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पउमवर वेइया ? गोयमा ! पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं वेदियासु वातियवाहासु वेतियासीसफलएसु वेतिया पुडंतरेसु खंभेसु खंभवाहासु खंभसीसेसु खंभपुड-

वासंति, मति मुक्त कुंदलता व श्यामलता है व सब कुसुमित (पुष्पवाली) यावत् सुविभक्त व पिंड मंजरीरूप शिखर धारन करनेवाली हैं सब रत्नमय, स्वच्छ कोमल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, कर्दम रहित निरुपहत छायावाली, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २८ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर अक्खय (चावल के) स्वस्तिक कहे हुए हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्यों कहाइ ? अहो गौतम ! पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर वेदिका के पार्श्व में, वेदिका के पटिए के शीर्ष में वेदिका के पुटांतर में, स्तंभ में, स्तंभ पार्श्व में स्तंभ शीर्ष में, स्तंभ पुटांतर में, सीलों में, सीलों के मुख में, सीलों के पटिए में, सीलों के पुटांतर में,

तरेसु, सूयीसु सूयीमुहेसु सूयिफलएसु सूयिपुडतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहासु पक्खपरतरेसु बहुय उप्पलाइ पउमाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ नीरयाइ निप्पकाइ निक्कंकडछायाइ सप्पभाइ सस्सिरियाइ सउज्जोयाइ, पासादीयाइ दरिसणिज्जाइ, अभिरूवाइ पडिरूवाइ, महया २ वासिक्कच्छत्त समासाइ पण्णत्ताइ समणाउसो ! से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ पउमवरवेदिया २ ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! पउमवरवेदिया २, सासते नामधेज्ज पण्णत्ते, ज णकयावि णासि जाव णिच्चे ॥ ३० ॥ पउमवर वेदियाण भते ! किं सासता असासता ? गोयमा !

अर्थ

पक्ष में, पक्षबाहा में, व पक्ष के प्रतर में बहुत उत्पल पद्म यावत् लक्ष पांखडी वाले पुष्प रहे हुवे हैं वे सब रत्नमय, अच्छे, श्लक्ष्ण, घष्ठारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाले, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे वर्षाकाल में पानी रखने का बडा पात्र अथवा छत्र समान हैं अहो गौतम ! इस लिये पद्मवर वेदिका शब्द की प्राप्ति हुई है अथवा तो पद्मवर वेदिका का नाम शाश्वत है यह अतीत काल में नहीं थी ऐसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्या शाश्वत है

सिय सासता सिय असासता ॥ केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ॥ ३१ ॥ पउमवर वेइयाण भंते ! कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! णकयावि णासि नकयातिणत्थि नकयाति नभविस्सति । भूविंच भवातिय भविस्सतिय धूवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवर वेदिया ॥३२॥ तीसेण जगतीए उप्पिं बाहिं पउमवर वेइयाए एत्थण एगे महंवणसंडे पण्णत्ते

या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है अहो भगवन् ! किस लिये ऐसा कहा कि स्यात् शाश्वत स्यात् अशाश्वत है? अहो गौतम ! द्रव्य आश्रिय शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है अहा गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि पद्मवर वेदिका स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका का कितना काल तक रहने का कहा ? अहो गौतम ! पहिले नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान नहीं है वैसा नहीं व भविष्य काल में नहीं होगा वैसा नहीं परन्तु अतीत काल में थी, वर्तमान में है व भविष्य काल में होगी वैसी ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय अव्यय अवस्थित, व नित्य पद्मवर वेदिका है ॥ ३२ ॥ उस जगती की ऊपर व पद्मवर वेदिका से बाहिर

देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खंभेणं जगतिसमये परिक्खेवेणं किण्हे किण्होभास जाव अणेग सगड रहजाण जुग्ग परिमोयण सूरम्मे पासादिये सण्हे लण्हे, घट्ठे मट्ठे नीरए निम्मले निक्ककडच्छाए सप्पभाए ससिरिए सउज्जोते पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥३३॥ तस्सणं वणसंडस्स अंतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा मुइंग पुक्खरेइवा सरतलेतिवा करयलेतिवा आयसमंडलेतिवा चंदमंडलेतिवा सूरमंडलेतिवा उरब्भचम्मेतिवा उसभचम्मेतिवा, वराह चम्मेतिवा, सीहचम्मेतिवा वग्घचम्मेतिवा, विचम्मेतिवा, दीवियचम्मेतिवा, अणेगसकुकीलग सहस्सवितते आवड पच्चावड सेढी सोत्थिय सोवत्थिय

एक बडा वनखण्ड कहा हुवा यह वनखण्ड कुच्छ कम दो योजन का चक्रवाल में चौडा है जगती जितना ही गोलाकार में है यह कृष्ण वर्ण वाला यावत् कृष्णाभास है यावत् अनेक शकट रथ पालखी प्रमुख रहने का स्थान है रमणिक,प्रासादिक,दर्शनीय,अभिरूप व प्रतिरूप है ॥३३॥ उस वनखण्ड में एक बडा रमणीय भूमिभाग है जैसे मुरजका तल (वादित्र विशेष) मृदगकातल, तलावकातल, करतल, काच का तल, चन्द्र मंडल सूर्य मंडल, मेंढे का चर्म, वृषभ का चर्म, वराहका चर्म, सिंहका चर्म, व्याघ्र का चर्म, छागका चर्म व चित्तेका चर्म समान तल है एक आकार वाले सहस्र खीलाओं को तपाकर टीपने से जैसे समतल वाला होता है वैसे ही आवर्त,प्रत्यावर्त, श्रेणि प्रश्रेणि स्वस्तिक, पुष्पमान वर्धमान, मत्स्य,

पुस्समाण वद्धमाण मच्छडक मकरडक जारामरा पुष्फवेलि पउमपत्ता सागरतरग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

कच्छ, मरामर, पुष्पवेली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन काजल मसी, मसी की गोली, नील, नील की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण राख कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव एसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक प्रभाव, इष्ट मनोहर, कंत

सूत्र

एतो इट्ठयराएचेव कततराएचेव मणामतराएचेव वण्णेणं पण्णत्ते ॥ ३९ ॥ तत्थणं जे ते णीलगा तणाय मणीय तेसिणं इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से जहानामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा णीलीतिवा, णीलीभेदेतिवा णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा, वणराईतिवा हलधरवसणेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी कुसमेतिवा, बाणकुसुमेतिवा, अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो तेतिवा णीलकणवीरेतिवा, णीलबंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिणं निलगाणं तणाणय मणीणय एतो इट्ठयराचेव कततराएचेव जाव वण्णेणं पण्णत्ते

अर्थ

व मणाम है ॥३९॥ नीले वर्ण वाले तृण व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे भृंग, भृंग की पांख नील चास, नील चास की पांख, तोता, तोता की पांख, नील, नील वस्तुका भेद, नील वस्तुका समूह, सामा (धान्य विशेष) दांतका काश्रवर्ण, वनकी पंक्ति समूह, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, सणवृक्ष के पुष्प, अजनकेसिका (वृक्ष विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर नीलाबंधु जीव, इत्यादि वस्तु समान क्या उसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

पुस्समाण वद्धमाण मच्छण्ड मकरण्डक जारमारा पुप्फावलि पउमपत्ता सागरतरंग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पंचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तेसिणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिणं किण्हाणं तणाणं मणीणय

कच्छ, मगरमच्छ, पुष्पवेली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों से सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन, काजल मसी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण बाल कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव एसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

तत्थण जे ते हालिद्दगा तणाय मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से पण्णत्त से जहा नामए चंपाति वा चंपगच्छल्लीतिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा हाभेएतिवा हालिद्दागुलियातिवा, णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा, बिहुरेतिवा, बिहुरगरागेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी सुवन्नसिप्पिएतिवा, वरपुरिसवसणेतिवा, अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो कुहुठिवाकुसुमेतिवा, तहठहाकुसुमेतिवा बंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण कुसुमेतिवा सुहिरण्णकुसुमेतिवा, एत्तो इट्ठयराचेव कंततराएचेव जाव मणामतराएचेव वण्णेण पण्णत्ते ॥ ३४ ॥

जो पीले मणि व तृण है उस का वर्णन

जैसे पीला वर्ण नीकले वैसा, हल्दी, हल्दी व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे मृग, मृग की पांख नील चाम, चिकुर रग (द्रव्य विशेष), चिकुर सयोग पांख, नील, नील वस्तुका भेद, नील वस्तुका समुह, सामा (धान्य मासन, वर पुरुष सो वासुदेव के वस्त्र, समुख, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारावत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, के पुष्प, कोरंट क पुष्प, सुवर्ण यूथिका वन विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर कोरटक क पुष्प, कोरटक के पुष्प की भा उसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

अथ

॥ ३५ ॥ तत्थण जे ते लोमिकरडक जरामरा पुक्खेलि पउमपचा सागरतरग वासाति पण्णत्त से जहा नामए एहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पचवण्णेहिं णररुहिरातिवा, वराहरुहिरातिवा... तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३२ ॥ तत्थ तिवा जातिहिंगुलएतिवा ... तीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए मणितिवा, लक्खारसएतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलितिवा, जासुयणकुसुमेइवा, लगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा रत्तासोगेतिवा, रत्तकणियारो सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा समट्ठ,तेसिण लोहियगाण तणाणट्ठे समट्ठ, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

नीला यावत् मनोहर है॥३५॥ अब यह मुद्र तरग, वासतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ... मनुष्य का रुधिर, मेंढे का रुधिर, ... विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व इन्द्रगोप जीव, ... (उदय होता) ... कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन कहा है अकुर, ... मणि, लाख का रस, मसी, मसी की गोली, नील, नील की गुटिका, कृष्ण सर्प, कृष्ण पुष्प, ... पुष्प, ... के पुष्प, ... वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बधु जीव ऐसा कहा इसका कृष्ण वर्ण कहा है ? यह अर्थ समर्थ नहीं ... कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

पोंडरीयदलेतिया, सिंदुवार वरमल्लदामेतित्रा, सेतासोएतित्रा सेयकणवीरातिवा, सेय बधुजीवातिवा, भवे एयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, तेसिण सुक्किलाण तणाण मणीणय एतो इट्ठतराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥३८॥ तेसिण भते! तणाणय मणीणय केरिसये गधे पण्णत्ते से जहा नामए—कोट्ठापुडाणवा पत्तपुडाणवा, चोयपुडाणवा, तगरपुडाणवा, एलापुडाणवा, हिरमेवपुडाणवा, चदणपुडाणवा, कुकुमपुडाणवा, उसीर पुडाणवा, चवयपुडाणवा, मरुयगपुडाणवा, दमणगपुडाणवा, जातिपुडाणवा जुहिय पुडाणवा, मल्लियपुडाणवा णो मल्लियपुडाणवा, वासतियपुडाणवा, केतियपुडाणवा

अर्थ

पद्म, वर्षा का मल, जात पुष्प की माल्य, श्वेत अशोक वृक्ष, श्वेत कर्णिका व श्वेत बधु जीव ऐसा क्या उन का वर्ण है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक इष्ट यावत् मनामतर उन मणि तृण का श्वेत वर्ण मानना अहो भगवन् ! उन तृण व मणि की गध कैसी कही है ? अहो गौतम ! जैसे कोइ पुडा, सुगंधि पान का पुडा, चोयक (गध द्रव्य विशेष) का पुडा, एलायची का पुडा, तगर का पुडा, बाल खसखस का पुडा, चदन का पुडा कुंकुम का पुडा, उशीर का पुडा, चपक का पुडा मरुयका का पुडा, दमण॰॰ का पुडा, जाई का पुडा, जूई का पुडा, मल्लिका का पुडा, नव मल्लिका का पुडा, व.सतोछवा का पुडा, केतकी का पुडा, कर्पूर का पुडा, व पाडल का पुडा इत्यादि में से मद वायु बावे

तिवा, पीयासोएतिवा पीयकणवीरेतिवा पीयबंधुजीएतिवा, भवेएयारूवे सिया? णोइणट्ठे समट्ठे, तेण हालिद्दा तणायमणीय एत्तो इट्ठयरा चेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तत्थण ज ते सुक्किलगा तणायमणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते-से जहा नामए अकेतिवा संखेतिवा चंदेतिवा कुंदेतिवा दगरयेतिवा हंसावलीतिवा कोंचावलीतिवा हारावलीतिवा बलयावलीतिवा चंदावलीतिवा सारतियबलाहयेतिवा धंतधोय रूप्पपट्टेतिवा, सालि पिट्ठरासीतिवा कुंदपुप्फ रासीतिवा, कुमुदरासीतिवा, सुक्कछिवाडीतिवा, पेहुणमिंजाइवा, भिसितिवा, मुणालियातिवा, गयदंतेतिवा, लवंगदलेतिवा,

बंधु जीव समान क्या है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इन का वर्ण उक्त सब वस्तुओं से भी इष्टतर यावत् मनामतर पीले वर्ण में कहा है ॥ २७ ॥ शुक्ल तृण व मणि का कैसा वर्ण वास कहा है जैसे अंकरत्न, दक्षिणावर्त शंख, चंद्र, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, हंसपक्षी की श्रेणी, क्रौंच की श्रेणि, मोती के हारकी श्रेणी, बगले की श्रेणी, चंद्रावलि [पानि में चंद्र प्रतिबिंब की श्रेणी] शरद काल में होते हुवे श्वेत बदल, अग्नि से धमा हुआ चांदी का पट्ट, तुष रहित चांवल, मचकुंद पुष्प का पुंज, मोरपींछ का गर्भ, श्वेत कमल का पुंज, शुष्क छिवाडी वृक्ष के पुष्प, पद्मनीकंद, हस्ती के दांत, लवंग पत्र पौंडरीक

सूत्र

अंकेसुपइट्ठियाए चंदणासार कोणानक्खपरिघट्टियाए कुसलणरनारि संपग्ग हिताए, पदोसपच्चूसकालसमयंसि मंदाय २ एईयाए वेईयाए खोभियाए फंदियाए घट्टियाए उदीरियाए उरालामणुन्ना कण्ण मणनिव्वुत्तिकरा सव्वतो समता सद्दा अभिणिस्सवंति भवेतारूवेसिया ? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहानामए किण्ण-राणवा किंपुरिसाणवा महोरगाणवा गंधव्वाणवा भद्दसालवणगयाणवा नंदणवणगयाण वा सोमणसवणगयाणवा पंडगवणगयाणवा हिमवंत मलय मंदरगिरिगुहा समण्णा गयाणवा एगोसहिताण समुहागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण पमुदिय पक्कीलियाण

अर्थ

नहीं है तीसरा दृष्टांत कहते हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग व गंधर्व भद्रशालवन, नंदन वन, सोमनस वन व पंडग वन में अथवा हिमवंत पर्वत पर, मलयाचल पर्वतपर, मेरुपर्वतकी गुफा में एकत्रित मीलकर वहां सम्यक् प्रकारसे प्रमुदित व क्रीडावंत बनकर गीतरति नामक गंधर्व हर्ष सहित गद्य, पद्य, कथ्य, पदबंद्ध, व प्रवर्तक को मंद २ स्वर से सप्तस्वर व आठ रस सहित, छ दोष रहित, अग्यारह अलंकार गुण सहित व

१ प्रथम से ही दीर्घ स्वर से गाना, २ मध्य भाग मे मंद स्वर से गाना, ३ १ षड्ज, २ रिषभ ३गांधार ४ मध्यम ५ पंचम ६ धैवत और निषध यह सप्तस्वर ४ शृंगार प्रमुख आठ रस है ५ १ भीति-अधिक त्रासित मन से भयभीत बनते हुए गाना २द्रुत दोष-त्वरा से गाना, ३उप्पिच दोष आकुल व्याकुल बनकर गाना ४उत्ताल दोष-तालस्थानको अतिक्रम करके गाना, ९ काक स्वर दोष-सानुनासिक गाना ६ अनुनासिक दोष-नाक म स स्वर नीकालकर गाना यह सप्तदोष

अत्तकम्मस्स आइण्ण वरतुरग सुसपयुत्तस्स कुसल नरत्थेय सारहि सुसपगहियस्स सरसय बत्तीसतोण परिमडियस्स सककडअवहेंसगरस सव्वावसर पहरणावरण भरिय जोहवुद्ध सज्जस्स रायगणसिवा अंतेउरसिवा रम्मसिवा मणिकोट्टिमतलसिवा अभिक्खण अइट्टिज्जमाणस्सवा णियट्टिज्जमाणस्सवा पल्लवरतुरगस्स चंडवेगाइ दढस्स उरालामणुन्ना कण्णमणाणिवुतिकरा सव्वतोसमता अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहा नामए वेयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए

प्रकार के आयुध, ढाल प्रमुख भरण और योधा को वध करने योग्य ऐसा युद्ध रथ है उसे राजा के अंगन में अंत पुर में, महेल में, मनोहर मणिबद्ध भूमितल में, वारंवार अति वेग से फीरावे इसतरह उत्तम लक्षणवाले अश्वों से फिराते हुवे उस रथ में से मनोग व सुखकारी सब दिशी में स्पर्शता हुवा शब्द नीकलता है वो अहो भगवन् ! ऐसा शब्द उस तृण में से नीकलता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अब दूसरा दृष्टांत कहते हैं जैसे प्रभात में वैताल की वीणा, गंधार स्वर की मूर्च्छा सहित अपने अंक में अच्छे तरह रखी हुई चंदन की वीणा, कोई कुशल पुरुष या स्त्री प्रभात काल में मंदस्वर से बजावे इस तरह मूर्च्छा प्राप्त करते हुए, व उदीरते हुए उदार मनोज्ञ सुख उत्पन्न करनेवाला शब्द सब दिशाओं में स्पर्शता हुवा नीकलता है अहो भगवन् ! उस तृण का क्या ऐसा शब्द होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ

सूत्र

खुड्डखुड्डियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुंजालियाओ दीहियाओ सरपंतीओ सरसर बिलपंतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ वइरामय पासाणाओ तवणिज्ज तलाओ मणिफालिय पडलपच्चोयडाउ नवणीयतलाओ सुवण्णसुज्झरयमणि वालुयाओ सुहोयार सुउत्ताराओ णाणामणि तित्थसुबद्धाओ चाउक्कोणाओ समतीराओ अणुपुव्व सुजायवप्प गंभीर सीयलजलाओ, सच्छण्णपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पल कुमुय णलिण सुभग सोगंधित पोंडरिया महापोंडरिय सतपत्त सहस्सपत्तफुल्ल केसरोवइयाओ छप्पयपरिभुज्ज-

अर्थ

स्थान २ पर बहुत छोटी बावडियों, पुष्करणियों, गुंजालिकाओं, दीर्घिकाओं, सरपंक्तिओं, बिलपंक्तिओं रही हुई है व निर्मल स्फटिक रत्न जैसी सुकुमाल है उन के किनार रत्नमय है, वज्ररत्नमय पाषाण है जिस से उन के दोनों भाग बंधे हुवे हैं, सुवर्णमय तल हैं, वैडूर्य व स्फटिक रत्नमय तट है, सुवर्ण व चांदी मय वालु है, उन में सुख पूर्वक प्रवेश कर सकते हैं व बाहिर नीकल सकते हैं, विविध प्रकार की मणियों से चारों कूने बांध हुए हैं, समान तीर हैं, जल स्थान गंभीर है, उन का जल शीतल है, वहां जल में आच्छादित कमल पत्र, कमलकंद व कमल नाल हैं, उत्पल कमल, चंद्र विकासी कमल, नलिन कमल, सुभग, सौगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्र पत्र, पुष्प व केसरा सहित है वे कमल भ्रमर से भोगवे हुवे हैं स्वच्छ निर्मल जल से परिपूर्ण है, अनेक प्रकार के मत्स्य कच्छ उन में परिभ्र

गीयरतिगंधव्व हरिसियमणाण गज्ज पज्ज कत्थ गेय पेय दंय पायवद्ध उक्खित्तय पवत्तय मदाय रोवियावेसाण सत्तसरसमण्णागाय अट्ठरससुसंपउत्त छद्दोसविप्पमुक्क एक्कारस गुणालंकार अट्ठगुणोववेय गुंजत वंस कुहरोवगुढ रत्ततिट्ठाण करणसुद्ध मधुर सम सललिय सकुहरवसनती तलताल लयगह ससंपउत्त मणोहर रमउयरिभिय पयसंचार दुरभिसमइ अपतिरिय चारुरूव दिव्व नट्ट सज्जगेय गीयाण भवेया रूवेसिया ? हंतासिया ॥ ४१ ॥ तस्सण वणखंडस्स तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहवे

आठ गुण सहित गुमायमान, बांसली समान पूर्वोक्त स्वरूपवाला उर शुद्ध, कंठ शुद्ध व शिर शुद्ध ये तीन प्रकार से शुद्ध मधुर स्वर से ललित, मनोहर मृदु स्वर सहित, मनोहर पद के गीत सहित, मनोहर सुनने को आनंद होवे वैसा उत्तम मनोहर रूप, वाला देवता संबंधी नाटक व सुनने योग्य गायन करे ऐसा उन तृण का स्वर है क्या ? हां गौतम ! ऐसा उस तृण का शब्द है ॥ ४१ ॥ उस वनखण्ड में

१ पूर्ण गुन-स्वर कला से पूर्ण गाना, २ रक्तगुन-गायन करने योग्य राग से अनुरक्तपने गाना, ३ अलंकृत गुन अन्योन्य स्वर विशेष से अलंकार जैसे शोभता हुवा गाना, ४ व्यक्त गुन-अक्षर स्वर स्फुट कर के प्रगटपने गाना, ५ अविघुष्ट गुन-विपरीत स्वर से बकवाद रहित गाना, ६ मधुर गुन-जैसे वसंतमास में कोकिला का मधुर स्वर होवे वैसा गाना, ७ समगुन-ताल वंश स्वरादिक को अनुकूल गाना, ८ सुललित गुन-स्वरघोलणा से ललित प्रमा सहित गाना

सूत्र

निम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवन्नरुप्पमया फलगा, वइरामयासंधी लोहितक्खमइउ सूईओ नाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ, तेसिणं तिसो वाणं पडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं २ तोरणा पण्णत्ता, तेणं तोरणा णाणामणिमया णाणा मणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठ सन्निविट्ठ विविहमुत्त तरोवइत्ता, विविहतारारूवोवइत्ता, ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किण्णर रुरुसभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गय वइरवेदियाइं, परिगताभिरामा, विज्जाहर जमल जुयलजंत जुत्ताविव, अच्चिसहस्स मालणीया रूवसहस्सकलिया भिसमीणा भिब्भिसमीणा चक्खुल्लोयणलेसा

अर्थ

विविध प्रकार के अवलम्बनबाहा है, उन त्रिसोपान के आगे प्रत्येक पंक्तियों पर तोरण है वे विविध प्रकार के मणि रत्नों के हैं, मणिमय स्तंभ पर रहे हुवे हैं, विविध प्रकार के मुक्त फल से वष्टित हैं, विविध प्रकार के ताराओं सहित हैं, ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, पक्षी, मगर, मत्स्य, सर्प, किन्नर रूरू, शरभ, चमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक मनोहर चित्रों से चित्रे हुवे हैं स्तंभ पर वज्रमय वेदिका है, जिस से मनोहर तोरण दिखाता है स्तंभ में सूर्य के तेज से अधिक तेजस्वी विद्याधर के युगल हैं सहस्र कीरणवाला सूर्य समान है उस से देदीप्यमान है, विशेष तेज से देदीप्यमान

माण कमलाओ अच्छ विमल सलिल पुण्णाओ, पडिहत्थ भमत मच्छ कच्छभ अणेग सउणगण मिहुण परिवारिताओ पत्तेय२पउमवर वेदिया परिक्खित्ताओ पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ताओ,अप्पेगतियाओ आसवोदाओ अप्पेगतियाओ वरुणोदाओ, अप्पगतियाओ खीरोदाओ, अप्पगतीआ घओदाओ अप्पगइयाओ इक्खुदाओ, अप्पेगतियाओ पगयातीआ दगरसेण पण्णत्ताओ,पासादियाओ ॥४२॥ तासिण खुड्डा खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतीयाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ जाव तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिण्ण तिसोपाण पडिरूवगाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तंजहा-वयरामया

पण करते हैं, अनेक पक्षीयों के समुह वहां रहते हैं प्रत्येक वावडी को एक २ पद्मवर वेदिका है, और प्रत्येक को एक २ वनखण्ड है किसनीक वावडियों का पानी चद्रहासादिक मदिरा जैसा है, कितनीक का वारूणी समुद्र जैसा है कितनीक का क्षीर समुद्र जैसा है, कितनीक का घृत जैसा है, कितनीक का पानी इक्षु रस जैसा है, कितनीक का पानी अमृत जैसा है, वे प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ४२ ॥ उन छोटी वावडीयों यावत् बिलपंक्तियों में स्थान २ पर त्रिसोपान [छोटे २ पंक्ति] है इन का इस तरह वर्णन कहा है उन पंक्ति की भूमि वज्ररत्नमय है, अरिष्ट रत्न का मूल है, वैडूर्य रत्न के स्थंभ है, सोने व चांदी के पटिये हैं, वज्ररत्न की संधी है, लोहिताक्ष रत्न के सीले हैं,

निप्पका निक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४६ ॥ तेसिण खुड्डियाण वावीण जाव विलपंतियाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उप्पाय पव्वयगा, णियाति पव्वयगा, जगति पव्वयगा, दारुपव्वयगा, दगमडवगा, दगमचगा, दगमालगा, दगपासगा, उसमरदगा, खडहरदगा आदोलगा पक्खदोलगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला निप्पका णिक्ककडछाया सप्पभा सस्सिरिया सज्जाया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४७ ॥ तेसुण उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खदोलगेसु बहवे

अर्थ

स्वच्छ सुकुमाल, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरावरण कांतिवाले, प्रभा, व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ ४६ ॥ उन वापदी यावत् बिलपंक्तियों में उस देश विभाग में उत्पात पर्वत हैं वहांपर व्यंतर देव व देवियों वैक्रय रूप बनाकर क्रीडा करते हैं वैसे ही नियति पर्वत, जगति पर्वत, दारुक पर्वत स्फटिक रत्न के मंडप, स्फटिक के मांचे दग माल, दग प्रासाद हैं वे ऊंचे हैं परंतु लम्बाइ व चौडाइ में छोटे हैं, वहां मनुष्यों का मन आंदोलन होजावे वैसे होने से आंदोलक है पक्षियों वहां झूलते है इस से वह पक्षी का आंदोलक है वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥४७॥ वहां उत्पात पर्वतपर यावत् पक्षांदोलक पर बहुत हंस के आकार वाले आसन, गरुडासन,

सुहफासा सस्सिरियरूवा पासादिया॥४३॥तेसिणं तोरणाणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पन्नत्ता सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाण भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतना मया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ ४४ ॥ तेसिणं तोरणाणं उप्पिं बहवे कण्हचामर-ज्झया नीलचामरज्झया जाव सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधिया सुरूवा पासादिया ॥ ४५ ॥ तेसिणं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला, उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्टा मट्ठा णीरया णिम्मला

है, चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्शवाला सश्रीक व चित्त को प्रसन्नकारी है ॥४३॥ उन तोरणों पर आठ २ मंगलिक कहे हैं, तद्यथा १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश ७ मत्स्य युगल व ८ दर्पण ये सब रत्नमय स्वच्छ, सुकुमाल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४४ ॥ उन तोरण पर बहुत प्रकार की कृष्ण चमर की ध्वजा, नील चमर की ध्वजा, लाल चमर की ध्वजा, पीत चमर की ध्वजा, श्वेत चमर की ध्वजा हैं वे स्वच्छ, सुकुमाल, चांदी का पट्टा वज्र रत्न का दंड वाली हैं कमल समान गंध वाली सुरूप व प्रासादिक हैं ॥ ४५ ॥ उन तोरणोंपर छत्रपर छत्र ध्वजापर ध्वजा, घंटा युगल, चमर, युगल, अनेक, उत्पल कमल, यावत् लक्ष पत्र कमल रहे हैं वे सब रत्नमय

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पाडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमडवगा जूहिया-मडवगा मल्लिया मडवगा णोमालियामडवगा वासतिमडवगा दहिवासुया मडवगा सूरिल्लि मडवगा, तबोली मडवगा, मुद्दिया मडवगा, णागलया मडवगा, अतिमुत्त मडवगा, अफोया मडवगा, अमेत्ता मडवगा, मालुया मडवगा, सामलया मडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमडवएसु जाव सामलया

अर्थ

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइके मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइ गरुलासणाइ कोंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पंकयाइ, जाव सस्सिरीयाइ, सउज्जोयाइ पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सणं वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहवे आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गधव्वघरगा आयसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्व स्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घटारे, मटारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्री व उद्योत सहित प्रसन्नकारि, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदलीगृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह मोहनगृह, पटशालगृह, जालगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफोया मंडवगा, अमेत्ता मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसुमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइ गरुलासणाइ कोंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पंकयाइ, जाव ससिरीयाइ, सउज्जोयाइ पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहव आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालघरगा जालघरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गंधव्वघरगा आयंसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घटारे, मठारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्रीय उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदली गृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह, मोहनगृह, पट्टशालागृह, जाल गृह, जालीगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

सूत्र

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइं सव्वरयणामयाइं जाव पडिरूवाइं ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफोया मंडवगा, अमेचा मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसुमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

अर्थ

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं ये सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं ये सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ के मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अभिचा वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं ये सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

मज्झेएत्थ बहवे पुढवी सिलापट्टगा पण्णत्ता तंजहा-हंसासण संठिता कोंचासणसंठता गरुलासण संठिता उण्णयासण संठिता पणयासण संठिता, परितासण संठिया, दीहासण संठिया, भद्दासण संठिता, पक्खासण संठिया, चमरासणसंठिया, सीहासणसंठिया, पउमासणसंठिया दिसासोवत्थियासणसंठिया पण्णत्ता ॥ तत्थ बहवे वरसयणासणविसिट्ठ संठाण संठिया पण्णत्ता समणाउसो ? आईणगरुय बूर णवणीत तूलफास मउया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ५२ ॥ तत्थण बहवे

संस्थान वाले, गरुडासन के संस्थान वाले, उन्नतासन के संस्थान वाले, नम्रासन के संस्थानवाले परितासन संस्थान वाले दीर्घासन के संस्थान वाले, भद्रासन के संस्थान वाले, पक्षासन के संस्थान वाले, चमरासन वाले, वृषभासन के संस्थान वाले, सिंहासन के संस्थान वाले, पद्मासन के संस्थानवाले व दिशा स्वस्तिकासन के संस्थानवाले हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे बहुत शयनासन विशिष्ट संस्थान वाले कहे हुवे हैं उस का स्पर्श मृगचर्म, बूर वनस्पति, मक्खन, व अर्कतूल जैसा सुकुमाल है वे सब रत्नमय अच्छे, कोमल यावत् प्रतिरूप हैं. ॥ ५२ ॥ वहां बहुत वाणव्यन्तर

वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयतिय चिट्ठति निसीदति तुयट्टति रमति ललति कीलयति मोहयति पुरापोराण सुचिन्नाण सुपरक्कताण सुभाण कताण कल्लाण कम्माण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥ ५३ ॥ तीसेण जगतीये उप्पि अतो पउमवरवेदियाण एत्थण एगे महं वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइ दो जोयणाइ विक्खभेण वेइयासमएण परिक्खेवेण किण्हे किण्होभास वणसंडवण्णओ तणसद्दविहूणो णेयव्वो तत्थण बहवे वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति निसीयति तुयट्टति रमति ललति कीडति पुरापोराणाण सुचिन्नाण सुपरिक्कताण सुभाण कताण कम्माण कल्लाण फलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥ ५४ ॥ जबुद्दी-

देव,व देवियों आते हैं बैठते हैं, सोते हैं खेलते हैं, क्रीडा करते हैं, मोहित होते है और पूर्व भव में अच्छी तरह आचरण किये हुए कल्याणकारी कर्मों का फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५७ ॥ उस जगती के ऊपर व पद्मवर वेदिका की अदर एक बड़ा वनखण्ड है यह कुच्छ कम दो योजन का चौडा है और वेदिका समान परिधिवाला है यह कृष्ण वर्णवाला व कृष्णाभास वगैरह वनखण्डका वर्णन तृण शब्द रहित सब कहना यहां बहुत वाणव्यतर देव व देवियों बैठते हैं सोते हैं, खेलते हैं व क्रीडा करते हैं पूर्व भव में आचरण किये हुए कल्याणकारी शुभ कर्मों का फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५८ ॥ अथ

वस्सण भंते! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा-विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते? गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीसं जोयणसहस्साइं आबाहाए जंबुद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीताए महाणदीया उप्पि एत्थण जंबुदीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन्! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं? अहो गौतम! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौड़ा है चार योजन का प्रवेश है श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यन्तरदेव,

सूत्र

सेता वरकणगथूभियाए ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किंनर रुरु सरभ चमर कुजर वणलयपउमलयभत्तिचित्ते खभुग्गतवइरवेदियाए परिगताभिरामे विज्जाहरजमलजुयलजत्तजुतइव अच्चिसहस्स मालिणीए रुवगसहस्स कलिते भिसमीणे भिब्भिसमीणे चक्खुलोयणलेसे सहफासे सस्सिरियरूवे वण्णओ दारस्स तंजहा—वयरामयाणिम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खभा जायरूवोवचिता पाईर पचवण्ण मणिरयण कोट्टिमतले हंसगब्भमये एलुए, गोमेज्जमते इंदखीले, लोहित

अर्थ

रुरु, सरभ, चवरी गाय, अष्टापद वनलता पद्मलता, इत्यादिक चित्रों से चित्रित हैं स्थम पर उत्तम वेदिका है यह मनोहर है वे स्थम विद्याधर के युगल के आकार सहित हैं सूर्य के हजारों कीरणों के तेज से उस का तेज अधिक है हजारों प्रकार के रूप सहित हैं, विशेष तेजसे देदीप्यमान चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है सश्रीक रूप है वज्ररत्न की उस की नीव है अरिष्टरत्नमय प्रतिस्थान है वैडूर्य रत्नमय स्तंभ है सुवर्ण वृद्धि उत्तम प्रकार के पांच वर्ण वाले मणिरत्नों से भूमितल बना है हंसगर्भ रत्नमय देहली है गोमेद्य रत्नमय मनोहर इन्द्र कील-आगका भाग है लोहिताक्ष रत्नमय चारसाख है ज्योतिष रत्नमय द्वार के उपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय कमाड है वज्ररत्नमय सधी है लोहिताक्ष

वत्तव्व भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा– विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जम्बुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पणयालीसं जोयणसहस्साइं आबाहाए जम्बूद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीताए महाणदीया उप्पिं एत्थणं जंबुद्दीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं, तावतियं चेव पवेसेणं

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौडा है चार योजन का प्रवेश है, श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां धारमृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर मायक रुरुरुरु

ल्लुयाओ, रयतामयी पट्टिका, जातरूवमयी उडाहणी, वइरामयी उत्तरि पुछणी सव्वसेत रययामयेच्छायणे, अकामए कणगकूड तवणिज्जथूभियाए, से ते सखतल विमल णिम्मल दधिघण गोखीर फणरययणिकरप्पगासे तिलगरयणद्धचदचित्ते णाणामणिमयदामाल-किए, अतो बहिं सण्हे, तवणिज्ज रुइल वालुया पत्थडे, सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीये ॥५६॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहतो णिसिहताए दो दो चदणकलस परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तण चदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा, चदण

आच्छादन है उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है, अकरत्नमय पक्षबाहा है, सुवर्ण का शिखर है, उस पर मरकमय भूमिका है, श्वेत दक्षिणावर्त शख का ऊपर भाग, निर्मल दधि का पिंड, गाय का दुध, समुद्र फेन, चांदी का पुंज समान उस का श्वेत प्रकाश है, तिलक रत्न व अर्ध चंद्र सहित अनेक प्रकार के चित्र हैं, विविध प्रकार के रत्न की माला से द्वार का मुख शोभित है, आभ्यतर व बाह्य सुकोमल है, उस द्वार में सुवर्णमय वालु है शुभ स्पर्श है सश्रीक रूपवाला है प्रसन्नकारी, देखने योग्य यावत् प्रति रूप है ॥ ५६ ॥ उस विजय द्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे हैं उस पर चदन से लेपन कराये हुवे दो २ कलश हैं वे कलश उत्तम कमल पर स्थापन किये हुवे हैं, सुगंधी उत्तम पानी से परिपूर्ण भरे

क्खमईउ दारविंडाओ जोतिरसामता उंबा॥ वेरुलियामया कवाडा,वइरामया लाधीसधी
लोहितक्खम सुआ सूयीओ नानामणिमया समुग्गया वइरामई अग्गला अग्गलपासाया वइ-
रमती आवतणपेढिया अकुतर पासके निरतरित घणकवाडे भिंचीसुचव भिचीगुलिया छप्प-
ण्णा तिण्णि होंति गोमाणसीततिया णाणामणिरयण वालरूवग लीलट्ठिय सालभंजियाए,
घइमयारा कूडा रययामए उस्सह सव्वतवणिज्जमये उल्लोये णाणामणि रयणजाल पजरमणि
वसग लोहितक्ख पडिवसरयत भोम्मे अकामया पक्खवाहाउ,जोतिरसामयावंसा वसकवे

रत्नमय तोछे हैं विविध प्रकार के मणिमय समुद्गक है वज्ररत्नमय अर्गल है अर्गल का स्थानभी वज्र रत्नमय है वज्ररत्नमय आवर्तन है अंकरूपमय रगन के दो पासे हैं अंतर रहित निबिड अखंड कमाड है, १६८ साने के चबुतर हैं, उन पर १६८ सिके हैं विविध प्रकार के माणमय वालरूप लीला सहित पुतलियों हैं, वज्ररत्नमय शिखर है, चांदीमय ऊपर की पीठिका है सब सुवर्णमय है विविध प्रकार के मणिमय रत्न की जाल का गवाक्ष है, मणिमय ऊपर का वंश है, लोहिताक्षरत्नमय प्रतिवंश हैं, चांदीमय भूमिका है अंकरत्नमय पक्ष बाहु है और अन्य भी स्तंभ है, ज्योतिष रत्नमय वंश है, ज्योतिष रत्नमय कवलु है, चांदी की पट्टी है, सुवर्णमय पतली लकडियों हैं, वज्ररत्नमय तृण समान।

घारितमल्लदामकलावा जाव सुक्किलसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा तेण दामा तव णिज्जलबूसगा सुवण्णपतरगमंडिता णाणामणिरयण विविहहार जाव सिरीये अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति, तेसिण नागदंतकाण उवर अण्णाओ दो दोनागदंत परिवाडीओ पण्णत्ताओ एतेसिण नागदंतगाण मुत्ताजालंत भूसिगा तहेव जाव समणाउसो तेसुण नागदंतएसु बहवे रयआमया सिक्कया पण्णत्ता तेसुण रयणामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलिया मइओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ ताओण धूवघडीओ कालागुरु पवरकुदुरुक्क तुरक्कधूव मघमघतगधद्धुताभिरामाओ सुगधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ

अर्थ

उन नागदंत में बहुत कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से बंधी हुई लम्बी पुष्पकी मालाओं के समूह लगाये हुए हैं, उन मालाओं को सुवर्ण के लुम्बक हैं, वे सुवर्णकी पत्री से मंडित हैं, वे विविध प्रकार के मणि रत्नमय व विविध प्रकार के हार से यावत् शोभा में अतीव २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ५० ॥ उन नागदंत पर दूसरे दो २ नागदंत की परिपाटी कही है वे मोतियों की माला से सुशोभित है वगैरह पूर्ववत् उस का वर्णन जानना उन नागदंत को बहुत रत्नमय सिकें है, उन सिकें में अति शोभनिक वैडूर्य रत्नमय धूप के कुरुच्छे हैं वे कृष्णागुरु कुरुरुक वगैरह उत्तम धूप से मघमघायमान व उत्कृष्ट

कयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, महया महिंद कुंभसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५७ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो णिसीहियाते दोदो णागदंत परिवाडीओ, तेण णागदंतगा मुत्ताजालंतरूसिया हेमजालगवक्ख जालखिंखिणि घंटाजाल परिक्खित्ता, अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियमु सपरिग्गहिता अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगसंठाण संठिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ गजदंत समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५८ ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टव

हुवे हैं, कलश पर बावने चंदन के छींटे डाले हुवे हैं, उस के कंठ में सूत के धागे बंधे हुवे हैं, उन को कमल के ढक्कन है, वे सब रत्नमय स्वच्छ सुकोमल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे घडे महेन्द्र कुंभ समान है ॥ ५७ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उन पर दो २ गजदंत समान खीले हैं. उन में बहुत मोतियों की माला, लम्बायमान सुवर्ण की माला, गवाक्ष के आकार से रत्न की माला व घुघरमाल प्रमुख लगाइ हैं, वे गजदंत किंचिन्मात्र ऊंचे हैं सन्मुख नीकले हुवे हैं, तीर्च्छे भित्ति प्रदेश में अच्छी तरह रहे हुवे हैं, नीचे अर्ध सर्प के आकारवाले हैं, वे सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वैसे नागदंत हाथी के दांत समान कहे हैं ॥ ५८ ॥

हत्थग्गाहितग्गसालाओ, वेल्लितग्गामिरयाओ पसत्थलक्खणसंवेल्लितग्गसिरया, ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठितेहिं, लूसेमाणीतोइव चक्खूलोयणलेस्साहिं अण्णमण्ण खिज्ज-माणीआइव पुढवि परिणामाआ सासय भावमुवगताओ चंदाणाओ चंदविला-सिणीओ चंदद्ध समनिडालाओ चंदाहियसोमदंसणीओ उक्काइवउज्जोएमाणीओ विज्जुघणमरीचि सूरदिप्पंतते अहियरसंनिकासाओ सिंगारागार चारुवेसाओ पासाइया तेयसा अतीव २ उवसोभेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ ६१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो निसीहिताए दो दो जालकडगा पण्णत्ता, तेण

अर्थ

लक्षण युक्त वेणि वाले केश हैं, अशोक वृक्ष को किंचित मीलता हुवा शरीर है बाये हाथ से अशोक वृक्ष की शाखा ग्रहण की है, किंचित् कटाक्ष से देव प्रमुख के मन हरण करती हुई व देखने मे हास्य करती होवे वैसी पुतलियों पृथ्वीमय शाश्वत भाव में प्राप्त है अर्थात् शाश्वती हैं उन का मुख चंद्र समान है चंद्र समान विलास है, चंद्र समान ललाट है, चंद्र से भी अधिक सौम्य दर्शन वाली है, उल्कापात जैसे उद्योत करने वाली है, मेघविद्युत से देदीप्यमान है, सूर्य से भी देदीप्यमान प्रकाश वाली है सोलह शृंगार व आकार से मनोहर वेश वाली है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप हैं व तेज से

उरालेण मणुण्णाण घाण मण णिव्वुइकरेण गधेण, तेएपएसु सव्वओ समता आपूरेमाणीओ २ अतीव २ सिरीए जाव चिट्ठति ॥ ६० ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहतो णिसीहियाए, दो दो सालभजिया परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण सालभजियाओ लीलट्ठियाओ सुपतिट्ठियाओ सुअलकियाओ णाणाराग वसणाओ णाणामल्लपिणिद्धाओ मुट्ठीगेज्झसु मज्झियाओ आमेलग जमल जुयल वट्टिय, अब्भुणयपीणरतितसठियपउहराओ रत्तावकाओ असियकेसीओ मिदुविसय पसत्थलक्खण सवेल्लितग्गसिरयाओ ईसिं असागवर पायव समुट्ठिताओ वाम-

गध से मनोहर हैं, श्रेष्ठ सुगध वाले हैं गधवर्ती भूत हैं उदार मनोज्ञ घ्राण व मन को आनद करने वाली गध से सब दिशी में चारों तरफ पूरी हुई यावत् अत्यत शोभती है ॥ ६० ॥ विजय द्वार की दोनों तरफ दो चबुतरे हैं उनपर दो पुतलियों की पक्ति हैं वे पुतलियों अपनी लीला में रही हुई है अच्छी तरह स्थापन की हुई है अच्छी तरह अलकृत बनाई हैं विविध प्रकार के वस्त्र पहिनाये हुए है, विविध प्रकार की मालाओं कण्ठ में पहिनाई है, मुष्टि में ग्रहण करे ऐसा मध्य प्रदेश पतला हुआ है, शिखर समान गोल ऊचा दृढ पीन युक्त पयोधर है, नख का अर्ध भाग रक्त है, श्याम वर्ण के काले केश है, कोमल निर्मल अच्छे

साओ सुस्सराओ सुस्सरणिघोसाओ ते पदेसे उरालेण मणुण्णेण कण्णमणनिव्वुइकरेण सद्देण जाव चिट्ठति ॥६३॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहओ निसीहियाए दो दो वणमाला परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण वणमालाओ नाणादुमलय किसलय पल्लव समाउलाओ छप्पय परिभुज्जमाण कमलसोभत सस्सिरीयाओ पासाइयाओ ४ ॥ तिपदेसे उराले जाव गंधेण आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठति ॥ ६४ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहतो निसीहिताए दो दो पगठगा पण्णत्ता, तेण पगठगा चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेण दो जोयणाइं बाहल्लेण सव्ववइरामता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६५ ॥ तेसिण एय ओगाण उवरिं पत्तेय २

अर्थ

विभाग उदार मनोज्ञ व कर्ण को सुख उत्पन्न करे वैसा शब्द से यावत् रहा हुवा है ॥ ६३ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ वनमाला की परिपाटी कही है वे वन लता विविध प्रकार के वृक्षलता व अंकूरों सहित हैं उनको भ्रमर भोगते हैं जिस से मनोहर व देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है यहां का प्रदेश भी उपर यावत् गंध से पूरता हुवा यावत् रहता है ॥ ६४ ॥ विजयद्वार के दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ बारकने वाले चबुतरे हैं वे चार योजन के लम्बे चौडे व दो योजन के जाड़े हैं सब वज्ररत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ६५ ॥ उन प्रत्येक बारकूले

जाल कडगा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा नीरया निम्मल णिप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासदीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६२ ॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहओ निसीडियाए दोदो घटा परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तासिण घटाण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा– जबूणतामती घटाओ वइरामतीउलालाओ, णाणामणिमया घटा पासगा तवाणि ज्झमतीओ संकलाओ रययामइउरज्जूओ ताउण घटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ हसस्सराओ, कोंचस्सराओ, णदिस्सराओ, णदिघोसाओ, सीहस्सराओ सीहघोसाओ मजुस्सराओ मजुघो

बत्सव २ सुशोभित बनी हुई रहती हैं ॥ ६१ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं जिनपर दो पाकि कटक-कड़ा के समुह हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६२ ॥ विजयद्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो घंटा हैं इन का इस तरह वर्णन है जम्बूनद रत्न की घंटा है वज्र रत्नमय लोलक है, विविध प्रकार के मणियों के पासे कहे हैं सुवर्ण की सांकल है, चांदी की रस्सी है, इस घंटा का ओघस्वर है, मेघ समान स्वर है हंस समान स्वर है, क्रौंच समान स्वर है, नंदी जैसा घोष है, सिंह जैसा घोष है, सिंहस्वर है, सिंह घोष है, सुस्वर है. सुघोष है. यहां का

पासतीया ॥ ६६ ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण पत्तेय २ अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणीहिं उवसोभिए मणीण गधोवण्णो फासोय णेयव्वो ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण उल्लोया पउमलया जाव सामलया भत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६७ ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्व रयणामईओ जाव पडिरूवाओ॥ ६८ ॥ तासिण मणिपेढियाण उवरि पत्तेय २

अर्थ

मनोहर रूप वाले, दर्शनीय यावत् प्रतिरूप हैं॥ ६६ ॥ उन प्रत्येक प्रासादावतंसकमें बहुत सम रमणीय भूमि भाग है यथा दृष्टांत आलिंग पुष्करनामक वादित्र के तल समान यावत् मणि से सुशोभित भूमि भाग है इन का वर्ण गंध स्पर्श पूर्ववत् जानना वहां प्रासादावतंसक में पद्मलता यावत् श्यामलता नामक वनस्पति के चित्रों है वे सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६७ ॥ उस रमणीय भूमि भाग के मध्य बीच में मणिपीठिका रही हुई है वे एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है, ॥ ६८ ॥ प्रत्येक मणि पीठिका उपर एक २ सिंहासन हैं इस का वर्णन

पासाय वडिंसगा पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसगा चत्तारि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दो जोयणाइ आयामविक्खंभेण अब्भुग्गयमूसित पहसिताविव विविहमणिरयण भत्तिचित्ता, वाउद्धूयविजयवेजयंती पडाग छत्तातिछत्तकलिता तुंगा गगणतल मभिलंघमाणसिहरा, जालंतर रयणपंजर मिलियव्व मणि कणय थूभियग्गा वियसिय सयवत्तपोंडरीय तिलकरयणद्ध चंदचित्ता णाणामणिमयदामालंकिया अतोय बाहिंच सण्हा तवणिज्जरुइल वालुया पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा

प्रत्येक चबूतरे पर एक २ प्रासादावतंसक है, वे चार योजन के ऊंचे हैं, दो योजन के लम्बे चौडे हैं सब दिशा में प्रसरी हुई कांति युक्त है, विविध प्रकार के चंद्रकांतादि मणि व कर्केतनादि रत्न की रचना से आश्चर्यकारी हैं, वायु से कंपित विजय वैजयंत नामक ध्वजा है, व छत्र उसपर छत्र इस से सोहित हैं, आकाश उल्लंघन करते होवे इतने ऊंचे उस के शिखर हैं, मोतियों की जालियों में शोभा निमित्त रत्न स्थापन किये हैं पंजर में से बाहिर निकाले जैसा अर्थात् जैसे किसी ढकी हुई वस्तु को खोलने से प्रकाश वाली दीखती है वैसे प्रकाशमय है मणि कनकमय शिखर है विकसित शतपत्र व पुंडरीक तिलक रत्न व अर्धचंद्र वगैरह से वे आश्चर्यकारी हैं विविध प्रकार के मणिमय माला से अलंकृत है, अंदर बाहिर का प्रासाद का द्वार सुकोमल है, इस में लाल सुवर्ण की बालु बिछाई हुई है, सुखकारी स्पर्श सश्रीक

पासाईया ॥ ६८ ॥ तेसिण सीहासण्णाण उप्पिं पत्तेय २ विजयदूसे पण्णत्ते, तेण विजयदूसा सेया संख कुंद दगरय अमत महियफेण पुंजसण्णिकासा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६९ ॥ तेसिण विजयदूसाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ वइरामया अंकुसा पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु अंकुसेसु पत्तेय पत्तेय कुंभिक्का मुत्तादामा पण्णत्ता, तेण कुंभिक्का मुत्तादामा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त प्पमाणमित्तेहिं अद्ध कुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, तेण दामा तवणिज्ज लंबूसका सुवण्ण पयरमंडिता जाव

अर्थ

श का स्पर्श देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ ६८ ॥ उस सिंहासन पर अलग २ विजय दूष्य (छत में बांधने का) है यह विजय दूष्य श्वेत शंख, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत, समुद्र फेन इत्यादिक समान श्वेत वर्ण का है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ ६९ ॥ उस विजय दूष्य वस्त्र के मध्य भाग में अलग २ वज्ररत्नमय अंकुश कहे हुए हैं उन अंकुशों में कुंभ प्रमाण मोति की मालाओं कही है, कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं की पास अन्य अर्ध कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं है, चारों तरफ वींटी हुई हैं ये मालाओं सुवर्ण के लुंबके वाली, सुवर्ण के प्रतर से मंडित यावत् रही

सीहासण पण्णत्ते, तेसिण सीहासणाण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तजहा-तवणिज्जमया चक्कला, रययामया, सीहा सोवण्णियापादा णाणामणिमयाइ पायपीढगाइ, जबूणयामयाइ गत्ताइ वइरामयासधी, नाणामणिमये वच्चे ॥ तेण सीहासणा ईहामिय उसम जाव पउलय भत्तिचित्ता सुसारसारोवइतविविहमणिरयणपादपीठा अच्छरगमलयमउगमसुरग नवतयकुसत लिव्वसीहकेसरपच्चछुत्ताभिरामा उयवियक्खोमदुगुल्लपट्टपडिच्छणया सुविरति तरयत्ताणा रत्त सुयसवुता सुरम्मा आतीणगरुयबूरणवणीततूलमउफासा,

करते हैं सिंहासन के चक्रवाल (पाये) के नीचे का प्रदेश सुवर्णमय है, चांदी का सिंहासन है, मणिमय पाये हैं, विविध प्रकार के रत्नमय पाये का बंधन है, जम्बूनद रत्नमय गात्र हैं, वज्र रत्नमय संधी पूरी हुई है, विविध रत्नमय सिंहासन का तला है यह सिंहासन हस्ती मृग यावत् पद्मलता के चित्रों से चित्रित हैं प्रधान प्रकार के श्रेष्ठ विविध मणिरत्नों की पाद पीठिका है, कोमल मसुरमय, मखमल दर्भ तथा सिंह की केसरी समान सुकोमल वस्त्र के आच्छादन से मनोहर दीखता है सुंदर अलसी का वस्त्र, कपास का सूक्ष्म व रेशम के वस्त्र का रजत्राण (आच्छादन) हैं और भी रक्त का अलसीमय चर्ममय वस्त्र से सिंहासन अच्छी तरह ढका हुआ है, वे वस्त्र मक्खन, अर्क, तूल, रुइ समान कोमल है

सूत्र

तोरणाण पुरतो दो दो हयसघाडगा जाव उसभसघाडगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा,॥एव पतीउ वीहीओ मिहुणा दो दो पउमलयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो अक्खय सोवत्थिया पण्णत्ता तेण अक्खय सोवत्थिया सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तेसिण तोरणाण दो दो दो चदणकलसा पण्णत्ता तेण चदणकलसा वरकमल पतिट्ठाणा जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा समणाउसो! तेसिण तोरणाण दो दो भिंगारगा प० वरकमल पइट्ठाणा जाव सव्वरयणामया, पण्णत्ता अच्छा जाव पडिरूवा महया २ मत्तगय महामुहागिई ते समाणा पण्णत्ता समणाउसो!॥७२॥तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो आतसगा पण्णत्ता,तेसिण आदसगाण

अर्थ

आगे दो दो घोड़े के समुह यावत् वृषम के समुह कहे हैं वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है यों सब पूर्ववत् पंक्तियों, दो २ वाथीयों, दो मिथुन (स्त्री पुरुष के) यावत् दो पद्म लताओं हैं यहां पर्यंत कहना वे सब वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं, उन तोरणों के आगे अक्षत स्वस्तिक कहे हैं वे रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं उन तोरणों के आगे दो कलश कहे हुवे हैं वे चदन कलश श्रेष्ठ प्रधान कमल में रहे हुवे यावत् सब वज्ररत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे कलश मदोन्मत्त हस्ती की मुखाकृति समान हैं ॥ ७२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ काच के आरीसे हैं

चिट्ठति ॥ ७० ॥ तेसिण पासायवडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता—सोत्थियसीहे तहेव जाव छत्ता ॥ ७१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहओ निसीहियाए दो दो तोरणा पण्णत्ता, तेण तोरणा णाणामणिमया तहेव जाव अट्ठट्ठ मंगलगाधया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो सालिभंजियाओ पण्णत्ताओ जहेव हेट्ठा तहेव ॥ तेसिण तोरणाणं पुरतो दो दो णागदंतगा पण्णत्ता, तेण णागदंतगा मुत्ता जालंत भूसिया, तहेव ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्त वट्टवग्घारित मल्ल दामकलावा जाव चिट्ठति ॥ तेसिण

हुई है ॥ ७० ॥ उन प्रासादावतंसक पर बहुत प्रकार के आठ २ मंगल कहे हैं स्वस्तिक, सिंहासन यावत् छत्र ॥ ७१ ॥ उन, विजयद्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे कहे हैं उनपर दो २ तोरण हैं वगैरह यावत् आठ २ मंगल में छत्र पर छत्र पर्यंत कहना उन तोरणों की आगे दो २ पुतलियों कहा है इन का वर्णन जैसे पूर्वोक्त पुतलियों का कहा वैसे ही जानना उन तोरणों के आगे दो २ नागदंत कहे हैं वे मोतियों की मालाओं से अलंकृत बने हुए हैं वगैरह पूर्वोक्त जैसे सब जानना उन नागदंत को बहुत कृष्ण वर्ण के सूत्र से बंधी हुई पुष्प की मालाओं के समुह यावत् रह हुवे है उन तोरणों के

अच्छोदयपडिहत्थाओ णाणाविह पचवण्णस्स फलहरितगरस बहु पडिपुण्णाओ विवि-
चिट्ठति सव्वरयणामईओ जाव पडिरूवाओ महया २ गोलिंगचक्क समाणाओ पण्णत्ता
समणाउसो! ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो सुपइट्ठगा पण्णत्ता, तेण
सुपतिट्ठगा णाणाविह पसाहणगभडविरतियाए सव्वोसहिया पडिपुण्णा सव्वरयणामया
अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो मणगुलियाउ
पण्णत्ताओ, तासुण मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण
सुवण्णरुप्पमयेसु फलयेसु बहवे वइरामया णागदतगा पण्णत्ता, तेण नागदतगाणं

अर्थ

पानी से भरी हुई हैं अनेक प्रकार के पांच वर्ण के फल से प्रतिपूर्ण है वे पात्री सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवत श्रमणों वे पात्रियों गाय प्रमुख को चांटा देने के टोपले जितनी बडी है ॥ ७५ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष हैं वे अनेक प्रकार के आभरण से भरे हुए हैं सब औषधि से प्रतिपूर्ण है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे दो मनोगुलिका है उन में बहुत सुवर्णमय रजतमय पटियें है उन पटियों में बहुत बडा रत्नमय नागदंत हैं. उन का कथन पूर्ववत् जानना उन नागदंतों में बहुत चांदी के सिके हैं उन चांदी

अयमेयाऽस्त्रे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा-तवणिज्जमता पयथगा वेरुलियमया च्छयदहा, वइरामयावारगा, णाणामणिमया वलक्खा अकामता मंडला अणोग्घसिय निम्मलाए छायाए सततोचित्र समणुपद्धा चंदमंडल पडिणिगासा महता २ अद्धकाय समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७३ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो वइरणाभथाला पण्णत्ता, तेणं थाला अच्छतिच्छडिय सालि तंदुलणह सदट्ठबहु पडिपुण्णा, त्रिवचिट्ठाति सव्वजंबूणयामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ रहचक्क समणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७४ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दोदो पातीओ पण्णत्ताओ, ताओण पातीओ

इस का वर्णन करते हैं सुवर्ण रत्नमय प्रकंठक पीठ विशेष है, वैडूर्य रत्नमय प्रतिवधन है, वज्ररत्नमय दाषा, विविध मणि रत्नमय शृंखला आदि रूप अवलंबन, अक रत्नमय काच है जिस को बिना मांजे ही स्वच्छ कांति है, इस से सब दिशो में अनुबंध सहित है चंद्रमंडल समान व अर्धकाया समान वे आरीसे कहे हैं ॥ ७३ ॥ उन तोरणों को आगे वज्र की नाभी समान दो थाल कहे हैं उन में शुद्ध स्फटिक समान तीनवार शुद्ध किये हुवे चावल भरे हुवे हैं वे चावल व थाल मय जम्बूनद रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं. वे बडे २ रथ के चक्र समान हैं ॥ ७४ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ पात्रि है वे निर्मल

तोरणाण पुरतो दो दो हय कठगा जाव दो दो उसम कठगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७८ ॥ तेसु ण हयकठएसु दो दो पुप्फचगेरीओ एव मल्लच गेरीओ गध-वण्ण-चुण्ण-वत्थ-आभरण-चगेरीओ सिद्धत्थचगेरीओ लोमहत्थ चगेरीओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो पुप्फ पडलाइ जाव लोमहत्थ पडलाइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ७९ ॥ तेसिण तोरणाण पुरता दो दो सीहासणाइ पण्णत्ता तेसिण सीहासणाण अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तहेव जाव पासादिया ॥ ८० ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो रूपछत्ताइछत्ता पण्णत्ता ॥ तेणछत्ता वेरुलियभिसत

अर्थ

आगे दो घोडे के आकार वाले यावत् वृषभ के आकार वाले घोडले हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ हयकठ यावत् वृषभ कठ में दो २ पुष्प की चंगेरी ऐसे ही माला, गंध, वर्ण, चूर्ण, वस्त्र, आभरण, सरसु की चंगेरी, पुंजनी की चंगेरी हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ उन तोरणों के आगे दो पुष्प के पुञ्ज यावत् पुञ्जनी के पुञ्ज रहे हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७९ ॥ उन तोरणों के आग दो सिंहासन हैं जिन का कथन पूर्ववत् जानना यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८० ॥ उन तोरणों के आगे दो चांदी के छत्र हैं उन को वैडूर्य रत्न निर्मल दंड है, जम्बूनद

मुत्ता जालतरूसिता हेम जाव गयदंत समाणा पण्णत्ता ॥ तेसुण वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता,तेसुण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता, तेण वायकरगा किण्हसुत्त सिक्कागवच्छिया जाव सुक्किल सुत्तसिक्काग वच्छिता बहवे वायकरगा पण्णत्ता सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥७६॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो चित्तारयण करडा पण्णत्ता से जहा नामए चाउरंत चक्कवट्टिस्स चित्तेरयणकरडे वरुलिय मणिफालिय पडलत्थाय डेताए पभाए त पदेसे सव्वतो समताओ भासइ उज्जोवेइ पभासेइ एवामेव तिविचित्त रयणकरडगा वेरुलियपडल पच्छायडा साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समताओ भासेति जाव पभासेति॥७७॥ तेसिण

के सिके में पवन डालने के पखे हैं, वे पखे कृष्ण यावत् श्वेत वर्ण के सूत्र से ढके हुवे हैं वे सब वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे २ दो २ आश्चर्यकारी रत्न के करंडिये हैं जैसे चारों दिशा को विजय करने वाले चक्रवर्ती राजाको आश्चर्यकारी रत्नका करंडिया होता है और उस को वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन होता है, वह अपनी आसपास चारों दिशी में प्रकाश करता है, वैसे ही यहां आश्चर्यकारी रत्नों के करंडिये हैं उनको भी वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन है और वे यहां चारों तरफ उद्योत करते हैं, प्रकाश करते हैं यावत् तपते हैं ॥ ७७ ॥ उन तोरणों के

समुग्गा हिंगुलसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८३ ॥ विजयेण दारेण अट्ठसय चक्कज्झयाण अट्ठसय मगरज्झयाण अट्ठसयगरुलज्झयाण, अट्ठसयजुगज्झयाण, अट्ठसयछत्तज्झयाण अट्ठमयपिच्छज्झयाण, अट्ठसयसउणीज्झयाण, अट्ठसयसीहज्झयाण, अट्ठसयउसभज्झयाण अट्ठसयसेयाण, चउविसाणाण नागवरकेऊण एवमेव सपुव्वावरेण विजयदारे आसीयकेउसहस्स भवतित्तिं मक्खाय ॥ ८४ ॥ विजयदारे नव भोम्मा पण्णत्ता

(तेल के सीसे) कोष्ट के सीसे, पत्र के सीसे, तगर के सीसे, पलास के सीसे, हरताल के सीसे, हिंगुलक के सीसे, मनःशिला के सीसे व अंजन के सीसे हैं ये सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८३ ॥ विजय द्वार पर एक सो आठ ध्वजा चक्र के चिन्हवाली हैं, मगर के चिन्हवाली १०८ ध्वजा हैं, गरुड के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, घूसरे के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, छत्र के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, पीछ के आकार की १०८ ध्वजाओं हैं, शकुनी पक्षी के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, सिंह के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, वृषभ के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, और श्वेत चार दंतवाले हस्ती के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं यों सब मिलकर विजय द्वार पर एक हजार अस्सी ध्वजाओं हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा है ॥ ८४ ॥ विजय द्वार में नव भूमि कही हैं उन की

विमलदण्डा जम्बूणय कनिका वइरसंधी मुत्ता जालपरिगता अट्ठसहस्स वर कंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वउय सुरभीसीयल छाया मंगल भत्तिचित्ता चंदागारोवमा छत्ता ॥ ८१ ॥ तेसिं तोरणाणं पुरतो दो दो चामराओ पण्णत्ताओ ताओणं चामराओ णाणामणि कणगरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ संखककुंद गरय अमयमहियफेण पुंजसण्णिगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥८२॥ तेसिणं तोरणाणं पुरओ दो दो तेलसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयसमुग्गा तगरसमुग्गा एलासमुग्गा हरियाल-

रत्न की कर्णिका है, वज्र रत्नमय संधी है, मोतियों की माला से चारों तरफ व्याप्त हैं, एक हजार आठ सुवर्ण शलाका से बने हुवे हैं, दर्दर चंदन अथवा मलय चंदन जैसा सुगंधित है, सब ऋतु के सुगंध वाली शीतल छाया है, आठ मंगलिक के चिन्ह चित्रित किये हैं, और चन्द्र जैसे वर्तुलाकार हैं ॥ ८१ ॥ उन तोरण की आगे दो चमर कहे हैं उन चमरों को विविध मणि रत्न वाला निर्मल व बहु मूल्य सुवर्ण का आश्चर्य कारी दंड व भेद है, शंख, अंकरत्न, मुचकुंद के पुष्प, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन जैसी कान्तीवाले श्वेत सूक्ष्म चांदी के बाल रहे हैं, वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ तेल समुद्र

पुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण चत्तारि भद्द सणा पन्नत्ता॥ तस्सण सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठण्ह देवस्स साहस्सीएण अट्ठभद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तस्सण सीहासणस्स दाहिणाण एत्थण विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्ह देवसाहस्सीण दसभद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स दाहिणपच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए बारसण्ह देवसाहस्सीण बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स पच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स सत्तण्ह अणियाहिवईण सत्त भद्दासणा पण्णत्ता, तस्सण सीहासणस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण एत्थण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेव साहस्सीण सोलसभद्दासणसाहस्सीओ, पण्णत्ताओ तजहा पुरच्छिमेण

अर्थ आभ्यन्तर परिषदा के देवों के आठ हजार भद्रासन कहे हैं, दक्षिणादिशा में मध्य परिषदा के दश हजार देवों के दश हजार भद्रासन कहे हैं, नैऋत्यकोन में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव के बारह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं उस बडे सिंहासन की पश्चिम दिशा में विजयदेव के सात अनिकाधिपति के सात भद्रासन कहे हुवे हैं, उसका पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर यों चार दिशाओं में विजयदेव के सोलह हजार आत्मरक्षक देव के सोलह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं पूर्व में [illegible] हजार, दक्षिण में चार हजार, पश्चिम में चार

तेसिण भोम्माण अतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता जाव मणीण फासो ॥ तेसिं भोम्माण उप्पिं उल्लोया पउमलया भत्तिचित्ता जाव सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८५ ॥ तेसिण भोम्माण बहुमज्झदेसभाए जे से पचमे भोम्मे तस्सण भोम्मस्स बहुमज्झ देसभाए तत्थण एगे महं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासण वण्णओ विजयदूसे जाव अकुसे जाव दामाचिट्ठति ॥ ८६ ॥ तस्सण सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह सामाणिक साहस्सीण, चत्तारि भद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ तस्सण सीहासणस्स

बीच में सम रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि स्पर्श है वहां पद्मलता, पद्मलता यावत् श्यामलता के विविध प्रकार के चित्र युक्त यावत् सुवर्णमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ८५ ॥ उन नव भूमि के मध्य भाग में जो पांचवी भूमि है उस के मध्य भग में एक सिंहासन है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् विजय दूष्य से ढका हुवा यावत् अकुश यावत् पुष्प की माला वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ ८६ ॥ उस सिंहासन से वायव्यकून, उत्तरदिशा व ईशानकून में विजय नामक देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस सिंहासनसे पूर्वमें चार अग्रमहिषियों के परिवार सहित चार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस की अग्निकून में विजय देवता के

वुच्चति विजए दारे ? विजएणदारे गोयमा ! विजएणामं देवेमहिड्ढीए जाव महज्जुइए जाव महाणुभावे पलिओमठितीये परिवसति ॥ सेणं तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह अग्गमहिसीणं, सपरिवाराणं तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह अनियाणं, सत्तण्ह अनियाहिवईणं, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सीणं, विजयस्सणं दारस्स विजयाएरायहाणीए अण्णेसिंच बहूणं विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाणं देवाणं देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, से तेणेट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति विजएदारे, अदुत्तरं चणं गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

चत्तारि साहस्सीओ पण्णत्ताओ एवं चउसुवि जाव उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ ८७ ॥ विजयस्स उवरिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तंजहा-रयणेहिं वइरेहिं, वेरुलिएहिं, जाव रिट्ठेहिं॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता तंजहा-सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे कण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सणं दारस्स उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता तहेव ॥ ८८ ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति

हजार व उत्तर में चार हजार, शेष आठ भूमि में एक २ भद्रासन कहा है ॥ ८७ ॥ विजय द्वार के ऊपर का भाग सोल प्रकार के रत्नों से सुशोभित है तद्यथा—कर्केतरत्न २ वज्र, ३ वैडूर्य, ४ लोहिताक्ष, ५ मसाल गर्भ, ६ हंसगर्भ, ७ पुलक, ८ सोगंधिक, ९ ज्योतिष रत्न, १० अंक, ११ अंजन, १२ रजत, १३ जातरूप, १४ अंजन पुलक, १५ स्फटिक और १६ रिष्ट विजय द्वार पर आठ २ मंगल हैं स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् आदर्श ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं विजय द्वार पर कृष्ण चामर की ध्वजा यावत् रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है विजय द्वार पर बहुत छत्र पर छत्र प्रमुख रहे हुवे हैं, यह सब पूर्ववत् जानना॥८८॥अहो भगवन् ! विजयद्वार ऐसा नाम क्यों कहा?

विजएण दारे ? विजेएणदार गोयमा ! विजएणामं देवमहिड्डीए जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सणीण चउण्ह अग्गमहिसीण, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सणि॥विजयस्सण दारस्स विजयाएराय-हाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणेट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चाति विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अर्थ

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा ममावबाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

कयाइ णासि णकयाइ णत्थि, णकयाइण भविस्सइ जाव अवट्ठिये णिच्चे विजयदारो ॥ ११ ॥ कहिण भंते ! विजयस्सण देवस्स विजया नाम रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा! विजयस्स दारस्स पुरच्छिमेण तिरियमसंखिज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता, अण्णंमि जंबूदीवे २ बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता, एत्थण विजयस्स देवस्स विजयाणाम रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेण सत्तत्तीस जोयण सहस्साइं णवय अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ साण एगेणं पगारेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ता, सेण पगारे सत्ततीस जोयणाइं अट्ठ

कदापि नहीं है वैसा नहीं कदापि व नहीं होगा वैसा नहीं यावत् अवस्थित नित्य शाश्वत विजय द्वार है॥ ११ ॥ अब विजय देवता का विजया राज्यधानी का कथन करते हैं अहो भगवन्! विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है? अहो गौतम ! विजय द्वार से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है उस में बारह हजार योजन जावे तब विजय देवता की विजया राज्यधानी है यह बारह-योजन की लम्बी चौडी है, और सैंतीस हजार नव सो अडतीस योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है उस के चारों तरफ एक प्राकार (कोट) रहा हुवा है, वह ३७॥योजन का ऊंचा है,मूल में १२॥योजन का

सूत्र

जोयण चउद्द उच्चत्तेण, मूले अद्धतरस जोयणाइ विक्खंभेण, मज्झे छजोयणाइ सक्कोसाइ विक्खंभेण, मूलविच्छिण्णे,मज्झेसंखित्त,उप्पिं तणुए, बाहिं वट्टे, अंतो चउरंसे गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्वकणगमये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १००॥ सेण पागारेण णाणाविह पंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते तंजहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं, तेण कविसीसगा अद्धकोस आयामेण, पंचधणुसयाइ विक्खंभेण, देसूण अद्धकोस उड्ढं उच्चत्तेण,सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥१०१॥ विजयाएण रायहाणीए एकामेकाए बाहाए पणुवीस२दारसत भवति तिमक्खाय॥ तेण दारा बावट्ठी जोयणाइ

अर्थ

चौडा है, मध्य में ६। योजन का चौडा है, और ऊपर तीन योजन आधा गाउ का चौडा है मूल में विस्तारवाला, मध्य में संकुचित व ऊपर पतला है बाहिर गोल व अंदर चौकूना है गाय पुच्छ के आकारवाला है, सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ १०० ॥ यह प्राकार विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल यों पांच वर्णवाले कपिशीर्ष (कंगूरे) से सुशोभित है ये कंगूरे आधा कोश के लम्बे पांच सो धनुष्य के चौडे, आधा कोश में कुच्छ कम के ऊंचे, सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १०१ ॥ विजया राजधानी की एक २ बाजु में १२५ द्वार हैं वे द्वार ६२॥ योजन के ऊंचे, ३१। योजन के

मोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थणं अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिणं दाराणं उत्तिमगागारा सोलस विहहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएणं रायहाणीए चउद्दिसिं पंच जोयण सताइं अबाहाए एत्थणं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता तंजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चंपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेणं असोगवणं, दाहिणेणं सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेणं चंपगवणे, उत्तरेणं चूयवणे ॥ तेणं

अर्थ

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसो द्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है वे वनखण्ड बारह हजार योजन से कुछ

वणसडा साइरेगाइ दुवालस जोयण सहस्साइ आयामेण, पच २ जोयण सताइ विक्खभण पण्णत्ता, पत्तेय २ पागार परिक्खित्ता, किण्हा किण्होभासा, वणसडवण्णओ भाणियव्वो जाव बहवे वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति णिसीदति तुयट्टति रमति ललति कीलति कोडति मोहेति पुरपोराणाण सुचिण्णाण सुपरकताण सुभाण कडाण कम्माण फलवित्ति विसेस पच्चणुब्भवमाण विहरति ॥१०७॥ तेसिण वणसडाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ पासायवडिसया पण्णत्ता, तेण पासाय वडिसगा बावट्ठि २ जोयणाइ अद्ध जोयण च उड्ढ उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइ कोसच आयामविक्खंभेण, अब्भूग्गयमूसिया तहेव जाव अतो बहु समरमणिज्जा

अधिक लम्बे हैं, पांचसो योजन के चौडे हैं प्रत्येक को पृथक् २ प्राकार (कोट) है, वे कृष्ण वर्ण वाले कृष्णा भास वगैरह वनखण्ड का वर्णन जानना वहांपर बहुत देव देवियों बैठते हैं, सोते हैं, खडे रहते हैं, खेलते हैं क्रीडा करते हैं, मुग्ध होते हैं व अपने पूर्वभव के संचित किये हुए शुभ कर्म के फल का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ॥ १०७ ॥ उन वनखण्डों के बीच में प्रासादावतसक कहे हुए हैं व ६२॥ योजन के ऊंचे ३१। योजन के लम्बे चौडे, किंचित् नमे हुए वैसे ही यावत् अदर बहुत रमणीय

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिणं दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएणं रायहाणीए चउद्दिसिं पंच जोयण सताइं अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता तंजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चंपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवणे, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चंपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसोद्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसोर योजन दूर चार वनखण्ड कहे है जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुछ

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए ॥ तणसद्दविहुणे जाव देवाय देविओय आसयंति जाव विहरति ॥ ११० ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगमहं उवारियलणे पण्णत्ते बारस जोयणसयाइं आयामविक्खभेण, तिण्णिजोयणसहस्साइं सत्तयपचाणउतेजोयणसते किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण, अद्धकोस वाहल्लेण सव्वजंबूणयामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १११ ॥ सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसडेण सव्वतोसमता सपरिक्खित्तो पउमवरवेतियाए वण्णओ, लणसमियापरिक्खेवेण वणसड वण्णओ जाव विहरति ॥ सेण वणसडे दसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्खभेण उवरितलेण

पांच प्रकार के मणिरत्नों से सुशोभित है, यहां तृण शब्द छोडकर सब वर्णन करना वहां देवता देवियों विश्राम करते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ११० ॥ उस बहुत सम रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक बडा उपकारिक लयन (राज्यसभा) कहा है यह बारह सो योजन का लम्बा चौडा है तीन हजार सात सो पचाणवे योजन से कुच्छ अधिक की परिधि कही है, आधा कोश की जाडाइ है वे सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह उस पद्मवर वेदिका व उस राजसभा को परिवेष्टित रहा हुवा वनखण्ड का वर्णन पूर्ववत् जानना यह वनखण्ड कुच्छ

भूमिभागा पण्णत्ता उल्लोया पउमभत्तिचित्ता भाणियव्वा ॥ १०८ ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता वण्णावासा सपरिवारा ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्ताइछत्ता ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा असोए सत्तिवण्णे चंपए चूए, तेण साण २ वणसडाण साण २ पासाय वडिंसगाण साण सामाणियाण, साण २ अग्गमहिसीण, २ साण २ परिसाण, साण २ आयरक्खदेवाण आहेवच्च जाव विहरति ॥ १०९ ॥ विजयाएण रायहाणीए अतो

भागवाले कहे हुए हैं उस में चद्रवा पद्मलता वगैरह चित्रों कहे हुए हैं ॥ १०८ ॥ उन प्रासादावतसक के मध्य भाग में पृथक् २ सिंहासन कहे हुवे हैं, उन का परिवार सहित सब वर्णन कहना उन प्रासादावतसक पर आठ २ मंगलध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हुवे हैं वहां चार महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं जिन के नाम-अशोक, सप्तपर्ण, चंपक व चूत वे अपने २ वनखण्डमें अपने २ प्रासादावतसक में, अपने २ सामानिक, अग्रमहिषी, परिषदा व आत्मरक्षक देवों का अधिपतिपना करते हुए विचरते हैं ॥ १०० ॥ विजया राज्यधानी की अंदर बहुत सम रमणीय भूमिभाग कहा हुवा है यावत्

॥ ११३ ॥ तस्सणं पासायवडेंसगस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणि फासा, उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्जे भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए एका मह मणिपेढिया पण्णत्ता, दो जोयणाइ आयाम विक्खंभेण जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते एव सीहासण वण्णओ सपरिवारो ॥ तस्सण पासाय वडेंसगस्स उप्पि बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता, सेण पासाय वडेंसए अन्नेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समतासपरिक्खित्ते, तेण पासाय

अर्थ ॥ ११३ ॥ उस प्रासादावतसक के मध्य में बहुत समरमणीय भूमिभाग कहा है यावत् मणिस्पर्शवाला है उस के मध्य भाग में एक मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का परिवार सहित वर्णन करना उस प्रासादावतसक पर आठ २ मंगलिक ध्वजा, छत्रपरछत्र हैं उस प्रासादावतसक की आसपास अन्य उससे आधी उचाइ के प्रमाण वाले चार प्रासादावतंसक कहे हैं वे ३१॥ योजन के ऊंचे व पनरह योजन अढाइ कोस के लम्बे चौडे व गगन तलको अवलम्बन

समे परिक्खेवेण ॥ १११ ॥ तस्सण उवरियालेणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ ॥ तेसिण तिसोवाण पडिरूवगाण पुरत्थ पत्तेय २ तोरणा पण्णत्ता छत्ताइछत्ता ॥ ११२ ॥ तस्सण उवरियलेणस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जभूमिभागे पण्णत्ते जाव मणिहिं उवसोभिते मणिवण्णओ गंधोभासो ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए तत्थण एगेमहं मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते सेण पासायवडेंसए बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणच उड्ढं उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइं कोसच आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिय पहसिते तहेव

सम दो योजन के चक्रवाल में चबुतरा समान है ॥ १११ ॥ उस उपकारिका लयन को चारों तरफ चार पांवडे हैं, वे वर्णन करने योग्य है, उन प्रत्येक पांवडे के आगे पृथक् २ तोरण यावत् छत्रातिछत्र है ॥ ११२ ॥ उस उपकारिका लयन के ऊपर बहुत समरमणीय भूमि भाग है यावत् मणि से शोभित हैं यहां मणि का वर्णन पूर्ववत् जानना गंधवास पर्यंत कहना उस रमणीय भूमिभाग के मध्य बीच में एक बडा मूल प्रासादावतंसक कहा है वह साढी बासठ योजन का ऊंचा, सवा एकतीस योजन का लम्बा चौडा और गगनतल के अवलम्बन करता होवे वैसा सब अधिकार पूर्ववत् जानना

तेसिण पासायवडिंसगाण अतो बहु समरमणिजाणं भूमिभाग उल्लोया ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तय २ पउमासणा पण्णत्ता ॥ तेसिण पासायाण अट्ठट्ठमगलज्झया छत्ताातिछत्ता ॥ तेण पासायवडेंसका अण्णेहिं चउहिं २ तदद्धुच्चत्त पमाणमेत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतोसमता सपरिक्खित्ता ॥ तेण पासायवडिंसका देसूणाइ अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण देसूणाइ चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुगत भूमिभागा उल्लोया भद्दासणाउवरि मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥११४॥ तस्सण मूलपासायवडिंसगस्स उत्तरपुरच्छिमेण एत्थेण

ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं इन प्रासादावतसक के आगे पृथक् २ इस से आधी ऊंचाइ के प्रमान वाले अन्य चार २ प्रासादावतसक कहे हैं ये कुच्छकम आठ योजन के ऊंचे व कुच्छ कम चार योजन के लम्बे चौडे हैं, गगन तल को अवलम्बन करके रहे हुवे होवे वैसे दीखते हैं उन मे पृथक्२ भद्रासन कहे हैं उन पर आठ २ मगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं यों सब मीलकर ८५ प्रासादावसक की पंक्ति होती है मूल अंदर का एक, उस की आस पास चार, इन चार की आसपास १६ सो इन की आसपास ६४ यों सब मीलकर ८५ हुए ॥ ११४ ॥ उस मूल प्रासादावतंसक से ईशान कून में विजय देव

वडेंसका एकतीस जोयणाइ कोसच उड्ढ उच्चत्तेण अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच आयाम विक्खंभेण अब्भुग्गय तहेव ॥ तेसिण पासाय वडेंसगाण अतो वहु समरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोता ॥ तेसिण बहु समरमणिज्ज भूमिभागाण वहुमज्झ देसभागे पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ तासिण अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासाय वडेंसका अन्नाहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासाय वडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेण पासायवडेंसगा अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच उड्ढ उच्चत्तेण, देसूणाइ अट्ठजोयणाइ आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय तहेव

करते होवे वैसे हैं उन प्रासादावतंसक के अंदर बहुत समरमणीय भूमिभाग है उस के मध्य भाग में पृथक् २ ... प्रत्येक भद्रासन कहे हैं उन को आठ २ मंगल, ध्वजा छत्रातिछत्र कहे हैं इन चार प्रासादावतंसक के आगे इन से अर्ध ऊंचाईवाले चार २ प्रासादावतंसक कहे हैं वे पन्नरह योजन व कोश के ऊंचे हैं और कुच्छकम आठ योजन अर्थात् सात योजन तथा तीन कोश के लम्बे चौडे उस को अवलम्बन कर के रहे होवे वैसे दीखाइरते हैं उन प्रासादावतंसक में बहुत समरमणीय भाग कहा है इस के मध्य बीच में पृथक् २ पद्मासन कहे हुए हैं. इन प्रासादोंपर आठ २ मंगल,

रूवग सहस्स कलियाभिसमाणी भिज्झिसमाणि चक्खुलोयण लेसा सुहफासा सस्सिरिय रूवा कचणमणिरयणथूभियागा (थूभियागा) नाणाविह पचवण्ण घटा पडाग पडिमडितग्ग सिहँरा धवलामिरीइकवय विणिमुयती लाउल्लोइय महिया गोसीस-सरसचदण ददरदिन्न पचगुलियतला उवचियचदणकलसा चदणघडसुकयतोरण पडि दुवारेदसभागा आसत्तोसत्तविउल वट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पचवरण सरससुरभिमुक्क पुप्फपुजावयारा कालता कालागुरुपवरकुंदरुक्कधूव मघमघत गधद्धुआभिरामा सुगध वरगध गधवट्टिभूता अच्छरगणसघसविकिन्ना दिव्वतुडिय मधुरसद्द सपइआ,

सुशोभित है, हजारों रूप के भेद से सहित है, तेजसे देदीप्यमान है, विशेष देदीप्यमान है, चक्षु से देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है, शोभनिक रूप है, सुवर्ण, मणि व रत्न के उस के शिखर हैं, विविध प्रकारके पांच वर्ण की घंटा पताका स शोभनीक इस शिखर है, प्रकाश करनेवाले श्वेत कीरणों उस में से नीकलते हैं, गोमय (गोबर) से उस का भाग लींपा हुवा है, गोशीर्ष चदन, रक्त चदन व दर्दर चदन से पांचों अंगुलियों के छापे लगाये हैं, वहां चदन कलश स्थापन किये हैं, प्रतिद्वार के आगे चदन के घट का तोरण अच्छी तरह स्थापन किया है, नीचे भूमि पर विस्तीर्ण वर्तुलाकार लम्बी लटकती हुई पुष्पमालाओं का समुह है, पांच वर्णवाले सुगंधमय पुष्प का पुज है, कृष्ण चदन, श्रेष्ठ कुंदरुक धूप से

विजयस्स देवस्स सभासुधम्मा पण्णत्ता, अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण सक्कोसाइं छ जोयणाइं विक्खंभेण णवजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण अणेग खंभसतसनिविट्ठा अब्भुग्गय मुकय वइरवेदिया, तोरणवर रतिय सालिभंजिया, सुसिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ संठियपसत्थवेरुलियविमलखंभा णाणामणिकणगरयणखइयउज्जल बहुसम सुविभत्तचित्त रमणिज्ज कुट्टिमतला, ईहामिय उसभ तुरगणर विहग वालग किण्णर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइया परिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंविअच्चिसहस्समालणीया

की सुधर्मा सभा है यह १२॥ योजन की लम्बी है और ६। योजन की चौडी है, नव योजन की ऊंची है अनेक स्तंभ उस में रहे हुवे हैं अति रमणीय देखनेवाले को सन्मुख दीखसके वैसी वज्रमय वेदिका है, वहां अच्छी तरह बनाए हुए तोरण व पूतलियों हैं, सुवृत्त मनोहर संस्थानवाली हैं, प्रशस्त वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, उन सभाका विविध प्रकार के मणि, कनक, रत्न व वज्ररत्नसे उज्वल, उपम, निबड आश्चर्यकारी व मनोहर कुट्टिम भूमि तल है ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमच्छ, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यंतर देव, रुरु, सरभ, चमर, हाथी, वनलता व पद्मलता के विविध प्रकार के चित्रों हैं स्तंभ पर रही हुई वज्रमय वेदिका से चारों दिशि में मनोहर है, विद्याधरों के युगल जैसे हजारों कांति की मालाओं से

मूमिभाग वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण उवरिं पत्तेय २ अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तजहा सात्थिय जाव मच्छा ॥ तेसिण मुहमडवाण पुरओ पत्तेय २ पेच्छाघर मडवगा पण्णत्ता, तेण पेच्छाघर मडवगा अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण जाव दोजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण जाव मणिफासा ॥ ११७ ॥ तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता, तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओण मणिपेढियाओ जोयणमेग आयाम विक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमइओ जाव पडिरूवा ॥ ११८ ॥

साधिक दो योजन के ऊचे हैं इन मुख मडप में अनेक स्थभ रहे हुवे हैं यावत् सब भूमिभाग का वर्णन कहना इन मुख मडप पर स्वस्तिक यावत् मत्स्य के आठ २ मगल कहे हैं इन प्रत्येक मुख मडप के आगे पृथक् प्रेक्षाघर मडप कहे हैं ये प्रेक्षाघर मडप १२॥ योजन के लम्बे दो योजन के ऊचे यावत् मणिस्पर्श वाले कहे हैं ॥ ११७ ॥ इन के मध्य में पृथक् वज्ररत्न के अखाडे कहे हैं इन की बीच में पृथक् मणिपीठिका कही हैं ये मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है, सब मणिमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ११८ ॥ इन मणिपीठिका पर पृथक्

सव्वरयणामती अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ११५ ॥ तीसेणं सोहम्माए सभाए तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं तेणं दारा पत्तेयं २ दो दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगंजोयणं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेयावर कणग थूभियागा जाव वणमालादारवण्णओ, तेसिणं दाराणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्ताइ छत्ता ॥११६॥ तेसिणं दाराणं पुरओ तिदिसिं ततो मुहमंडवा पण्णत्ता, तेणं मुहमंडवा अद्ध तेरस जोयणाइं आयामेणं छजोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तेणं मुहमंडवा अणेग खंभसय सन्निविट्ठा जाव उल्लोया

मघमघायमान गंध वाली है, सुगंधमय श्रेष्ठ गंध वाली है, गंधवर्तीभूत है, अप्सराओं के समुदाय सहित है, दीव्य त्रुटितादि वादित्र के मधुर शब्द सहित है, यह सभा सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ११५ ॥ इस सुधर्मा सभा की तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं पूर्व दक्षिण व उत्तर में ये द्वार दो योजन के ऊंचे एक योजन के चौडे व एक योजन के प्रवेश वाले हैं श्वेत श्रेष्ठ कनक के स्तंभ हैं यावत् वनमाला युक्त हैं इन द्वार पर बहुत आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥ ११६ ॥ इन द्वार के आगे तीन दिशा में तीन मुख मंडप कहे हैं वे मुख मंडप १२॥ योजन के लम्बे हैं छ योजन व एक कोस के चौडे हैं

सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तेसिण चेइय थूभाण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा बहुकिण्हा चामरज्झया पण्णत्ता छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण चेतियथूभाण चउद्दिसिं पत्तेय २ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम-विक्खमेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमया जाव तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय२ चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेह पमाणमित्ताओ पलियंक णिसण्णाओ थूभाभिमुहीओ सन्निविखत्ताओ चिट्ठति तजहा उसम वद्धमाण चदाणण वारिसेण॥१२०॥ तेसिण चेतिय थूभाण पुरतो तिदिसिं पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमईओ अच्छाओ

कहे हुवे हैं उन चैत्यस्तूप की चार दिशा में चार मणिपीठिकाओं हैं यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजनकी जाड, सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है उन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक्२ जिन प्रतिमा हैं ये जिन के शरीर प्रमान ऊंची, स्तूप के सन्मुख मुख रख रही हुई हैं इन जिन प्रतिमा के नाम ऋषभ, वर्धमा, चद्रानन, व वारिसेन ॥१२०॥ चैत्यस्तुप के आगे तीन दिशाओं में पृथक् २ मणिपीठिकाओं कही है ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है

तासिण मणिपेढियाण उप्पि पत्तेयं २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा ओपरिवारा ॥ ११९ ॥ तेसिण पेच्छाघर मडवाण उप्पि अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण पच्छाघर मडवाण पुरतो तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ॥ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण, जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमइओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पि पत्तेयं २ चेइय थूभा पण्णत्ता तेण चेइयथूभा दो जोयणाइं आयामविक्खंभेण साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण सेया सख ककुदद्गरयअमतमहित फेणपुंज सन्निकासा

सिंहासन कहे हैं यहां पूर्ववत् सिंहासन का वर्णन कहदेना यावत् पुष्प की मालाओं कही हुई है ॥११९॥ उन प्रक्षाघर मंडप पर आठ २ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हैं इन की आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिका हैं ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, इन पर पृथक् २ चैत्यस्तूप कहे हैं, ये दो योजन के लम्बे चौडे और साधिक दो योजन के ऊंचे हैं श्वेत शंख, कुदरुक, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन समान स्वच्छ निर्मल उज्वल यावत् प्रतिरूप हैं उन चैत्यस्तूप पर आठ २ मंगल हैं बहुत कृष्ण वर्ण वाले चामर, ध्वजा व छत्रातिछत्र

विविहसाहप्पसाहवरुलिय पत्त, तवणिज्ज पत्तवेंटा, जबुणयरयमउय पल्लव सुकुमाल पवाल सोभत वरकुहरग्ग सिहारा, विचित्त मणिरयणसुरभि कुसमफल भरियणमियसाला सच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया अमयरससमरसफला अहियणयण मणणिवुत्तिकरा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥१२३॥ तसिणचेइयरुक्खा अन्नेहिं बहूहिं तिलयलवय छत्तोवग सिरीस सत्तवण्ण दहिवण्ण लोद्धव चदण निव कुडय कयव पणस तालतमाल पियाल पियगु पारावयरायरुक्ख नादिरुक्खेहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता तेण तिलय जाव नंदिरुक्खा मूलवतो कदवतो जाव सुरम्मा, तेण तिलया जाव

पत्र है, सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय लालवर्णवाले मृदु मनोज्ञ पल्लव हैं, सुकोमल प्रवाल से सुशोभित प्रधान अकुर के अग्रशिखर हैं, विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधित पुष्प फल से उन की शाखा नम्न बनी हुई है, छाया युक्त, कांति सहित, सश्रीक, उद्योत सहित, अमृत रस समान फलवाले मन व नयन को आनंद करनेवाले, प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ १२३ ॥ इन वृक्षों की चारों तरफ अन्य अनेक तिलक वृक्ष, छत्रोपगाय, सिरीष वृक्ष, सप्तछद के वृक्ष दधिपर्ण के वृक्ष, लोध्र वृक्ष, दव वृक्ष, चदन वृक्ष, कुटज वृक्ष, कदंब वृक्ष, फणस वृक्ष, ताड वृक्ष, तमाल वृक्ष, पियाल वृक्ष, पियगु वृक्ष, पारावत वृक्ष, नदीवृक्ष व इत्यादि वृक्ष रहे हुवे हैं वे तिलक वृक्ष यावत्

लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ निप्पकाओ णीरइयाओ जाव पडिरूवाओ॥ १२१ ॥तासिण मणि पेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चेतियरुक्खा पण्णत्ता, तेसिण चेतियरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, अद्ध जोयणाइ उव्वेहेण, दो जोयणाइ खधो अद्ध जोयणाइ विक्खमेण छज्जोयणाइ विडमा, बहुमज्झदेसभाए अद्ध जोयणाइ आयाम विक्खभेण, सातिरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ताइ ॥ १२२ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा-वइरामयमूल रययसुपइठिया सुविडिमा, रिट्ठामय विपुलकदा, वेरुलियरुचिलक्खधीसु जाय वरजाय रूव पढमगविसालसाला, णाणामणिरयण

सब मणिमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण, घठारी, मठारी, पक रहित रज रहित यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२१ ॥ प्रत्येक मणि पीठिकापर चैत्य वृक्ष हैं ये चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊंचे हैं आधा योजन जमीन अंदर हैं दो योजन का स्कंध हैं, आधा योजन का स्कंध जाडपनेमें हैं, छ योजन की शाखा है, वह शाखा बीच में आधा योजन की जाडी है और वे वृक्ष सब मीलकर आठ योजन से कुच्छ अधिक कहे हैं ॥ १२२ ॥ इन चैत्य वृक्षों का ऐसा वर्णन कहा है इन का वज्ररत्नमय मूल है, चांदी की शाखा है रिष्ट रत्न के स्कंध हैं, वैडूर्य रत्नमय कंद है, अच्छी तरह निष्पन्न हुई मूल से विस्तार युक्त सुवर्णमय शाखा है, विविध प्रकार के मणि व रत्नमय विविध प्रकार की शाखा व प्रति शाखा है, वैडूर्य रत्नमय

मट्ठ सुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवर पचवण्ण कुडभिसहस्स परिमंडियाभिरामा वाउद्धुय विजय वेजयती पडाग छत्तातिछत्त कलिया, तुगागगणतल मभिलघमाण-सिहरा पासादीया जाव पडिरूवा ॥ १२६॥ तेसिं महिंदज्झयाण उप्पि अट्ठट्ठ मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२७ ॥ तेसिण महिंदज्झयाण पुरतो तिदिसिं तओ णदा-पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, ताओण पुक्खरिणीओ अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण, सक्कोसाइ छ जायणाइ विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी वण्णओ पत्तेय २ पउमवरवेतियाओ परिक्खित्ताओ, पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ताओ वण्णओ जाव पडिरूवाओ ॥ १२८ ॥ तेसिण णदाण पुक्खरिणीण

सुशोभित हैं मनोहर हैं, वायु से उडती हुई, विजय, वैजयन्ती नामक पताका और छत्र पर छत्र से युक्त हैं गगन तल को उल्लंघन करती होवे इतने उन के शिखर ऊंचे हैं प्रसन्नकारी यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२६ ॥ इस महेन्द्र ध्वजा पर आठ २ मगल ध्वजा व छत्र पर छत्र है ॥ १२७ ॥ महेन्द्र ध्वजा के आगे तीन दिशा में तीन नदा पुष्करणी हैं ये साढी बारह योजन की लम्बी सवा छे योजन की चौडी व दश योजन की ऊंडी है यह स्वच्छ, सुकोमल वगैरह सब पुष्करणीका वर्णन पूर्ववत् जानना प्रत्येक वावडिको एक २ पद्मवर वेदिका वेष्टित है और प्रत्येक वेदिका को एक २ वनखण्ड है यावत् यह प्रतिरूप है

नदिरुक्खा अण्णेहिं बहुहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता, ताओण पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्च कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ तेसिण चेइयरुक्खाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलकाझया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण पुरओ तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खंभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमयीओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥१२५॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ महिंदज्झया अट्ठमाइं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खंभेण वइरामय वट्टलट्ठ सट्ठिय सुसिलट्ठ परिघट्ठ

नंदी वृक्ष मूल वाले यावत् सुरम्य हैं इन तिलक वृक्ष यावत् नंदि वृक्ष की आसपास बहुत पद्मलता यावत् श्यामलता घिरी हुई रही हैं, वे पद्म लता यावत् श्यामलता सदैव पुष्प वाली यावत् प्रतिरूप हैं चैत्य वृक्ष पर आठ मंगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र है ॥ १२४ ॥ इन चैत्यवृक्षों के आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिकाओं हैं वे एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२५ ॥ इन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक् महेन्द्र ध्वजा है, वह साढे सात योजन ऊंची आधा कोस ऊंडी व आधा कोस की चौडी हैं वज्र रत्नमय वर्तुलाकार हैं, अच्छी तरह से सीधी हुई, मर्यादित की हुई, समविष्ट व विशिष्ट है, और भी वह महेन्द्र ध्वजा अन्य बहुत ध्वजाओं से

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धुवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ चिट्ठंति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अंतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

मातिरूप हैं ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छे गोमानसीका-शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी क पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदंत पर चांदी के सिके हैं उस चांदी क सिक पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसी गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चंद्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

पत्तेय २ तिदिसिं तओ तिसोमाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिण तिसोमाण पडि-रूवगाण वण्णतो तोरण वण्णओ भाणियव्वो जाव छत्तातिछत्ता ॥ १२९ ॥ सभाएण सुधम्माए छमणगुलिया साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पुरात्थिमेण दो साहस्सीओ पच्चात्थिमेण दो साहस्सीओ दाहिणेण एग साहस्सीओ उत्तरेण एग साहस्सीओ, तासुण मणगुलियासु बहवे सुवण्ण रुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण सुवण्ण-रुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागद-तएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव सुक्किलवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव तेणदामा तवणिज्ज लंबूसगा जाव चिट्ठति ॥ १३० ॥ सभाएण

॥ १२८ ॥ उन प्रत्येक नंदा पुष्करणी से तीन दिशा में तीन २ त्रिसोपान हैं वे यावत् प्रतिरूप येसा त्रिसोपान व तोरण का वर्णन पूर्ववत् करना यावत् छत्रातिछत्र है ॥ १२९ ॥ सुधर्मा सभा में छ मनो गुलिका नामक पीठिका (बैठने के चबूतरे) कही हैं जिस में पूर्व दिशा में दो हजार, पश्चिम दिशा में दो हजार, दक्षिण दिशा में एक हजार व उत्तर दिशा में एक हजार है उन पीठिका पर सोने चांदी के बहुत पाटिये हैं, उन पाटियों पर वज्रमय नागदंत कहे हैं इन वज्रमय नाग दांत में कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से गुंथी हुई पुष्पों की माला के समुदाय हैं उन को काल सुवर्ण के झूमके हैं यावत्

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप है ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छे गोमानसीका—शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी के पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदांत पर चांदी के सिके हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसी गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चंद्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

लय मात्तिचिआ जाव सव्व तवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ तस्सण बहुसमरम-
णिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता, साण
मणिपाढिया दो जोयणाइं आयामविक्खभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई ॥१३२॥
तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण माणवए णाम चेतिय खभे पण्णत्ते अट्ठमाइं
दो जोयणाइं उड्ढं उच्चतेण अद्धकोस जाव उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभेण
छकोडिए छलसे छविग्गहिए वइरामयवट्टलट्ठि सठिते, एव जहा महिंद-
ज्झयस्स वण्णओ जाव पासादीए ॥ १३३ ॥ तस्सण माणवकस्स चेतियखभस्स
उवरिं छक्कोसे उगाहित्ता हेट्ठावि छक्कोस वज्जित्ता मज्झे अद्धपचमेसु जोयणे सुवण्ण

यावत् प्रतिरूप है उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी, एक योजन की जाडी यावत् मणिमय है ॥ १३२ ॥ उस मणिपीठिका पर एक माणवक नामक चैत्य स्थम है वह साडेसात योजन का ऊंचा, आधा कोश का ऊंडा, आधा कोश का चौडा है इस को छ कोटि-कूने हैं, छ हांस व छ संधि, हैं व छ स्थानक से सुशोभित है वज्ररत्नमय वर्तुलाकार वाला वगैरा महेन्द्र ध्वजा जैसा वर्णन जानना यावत् प्रभाकारी है ॥ १३३ ॥ इस माणवक चैत्य स्थम को छ कोश ऊपर व छ कोश नीचे छोडकर बीच के साडे चार योजन में सोने चांदी के पटिये में

रुप्पमयफलगेसु बहवे वइरामयाणाग दंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु रययामयासिक्कगा पण्णत्ता, तेसुण रययामयसिक्कएसु बहवे वयरामयगोलवट्ट समुग्गका पण्णत्ता, तेसुण वइरामए गोलवट्ट समुग्गए बहवे जिणस्स कहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठति,जेण विजयस्स देवस्स अण्णेसिंच बहूण वाणमतराण देवाण देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ थूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चइय पज्जुवासणिज्जाओ ॥ माणवकस्सण चेतियस्सखभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मगलगज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तस्सण माणवकस्स

बहुत वज्ररत्न के नागदंत (खूटे) कहे हैं इन नागदांत में चांदी के सिके कहे हैं उन रुपामय सिके में समुद्गक (डब्बे) रखे हैं उस में अच्छी तरह से जिनदाढों रखी हुई हैं विजय देवता, अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों को ये दाढा अर्चना, वंदना व पूजा करने योग्य हैं, सत्कार करने योग्य हैं, सन्मान देने योग्य है, उन को यह कल्याणकारी, मंगलकारी, देव समान, चैत्य समान व पर्युपासना करने योग्य है × उस माणवक चैत्य स्तंभ पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥१२४॥ उस माणवक

× यह दाढारूप शाश्वत पुद्गल वस्तु मानना परंतु तीर्थंकर की दाढा नहीं है

जैसे इस मनुष्य लोक मे ऐहिक सुख के लिये देवतादिक की सेवा करते हैं वैसे ही देवताओं को इन दाढा की

चेतियखभस्स पुरत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता साण मणिपेढिया दो जोयणाइ आयामविक्खभेण, जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सण माणवगस्स चेतियखभस्स पुच्चत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पन्नत्ता, साण मणिपेढि एग जोयण आयामविक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १२५ ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सण

चैत्य स्तम से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की मोटी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्तम से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की मोटी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कहा है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सवा केवल ससार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दादा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

देवसयणिज्जस्स अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—नाणामणिमया पेढीपादा, सोवण्णियापादा, नाणामणिमया पायसीया, जंबूणदमया गित्ताइ, वइरामया संधी, नाणामणिमयेवेच्चे, रययामयातूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमयी गंडोवहाणीया ॥ सेणं देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टिए दुहओ बिब्बोयणे दुहओउण्णये मज्झणये गंभीरे गंगापुलिणवालुउद्दालसालिसये, उवचियखोमदुगुल्लपट्ट पडिच्छयणे, सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आइणगरूय बूर णवणीय तूलफासे मउए पासादीए ॥ १३६ ॥

सुवर्णमय पाद, विविध मणिमय पांव के ऊपर के भाग, जम्बूनद रत्नमय पलंग के अंग [ईस ऊपले] वज्र रत्नमय संधी, अनेक प्रकार के मणिमय निवार, रत्नमय तलाइ, लोहिताक्ष रत्नमय तकिये, और सुवर्णमय गालमसूर है यह देव शैय्या शरीर प्रमाण है, मस्तक व पांव की पास दो तकिये रखे हैं, मस्तक व पांव की पास कुच्छ ऊंची है, और बीच में गंभीर है, गंगा नदी की वालु में पांव रखने से जैसे अधो गमन होवे वैसे ही है विचित्र क्षौमदुगुल वस्त्र, कपासका वस्त्र दुकल, पटकुल से बनाया हुवा वस्त्र देव दुष्य से वह आच्छादित हुई है, अच्छी तरह बनाये हुवे रजस्त्राण व वस्त्र सहित है, लाल वस्त्र से वह पलंग ढका हुवा है, मनोहर है, मृगचर्म, बूर, मक्खन, अर्कतूल जैसा स्पर्श है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ १३६ ॥

चेतियखंभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता। साणं मणिपेढिया दो जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई जाव पडिरूवा॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सणं माणवगस्स चेतियखंभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पन्नत्ता, साणं मणिपेढि एग जोयणं आयामविक्खंभेणं अद्ध जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १२५ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सणं

चैत्य स्तंभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की मोटी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् मानना उस माणवक चैत्य स्थंभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की मोटी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कहा है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सवा केवल संसार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

पासादिया ॥ सभाएण सुधम्माए उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३८ ॥ सभाए सुधम्माए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण एगेमहं सिद्धायतणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण छ जोयणाइं सकोसाइं विक्खभेण नवजोयणाइं उड्ड उच्चत्तेण जाव गोमाणसिया वत्तव्वया जाचेव सभाए सुहम्माए वत्तव्वया साचेव निरव सेसा भाणियव्वा तहेव दारा,मुहमडवा, पेच्छा घरमडवा, थूभा,चेइयरुक्खा, महिंदज्झया, णदाउयपुक्खरिणीओ सुधम्मा सरिसप्पमाण, मणगुलिया सुदामा गोमाणसी धूवघडियाओ तहेव भूमिभागे उल्लोयण जाव मणिफास ॥ १३९ ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स बहुमज्झदसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता दो जोयणाइं

सभा पर आठ मगल २ ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं ॥ १३८ ॥ सुधर्मा सभा की ईशान कून में एक बडा सिद्धायतन कहा हुवा है वह साडे बारह योजन का लम्बा सवाछे योजन का चौडा, नव योजन का ऊंचा यावत् गोमानसीक की वक्तव्यता कहना जैसी सुधर्मा सभा की वक्तव्यता कही वह सब निरवशेष यहां कहना द्वार, मुखमंडप प्रेक्षाघर मंडप, स्तूप, चैत्य वृक्ष, महेन्द्र ध्वजा, नंदा पुष्करणी, सुवर्ण समान पीठिका, पुष्पदाम, शैय्या, धूपादि सब वैसे ही जानना वैसे ही भूमिभाग में यावत् ऊपर के भाग में यावत् मणिस्पर्श पर्यंत कहना ॥ १३९ ॥ उस सिद्धायतन के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका कही

तस्सण देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेण मणिपेढिया पण्णत्ता, तेण मणिपेढिया जोयण-मेग आयामविक्खभेण, अद्धजोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमयी जाव अच्छा ॥ तेसिण मणिपाढयाए उप्पि एगे मह खुड्डमहिंदज्झये पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभण वइरामयवट्ट लट्ठसठिते तहेव जाव मगलरुया छत्तातिछत्ता ॥ १३७ ॥ तस्सण खुड्डमहिंदरुयस्स पच्चत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चुप्पालये नाम पहरणकोसे पण्णत्त, तत्थण विजयस्स देवस्स फलिहरयणप-मोक्खा बहवे पहरणरयणा सण्णिक्खित्ता चिट्ठति, उज्जलसुणिसिय सुतिक्खधारा

उस देव शैय्या की ईशानकून में एक मणिपीठिका है यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी है आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् स्वच्छ है उस मणिपीठिका पर एक बडी क्षुल्लक नाम महा ध्वजा है, यह साडेसात योजन ऊंची, आधा कोश ऊंडी व आधा कोश चौडी है वज्ररत्नमय, वर्तुला कार अच्छा तरह घोसी हुइ वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् मगल रूप व छत्रातिछत्र है ॥ १३७ ॥ उस क्षुल्लक मा-हेन्द्र ध्वजा से पश्चिम दिशा में विजयदेव का चौपाल नामक प्रहरण कोष [शस्त्रभंडार] है वहां विजयदेवता के स्फटिक प्रमुख बहुत शस्त्ररत्न रखे हैं, वे उज्वल, तेजवंत व तीक्ष्णधार वाले हैं मनमोहकारी हैं सुवर्ण

अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—तवणिज्जमती हत्थतला, पायतला, अकामयाइ णहाइ अतोलोहियक्खपरिसयाइ, कणगामयापादा, कणगामयागोफा, कणगमईओ जघाओ, कणगामयाजाणु, कणगामयाउरु, कणगमईओ, गायलट्ठीओ तवणिज्जमईउ णाभीओ, रिट्ठमईओ रामराजीओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामयमसू सिलप्पवालमयाआट्ठा, फालिहमयादंता, तवणिज्जमईओ जिहाओ, तवणिज्जमया, तालुया, कणगमईओ नासाओ, अतो लोहितक्ख परिसेयाओ, अकामयाइ अत्थीणि, अतो लोहितक्ख परिसेतातिं, पुला,

उस में लोहिताक्ष रत्नमय रखा है, सुवर्णमय पांव, घूटण, जघा, जानु, उरु, गात्र हैं तपनीय की नाभि हैं, रिष्ट रत्नमय रोमराजी है तपनीयमय स्तनके (चुचु) अग्रभाग हैं रक्त सुवर्णमय हृदय है, कनकमय ग्रीवा रिष्ट रत्नमय दाढी, प्रवालमय ओष्ट, स्फटिक रत्नमय दांत, रक्त सुवर्णमय तालूआ, कनकमय नासिका उस में लोहिताक्ष रत्न की रेखा है अक रत्नमय चक्षु जिन में लोहिताक्ष रत्नमय रेखा हैं पुलाक रत्नमय दृष्टी, रिष्ट रत्नमय ताराओं, मांपण व भ्रमर हैं कनकमय कपाल, कर्ण व ललाट है, वज्र रत्नमय मस्तक है, रक्त सुवर्णमय केश की भूमि (मस्तक की टट) है, रिष्ट रत्नमय मस्तक के केश हैं प्रत्येक जिन प्रतिमा पीछे छत्र धारण करने वाली प्रतिमा कही हैं, वे प्रतिमा हिम, रूपा, मुचकुद के पुष्प समान

आयामविक्खमेण, जोयणाइ बाहल्लेण सव्वमणियाए अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पि एत्थण एगेमह देव छंदए पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयाम विक्खमेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढु उच्चत्तेण सव्वरयणामए अच्छे ॥ तत्थण देवछंदए अठसत जिण पडिमाण जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताण सन्निक्खित्त चिट्ठइ ॥१४०॥ तेसिण जिणपडिमाण

है यह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी सब मणिमय व स्वच्छ है, उस मणिपीठिका पर एक बडा देव छंदक कहा है यह दो योजन का लम्बा चौडा है साधिक दो योजन ऊंचा है, सब रत्नमय स्वच्छ है उस में एकसो आठ जिन प्रतिमा जिन शरीर प्रमाण ऊंची रही हुई हैं +॥१४०॥ उन जिन प्रतिमा का ऐसा वर्णन कहा है रक्त सुवर्णमय हाथ व पांव के तल हैं, अंक रत्नमय नख हैं,

---

+ श्लोक—अरिहंतापि जिनो चेव, जिनो सामान्य केवला ॥ कदर्पोपि जिनाश्चेव, जिनो नारायणो हरि ॥ १ ॥

अर्थ—हेमचन्द्राचार्यकृत हेम नाममाला मे–१ अर्हन्त २ केवली ३ कामदेव व ४ नारायण इन चार को जिन कहे है इस से यह प्रतिमा कामदेव की मानी जाती है, तथा स्थानांगजी सूत्र में-१ अवधि ज्ञानी, २ मन पर्यव ज्ञानी व ३ केवल ज्ञानी, तीन प्रकार के जिन कहे हैं जिस से यह प्रतिमा अवधि ज्ञानी जिन की जानी जाती है उववाईजी सूत्र में श्रीमहावीर भगवान के शरीर के वर्णन में चूचू का कथन नहीं आया है और यहां चुचु का कथन आया जिस से यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

पुज सणिकासाओ सुहमरयतदीहवालाओ धवलाओ चामराओ सलील उहारमाणीओ २ चिट्ठति॥तासिण जिणपडिमाण पुरतो दो दो नागपडिमाओ जक्खपडिमाओ भूतपडिमाओ कुडधारपडिमाओ विणउणयाओ, जलिउढाओ, सणिक्खित्ताओ चिट्ठति, सव्वरयणामईआ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिरयाओ णिप्पकाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण जिणपडिमाण पुरतो अट्ठसत घटाण, अट्ठसत चदणकलसाण, एव भिंगारगाण आयसाण थालाण, पातीण, सुपतिट्ठकाण, मणगुलियाण, वायकरगाण, चितारयण करडगाण, हयकठाण जाव उसभकठाण, पुप्फचगरीण, जाव लोमहत्थचगेरीण, पुप्फपडलगाण, अट्ठसय तेलसमुग्गाण, जाव धूवकडुच्छुयाण सणिक्खित्त चिट्ठति ॥ सिद्धायतणस्सण उप्पि बहवे अट्ठ मगलगा झया छत्तातिछत्ता, उत्तिमागारा, सालसविहेहिंरयणेहिं उवसो-

मठारी, रत्न व पंक रहित यावत् प्रतिरूप हैं उन जिन प्रतिमा आगे १०८ घंटे १०८ चदनकलश, १०८ भृंगार, १०८ आरिसा, १०८ स्थाल, १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक व १०८ मनोगुलिका १०८ पंखे १०८ मनोहर रत्न करंड १०८ हयकंठ यावत् १०८ वृषभकंठ १०८ पुष्पकी चंगेरी, १०८ पुष्प के पटल, १०८ तेल समुद्र, यावत् १०८ धूप के कुडछे रहे हुवे हैं सिद्धायतन के ऊपर बहुत आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं, उत्तम आकार वाले व सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनिक हैं तद्यथा-रत्न

कामइओ दिट्ठीओ रिट्ठामईओ तारगाओ, रिट्ठामयाइ अच्छिपताइ, रिठामइओ भमूहाओ, कणगामयाकवोला, कणगामयासवणा, कणगामयानिडाला, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसत केसभूमिओ रिट्ठामया उवरिमुद्धया ॥ तासिण जिणपडिमाण पाच्छितो पत्तेय २ छत्ताधारपडिमाओ पण्णत्ताओ तओण छत्ताधार पडिमाओ हिमरयत कुदइुप्पगासाइ कोरिंटमल्लदामाइ धवलाइ आयवत्ताति सलील उहारेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ तासिण जिणपडिमाण उभओपासिं पत्तेय २ चामर धारपडिमाओ पण्णत्ताओ ताओण चामरधारपडिमाओ चदप्पहवेरुलियणाणामणिकणगरयण विमल महरिहतवणिज्जुज्जल विचित्तदडाओ, चिल्लीयाओ सखककुददगरय महितफेण

कोरंटक वृक्ष के श्वेत पुष्पों वाला छत्र धारण कर लीला सहित खडी रही है उन प्रत्येक जिन प्रतिमाओं के दोनों बाजु पृथक् चामर धारन करने वाली प्रतिमा हैं वे प्रतिमा चंद्रप्रभा वैडूर्य रत्न, विविध प्रकार के मणि व कनक रत्न वाले निर्मल महा मूल्य वाले सुवर्णमय उत्तम दंड वाले शंख, अंकरत्न, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत व समुद्र फैन समान उज्ज्वल सुखकारी चांदी के बाल वाले श्वेत चामरों लेकर लीला करती हुई रही है, इन प्रत्येक प्रतिमा के आगे दो२ नाग प्रतिमा दो२ भूत प्रतिमा, और दो२ कुंडधार प्रतिमा विनय से नमती हुई हाथ जोडती हुई रही है वे सब रत्नमय, स्वच्छ, श्लक्ष्ण, मसारी,

सेण हरए अद्ध तेरस जोयणाइ आयामेण सकोसाइ छ जोयणाइ विक्खभेण, दस जोयणाइ उव्वहेण, अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदापुक्खरिणीण जाव तोरण वण्णओ ॥ १४३ ॥ तस्सण हरतस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण एगामह अभिसेय सभा पण्णत्ता जहा सभासुधम्मा तचेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए, तत्थेव तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, जोयण आयामविक्खभेण सव्वमणिमया अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण मह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ, अपरिवारो, तत्थण विजयस्स देवस्स सुबहुअभिसेक्क भण्डे सण्णिक्खित्ते चिट्ठति ॥

द्रह कहा है वह साढे बारह योजन का लम्बा, सवा छ योजन का चौडा, दश योजन का ऊंचा स्वच्छ वगैरह वर्णन योग्य है इस का वर्णन नदा पुष्करणी जैसे जानना यावत तोरण का वर्णन कहना ॥१४३॥ उस द्रह से ईशानकून में एक बडी अभिषेक सभा है, इस का वर्णन सुधर्मासभा जैसे गोमानसी भूमि भाग पर्यंत कहना उस भूमि भाग के मध्य में एक मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी यावत् सब मणिमय स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडा सिंहासन कहा है वह परिवार रहित है ऐसा वर्णन जानना वहां विजय देव के अभिषेक कराने के भंड उपकरण कलशादि रखे हुवे हैं

॥ तस्सण सिद्धायस्सण उत्तरपुर-
त्थिमिया तजहा—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं ॥ १४१ ॥ तस्सण सिद्धायस्सण उत्तरपुर-
च्छिमेण एत्थण एगामह उववायसभा पण्णत्ता जहा सुहम्माय, तहेव जाव गोमा-
णसीओ उववातसभाएवि दारा मुहमडवा समभूमिभाग तथेव जाव मणिफासा॥तस्सण
बहुसमरमणिज्जस्स भूमभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता
जायण आयमविक्खमण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा ॥ तीसेण
मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते तस्सण देवसयणिज्जस्स वण्णउ,
उववाए समाएण उप्पिं अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता जाव उत्तिमागारा
॥ १४२ ॥ तीसेण उववाय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगेमह हरए पण्णत्ते

यावत् रिष्ट ॥ १४१ ॥ उस सिद्धायतन से ईशान कून में एक बडी उपपात सभा है, इस का कथन सुधर्मासभा जैसे यावत् गोमाणसीका पर्यंत कहना उपपातसभा, द्वार, मुखमंडप, समभूमिभाग यावत् मणि स्पर्श पर्यंत कहना उस रमणीय भूमि भाग के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका है यह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय व स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडी देव शैय्या है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना उपपात सभा पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं, यावत् उत्तम आकार वाले हैं, ॥ १४२ ॥ उस उपपात सभा से ईशानकून में एक बडा

तत्थ विजयस्स देवस्स एगेमहं पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठति ॥ तत्थण पोत्थयरयणस्स अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा—रिट्ठामईओ कंठियाओ, रययामयाइं पत्ताकाइं, रिट्ठामयाइं अक्खराइं, तवणिज्जमये दोरे, णाणामणिमयेगंठी, वेरुलियमय लिप्पासणे, तवणीज्जमई संकला, रिट्ठामये छदणे, रिट्ठामई-मसी, वइरामई लेहिणीधम्मिये सत्थे ॥ ववसियसभाएणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा-ज्झया छत्तातिछत्ता, उतिमागाराति ॥ १४६ ॥ तीसेणं ववसाय सभाएणं उत्तर पुरत्थिमेणं, एत्थणं एगामहं नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता, जं चेव पमाणं हरयस्स तंचेव सव्वं ॥ १४७ ॥ तीसेणं नंदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुत्थिमेणं, एत्थणं एगे

देव का एक पुस्तक रत्न रहा हुवा है उस पुस्तक रत्न का इस तरह वर्णन है—रिष्ट रत्नमय पुठे हैं, चांदी के लिखने के पत्र हैं, रिष्ट रत्नमय अक्षर हैं, सुवर्णमय धागा है, विविध प्रकार के मणि की ग्रन्थी है, वैडूर्य रत्नमय दवात है, रक्त सुवर्णमय सकल है, रिष्ट रत्नमय दवात का ढकन है, रिष्ट रत्नमय मसी (स्याही) है, वज्र रत्नमय लेखिनी है, यह शास्त्र धार्मिक है अर्थात् कुलधर्म के आचार उसमें लिखे हुवे हैं व्यवसाय सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्र पर छत्र हैं उत्तम आकारवाली है ॥ १४६ ॥ उस व्यवसाय सभा से ईशानकून में नंदा पुष्करणी है इस का कथन जैसे द्रहका कहा वैसे जानना ॥१४७॥

अभिसेय सभाए उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलए जाव उत्तमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं ॥ १४४ ॥ तीसेण अभिसेय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामह अलंकारिय सभा पण्णत्ता अभिसेयसभा वत्तव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पिं सीहासण अपरिवार, तस्सण विजयस्स देवस्स सुबहु अलंकारिए भंडसंनिक्खित्ते चिट्ठति, अलंकारिय उप्पिं मंगलगाज्झया जाव उत्तिमागारा ॥ १४५ ॥ तीसेण अलंकारिएसभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामह ववसायसभा पण्णत्ता अभिसेय सभा वत्तव्वा जाव सीहासण अपरिवार

अभिषेक सभा पर आठ २ मंगल कहे हैं यावत् उत्तम आकार वाली है सोलह प्रकार के रत्नों युक्त है ॥ १४४ ॥ उस अभिषेक सभा से ईशानकून में एक बडी अलंकार सभा है इसका सब कथन गोमाणसी का मणिपीठिका पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना उपर परिवार रहित सिंहासन है उसपर विजय देव के अलंकार के लिये कलशादि भर रखे हुवे हैं अलंकारिक सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं यावत् उत्तम आकारवाली है ॥ १४५ ॥ उस अलंकार सभा से ईशानकून में एक बडी व्यवसाय सभा है इस का वर्णन परिवार रहित सिंहासन पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना वहां विजय

चिंतिने पत्थिये मणोगएसकप्पे समुप्पज्झित्था किं मे पुब्विसेय किं मे पच्छासेय किं मे पुव्वकरणिज्ज किं मे पच्छाकरणिज्ज, किं मे पुव्विंवा पच्छावा हियाए सुहाए खमाए णीससाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु एवं सपेहेति ॥ ततेणं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा देवा विजयस्स देवस्स इमं एतारूवं अब्भत्थिय चिंतिय पत्थिय मणोगय सकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता जेणामेव से विजएदेवे तेणामेव उवागछित्ता विजय देव करतलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजयेणं वद्धावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं

पर्याप्ति से प्राप्त होने पर ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुवा कि पहिले मुझे क्या मंगलकारी है, पीछे क्या मंगलकारी है, पहिले क्या करने योग्य है, पीछे क्या करने योग्य है, पहिले व पीछे क्या हित, सुख, क्षमा, निश्रय के लिये व अनुगामी होगा ऐसा वह विजय देवता विचार करने लगा, विजय देवको ऐसा संकल्प अध्यवसाय, चिंता, प्रार्थना व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुवा जानकर उनके सामानिकदेव व आभ्यंतर परिषदा के देव उन की पास आये और उनोंने विजय देव को हाथ जोड़कर मस्तक से आवर्तन करके दोनों हाथ की अंजलि एकत्रकर जय विजय शब्द से बधाये, जय विजय शब्द से बधाकर ऐसा बोले आप के

महा मणिपेढे पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयामविक्खमेण, जोयण बाहल्लेण सव्वरयता मये अच्छे जाव पडिरूव ॥ १४८ ॥ तेण कालेण तेण समएण विजयदेवे विजयाए रायहाणीए उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिते अगुलस्स असखेज्ज भागमित्तीये बोंदीये विजय देवत्ताये उववण्णे ॥ तएण से विजयदेवे अहुणोववण्ण मेत्ताय चेव समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भाव गच्छति तजहा आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणोपाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावगयस्स समाणस्स इमे एतारूवे अज्झत्थिये

उस नदा पुष्करणीसे ईशानकूनमें एक बडी मणिपीठिका है यह दो योजन की लम्बी चौडा व एक योजन की जाडी सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥१४८॥ अब विजय देवका वर्णन करते हैं उसकाल उससमयमें विजय नामक देव विजया राज्यधानीकी उपपात सभामें देव शयन के देव दूष्य वस्त्रके नीचे अंगुलके असंख्यातवे भाग की अवगाहना के शरीर वाला विजय राज्यधानी के इन्द्रपने उत्पन्न हुआ वह विजय देव तत्काल का उत्पन्न हुआ पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्ति भाव को प्राप्त हुआ इन पांच पर्याप्ति के नाम—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति, व भाषा मन पर्याप्ति विजय देव को पांच

जाव अणुगामियत्ता ते भविस्सति तिकट्टु महता २ जयजय सद्द पउजति॥ ततेण से विजये देवे तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियते, देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठित्त दिव्व देवदूसजुयल परिहेइ देवसणिज्जाओ पच्चोरुहति देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहित्ता उववायसभाओ पुरत्थिमण दारेण निग्गछति २ त्ता जेणेव हरये तेणेव उवागछेति २ त्ता हरय अणुपदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमेण तोरणाण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेण तिसोमाण पडिरूवएण पच्चोरुहति २ हरय उगाहति उगाहित्ता जलावगाहण कराति जलावगाहण करित्ता जलमज्जण करेति जल्मज्जण करित्त जलकिड्डकरेति जलकिड्डं

प्रयोग किया यह विजय देव सामानिक परिषदावाले देवों की पास से एमा सुनकर हृष्ट तुष्ट हुआ, देव शयन में से उठकर दीव्य देव दूष्य युग्म [वस्त्र] परिधान किया देव शैय्या में से नीचे उतर कर उपपात सभा के पूर्व के द्वार से बाहिर नीकलकर जहां द्रह है वहा आया उस को प्रदक्षिणा करता हुआ पूर्व दिशा के तोरण से प्रवेश किया पूर्व दिशा के पावथिये से नीचे उतरकर द्रह के पानी में पडा वहा जल मजन किया, जलक्रीडा की, जलक्रीडा करके स्वच्छ बना उस द्रह में से नीकल कर जहां अभिषेक

विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणसि अट्ठसत जिणपडिमाण जिणुस्सेह पमाणमेत्ताण सण्णिक्खित्त चिट्ठति, सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखभे वयरामयेसु गोलवट्ट समुग्गएसु बहुओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओण देवाणुप्पियाण अण्णसिंच बहुण विजय रायहाणि वत्थव्वाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारयणिज्जाओ सम्माणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेतिय पज्जुवासणिज्जाओ एतण्ण देवाणुप्पियाण पुव्विपिसेय एयण्ण देवाणुप्पियाण पच्छाविसेय एयण्ण देवाणुप्पियाण पुव्वि करणिज्ज पच्छाकरणिज्ज एयण्ण देवाणुप्पिया पुव्विवा

विजया राज्यधानी में सिद्धायतन में जिनशरीर के अवगाहना जितनी १०८ जिन प्रतिमा रही हुई हैं, और सुधर्मासभा क अंदर माणवक चैत्य में वज्ररत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा हैं वे आप का और अन्य बहुत विजय राज्यधानी के देव देवियों को अर्चनीय, पूज्यनीय, सत्कार सन्मान योग्य, कल्याणकारी, मंगलकारी, देव संबंधी, चैत्य समान पूजने योग्य हैं आपको यह पहिले भी कल्याणकारी है पीछे भी कल्याणकारी है, पहिले करने योग्य है, पीछे भी करने योग्य है आप को यह पहिले पीछे हित के लिये यावत् अनुगामी होगा यों कहकर बड़े २ जय २ शब्द का

आणाए विणएण वयण पडिसुणेति २ त्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति २ त्ता वेउव्विय समुग्घाएण समोहणाति २ त्ता असंखेज्जाइ जोयणाइ दंड णिसराति तजहा-रयणाए जाव रिट्ठाण अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति २ अहासुहुमे पोग्गले परिताययति २ त्ता दोच्चपि विउव्विय समुग्घाएण समोहणति दोच्चपि वेउव्विय समुग्घाए समोहणित्ता अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमयाण कलसाण अट्ठसहस्स मणिमयाण कलसाण, अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, अट्ठ सहस्स सुवण्णमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमणिमयाण कलसाण,

किया फीर ईशानकून में जाकर वैक्रय समुद्घात से असंख्यात योजन का दंड किया और रत्न यावत् रिष्ट रत्नमय शुभ पुद्गल ग्रहण किये यथा बादर पुद्गल दुर किये और सूक्ष्म ग्रहण किये, पुन दूसरी बार भी वैक्रेय समुद्घातकी, दूसरीबार वैक्रेय समुद्घात करके १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश १००८ मणि के कलश, १००८ सुवर्ण व चांदि के कलश, १००८ सुवर्ण व मणि के कलश, १००८ चांदी व मणि के कलश, १००८ सुवर्ण चांदी व मणि के कलश १००८ मौक्तिक के कलश, १००८ भृंगारक (झारा) ऐसे ही १००८ आरीसे, १००८ थाल, १००८ पात्री, १००८ पुष्प चंगेरी यावत् पूजनी की चंगेरी,

करित्ता आयत चोक्खे परमसूइभूए हरताओ पच्चुत्तरित्ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेयसभ पयाहिण करेमाणे पुरत्थिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा देवा अभिओगिए देवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तुब्भे विजयस्स देवस्स महत्थ महग्घ महारिह विपुल इदाभिसेय उवट्ठवेह ॥ १४९ ॥ ततेण ते अभिओगादेवा सामाणियपरिसोववण्णएहिं एव वुच्चमाणा हट्ठ जाव हियया करयल परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी देवाणुप्पिय ? तहत्ति

सभा थी वहां आया उस की प्रदक्षणा करके उस में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और सिंहासन की पास आकर उस पर पूर्वाभिमुखकर बैठा ॥ उस समय विजय देवता के सामानिक परिषदा वाले देवोंने आभियोगिक देवों को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विजय देव के लिये महा अर्थ वाला महर्घ, महामूल्य वाला विस्तीर्ण इन्द्राभिषेक की तैयारी करो ॥ १४९ ॥ सामानिक परिषदा वाले देवों की पास से ऐसा सुनकर वे आभियोगिक देव हृष्ट तुष्ट हुए यावत् हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया मस्तक पर अंजली कर के ऐसा बोले 'यथातथ्य' यों विनय पूर्वक उन की आज्ञा का स्वीकार

"दिव्वाए देवगईए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाणमज्झमज्झेण वीइवयमाणा२ जेणेव खीरोदेसमुद्द, तेणेव उवागच्छाति तेणेव उवागच्छित्ता खीरोदगगेण्हाति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ गेण्हति गेण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवागच्छाति उवागच्छित्ता, पुक्खरोदग गेण्हाति पुक्खरोदग गेण्हित्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सतसहस्सपत्ताति गेण्हाति गेण्हित्ता जेणेव समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाति वासाइ जेणेव मागध वरदाम पभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति २ त्ता तित्थोदग गेण्हाति, तित्थोदग गिण्हित्ता, तित्थमट्टिय गेण्हाति तित्थमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव गगा सिंधु रत्ता रत्तवतीओ सालिलाओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता, सलिलोदग

ग्रहण किये वहां से मनुष्य क्षेत्र में भरत एरवत क्षेत्र के मागध, वरदाम व प्रभास जो तीर्थ हैं वहां आये, वहा से तीर्थोदक व तीर्थकी मृत्तिका ग्रहण की फीर वहा से गगा, सिंधु रक्ता व रक्तावती नदी थी वहां आये वहां उन सरिताओं का पानी लिया, और उन के दोनों किनारों की मृत्तिका भी ली वहां से चुल्लहिमवंत पर्वत व शिखरी पर्वत की पास आये वहां सब ऋतु के पुष्प, सब कपाय रस, सब पुष्प, सब गंध, सब माला, सब गुच्छा यावत् सब औषधि व सरसव ग्रहण किये वहां से पद्मद्रह व पुंडरीक द्रहथे वहां आये उस में से पानी लिया और उत्पल यावत् लक्षपत्र कमल भी ग्रहण किये वहां से हेमवय

अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स भोमेज्ज कलसाण अट्ठसहस्स भिंगाराण एवं आयसगाण, थालाण, पातीण सुपतिट्ठकाण, चित्ताण, रयणकरंडगाण, पुप्फ चंगेरीण जाव लोमहत्थ चंगेरीण, पुप्फ पडलगाण जाव लोमहत्थ पडलगाण, अट्ठसहस्स सीहासणाण, छत्ताण चामराण, अवपडगाण वट्टकाण, भिप्पीण, पोरकाण, पीणगाण, तेलसमुग्गाण, अट्ठसहस्स धूवकडुच्छाण विउव्वति, तेसा माविथए विउव्विएय कलसेय जाव धूवकडुच्छएय गेण्हति गेण्हइत्ता विजयाओ रायहाणीओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव उद्धूताए

१००८ पुष्प यावत् पूजनी के पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल १००८ धूप के कुडछे का वैक्रेय करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा करके और १००८ धूप के कुडछ का वैक्रेय करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा वाले कलश यावत् धूप के कुडछे ग्रहण कर विजया राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट यावत् अद्भूत दीव्य देवगति से तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करते हुए जहां क्षीर समुद्र है वहां आये वहां आकर उस में से क्षीरोदक ग्रहण किया और वहां और उत्पल यावत् सहस्रपत्र में उन्हें ग्रहण करके वहां से पुष्करोदधि समुद्र की पास आये और उस में से क्षीरोदक व उत्पल यावत् सहस्रपत्र

महाहिमवतरुप्पिवासहर पव्वया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सव्वपुप्फे तचेत्र जेणेव महापउमदहा महापुंडरीयदहा तेणेव उवागच्छति २ त्ता जाइ तत्थ उप्पलाइ तचेत्र, जेणेव हरिवास रम्मगवासीति जेणेव हरिकाता हरिसलिला नरकाता नारिकांताओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता सलिलोदग गण्हति २ त्ता तचेत्र, जेणव वियडावती गधावती वट्टवेयड्ड पव्वया तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्व पुप्फेय तचेत्र जेणत्र णिसढ णीलवत वासहर पव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय तचेत्र, जेणेव तेगिंछिदहकेसरीदहा तेणव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हाति २ त्ता तचेत्र जेणेव पुव्वविदेह अवरविदेह वासाणि जेणेव सीयासीओयाओ महानईओ जहानईसु

पानी व उन की मृत्तिका ग्रहण की वहां से विकटापाति व गधापाति नामक वर्तुलाकार वैताढय पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प वगैरह लिये फीर वहां से निषध नीलवंत वर्षधर पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प यावत् सरसव लिये वहां से तिगिच्छ द्रह व केसरी द्रह थे वहां आये उस में से पानी और उत्पल यावत् लक्षपत्रादि ग्रहण किये वहां से जहां पूर्व महाविदेह व पश्चिम महा विदेह क्षेत्र में सीता सीतोदा महा नदियों थी वहां आये वहां का आधिकार अन्य नदियों जैसे कहना वहां से सब चक्रवर्ती विजय में जहां मागध, वरदाम व प्रभास ये तीन तीर्थों और जहां सब अंतर नदियों है

गेण्हति २ त्ता उभयो तटमट्टिय गेण्हति तटमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवत सिहरिवास हरपव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता, सव्वतुवरेय सव्वपुप्फेय सव्व गंधय सव्वमल्लय सव्वोसहि सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव पउमद्दह पुंडरीयद्दह, तेणेव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं गेण्हति ताइं गेण्हित्ता जेणेव हेमवय एरणवयाति वासाति जेणेव रोहिया रोहितंसा सुवण्णकूला रुप्पकूलाओ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सलिलोदग गेण्हति २ त्ता उभयो तडमट्टिय गिण्हति २ त्ता जेणेव सद्दावति मालवत परियागा वट्टवेयड्ढ पव्वता तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव

एरणवय क्षेत्र में, यहां रोहिता रोहितांसा सुवर्णकूला व रूप्यकूला नदी थी वहां आये उन में से पानी व उनके दोनों तट की मिट्टि ग्रहण की वहां से शब्दापाति व माल्यवन्त वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत जहां हैं वहां आये वहां सब वृक्ष के पुष्प यावत् सब औषधि व सरसव ग्रहण कर महा हिमवंत व रूपि पर्वत पर आये वहां सब पुष्प वगैरह पूर्ववत् जानना वहां से महा पद्म द्रह व महा पुंडरिक द्रह थे वहां आये वहां से द्रह का पानी व पुष्पादि वगैरह लिये वहां से हरिवर्ष, रम्यक् वर्ष में हरीकान्ता, हरिसलिला, नरकान्ता व नारीकान्ता इन चार नदियों की पास गये, वहां से

गोसीसचदण दिव्वच सुमणदाम ददरमलय सुगंधिगंधिएयगधे गेण्हति २ चा, एगतो मिलति २ चा जवुद्दीवस्स पुरच्छिमिल्लेण दारण णिगच्छाति २ चा ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देव-गतीए तिरिय मसंखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झेण वीतीवयमाणा जेणेव विजया रायहाणी तणेव उवागच्छाति २ चा विजय रायहाणिं अणुप्पयाहिण करेमाणा २ जेणेव अभि-सेयसभा जेणेव विजएदेवे तेणेव उवागच्छाति २ चा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजुलिकट्टु जएण विजएण वद्धावेंति २ चा विजयस्स देवस्स त महत्थ महग्घ महरिह विपुल अभिसेय उवट्ठवेंति ॥ १५० ॥ ततेण विजय देव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिण्णिपरिसाओ, सत्तअणिया

पूर्वद्वारसे नीकलकर उस उत्कृष्ट यावत् दीव्य देवगतिसे तीरछे असंख्यातद्वीप समुद्र उल्लंघकर विजया राज्यधानी के पास आये विजया राज्यधानीको प्रदक्षणा करके जहां अभिषेक सभा व जहां विजयदेव था वहां आये दो हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन दिया और अंजलि करके विजय देवता को वधाये इस तरह विजय देवता का महा अर्थ वाला महर्घ्य, व महा मूल्य वाला अभिषेक तैयार किया, ॥ १५० ॥ अब चार हजार सामानिक देव, परिवार सहित चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिकाधिपति, सोलह

जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव मागह वरदाम पभासाइ तित्थाइ जेणेव सव्व-तरणदीओ सलिलोदग गेण्हति २ त्ता तहेव जेणव सव्ववक्खारपव्वता सव्वतुवरेय तहेव जेणेव मदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गण्हति २त्ता जेणेव णदणवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरसच गोसीसचदण गेण्हति २ त्ता जेणेव सोमणसवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरस च गोसीस चदण दिव्व च सुमणदाम गेण्हति २ त्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरस च

वहां आये उन में से पानी व मृत्तिका ग्रहण की वहां से सब वक्षस्कार पर्वत की पास आये उन में से सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये वहांसे मेरू पर्वतपर जहां भद्रासालवन है वहां आये, इसमें सब ऋतु के पुष्प यावत् मंगलिक वस्तु ग्रहण किये, वहां से नदनवन में आये उस में से भी सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये और श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन, व दीव्य पुष्पों की मालाओं ग्रहण की वहां से पडकवन में आये, उन्में से सब रस यावत् सब औषधि, सरस श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन, दीव्य पुष्प की मालाओं, दर्दर व मलय से सुगंधित बनी हुइ गंध ग्रहण की फीर सब देवता एकत्रित मीलकर जम्बूद्वीप के

सूत्र

महयाबलेण महयासमुदएण, महतातुडिय जमगसमगपडुप्पवादित रवेण सख पणव पडह भेरि झल्लरि खरमुही दुदुहि हुडुक्क निग्घोसणादिएण महतामहता इदाभिसेगेण अभिसिंचति ॥१५१॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स महता इदाभिसेकंसि वट्टमाणसि अप्पेगतियादेवा णच्चोदग णातिमट्टिय पविरल फुसित दिव्व सुरभिरयरेणुविणासण गधोदगवास वासति, अप्पेगतियादेवा णिहतरय णट्टरय भट्ठरय उवसतरय पसतरय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणि सब्भितरबाहिरय आसितसम्मज्जितोव-

अर्थ

शख, भेरी, झल्लर मृदग, दुदुभि व गोमुख इत्यादि वादित्र से उद्घोषणा करते हुवे महान इन्द्राभिषेक विजय नामक देवका किया ॥१५१॥ जिस समय विजय देवता का महा अभिषेक होता था उस समय कितनेक देवता विजया राज्यधानी में बहुत पानी नहीं व बहुत मृत्तिका नहीं ऐसा पानीके कनवाला मेघ वर्षाते थे, कितनेक दीव्य सुगधित व रजरेणु का विनाश करने वाला मद गधादिक की वर्षा करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को रज रहित, नष्ट रज, प्रशांत रज, उपशांत रज वाली करते थे, अर्थात् राज्यधानी में से रज स्वच्छ करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी के अदर व बाहिर पानी का छिटकाव करते थे पूजते थे, लिपते थे इसतरह करके उसका मार्ग पवित्र पुष्प पुजयुक्त करते थे कितनेक देवता वहां माचापर मांचा इस तरह बांधते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को अनेक प्रकारके रगवाली विजय, वैजयती

सत्तभणियाहिवती सोलसअसरक्खेदवसाहस्सीओ अन्नय बहवे विजयरायहणिवत्थव्वगा वाणमंतरदेवाय देवीओय तहिं साभाविते उत्तरवेउव्वितेहियवर कमलपतिट्ठाणेहिं सुराभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चातेहिं आविद्धकंठे गुणेहिं पउमप्पलपिहाणेहिं करतलसुकुमाल परिग्गहिएहिं अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण रुप्पमयाण मणिमयाण जाव अट्ठसहस्स भोमज्जाण कलसाण सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फे- हिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेण सव्वसमुदएण सव्व- परिवारेणं सव्वायरेण सव्वविभूतीये सव्वविभूसाए सव्वसंभमेण सव्वतोरोहेण सव्वणाड- एहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेण सव्वदिव्वतुडियणिणाएण महया इड्ढीए महयाजुत्तीए

हजार आत्म रक्षकदेव और अन्य बहुत वाणव्यन्तर देव व देवियोंने स्वाभाविक व उत्तर वैक्रेय वाले, श्रेष्ठ कमल में स्थापन किये हुए, सुगंधित श्रेष्ठ पानी से परिपूर्ण, चंदन से चर्चित, कण्ठ में सूत्र बंधा हुवा पद्म उत्पल के ढक्कन वाले, सुकोमल हस्ततल में ग्रहण किये हुए १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश यावत् १००८ मृत्तिका के कलश सब ऋतु के तुवर पुष्प यावत सब औषधि से सिद्धार्थक (सरसव) से सब ऋद्धि द्युति, बल, समुदय, आदर, विभूति, विभूष, संभ्रम आरोह, नाटक, सब पुष्प, गंध, माला व अलंकार, सब त्रुटिका निनाद, महाऋद्धि महाद्युति महाबल, महा समुदय युक्त, सुख देवोंने बजाये हुए वादित्र शब्द, शंख

सूत्र

सरसमुरभिमुक्कपुप्फपुजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालागरुपवर कुदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गधद्धुताभिराम सुगधवरगध गधियगधवट्टिभूय करेंति, अप्पगातेयादेवा हिरण्णवास वासति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासति वइरवास वासति, पुप्फवास, मल्लवास, गधवास, चुण्णवास-वत्थवास आभरणवास वासति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएति एव सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएति अप्पगातियादेवा चउविह वातित वादेति तजहा—तत वितत घण झूसिर, अप्पेगतिया

अर्थ

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे, कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मंगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झूसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनीपातिक और ४ लोक मध्याव

लिच सितसुहुमसमट्ठरत्थतरावणवीहीय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं मचातिमचकलिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं णाणाविहरागरजित ऊसिमत जय विजय वेजयंति पडाग ।तिपडागमडित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं लाउल्लोइयमहिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं गोसीससरस-रत्तचंदण ददरदिण्ण पचगुलितल करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं उवचिय चंदणघडसुकयतोरण पडिदुवारदेसभाग करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं आसत्तो सत्त विपुलवट्टवग्घारितमल्लदाम कलाव करेंति अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं पचवण्ण

नामक पताकापर पताका से मंडित करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानीको गोमय प्रमुखसे लींपते थे व चहुया सादित करते थे, कितनेक देवता गोशीर्ष चंदन मंडित रक्त चंदन व दर्दर चंदन से पांच अंगुलीयुक्त छापे देते थे कितनेक देवता विजया राज्यधानी के प्रतिद्वार के देश भाग में चंदन चर्चित घडे का तोरण करते थे, कितनेक देवता ऊपर ऊंचे से नीचे तक लटके वैसी लम्बी विस्तीर्ण पुष्प की माला से विजया राज्यधानीको कलित करते थे कितनेक देवता पांचवर्ण के श्रेष्ठ सुगंधित पुष्पों की पुजवाली राज्यधानी करते थे कितनेक देवता कृष्णागर उत्तम कुंदरुक, तुरुक्क जलाकर सुगंधसे मघमघायमान करते थे और श्रेष्ठ सुगंध से गंधित गंध गुटिकाभूत करते थे, कितनेक देवता चांदी की वर्षा करते थे, कितनेक सुवर्णकी वर्षा

सूत्र

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालागरुपवर कुदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गधद्धुताभिराम सुगधवरगध गधियगध वट्टिभूय करेंति, अप्पगातेयादेवा हिरण्णवास वासाति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासति वइरवास वासति, पुप्फवास, मल्लवास, गधवास, चुण्णवास वत्थवास आभरणवास वासति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एव सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएंति अप्पगातियादेवा चउविह वातित वादेति तजहा—तत वितत घण झूसिर, अप्पेगातिया

अर्थ

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे कितनेक पुष्प की माला, गध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झूसिर यह चार प्रकार के वादिंत्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामतविनीपातिक और ४ लोक मध्यावसानिक

देवा चउव्विहंगेय गायति तंजहा–उक्खित्तय, पवत्तय, मंदय, रोइ, वसाण ॥ अप्पे गतियादेवा चउव्विहं अभिणय अभिणयति तंजहा–दिट्ठंतिय, पाडंतिय, सामतोव- णिवातिय, लोगमज्झावसाणिय ॥ अप्पेगतिया देवा दुत नट्टविधिं उवदंसेति अप्पेगतिया देवा विलंबित, णट्टविधिं, उवदंसेंति, अप्पेगतियादेवा दूतविलंबितणाम णट्टविधिं उवद- सेति, अप्पेगतिया देवा अंचिय णट्टविधिं उवदंसेति, रिभिय णट्टविधिं उवदंसेति, अप्पेगतिया देवा अंचितरिभित णामदिव्वं णट्टविधिं उवदंसेति, अप्पेगतियादेवा आरभड नट्टविधिं उवदंसेति, अप्पेगतियादेवा भसोल नट्टविहिं उवदंसेति, अप्पेगतियादेवा

मानिक. कितनेक देवता द्रुत नामक नाटक बताते थे कितनेक देवता विलंबित नामक नाटक बताते थे, कितनेक देवता द्रुत विलंबित नाटक बताते थे, कितनेक देव अंचित नाटक बतलाते थे, कितनेक देव रिभित नाटक बतलाते थे कितनेक अंचित रिभित नाटक बतलाते थे, कितनेक आरभट नाटक बतलाते थे कितनेक भसोल नाटक बतलाते थे कितनेक आरभट भसोल नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता उत्पात निपात, प्रवृत्ते, संकुचित, प्रसारित, गमनागमन, भ्रांत संभ्रांत नामक दीव्य नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता शरीर पुष्ट बनाते थे, कितनेक देवता पूत्कार रूप बताते थे, कितनेक देवता तांडव नृत्य करते थे, कितनेक देवता लास्य रूप नृत्य करते थे, कितनेक देवता पुष्ट होते थे, पूत्कार रूप बनाते थे, तांडव नृत्य

आरभड भसोल णामदिव्व नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा उप्पायणिवाय पवत्त सकुचिय पसारिय रयगरइय भत सभत णाम दिव्व नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा पीणेति, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेति, अप्पेगतियादेवा तडवेति, अप्पेगतिया देवा लासति अप्पेगतिया देवा आफोडेति, अप्पे गतिया देवा वग्गेति, अप्पेगतिया तिवति छिदति अप्पगातियादेवा अप्फोडेति, वग्गति तिवत्ति छिदति, अप्पेगतियादेवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगतिया

करते थे व लास्य रूप करते थे, कितनेक देवता आस्फोट करते थे, कितनेक देवता परस्पर सलग्न होते थे, कितनेक देवता त्रिपदी छेदते थे, और कितनेक देवता आस्फोट करना सलग्न होना व त्रिपदी छेदना ये तीनों करते हैं, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव करते थे, कितनेक देवता हाथी जैसे गुलगुलाट करते थे, कितनेक देवता रथ जैसे घणघणाट शब्द करते थे, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव, हाथी जैसे गुलगुलाट व रथ जैसे घणघणाट ये तीनों शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊचे उछलते थे, कितनेक देवता नीचे गीरते थे, कितनेक देवता कठोर शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व कठोर शब्द करना ये तीनों करते थे, कितनेक

हत्थिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगतियादेवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा पच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा उक्कट्टीओ करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छोलेंति पच्छोलेंति उक्कट्टीओ करेंति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद णदंति अप्पेगतिया देवा पाददद्दर करेंति, अप्पेगतियादेवा भूमिचवेडदलयंति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद पाददद्दरयभूमिचवेड दलयंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा बुक्कारेंति अप्पेगतिया थक्कारेंति अप्पेगतियादेवा पुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा वक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा नामाइ

सिंहनाद करते थे, कितनेक पांव से दर दर शब्द करते थे कितनेक भूमि चपटा करते थे कितनेक सिंहनाद, दादर शब्द व भूमि चपेटा ये तीनों साथ करते थे कितनेक देवता हकार शब्द करते थे कितनेक बुक्कार शब्द करते थे, कितनेक थपकार शब्द करते थे कितनेक पूत्कार शब्द करते थे, कितनेक वकार शब्द करते थे, कितने नाम से बोलाते थे, कितनेक हकार, बूत्कार थपकार, पूत्कार, वकार शब्द व नाम से बोलाना यों सब साथ करते थे, कितनेक ऊंचे उछलते थे, कितनेक नीचे गीरते थे, कितनेक तीर्छे गीरते थे, कितनेक ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व तीर्छे गीरना यों तीनों करते थे, कितनेक तपते थे, कितनेक झलते थे व कितनेक मतपते थे, कितनेक तपना, झलना व मतपना ये तीनों करते थे, कितनेक

साहेंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति थक्कारेंति वुक्कारेंति नामाति साहेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पज्ञाति, अप्पेगतियादेवा णिवयति अप्पेगतियादेवा परिवयति, अप्पेगातियादेवा उप्पयति परिवयाति, अप्पेगइया देवा जलति, अप्पेगतियादेवा तवति, अप्पगतियादेवा पवति अप्पे-गइया देवाजलतितवतिपवति अप्पेगतिया देवा गज्जति, अप्पेगइया देवाविज्जयायाति, अप्पे-गइया देवा वास वासति, अप्पेगइया देवा गज्जति विज्जयायति वासवासति, अप्पेगइया देवा सन्निवाय करेंति अप्पेगइया देवा वुक्कालिय करेंति, अप्पेगइया देवा कहकहेंति अप्पेगतिया देवा, दुहुदुहु करेंति, अप्पेगतिया देवा दवसण्णिवाय देवउक्कालित देवकह देवदुहदुहक करेंति अप्पेगतियादेवा वुज्जोय करेंति, अप्पेगतिया देवा विज्जुचार करेंति, अप्पेग-

अर्थ गर्जना करते थे, कितनेक विद्युत करते थे, कितनेक वर्षा करते थे कितनेक गर्जना, विद्युत व वर्षा तीनों करते थे, कितनेक सन्निपात करते थे, कितनेक उत्कालिक करते थे, कितनेक कुह कहाट करते थे कितनेक दुह दुहाट करते थे कितनेक सन्निपात उत्कालिक कुह कहाट व दुहदहाट करते थे कितनेक उद्योत करते थे कितनेक विद्युत् की तरह चमका करते थे कितनेक वस्त्र की वर्षा करते थे कितनेक देव उद्योत, विद्युत तरह चमका व वस्त्र की वर्षा यों तीनों करके नाटक करते थे नाटक के

पचीस भेद कहे हैं इस का वर्णन रायपसेणी सूत्र में विस्तार पूर्वक है परंतु यहां इसका किंचित कथन करते हैं १ आठ प्रकार के मंगलिकाकार नाटक—१ स्वस्तिक २ श्रीवत्स ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश, ७ मत्स्य ८ दर्पन, २ आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि, प्रश्रेणि, स्वस्तिक, पुष्पमान, वर्धमान, मत्स्यांडक, जारमार, पुष्पावलि, पद्मपत्र, सागर तरंग, वासंति लता, पद्मलता, इन चित्रों के आलेखना अभिनय प्रकाररूपाकार है ऐसा दूसरा नाटक विधि, ३ ईहामृग, ऋषभ, तुरग, नर, मकर, विहग, व्याल, किन्नर, रुरु, सरभ, चमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता के विचित्र चित्र आला तीसरा नाटक विधि, ४ एकचक्र दो चक्र, एक चक्रवाल, दो चक्रवाल, चक्रार्ध चक्रवाल ऐसा चौथा नाटक विधि ५ चंद्रावलि प्रविभक्ति सूर्यावलि प्रविभक्ति, वलयावलि प्रविभक्ति, तारावलि प्रविभक्ति, मुक्तावलि प्रविभक्ति, रत्नावलि प्रविभक्ति, कनकावलि प्रविभक्ति, हंसावलि प्रविभक्ति, एकावलि प्रविभक्ति, यह पांचवा नाटक विधि ६ चंद्रोद्गम प्रविभक्ति, सूर्योद्गम प्रविभक्ति यों उद्गमन प्रविभक्ति नामक छठा नाटक विधि ७ चंद्रागमन प्रविभक्ति, सूर्यागमन प्रविभक्ति यों आगमन प्रविभक्ति नामक सातवा नाटक विधि, ८ चंद्रावरण प्रविभक्ति, सूर्यावरण प्रविभक्ति, यों आवरण नामक आठवा नाटक विधि ९ चंद्रास्तमन प्रविभक्ति, सूर्यास्तमन प्रविभक्ति यों अस्तमन प्रविभक्ति नामक नवचा नाटक विधि १० चंद्र मंडल प्रविभक्ति, सूर्य मंडल प्रविभक्ति, नाग मंडल प्रविभक्ति, यक्ष मंडल प्रविभक्ति, भूत मंडल प्रविभक्ति, राक्षस मंडल प्रविभक्ति, महोरग मंडल प्रविभक्ति, गंधर्व मंडल प्रविभक्ति, यह मंडल प्रविभक्ति नामक दशवा

नाटक विधि ११ ऋषभ मंडल प्रविभक्ति, सिंह मण्डल प्रविभक्ति, हय विलम्बित, गज विलसित, हय विलसित, गज विलसित, मत्त हय विलसित, मत्त गज विलसित, मत्त हय विलम्बित, मत्त गज विलम्बित और द्रुत विलम्बित नामक इग्यारहवा नाटक विधि १२ शकट प्रविभक्ति, सागर प्रविभक्ति, नाग प्रविभक्ति, सागर नाग प्रविभक्ति नामक बारहवा नाटक विधि १३ नंदा प्रविभक्ति, चंपा प्रविभक्ति, नंदा चंपा प्रविभक्ति नामक तेरहवा नाटक विधि १४ मत्स्यांडक प्रविभक्ति, मकरांडक प्रविभक्ति, जार प्रविभक्ति, मार प्रविभक्ति, मत्स्यांडक, मकरांडक, जार मार प्रविभक्ति नामक चौदहवा नाटक विधि, १५ ककार, खकार, गकार, घकार व ङकार प्रविभक्ति नामक पन्नरहवा नाटक विधि १६ चकार, छकार, जकार, झकार व ञकार प्रविभक्ति नामक सोलहवा नाटक विधि १७ टकार, ठकार, डकार, ढकार व णकार नामक सतरहवा नाटक विधि १८ तकार, थकार, दकार, धकार, नकार प्रविभक्ति नामक अठारहवा नाटक विधि, १९ पकार, फकार, बकार, भकार व मकार प्रविभक्ति नामक उन्नीसवा नाटक विधि २० अशोक पल्लव प्रविभक्ति, आम्र पल्लव प्रविभक्ति, जम्बू पल्लव प्रविभक्ति और कोशांब पल्लव प्रविभक्ति नामक बीसवा नाटक विधि २१ पद्मलता प्रविभक्ति, नागलता प्रविभक्ति, अशोक लता प्रविभक्ति, चंपकलता प्रविभक्ति, चूतलता प्रविभक्ति वनलता प्रविभक्ति वासंतिलता प्रविभक्ति, अतिमुक्तलता प्रविभक्ति, श्यामलता प्रविभक्ति यों लता प्रविभक्ति नामक इक्कीसवा नाटक विधि है २२ द्रुत नामक बावीसवा नाटक विधि २३ विलम्बित नामक तेवीसवा नाटक विधि २४ द्रुत विलम्बित नामक चौवीसवा नाटक विधि २५ अंचित नामक

गतियादेवा चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा वुक्कार विज्जुत्तार चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा उप्पलहत्थगता जाव सहस्सपत्तहत्थगता घटहत्थगता कलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुय हत्थगया हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाण हियया विजयाए रायहाणीए सव्वतो समता आधावति परिधावति ॥ १५२ ॥ ततेण

पचीसवा नाटक विधि २६ रिभित नामक छब्बीसवा नाटक विधि २७ अचिल रिभित नामक सत्तावीसवा नाटक विधि २८ आरभट नामक अठावीसवा नाटक विधि २९ भसोल नामक गुनतीसवा नाटक विधि ३० आरभट भसोल नामक तीसवा नाटक विधि ३१ उत्पात, निपात प्रसक्त, संकुचित, प्रसारित, रचित, सभ्रात नामक इकतीसवा नाटक विधि और ३२ श्री श्रमण भगवत महावीर स्वामी के पूर्व भवका कथन करते हुए पहिले के मनुष्य भव, देव भव, चरम देव भव, चरम चवण, भरत क्षेत्र, अवसर्पिणी, तीर्थंकर जन्माभिषेक, चरम बालभाव, चरम यौवन, चरम काम भोग, चरम दीक्षा, चरम तप का आचरण चरम ज्ञान का उत्पन्न होना, चरम तीर्थ प्रवर्तना व चरम निर्वाण, इन सब के रूप प्रकाश करे यह बत्तीसवा नाटक विधि इस तरह बत्तीस प्रकार के नाटक कितनेक देव करते हैं कितनेक देव उत्पल कमल हाथ में लेकर यावत् सहस्र पत्र कमल हाथ में लेकर, कलश हाथ में लेकर, यावत् धुपाणा हाथ में लेकर हृष्ट तुष्ट बने हुवे यावत् हर्ष से विकसित हृदयवाले बनकर विजया राज्यधानी में चारों तरफ फीरते थे॥१५२॥

सूत्र

विजयदेव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ जाव सोलस आयरक्खदेव साहस्सीओ, अण्णेवि बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वा वाणमतरादेवाय देवीओय तहिं वरकमल पतिट्ठाणेहिं जाव अट्ठ सहस्सेण सोवणियाण कलसाण तचव जाव अट्ठसहस्सेण भोमज्जाण कलसाण सव्वोदगेहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्वड्ढिए जाव निग्घोसणायेण महता२इंदाभिसयेण अभिसिंचति, महया२इंदाभिसेयेण अभिसिंचित्ता पत्तेग२सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी—जय २ नदा जय २ भद्दा जय २ नदा भद्द ते

अर्थ

चार हजार सामानिक देवता, चार परिवार सहित चार अग्रमहिषी यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव और विजया राज्यधानी के अन्य बहुत देव व देवियोंने श्रेष्ठ कमल में रहे हुवे यावत् १००८ सुवर्ण कलश यावत् १००८ मृत्तिकाके कलश के सब पानी, मृत्तिका, सब ऋतु के पुष्प यावत् सब वादित्र के शब्द से विजय देवता को इन्द्राभिषेक किया यदा इन्द्राभिषेक किये पीछे मस्तक पर आवर्तरूप अंजली करके प्रत्येक एसा आशिर्वचन बोलने लगे जयजय नंदा, जयजय भद्र, जयजय नंदा भद्र, तुम नहीं जिते हुवेका विजय करो, जिन पर जय किया है उन की प्रतिपालन करो, शत्रु पक्ष कि जिस का जय नहीं किया है

थाणिय जिणाहि जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्ख जित च पालेहि मित्तपक्ख, जियमज्झ साहित दवाणिरुवसग्ग इदोइव, दवाण, चदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहूणिसागरोवमाइ बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजति ॥ १५२ ॥ ततेण स विजयदेवे महया इदाभिसेण अभिसित्ते समाण

वस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चद्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सामानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहके जयाविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५२ ॥ विजय देव को प्रधान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

सीहासणाओ अब्भुट्ठइ २त्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेण दारेण पडिणिक्खमेति २त्ता जेणामेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छाति २ त्ता अलकारियसभ अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसाति २त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २त्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसणे॥ ततेण तस्स विजय देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा अभियोगेदेवे सद्दावेत २ त्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स अलकारिय भड उवणह ॥ ततेण अलकारिय भड जाव उवट्ठावेंति ततेण से विजएदेवे तप्पढमयाए पम्हलसुमालाए दिव्वाए सुरभीए

सिंहासन से उठा और अभिषेक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर अलकारिक सभा तरफ गये उस की प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां सिंहासन की पास जाकर उस पर पूर्वाभिमुख से बैठा उस समय सामानिक व आभ्यतर परिषदा वाले देवोंने आभियोगी देवों को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! विजय देव के अलकार के भड (करडिये) शीघ्रमेव ले आवो उनोंने अलकारिक भड लाकर रखदिये तब सब से पहिले विजय देवने रोम सहित सुकोमल दीव्य सुगधी कापायित वस्त्र से अपने गात्रको पूछा तत्पश्चात् गोशीर्ष चदन से गात्रों का अनुलेपन किया, फीर नासिका के वायु से उड़े

आणिय जिणाहि, जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्खं जित च पालेहि मित्तपक्खं, जियमज्झे साहित देवाणिरुवसग्ग इंदोइव, देवाण, चंदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहूणिसा-गरोवमाइं बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजति ॥ १५२ ॥ ततेण से विजयदेवे महया इंदाभिसेण अभिसित्ते समाण

वस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चन्द्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सा-मानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहके जयाविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५२ ॥ विजय देव को महान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

कप्परुक्खयपि, अप्पाण अलंकिय विभूसिय करेत्ता दद्दरमलय सुगंधगंधितेहिं गंधेहि गायाइ भुकूडेति २ त्ता दिव्वंच सुमणदाम पिणिधाति, ततेण से विजये देवे केसालंकारेण वत्थालंकारेण मल्लालंकारेण आभरणालंकारेण चउव्विहेण अलंकारेण अलंकित विभूसिए समाणे पडिपुण्णलंकारेण सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ त्ता अलंकार सभाउ पुरत्थिमिल्लेण, दारेण पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव ववसाय सभा तेणेव उवागच्छति २ त्ता ववसायसभ अणुप्पदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लेण दारेण अणुप्पविसति २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुह सण्णिसण्ण ॥ १५४ ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स अभियोगियदेवा पोत्थयरयण उवणेति॥ततेण से विजए

कल्प वृक्ष समान स्वतः को अलंकृत विभूषित किया तत्पश्चात् दर्दर, व मलय नामक चदन की सुगंध से अपने शरीर का सत्कार किया, सत्कार करके दीव्य मनोहर पुष्प माला पहिने, तत्पश्चात वह विजय देव केशालंकार, वस्त्रालंकार, माल्यालंकार, आभरणालंकार यों चार प्रकार के अलंकार से विभूषित बनकर प्रतिपूर्ण अलंकार सहित सिंहासन से नीचे उतरा और अलंकारिक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर व्यवसाय सभा के निकट गया वहां उस की प्रदक्षिणा करके पूर्वदिशा के द्वार से प्रवेश किया और जहां सिंहासन था वहां आया वहां सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५४ ॥ वहां विजय देवता के आभि

गंधकासाईए गाताइ लूहेंति २ त्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिंपइ २ त्ता
तआणतर च ण णासाणीसासवायवोज्झ चक्खुहर वण्णफारिसजुत्त हयलाला पेलवाति
रेगधवल कणगखाचितकम्म आकासफालिह सारसप्पह अहत दिव्व देवदूसजुयल
णियसेइ २ त्ता, हार पीणद्धेइ २ त्ता अद्धहार पिणद्धइ २ त्ता एव एकावलि पीणधित्ता,
एव एतेण अभिलावेण मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि कडगाइ तुडियाइ अगयाइ
केयूराइ, दसमुद्दियाणतकपि कडिसुत्तगधे कडिसुत्तक्ख मुरवि कठमुरवि पालबति
कुडलाइ चूडामणिचित्तरयकड मउड पिणिधेइ मउड पिणिधित्ता, गाठम वेढिम पूरिम
संघाइमेण चउव्विहेण मल्लेण कप्परुक्खयपि अप्पाण अलंकिय विभूसित करेति

ऐसा चक्षु को मनोहर सब वर्ण व स्पर्श युक्त घोडे की लाल से भी अत्यंत सुकमाल, श्वेत, सुवर्णमय तार सहित, आकाश अथवा स्फटिक रत्न जैसी प्रभावाले अखंडित दीव्य दूष्य वस्त्र का युगल पहने पहिना वे वस्त्र पहिन कर हार, अर्ध हार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, हार, कडे, त्रुटित, अंगद व केयूर पहिने, दश अंगुलियों में दश मुद्रिका, कटि मेखला, कंठ में मंगलिक सूत्र, कुंडल, और अनेक रत्न सहित चूडामणि नामक मुकुट पहना, ग्रथीम माला प्रमुख, वेष्टिम विंटे हुवे गेंद प्रमुख, पुरिम वांसकी सलाका लगाकर बनाइ हुइ और संघातिम-जोडकर बनाइ हुइ ऐसी चार प्रकार की पुष्प माला से

जाइ तत्थउप्पलाइ पउमाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ ताइ गिण्हति २ त्ता णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएणतस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ जाव अण्णे बहवे वाण-मतराय देवादेवीओ अप्पगतिया उप्पलहत्थगता जाव सत्तपत्त सहस्सपत्तहत्थगया विजय देव पिट्ठितो अणुगच्छति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिआगेयादेवा देवीओय कलस हत्थगता जाव धूवकुडुछय हत्थगता विजय देव पिठतो अणुगच्छति ॥ ततेण से विजएदेवे चउहिं सामाणिय

अर्थ

में से नीकल कर सिद्धायतन की पास जाने लगा विजय देवताकी पीछे चार हजार सामानिक यावत् अन्य बहुत वाणव्यतरदेव व देवियों हाथ में उत्पल कमल लक्षपत्र कमल लेकर चले तत्पश्चात विजयदेव के बहुत आभियोगिकदेव व देवियों हाथ में कलश यावत् धूपाडे लेकर उस पीछे के जाने लगे अब विजय देव चार हजार सामानिक यावत् विजया राज्यधानीके अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियोंकी साथ परिवरा हुवा सब वादित्र के शब्द से सिद्धायतन के पास गया वहां सिद्धायतन को प्रदक्षिणा देकर पूर्वद्वार से प्रवेश किया और जहां देवछंद रहा हुवा है वहां जिन प्रतिमा को देखते ही प्रणाम किया जिन प्रतिमा को मोर

अर्थ

देवे पोत्थयरयण गिण्हइ २त्ता पोत्थरयण मुयति २त्ता पोत्थयरयण विहाडेति २ त्ता पोत्थयरयण वाएइ २ त्ता धम्मिय ववसायपि गेण्हति२त्ता पोत्थरयण पडिनिक्खमति २ त्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता ववसायसभातो पुरात्थिमिल्लेण दारेण पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव णदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २त्ता णदापुक्खरिण अणुप्पयाहिण करमाणा पुरात्थिमिल्लेण तोरणेण अणुपाविसति २ त्ता पुरात्थिमिल्लगति सेमाणपडिरूवेण पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपाद पक्खालेति २ त्ता एगमह सेत रजतामय विमलसलिल पुण्णमत्तगय महामुहाकिति, समाण भिंगार पगिण्हति २त्ता

योगिक देव पुस्तक रत्न लाये विजय देवताने पुस्तक रत्न हाथ में लिया, उसे छोडा, फीर उस खोलकर पुस्तक रत्न बांचा, अपने कुलधर्म के व्यवसाय योग्य पदार्थ ग्रहण किये फीर उसे नीचे रखकर सिंहासन से नीचे उतरा और व्यवसाय सभाके पूर्वद्वार से बाहिर नीकलकर नंदापुष्करणीके निकट गया वहां उसे प्रदक्षणा कर के पूर्व के तोरण से प्रवेश किया और पूर्व के त्रिसोपान (पक्तिये) से उस में उतरा वहां हस्त पाद का प्रक्षालन किया, एक बडा श्वेत चांदीमय, निर्मल पानी से परिपूर्ण हाथी के मुखाकार समान एक भृंगार (झारी) ग्रहण किया, और वहां जो उत्पल, पद्म यावत् सहस्रपत्र व उन को भी ग्रहण किये, फीर नंदा पुष्करणी

दिव्वाइ देवदूसजुयलाइ णियसेइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिय मल्लेहिय अच्चेहिय अच्चेहि त्ता पुप्फारुहण गधारुहण चुण्णारुहण आभरणारुहण करेति २ त्ता आसत्तो सत्त-विउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेति, असत्ते सत्तविउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेत्ता अच्छाहिं सण्हेहिं सएहिं रएतामएहिं अच्छरसतडुलेहिं जिणपडिमाण पुरतो अट्ठट्ठमगलए आलिहति तजहा—सोत्थिय सिरिवच्छे जाव दप्पण, अट्ठट्ठमगलगे आलेहित्ता कयग्गाहगहित करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलित करेति २ चदप्पभ वइर वेरुलिय विमल दड कचणमणिर

अर्थ

करने जैसे हाथ से ग्रहण करते हुवे नीचे गिरे हुवे पुष्पों को छोडकर पांच वर्ण के पुष्पों का पुन किया, चंद्रप्रभा, वज्र व वैडूर्य रत्नमय विमल दण्डवाला, कंचन मणि रत्न जैसा विविध प्रकारसे जडा हुवा और मनोहर कृष्णागर, कुंदरूक तुरुक्क के धूप से सुगंध वृष्टि करता हुवा वैडूर्य रत्नमय धूपका कडछा लेकर धूप दिया, धूप देकर विशुद्ध छन्दादिक दोष रहित ग्रंथ युक्त महा अर्थवाले १०८ महा वृत्तवाले श्लोक से स्तुति की फीर सात आठ पांव पीछा जाकर बांया जानु खडा रखकर दहिणा जानु नीचे रखा तीन वार मस्तक धरणितल पर लगाया फीर किंचित् ऊंचा बनकर खडे, तुटित से स्तंभित भुजा ऊंची

साहस्सीहिं जाव अण्णेहिय बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव निग्घोसणाइए रवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति २ त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति २ त्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएण पमज्जति लोमहत्थएण पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएण ण्हाणेइ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणित्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहिते लूहित्ता सरसेण गोसीसचंदणेण गाताइं अणुलिंपइ २ त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेताइं

पींछ की पूंजनी से पूंजी, सुगंधित गंधोदक से प्रक्षालन किया, दिव्य सुगंधित गंध काषायिक वस्त्र से उन के गात्रों पुंछे, गोशीर्ष चन्दन से गात्रों पर लेपन किया, जिन प्रतिमा को अखंडित श्वेत उज्वल देव दूष्य वस्त्र—पहिनाये, अग्रउत्तम प्रधान सुगंधित द्रव्य व पुष्प की माला से अर्चनाकर, पुष्प चढाये, उत्तम सुगंधो पर व चढाय, चूर्णवास चढाय, वस्त्र चढाये, आभरण चढाये, ऊंचे से पृथ्वी तल पर्यंत लम्बी होती हुई पुष्प मालाओं का कलाप किया किंचित् श्वेत सुकुमाल चांदीमय अत्यन्त निर्मल अक्षत (चांवल) से आठ २ मंगलिक का आलेखन किया, तद्यथा १ स्वस्तिक श्रीवत्स यावत् दर्पण कचग्रह ग्रहण

+ जिन प्रतिमा को वस्त्र पहिनाये हैं इसलिये यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

तणस्स बहुमज्झदेसभाये तेणेव उवागच्छति २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चदणेण पचगुलितलेण मडल आलिहेत्ता चच्च दलइत्ता कयग्गाहग्गहित करतलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलित २ धूव दलयति २ त्ता जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्लेणदारे तेणेव उवागच्छइ लोमहत्थय गण्हति दारविग्गयउ सालिभजिआओय वालरूवयेय लोमहत्थयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेण गोसीसचदणेण पचगुलितलेण अणुलिंपाति चच्चये दलयति २ पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करेति २ आसत्तोसत्तविपुल जाव मल्लदाम कलाप करेति २ कयग्गाहग्गहिय जाव पुजोवयार कलित करेति २ त्ता

अर्थ

लेकर द्वारशाख, सालभिका और व्याल प्रमुख रूप को पूजे, दीव्य पानी की धारा से उन का प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से पांचों अंगुलियों के छापे से लेपन किया, अर्चना की, वहां पुष्प चढाये यावत् आभरण चढाये नीचे लम्बी लटकती हुई मालाओं का कलाप किया केशकलाप ग्रहण करने जैसे हाथ में से गीर गये हुवे पुष्पों का छोडकर पांच वर्णवाले पुष्पों का समुह किया और वहां धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के मध्य भाग में आया उस को मोरपींछ की पूजनी से स्वच्छ किया, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से पांच अंगुलीतल से मंडल का आलेखन किया, चदन से चर्चा की, यावत धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के पश्चिम दिशा के द्वार के पास

यण भत्तिचित्त कालागरु पवर कुंदरुक्क तुरुक्कधूवगन्धुमाणुविद्ध च धूमवट्टिं विणि-
मुयत वेरुलियमत कडुच्छुप पग्गहिय पयत्तेण धूव दाऊण जिणपडिमाण अट्ठसय
विसुद्धगंथ जुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ २ त्ता सत्तट्ठ
पयाइं उसरति २ त्ता वाम जाणु अचाति २ त्ता दाहिण जाणु धरणितलंसिनिहट्टु
धरणितलंसि णिवाडति २ त्ता तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलंसि णामइ २ इसिं
पच्चुण्णमति २ कडयतुडिय थंभियाओ भूयाओ पडिसाहराति करतलपरिग्गहिय
सिरसावत्त मत्थये अंजलिंकट्टु एव वयासी—णमोत्थुणं अरहंताण भगवताण
जाव सिद्धिगइ णामधेय ठाण संपत्ताणं, तिकट्टु वदित्ता णमंसित्ता जेणेव सिद्धाय-

उठाए दोनों हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया, मस्तक से अंजली करके ऐसा बोला अरिहंत भगवंत यावत् सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार होवे यों नमस्कार करके सिद्धायतन के मध्य भाग में आया वहां दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, वहां रस सहित गोशीर्ष चंदन से पांच अंगुली के छापे देकर मंडल की आलेखना की चर्चा पूजा की केशपाश ग्रहण करने जैसे हाथ में से पडे हुवे पुष्पों का त्याग कर शेष पांच वर्णवाले पुष्पों का पुंज किया और धूप दिया वहां से सिद्धायतन का दक्षिण दिशा का द्वार था वहां आया वहां मोर पीछ की पूंजनी हाथ में

लोमहत्थएण पमज्जइ २त्ता दिव्वाये उदगधाराये सरसगोसीस चदणेण पुप्फरुहण जाव आसत्तो कयग्गाह धूव दलयति जेणेव मुहमडवस्स पुरच्छिमिल्ल दारे तचेव सव्व भाणियव्व जाव दारसव्व, भाणियव्व, जेणेव दाहिणिल्ले दारे तचेव पेच्छाघरमडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामये अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता अक्खाडग च मणिपाढिय च सीहासणच लोमहत्थगेण पमज्जइ २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेइ २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २, जेणेव पेच्छाघरमडवपच्चत्थिमिल्लदारे दारच्चणिया, उत्तरिल्लाखभपति तहेव, पुरत्थिमिल्ले दारे दाहिणिल्लेदारे तहेव, जेणेव चेइय थूभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता चेइयथूभ लोम-

मध्य भाग में वज्र रत्नमय अखाडे पर रही हुई मणिपीठिका का सिंहासन के पास आया उसकी मोरपींछ की पूंजनी से प्रमार्जन की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया, पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से प्रेक्षाघर मण्डप के पश्चिम द्वार के पास आया यहां द्वार पूजा का सब कथन करना वहां से उत्तर दिशा का स्तंभ पंक्ति की पास आया वहां भी वैसा ही किया वहा से पूर्व दिशा के द्वार के पास आया यहां भी वैसे ही किया, वहां से दक्षिण दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया वहा से चैत्य स्तूप की पास आया वहां मोर पींछ की पूंजनी ग्रहण की मोर पींछ की पूंजनी से

धूवं दलयति २ जेणेव मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ बहुमज्झ-देसभाये लोमहत्थेण पमज्जति २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइति २ सरसेण गोसीस चदणेणं पचंगुलितलेण मडलग आलिहति चच्चये दलयति २ कयग्गाहि जाव धूव दलयति २ जणेव मुहमडवगस्स पच्चत्थिमिल्लेण दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोम-हत्थग गेण्हति २ दारचिग्गसमयसालभ जियाओ वालरूवएय लोमहत्थेयेण पमज्ज-ति २ दिव्वाए उदगधाराये अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चदणेण जाव चच्चेय दलयति जाव पुप्फारोहण असत्तोसत्तकयग्गाह धूवदलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स उत्त-रिल्लाण खभपति तणेव उवागच्छइ लोमहत्थग गिण्हति २ त्ता खभेय सालिभजियाउय

आया, यहां पूजनी ली और द्वार, बारशाख व पूतलियों को पूजनी से पूंजी दीव्य पानी की धारा से उन की प्रक्षालना की, श्रेष्ट गोशीर्ष चदन से चर्चना की यावत् पुष्प चढाये व धूप किया वहां से मुख मंडप के पश्चिम दिशी के द्वार की स्थम पंक्ति की पास आया वहां हाथ में मोर पूजनी लेकर स्थम व शालाभिका की प्रमार्जना की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया गोशीर्ष चन्दन से पांच अगुलितल से मंडल का आलेखन किया वहां पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से मुखमंडप के पूर्व द्वार की स्थम पंक्ति की पास आया वहां पर पूर्ववत् सब कथन करना, यावत् दक्षिण द्वार पर्यंत सब द्वार कहना फीर वहां से प्रेक्षाघर मंडप के बहुत

तोरणेय, सालिभजियाओय वालरूवएय लोमहत्यएण पमजाति २ दिव्वाए उदगधाराए सरसेण गोसीसचदणेण अणुलिंपति २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २ सिद्धायतण अणुप्पयाहिण करेमाणे जेणेव उत्तरिल्लाणदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २त्ता तचेव महिंदज्झया चेतियरुक्खे चेतियथूभे पच्चात्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला पुरत्थिमिल्ला दक्खिणिल्ला पेच्छाघरमडवस्सवि तहेव जहा दक्खिणिल्लस्स पच्चत्थिमिल्लदारे जाव दक्खिणिल्लाण खमपती मुहमडवस्सवि तिण्हदारेण अच्चाणिया भाणिऊण दक्खिणिल्लाण खमपती उत्तरेदारे पुरच्छिमेदारे सेस तेणेव कमेण जाव

अर्थ

चदन स विलपन किया, पुष्पारोपण किया यावत् धूप किया यह सिद्धायतन के दक्षिण द्वार की पूजा हुई अथ सिद्धायतन को प्रदक्षिणा करता हुआ उस के पीछे के भाग से उत्तर दिशा के द्वारवाली नदा पुष्करणी की पास आया वहां अनुक्रम से महेन्द्र ध्वजा, चैत्य वृक्ष, चैत्य स्तूप, पश्चिम दिशा की मणि पीठिका, जिन प्रतिमा, उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की मणिपीठिका व प्रतिमा की पूजा की वहां से प्रेक्षाघर मडप के पास गया उस का कथन दक्षिण दिशा क प्रेक्षाघर जैसे कहना वहां से पश्चिम दिशा क द्वार के पास गया यावत् दक्षिण दिशा की स्तभपंक्ति, मुखमंडप के तीनों द्वार की अर्चना कहना यावत् दक्षिण दिशा के प्रेक्षा स्तभपंक्ति की अर्चना की यों क्रमश. सब करते हुवे यावत्

दगःएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगरसेण पुप्फारुहण आमत्तोसत्त जाव धूव दलयाति २ जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ जिण-पडिमाए आलोए पणाम करेति २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता तचेव सव्व ज च जिणपडिमाण जाव सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताण वदति नमसति, एव उत्तरि ल्लएवि एव पुरत्थिमिल्लाएवि दाहिणिल्लाएवि, जेणेव चेइयरुक्खे दारविही, जेणेव मणिपेढियाविही जणेव महिंदज्झए, दारविही, जेणेव दाहिणिल्लाए नदापुक्खरिणि तेणेव उवागच्छइ २ लोमहत्थग गेण्हति २ चेइयाउयाति सोमाण पडिरूवयेय,

चैत्य स्तूप की प्रमार्जना की दीव्य उदकरस से प्रक्षालन किया पुष्प चढाये यावत् धूप किया वहां से पश्चिम दिशा की मणिपीठिका के पास जहां जिन प्रतिमा थी वहां आया जिन प्रतिमा को देखते प्रणाम किया यावत् जिन प्रतिमा का जो अधिकार है वह सब यहां कहना यावत् सिद्ध गति में प्राप्त हुए अरिहंत को नमस्कार होवो यों वंदना नमस्कार किया ऐसे ही उत्तर, पूर्व व दक्षिण की मणिपीठिका व जिन प्रतिमा का जानना फीर वहां से चैत्य वृक्ष का पास आया, वहां द्वार विधि जैसे पूजा की वहां से महेन्द्र ध्वजा की पास आया उस की भी वैसे ही पूजा की वहां से दक्षिण दिशा की नंदा पुष्क-रणी के पास आया वहां मोर पींछ का पूंजनी ग्रहण की, वहां वेदिका, पाविघय, तोरण पुतली व व्याल रूपक इन सब की पूंजनी से प्रमार्जना की, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष

विहाडेइ २ त्ता जिणसकहा लोमहत्थयेणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गधोदएण तिसत्तखुत्तो जिणसकहाओ पक्खालेति सरसेण गोसीस चदणेण अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहिं वेरेहिं मल्लेहिय अच्चणित्ता धूव दलयाति २ त्ता वइरामयेसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पाडिनिक्खमेति, वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिणिक्खमित्ता पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करइ माणवक चेतियखंभे लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ त्ता सरसेण गोसीस चदणेण दलयाति २ पुप्फारुहण जाव आसत्तो सत्तकयग्गाधूव दलयाति २ जेणव सभाएसुधम्माए बहुमज्झदसभाए तचेव जेणव सीहासणे

अर्थ

की, श्रेष्ठ गोशीष चदन से लेपन किया श्रेष्ठ प्रधान गध म ला से अर्चना की और धूप किया, फीर वज्र रत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा रखदी और उस पर पुष्पारोपण यावत आभरण का आरोपण किया माणवक चैत्य स्थंभ की प्रमार्जना की, दाव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष चदन से लेपन किया, पुष्प का आरोपण यावत् धूप किया वहां से सुधर्मा सभा के मध्य भाग में आया वहां उस ही प्रकार अर्चना की यावत् जहां सिंहासन है वहां आया, वहां आकर अर्चना कर वैसे ही द्वार की अर्चन कर वहां से देव शैय्या के पास आया वहां से छोटी महेन्द्र ध्वजा के पास आया, वहां से

पुरत्थिमिल्ला णदापुक्खरिणि जेणेव सभासुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाये॥ १५५ ॥ ततेण तस्स विजय देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ एयप्पभिर्ति जाव सव्वट्ठ-सिद्धेय जाव णाइयरवेण २ जणेव सभासुहम्मा तणव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म अणुप्पयाहिणी करेमाण २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुप्पविसति २ आलोए जिणसकहाण पणाम करेति जणेव मणिपेढिया जेणेव मणिवय चेतियखभे जेणेव वइरामया गोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता वइरामये गोलवट्ट समुग्गये लोमहत्थण पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्ट समुग्गये

पूर्व में नदा पुष्करणी के पास सुधर्मा सभा में जाने के लिये उद्यत हुआ ॥ १५५ ॥ विजय देवता के चार हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित यावत् वादित्र के शब्द से वह विजय देव सुधर्मा सभा की पास आया इस को प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां जिन दाढा को देखते ही प्रणाम किया वहां से जहां मणिपीठिका, जहां माणवक चैत्य स्तंभ व जहां वज्ररत्नमय गोल डब्बे थे वहां आया वहां पूजनी ग्रहण की वज्ररत्नमय गोल डब्बे की पूजनी से प्रमार्जना की, गोल डब्बे खोल दिये बाद जिन दाढा की पुजनी से प्रमार्जना की, सुगंधी पानी से जिनदाढा की इक्कीस वार प्रक्षालना

अणुलिंपति २ त्ता अग्गेहिंवरहिं गंधेहिंय मल्लेहिय अच्चणेति मल्लेहिय अच्चाणित्ता सीहासण लोमहत्थएण पमज्जति जाव धूवं दलयति सेस तहेव नदा जहा हरयस्स तहा जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छइ २त्ता आभिओगिएदवे सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसुय तिसुय चउक्केसुय चउम्मुहेसुय महापहे पासाएसुय पागारेसुय अट्टालयसुय चरियासुय गोपुरेसुय तोरणेसुय वावीसुय पुक्खरिणीसुय जाव बिलवति, गोमुय आरामेसुय उज्जाणसुय काणणसुय वणेसुय वणसंडसुय वणराईसुय अच्चणिय करेह करेत्ता, ममयेमाणत्तिय

अर्थ

तीन सभा में सिंहासन की अर्चना कहना और द्रह की पूजा नंदापुष्करणी जैसे कहना वहां से व्यवसाय सभा में आया वहां पुस्तक रत्न मोरपींछ की पुंजनी से पुंजा दीव्य उदकधारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ट गोशीर्ष चंदन से लेपन किया, श्रेष्ट प्रधान गंध व माला से अर्चन किया फीर सिंहासन की पूंजनी से प्रमार्जना की यावत् धूप किया शेष सब पूर्ववत् जानना नंदा पुष्करणी जैसे द्रह का कहना वहां से मणि पीठिका के पास जाकर आभियोगिक देव को बुलवाये और ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय! तुम विजया राजधानी में शृंगाटक, त्रिक, चौक, चतुर्मुख, महापथ, प्रासाद, प्राकार (कोट) अट्टालक, चरिका, (द्वार) गोपुर, तोरण, बावडी, पुष्करणी, यावत् बिल, गोमुख, बगीचा, उद्यान, कानन, वन, वनखण्ड

तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव दारच्चणिता जेणेव देवसयणिज्जे तचेव जेणेव खुड्ड महिंदज्झये तचेव जेणेव पहरण कोसे चोप्पाल तणेव उवागच्छति २ त्ता पत्तय पहरणाइं लोमहत्थएण पमज्जति २ त्ता सरसेण गोसीसचदणेण तहेव सव्व सेसपि दक्खिण दारपि आदिं करेतु तहेव णेयव्वजाव पुरत्थिमिल्लाणदापुक्खरणी सव्वाण सभाण जहा सुधम्माए सभाए महा अच्चणिया उववाय सभाए णवरि देवसयणिज्जस्स अच्चणिया,सेसासु सीहासणेण अच्चणिया हरयस्स,जहा णदाए पुक्खरिणीए अच्चणिया ववसायसभाए पोत्थरयण लोमहत्थ॰ दिव्वाए उदग धाराए सरसेण गोसीस चदणेण

यह कोश चोड फलानामक कोष है वहां आया वहां प्रत्येक वस्तु को मारपींछे की पुंजनी से पूंजा, श्रेष्ट गोशीर्ष चदन से विलपन किया, यों सब पूर्ववत् जानना सुधर्मासभा से नदापुष्करणी पर्यंत ऐसे ही कहना सिद्धायतन जैसे दक्षिणद्वार मुख मडप, चैत्य स्तूप, चार जिन प्रतिमा, चैत्यवृक्ष, महेन्द्र ध्वजा, और नदापुष्करणी की अर्चना की ऐसे ही सुधर्मासभा के उत्तरदिशा के द्वार से पूर्वोक्त कही इतनी वस्तु का पूजन किया ऐसे ही पूर्वदिशी का जानना सब सभा का सुधर्मा सभा जैसा कहना उपपात सभा का वैसे ही कहना परतु इस में देव शैय्या भी कहना और शेष

ततेण से विजये देवे चउहिं सामाणिय देवसाहस्सीहिं जाव सोलसहि आयरक्ख देवसाहस्सीहिं सव्विड्ढीए जाव णादितेण जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म पुरत्थिमेण दारेण पविसति अणुपविसित्ता जेणेव मणिपढिया तेणेव उवागच्छति २ सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ १५७ ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसियति ॥ ततण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणत्थे भद्दासणेसु णिसीयति॥ ततेण तस्स

अर्थ

चार हजार सामानिक यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देव की साथ सब ऋद्धि यावत् वादित्र के शब्द से जहां सुधर्मा सभा है वहां जाने लगा सुधर्मा सभा में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और मणिपीठिका के पास आकर सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५८ ॥ तत्पश्चात् विजय देवता के चार हजार सामानिक देव अनुक्रम से आये, और ईशानकून में पूर्वोक्त भद्रासन पर बैठे तत्पश्चात् उस की चार अग्रमहिषी पूर्व दिशा में पहिले वर्णन किये हुवे भद्रासन पर बैठी, उस के पीछे आभ्यन्तर परिषदा के आठ हजार देव पृथक् २ अग्नि कोन में भद्रासन पर बैठे, दक्षिण दिशा में भद्रासन पर मध्य परिषदा के

खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥ ततेणं ते अभिउगियादेवा विजयेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव हट्ठतुट्ठा विणएणं पडिसुणेंति विणएणं पडिसुणेत्ता विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसु जाव अच्चणियं करेत्ता जेणेव विजये देवे तेणव उवागच्छति २ एयमाणियं पच्चप्पिणंति ॥ १५६ ॥ ततेणं विजयेदेवे तेसिणं अभिउगियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिये जाव हियये जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता पुरच्छिमिल्लेणं तोरणाणं जाव हत्थपायं पक्खालेत्ता आयते चोक्खेपरमसुइभूय णंदा पुक्खरिणीओ पच्चुतरति २ त्ता जेणेव सभासुहम्मा तणेव पहारेत्थगमणाए ॥१५७॥

वनराजी में जाकर उस की अर्चना करो, इतना करके मुझ मेरी आज्ञा पीछी दो विजय देवता से ऐसी बात सुनकर आभियोगिक देवता हृष्ट तुष्ट हुए उन के वचन विनय पूर्वक श्रवण किये, और विजया राजधानी में शृंगाटक यावत् वनराजी में अर्चना करके उनको उनकी आज्ञा पीछी दी ॥ १६४ ॥ आभियोगिक देवकी पास से ऐसा सुनकर वह विजय देवता हृष्ट तुष्ट व आनंदित हुआ, वहां से नंदा पुष्करणी के पास आकर पूर्व के तोरण से यावत् हाथ पांव का प्रक्षालन किया, वहां शुचिमय बनकर नंदा पुष्करणी में से नीकलकर सुधर्मा सभा की ओर जाने लगा, ॥ १६७ ॥ वह विजय देव

उप्पीलिय सरासण पट्टिया पीणद्धगेवेज्जबद्ध आविद्धविमलवर चिण्हपट्टा गहिया उद्दढप्पहरणि तिणयाइं तिसंधीणि वइरामय कोडिणि धणूइं अभिगिज्झपडियाइत कंडकलावा तजहा-णीलपाणिणो, पीयपाणिणो, रत्तपाणिणो, चावपाणिणो, चारुपाणिणो चम्मपाणिणो, खग्गपाणिणो, दंडपाणिणो, पासपाणिणो, णील-पित रत्त चाव-चारु-चम्म खग्ग-दंड पास वरधरा आयरक्खगा, गुत्ता गुत्तपालिया, जुत्ता जुत्तपालिया, पत्तेय २ समयाविउणट किंकर भूताविं चिट्ठति ॥ १५९ ॥ विजयस्सण भंते ! देवस्स केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता ।

ऐसा धनुष्य हाथ में लेकर संपूर्ण शर कलाप (भाथे) भरे हुवे हैं, कितनेक के हाथ में हरे वर्ण की छडी-वाले धनुष्य हैं, कितनेक के हाथ में पीले वर्णवाले धनुष्य हैं, कितनेक के पास लाल वर्णवाले धनुष्य हैं कितनेक के हाथ में मनोहर आयुध है, कितनेक के हाथ में चर्म के कोडे हैं, कितनेक के हाथ में खड्ग हैं, कितनेक के हाथ में दंड हैं, कितनेक के हाथ में पाश है, ऐसे ही नीले, पीले, लाल धनुष्यवाले, मनोहर आयुधवाले, चर्म, खड्ग, दंड, पाश धारन करनेवाले, आत्म रक्षक, गुप्त रक्षा करनेवाले, सेवक के गुणों से युक्त, परिवार सहित पृथक २ समान मात्रा से नमते हुए किंकरभूत बनकर रहते हैं ॥ १५९ ॥ अहो भगवन् ! विजय देव की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! विजयदेव की एक पल्योपम की स्थिति

विजयस्स देवस्सदाहिणपुरत्थिमेण अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सीओ पत्तेयं २ जाव णिसीयति एवं दक्खिणेणं मज्झिमियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ जाव णिसीयति दाहिण पच्चत्थिमेण बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पत्तेयं २ जाव णिसीयति ॥ ततेणं तस्स विजयस्स देवस्स पच्चत्थिमेण सत्तअणियाहिवई पत्तेय २ जाव णिसीयति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु आसणेसु णिसीयति तंजहा-पुरत्थिमेण चत्तारिसाहस्सीउ जाव उत्तरेण ॥ ततेण आयरक्खा सण्णद्धबद्धवम्मिय कवया

दश हजार देव, नैऋत्यकून में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव पृथक् २ सिंहासन पर बैठे, पश्चिम दिशा में उस के सात अनिकाधिपति पृथक् २ भद्रासन पर बैठे, सोलह हजार आत्मरक्षक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में पूर्व स्थापित भद्रासन पर बैठे तद्यथा—पूर्व दिशा में चार हजार, दक्षिण दिशा में चार हजार, पश्चिम दिशा में चार हजार व उत्तर दिशा में चार हजार इन का वर्णन करते हैं. वे आत्म रक्षक देव सन्नद्धबद्ध आयुध से सज्ज बने हुवे हैं, कवच धारन किये हुवे हैं, शरासन धनुष्य की पट्टी कसी हुई है, कंठ में आभरण धारण किये, विमल उत्तम सुभट के चिन्हपट उन के हाथ में हैं, उन्होंने आयुध व प्रहरण ग्रहण किये हैं, तीन स्थान नीचे नमे हुवे हैं, तीन संधी हैं, उन की वज्रमय संधी हैं

दाहिणेणं जाव वेजयंते देवे ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स जयंतेणाम दारे पण्णत्ते, ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पणयालीसं जोयण सहस्साइं जंबूद्दीवे पच्चत्थिमापेरंते लवणसमुद्द पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेणं सीतोदाये महानदीए उप्पिं एत्थणं जंबूद्दीवस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ॥ तंचेव सोपमाणं, जयंते देवे पच्चत्थिमेणं से रायहाणीए जाव महिड्ढीए ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स अपराजिए णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स उत्तरेणं पणयालीसं

अर्थ

भगवन् ! वैजयंत देव की वैजयंता राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप से असंख्यातवा जम्बूद्वीप नामक द्वीप में विजयता राज्यधानी है इस का वर्णन विजया राज्यधानी जैसे जानना विजयंत नामक द्वार व विजयंता राज्यधानी का, विजयंत नामक देव का कथन विजय देव जैसे जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! जयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में ४५ हजार योजन जाने तब जम्बूद्वीप के पश्चिम के अंत में पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में सीतोदा महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का जयंत नामक द्वार कहा है इस का सब वर्णन विजय जैसे जानना इस का जयंत नामक देव अधिपति है पश्चिम दिशा में राज्यधानी है यावत् महर्द्धिक है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ४५

विजयस्सणं भंते! देवस्स सामाणियाण देवाण केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता ॥ एवं महिड्डीए एवंमहाजुत्तीये एवं महब्बले एवं महायसे एवं महासुक्खे एवं महाणुभागे विजयदेवे॥१६०॥ कहिणं भंते! जंबू दीवस्स दीवस्स वेजयं णामदारे पण्णत्ते? गोयमा! जंबूदीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं पणयालीसं जोयणा सहस्साइं अबाहाये जंबूदीवेदीवे दाहिणपेरंते लवणसमुद्दस्स दाहिणद्धस्स उत्तरेणं एत्थणं जंबूदीवस्स २ वेजयं नामदारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सच्चेवसव्वा वत्तव्वया जावणिच्चे ॥ १ ॥ कहिणं भंते! जयंतेणामे

अहो भगवन्! विजय देवता के सामानिक देव की कितनी स्थिति कही है? अहो गौतम! एक पल्योपम की स्थिति कही विजय देवकी ऐसी महाऋद्धि, ऐसी महाद्युति, ऐसा बल, ऐसा महायश ऐसा महासुख व ऐसा महानुभाग कहा है यह विजय देवता का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥१६०॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप का वैजयंत नामक द्वार कहाँ कहा है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अबाधा से जावे वहाँ दक्षिण दिशा के अंत में दक्षिण दिशा के लवण समुद्र से उत्तर में जम्बूद्वीप नामक द्वीप का वैजयंत नामक द्वार है वह आठ योजन का ऊंचा, चार योजन का चौड़ा है इस की वक्तव्यता सब विजय द्वार जैसी जानना यावत् नित्य है ॥ १ ॥ अहो

सूत्र

॥ ५ ॥ जंबूद्दीवस्सणं भंते ! दीवस्स पदेसा लवण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते ! किं जंबूदीवे २ लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे णो खलु ते लवणसमुद्दे ॥ लवण समुद्दस्स पदेसा जंबूदीवं दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते किं लवणसमुद्दे जंबूद्दीवे दीवे ? गोयमा ! लवणाणं समुद्दे, णो खलु ते जंबूद्दीवे दीवे ॥ ६ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जीवा उद्दातित्ता २ लवणसमुद्दे पच्चायति ? गोयमा ! अत्थगतिया पच्चायाति अत्थगतिया णो पच्चायाति ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे

वर्णन हुवा ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के प्रदेश लवण समुद्र को क्या स्पर्शकर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श कर रहे हुवे हैं अहो भगवन् ! वे प्रदेश क्या जम्बूद्वीप के हैं या लवण समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे जम्बूद्वीप के हैं परंतु लवण समुद्र के नहीं हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के प्रदेश क्या जम्बूद्वीप को स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्शकर रहे हैं अहो भगवन् ! वे क्या लवण समुद्र के हैं या जम्बूद्वीप के हैं? अहो गौतम ! वे लवण समुद्र के हैं परंतु जम्बूद्वीप के नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एकेन्द्रियादिक जीव मरकर लवण समुद्र में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होवे हैं और कितनेक नहीं भी उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव यहां से

जोयणसहस्स अबाहाए जंबूदीवे उत्तरापरते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेण एत्यण जंबूदीवे २ अपराइए णामदारे पण्णत्ते तचेव पमाण रायहाणी उत्तरेण जाव अपराइए देवे चउण्ह अण्णमि जंबूदीवे ॥ ४ ॥ जंबूदीवस्सण भंते ! दारस्स दारस्सय एसण केवतिय अबाहाए अतर पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीतिं जोयण सहस्साइं बावण्णंच जोयणाइं देसूणंच अद्ध जोयणं दारस्स अबाहाए अतरे पण्णत्ते

हजार योजन अबाधा से जावे वो वहां इस से उत्तर दिशा के अंत में उत्तरार्ध लवण समुद्र से दक्षिण में जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहा है इस का सब प्रमाण विजय द्वार जैसे कहना इस की राज्यधानी उत्तर में है इस का अपराजित देव है चारों राज्यधानी अन्य असंख्यातवे जम्बूद्वीप में है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! गुन्यासी हजार साढे बावन योजन ७९०५२॥ योजन में कुच्छकम का एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत अंतर कहा है जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोश, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक है उस में से चारों द्वार की चोडाइ १६ योजन की व चारों द्वार के बारसाख दो योजन के यों सब मीलाकर १८ योजन पूर्वोक्त परिधि में से नीकालना, इस से ३१६२०९ योजन ३ कोश, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल रहे इस के चार भाग करना जिस से ७९०५२ योजन, १ कोश १५३२ धनुष्य ३ अंगुल, ३ यव, बरयूका, इतना एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर जानना यह जम्बूद्वीप के द्वार का

विक्खभेण, तीसे जीवा उत्तरेण पातीण पडिणायये दुहओ वक्खार पव्वय पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ले वक्खारपव्वए पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल वक्खार पव्वय पुट्ठा, तेवण्ण जोयणसहस्साति आयामेण, तीसे धणुपट्ठ दाहिणेण, सट्ठिजोयणसहस्साइं चत्तारियट्ठार मुत्तरे जोयणसते दुवालसयएक्कूणवीस तिभाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ ८ ॥ उत्तरकुराएणं भंते ! कुराए केरिसए

अर्थ

नीलवंत पर्वत की पास चौडी है और पूर्व पश्चिम लम्बी है, दोनों वक्षस्कार पर्वत को स्पर्श कर रही है, पूर्व दिशा के अन्त से पूर्व दिशा के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुई है और पश्चिम दिशा के अन्तसे पश्चिम दिशा का गंधमादन वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुई है यह जिव्हा ५३००० योजन पूर्व पश्चिम लम्बी है, (मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम भद्रशाल वन २२००० योजन का लम्बा है इस से ४४००० योजन का भद्रशाल वन कहा उस में मेरु पर्वत के दश हजार योजन मीलाने से ५४००० योजन होवे उस में से ५००-५०० योजन के वक्षस्कार पर्वत के १००० योजन नीकालते शेष ५३००० योजन की जिव्हा कही) इस की धनुष्य पीठिका ६०४१८ $\frac{१२}{१९}$ योजन की है अर्थात् अर्ध परिधि है गंध मादन व माल्यवंत दोनों ३०२०९ $\frac{६}{१९}$ योजन के लम्बे हैं, इस से दोनों के मीलकर ६०४१८ $\frac{१२}{१९}$ योजन हुए ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र का कैसा भाव कहा है ? अहो गौतम ! वहां बहुत सम

जीवा उद्दाइत्ता२ जंबूद्दीवेद्दीवे पच्चायति ? गोयमा! अत्थेगतिया पच्चायति अत्थेगतिया-नो पच्चायंति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जंबूद्दीवेद्दीवे ? गोयमा ! जंबूद्दीवेद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंतस्स दाहिणेणं मालवंतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं उत्तरकुरा णामं कुरा पण्णत्ता पाईण पडीणायता उदीण दाहिण विच्छिण्णा अद्धचंद संठाण संठिया, एक्कारस जोयण सहस्साति अट्ठबयाले जोयणसए दोण्णिय एकूणवीसति भागे जोयणस्स

मरकर जम्बूद्वीप में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न हैं कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप ऐसा नाम क्यों किया ? अहो गौतम! जम्बुद्वीप नामकद्वीप में मेरु पर्वत से उत्तर में, नीलवंत पर्वत से दक्षिण में, माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत से पश्चिम में और गंधमादन वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में उत्तरकुरु नामक कुरु क्षेत्र कहा हुवा है यह पूर्व पश्चिम लम्बा, उत्तर दक्षिण चौडा विस्तार वाला व अर्ध चंद्र के संस्थान वाला है ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन का उत्तर दक्षिण में चौडा है (महाविदेह क्षेत्र की चौडाइ ३३६८४ $\frac{4}{19}$ है इस में से मेरु पर्वत की १०००० योजन की चौडाइ जावे २३६८४ $\frac{4}{19}$ योजन की चौडाइ रहे उस के दो भाग करने से ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन की चौडाइ रहे उस की जीवा उत्तर में

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीसे जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये-महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुवे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्ढउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उव्वेहेण मूले एकमेक जोयणसहस्स आयामविक्खंभेण मज्झअद्धट्ठमाइं जोयण सताइं आयाम विक्खंभेण, उवरिपंचजोयण सयाइं आयामविक्खंभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइं एक बावट्ठं जोयणसयं किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइं

अर्थ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अमपा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{४}{७}$ योजन अबाधा से जावे तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडीयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इमणाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पण्णा पिट्ठकरंडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स संखेज्जइ भागेण ऊणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रातिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरुयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराण कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जाति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले वहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम यहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एकरुक नामक अतरद्वीप जैसे मानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीस जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अवाधाए, सीताये महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुव्वे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्डउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एकमेकं जोयणसहस्स आयामविक्खभण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खभेण, उवरिपंचजोयण सयाइ आयामविक्खभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

अर्थ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अमपा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ! अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{४}{७}$ योजन अबाधा से जाव तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढ सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इमणाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स सखेज्जइ भागेण ऊणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरूयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराए कुराए छव्विधा मणुस्सा अणुसज्जति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले यहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम यहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एकरुक नामक अतर्द्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

यण च उड्ढं उच्चत्तेण एकतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं अब्भूग्गतमूसित वण्णओ भूमिभागओ उल्लोता, दो जोयणाइं मणिपेढियाओ उवरिसीहासणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठति ॥ ११ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जमगा पव्वया ? जमगा पव्वया गोयमा ! जमगेसुणं पव्वतेसु तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुखुड्डियाओ वावीओ जाव विलपंतियाओ, तासुणं खुड्डा खुड्डिया जाव विलपंतियासु बहुइं उप्पलाइं जाव सतसहस्स पत्ताइं जमग प्पभाइं जमग वण्णाइं जमगा एत्थणं दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमठितीया परिवसति, तेणं तत्थ पत्तेयं २ चउण्हं सामाणिय

अर्थ

जानना दो योजन की मणिपीठिका है ऊपर परिवार सहित सिंहासन है यावत् जमक पर्वत रहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जमक ऐसा क्यों नाम रखा ! अहो गौतम ! जमक पर्वत में स्थान २ पर बहुत वापि यावत् बिलपंक्ति हैं उस में बहुत उत्पल यावत् लक्षपत्र जमक जैसी प्रभावाले सब जमक जैसे वर्णवाले रहते हैं और भी वहां जमक नामक दो महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं वे वहां चार हजार सामानिक यावत् जमक पर्वत व जमका राजधानी में रहनेवाले बहुत वाणव्यतर देव व देवियों का आधिपतिपना करते हुवे यावत् उन को पालते हुवे विचरते हैं अहो गौतम ! इसलिये

तिण्णिय बावत्तरे जोयणसते किंचित विसेसूण परिक्खेवेण पण्णत्ता, उप्पिं पण्णरस एक्कासीति जोयण सते किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण पण्णत्ता, मूलेविच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुछ संठाण संठिता सव्व कणगामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवेतिया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ दोण्णवि तेसिणं जमग पव्वयाणं उप्पिं बहुसम रमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते वण्णओ जाव आसयंति बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ पासाय वडेंसका पण्णत्ता, तेणं पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइं अद्धजो-

में तीन हजार एकसो बासठ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, मध्य में दो हजार बहत्तर योजन से कुछ अधिक की परिधि है, और ऊपर पन्नरहसो इकाशी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्यमें संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ संस्थान वाले हैं सब सुवर्णमय, स्वच्छ सुकुमाल यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक पर्वतको पद्मवर वेदिका और वनखण्ड कहे हैं ये वर्णन योग्य हैं इन दोनों जमक पर्वत पर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यह भी वर्णन योग्य है यावत् वहां देवों बैठते हैं उस भूविभाग के मध्य में पृथक २ प्रासादावतंसक कहे है वे दशा योजन के ऊंचे, ३१। योजन के लम्बे चौडे हैं आकाश तल को अवलम्बन कर रहे होवे वैसे दीखाई देते हैं भूमिभाग पर छत बनी हुई है वगैरह सब पूर्ववत्

पव्वयाण दाहिणेण अट्ठचोत्तीसे जोयण सये चत्तारिसत्तभाग जोयणस्स अबाधाए सीताए महाणईये बहुमज्झ देसभाए एत्थण उत्तरकुराए नीलवतद्दहे नाम दहे पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायये पाइणपडीणविच्छिण्णे एग जोयणसहस्स आयामेण पचजोयण सयाति विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छे सण्हे रययामए कूले चउक्कोणे समती रे जाव पडिरूवे उभयोपासिं दोहियपउमवरवेइयाहिं दोहिंवणसडेहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ नीलवत दहस्सण तत्थ २ जाव बहवेति सोमाण पडिरूवका पण्णत्ता वण्णओ भाणियव्वो तोरणेति ॥ १४ ॥ नीलवत

अर्थ पर्वत से दक्षिण में ८३४ 4/7 योजन के दूरी पर सीता महानदी के बीच में उत्तर कुरु का नीलवत नामक द्रह कहा है यह उत्तर दक्षिण लम्बा व पूर्व पश्चिम चौडा है एक हजार योजन लम्बा पांच सो योजन चौडा व दश योजन ऊंडा है यह स्वच्छ श्लक्ष्ण है रजतमय किनारे हैं, चार कोणवाला, समान तीरवाला यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका हैं, दो वनखण्ड हैं ये चारों तरफ घराये हुवे हैं दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस नीलवत द्रह को त्रिसोपान प्रतिरूप है उसका भी वर्णन पूर्ववत् जानना और तोरण भी है उस का वर्णन भी पूर्ववत् जानना ॥ १४ ॥ नीलवंत

साहस्सीण जाव जमगाण पव्वयाण जमगाणय रायहाणीण अण्णेसिंच बहूण वाण-मतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ जमग पव्वया २ अदुत्तरंचण गोयमा ! जाव णिच्चा ॥ १२ ॥ कहिण भंते ! जमगाण देवाण जमगाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जमगाण पव्वयाणं उत्तराणंति तिरिय मसखेज्ज दीव समुद्द वीतीवतित्ता अण्णमि जम्बूद्दीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण जमगाण देवाण जमिगाओणाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ, बारसजोयण सहस्साइं जहा विजयस्स जाव महिड्डिया जमगादेवा ॥ १३ ॥ कहिण भंते! उत्तरकुराए उत्तरकुराए नीलवंतद्दहे नामदहे पण्णत्ता ? गोयमा! जमगाण

इन पर्वतों का नाम जमक रखा है अथवा अहो गौतम ! इन का शाश्वत नाम है वे भूतकाल में नहीं थे वैसा नहीं यावत् नित्य हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जमक देव की जमका राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! जमक पर्वत से उत्तर में असंख्यात द्वीप समुद्र गये पीछे अन्य जम्बूद्वीप नामक द्वीप आता है उस में बारह हजार योजन गये पीछे जमक देव की जमक नामक राज्यधानी कही है वह बारह हजार योजन की लम्बी चौडी वगैरह विजया राज्यधानी जैसे कहना उस में महर्द्धिक जमक देव रहते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र का नीलवंत द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! जमक

घाहल्लण सव्व कणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ १६ ॥ तीसेण कण्णियाए उवरि बहुसमरमणिज्ज देसभाए पण्णत्ते जाव मणीहिं तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगेमहं भवणे पण्णत्ते कोसच आयामेण, अद्धकोसच विक्खंभेण, देसूण कोस उड्ढं उच्चत्तेण अणेगखंभसतसंनिविट्ठ, सभा वण्णओ ॥ १७॥ तस्सण भवणस्स तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरत्थिमेण दाहिणेण उत्तरेण, तेण दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेण तावतियं चेव पवेसेण सेतावरकणग थूभियागा जाव वणमालाउत्ति ॥ १८ ॥ तस्सण भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा, जाव मणीणं वण्णओ ॥ १९ ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स

की जाती है सब रत्नमय, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है ॥ १६ ॥ उस कर्णिका ऊपर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है वह यावत् मणि से सुशोभित है उस भूमि भाग के मध्य में एक बडा भवन कहा है वह एक कोश का लम्बा आधा कोश का चौडा कुच्छकम दो कोश का ऊंचा अनेक स्थंभ वाला है इस का वर्णन सभा जैसे कहना ॥ १७ ॥ इस भवन के तीन दिशा में तीन द्वार हैं तद्यथा-पूर्व दक्षिण व उत्तर वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे, अढाइसो धनुष्य के चौडे और उतने ही प्रवेश वाले हैं सुवर्णमय शिखर है यावत् वनमाला पर्यंत वर्णन कहना ॥ १८ ॥ उस भवन में बहुत रमणीय भूमिभाग है जैसे

दहस्सण दहस्स बहु मज्झदेसभाए एत्थण एगेमह पउमे पण्णत्ते, जोयण आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण अद्धजोयण बाहल्लेण, दस जोयणाइं उव्वेहेण दो कोसे ऊसिते जलंतीतो सातिरेगाइं दस जोयणाइं सव्वग्गेण पण्णत्ते ॥ १५ ॥ तस्सण पउमस्स अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा वइरामयामूला रिट्ठामये कंदे, वेरुलिया मये णाले, वरुलियामया बाहिरपत्ता, जम्बूणयमया अब्भिंतरपत्ता, तवणिज्जमया केसरा, कणगामई कण्णिया, णाणामणिमया पुक्खरत्थिभुया, साण कण्णिया अद्धजोयण आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, कोस

द्रह के मध्य भाग में एक पद्म कमल है यह एक योजन का लम्बा चौडा और उस से तीनगुनी से अधिक परिधि है, आधा योजन का जाडा है दश योजन ऊंडा है, जल उपर दो कोश का ऊंचा है और सब मीलकर साधिक दश योजन का है ॥ १५ ॥ इस पद्म का इस तरह वर्णन करते हैं वज्र रत्नमय मूल है अरिष्ट रत्नमय कंद है, वैडूर्य रत्नमय नाल है, वैडूर्य रत्नमय बाहिर के पत्र हैं जम्बूनद रत्नमय आभ्यंतर के पत्र हैं, तपनीय सुवर्णमय केशरा है कनकमय कर्णिका है, विविध मणिमय स्थूभिका है उस की कर्णिका आधा योजन की लम्बी चौडी है, इस से तीनगुनी से अधिक की परिधि है, एक कोश

परिक्खेवेणं, अद्धकोसं बाहल्लेणं सव्व कणगामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिणं कण्णिया उप्पिं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा जाव मणीणं वण्णो गंधो फासो ॥ २० ॥ तस्सणं पउमस्स अवरुत्तरेणं उत्तर पुरत्थिमेणं एत्थणं निलवंत दह कुमारस्स देवस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीणं, चत्तारि पउम साहस्सीओ पण्णत्ताओ एवं सव्व परिवारो नवरि पउमाणं भाणियव्वो, सेणं पउमे अण्णेहिं तेहिं पउम-परिक्खेवेणं सव्वतो समता संपरिक्खित्ते तंजहा—अब्भिंतरएणं मज्झिमएणं बाहिरएणं अब्भिंतरएणं पउमपरिक्खेवे बत्तीसं पउम सयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमएणं पउम परिक्खेवे चत्तालीसं पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरएणं पउमपरिक्खेवे अडयालीसं पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवामेव सपुव्वावरेणं एगापउम कोडी

अर्थ

परिधि है, आधा कोस की जाडी है सब कनकमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है उन की कर्णिका पर रमणीक भूमिभाग है यावत् मणि का वर्ण, गंध रस व स्पर्श है ॥ २० ॥ उस पद्म कमल के वायव्य कोन उत्तर व ईशान कोन में नीलवंत द्रह कुमार देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार पद्म कहे हैं यों सब परिवार के कमल कहना अब यह पद्म अन्य तीन कमलकी परिधि से वींटा हुवा है आभ्यन्तर परिधि मध्य परिधि व बाहिर परिधि अभ्यन्तर परिधि में बत्तीस लाख कमल, मध्य परिधि में चालीस लाख कमल और बाहिर की परिधि में अडतालीस लाख

बहुमज्झदेसमाए एत्थण मणिपेढिया पण्णत्ता, पंच धणुसताइं आयामविक्खंभेण अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं बाहल्लेणं सव्व मणिमती॥तीसेण मणिपेढियाए उवरिं एत्थण एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, देव सयणिज्जस्स वण्णओ ॥ सेण पउमे अण्णेण अट्ठसतेण तदड्ढुच्च प्पमाणमेत्तेण पउमाण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तेण पउमा अद्ध जोयण आयाम विक्खंभेण ततिगुण स विसेस परिक्खेवेण कोस बाहल्लेण दसजोयणाइं उव्वेहेण कोस ऊसिया जलंताओ सातिरेगाइं दसजोयणाइं सव्वेगेण पण्णत्ताइं तेसिण पउमाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वइरामयामूला जाव णाणामणिमया पुक्खलत्थिभया ॥ ताओण कण्णियाओ कोस आयामविक्खंभेण ततिगुणस

कर्णिका पुष्कर यावत् मणिका वर्णन जानना ॥ १९ ॥ उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी अढाइ सो धनुष्य की जाडी व सब मणिमय है उस मणिपीठिका पर एक बडा देवशयन है यह देवशयन का वर्णन पूर्ववत् जानना उस पद्मकमल की चारतरफ १०८ कमल उस से आधी ऊंचाइ वाले को हुवे हैं, वे पद्म आधा योजन के लम्बे चौडे हैं तीनगुनी से अधिक परिधि है, एक कोश के जाडे हैं, दस योजन ऊंडे हैं, एक कोश पानी से ऊपर है, साधिक दस योजन के सब मीलाकर हैं इन का इस तरह वर्णन किया है वज्ररत्नमय मूल है यावत् विविध मणिरत्न मय पुष्कर स्तुभिका है उन की कर्णिका एक कोश की लम्बी चौडी है उस से तीन गुनी से अधिक

विक्खभेण उवरिं पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, मूले तिण्णि सोले जोयणसए किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेण, मज्झ दो'णसत्तीसे जोयण सते किंचि विसेसाहिता परिक्खेवेण, उवरिंएग अट्ठावन्न जोयणसत किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण, मूलेविच्छिण्णा मज्झसंखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुच्छ संठाण संठिया सव्वकंचणमया अच्छा, पत्तेय २ पउमवरवेतियाइ पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता ॥ तेसिण कंचणग पव्वयाण उप्पिं बहु समरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयंति, पत्तेय २ पासायवडेंमगा सद्दा बावट्ठिं जोयणिया उड्ढं, एकतीस

अर्थ

ऊंचे हैं, मूल में एक सो योजन के चौडे हैं मध्य में पचत्तर योजन के चौडे हैं और ऊपर पचास योजन के चौडे हैं मूल में तीन सो सोलह योजन से अधिक परिधि है, मध्य में दो सो सैतीस योजन से अधिक की परिधि है और ऊपर एक सो अट्ठावन योजन की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ संस्थानवाले हैं ये सब कंचनमय स्वच्छ हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड हैं उन कंचनगिरि पर्वत पर बहुत रमणिय भूमिभाग है यावत् वहां देव बैठते हैं उन कांचनगिरि पर्वत में पृथक् २ प्रासादावतंसक हैं वे ६२॥ योजन के ऊंचे हैं ३१।

ओ वीसच पउमसत सहस्सा भवंति तिमक्खाया ॥ २१ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति निलवंतदहे ? निलवंतदहे गोयमा ! निलवंत दहेण तत्थ २ जाव उप्पलाति जाव सयसहस्स पत्ताइं निलवंतप्पभाति निलवंत वण्णा भाति निलवंत दह कुमारेय, एत्थसोचेव गमो जाव णिलवंत दह २ ॥ २२ ॥ निलवंतण पुरात्थिम पचत्थिमेण दस २ जोयणाति अबाहाए एत्थण दस दस कंचणग पव्वता पण्णत्ता, तेण कंचणग पव्वता एगमेग जोयणसत उड्ड उच्चत्तेण पणुवीस २ जोयणाति उव्वेहेण, मूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण मज्झे पण्णत्तरिं जोयणाइ आयाम

कमल इन तीनों परिधि के एक क्रोड वीस लाख कमल होते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नीलवंत द्रह ऐसा नाम क्यों रखा ? अहो गौतम ! यहां पद्मकमल यावत् लक्षपत्रकमल हैं, वे सब नीले वर्णवाले, नीली प्रभावाले व नीली कांतिवाले हैं यहां नीलवंत द्रह कुमार नामक नाग कुमार देव रहता है इस का कथन प्रथम द्रह जैसा जानना यावत् इस लिये नीलवंत द्रह नाम दिया गया है ॥ २२ ॥ नीलवंत पर्वतसे पूर्व पश्चिम में दश २ योजन के अंतर से अबाधापने दश २ कांचनगिरि पर्वत कहे हुवे हैं वे कांचनगिरि सब मीलकर २ पर्वत होते हैं ये कांचनगिरि पर्वत १०० योजन के ऊंचे हैं, पचीस योजन के

नामाए देवा सव्वेसिं पुरच्छिम पच्चत्थिमेण कणगपव्वता दस २ एकप्पमाणा उत्तरेण रायहाणी अण्णमि जबूद्दीवे चंददहे एरावणदहे मालवंतदहे एव एक्केक्को णेयव्वा ॥ २५ ॥ कहिण भंते ! उत्तर कुराए जबू सुदंसणाये जबूपीढे नाम पीढे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर पुरच्छिमेण नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण, मालवंतस्स वक्खार पव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमादणस्स वक्खार पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महा नदीए पुरत्थिमिल्लेकूले एत्थण उत्तरकुराए जबूपेढे नामपेढे पंचजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेण पण्णरस एक्कासीते जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, बहुमज्झ-

अर्थ

य दो द्रह हुवे ऐसे ही चंद्र द्रह, एरावत द्रह व माल्यवन्त द्रह का वर्णन जानना इन के अधिपति देव व उन की राज्यधानी सब का कथन पूर्ववत् जानना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में जम्बू सुदर्शन वृक्ष का जम्बू पीठ नामक पीठ कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशानकून में नीलवंत वक्षस्कार पर्वत से दक्षिणदिशा में माल्यवंत गजदंताकार नामक वक्षस्कार पर्वत से पश्चिमदिशा में गंधमादन) गजदंता वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में, सीता महानदी के पूर्व किनारे पर उत्तरकुरु क्षेत्र में जम्बूपीठ नामक पीठ कहा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है पन्नरसो इकासी योजन से अधिक परिधि

जोयणाइं कोस च विक्खंभेण, मणिपेढिया दो जोयणिया सिंहासणा सपरिवारा ॥ २३ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ कंचणग पव्वया ? गोयमा ! कंचणग पव्वया तेसुणं पव्वतेसु तत्थ २ वावीओ उप्पलाइं जाव कंचण वण्णाभाति, कंचणग जाव देवा महिड्डिया जाव विहरंति, उत्तरेणं कंचणगाण कंचणिताओ रायहाणीओ अण्णंमि जंबू तहेव सव्वं भाणियव्वं ॥ २४ ॥ कहिणं भंते ! उत्तरकुराए उत्तरकुरुद्दहे नामदहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवंतस्सदहस्स २ दाहिणेणं अट्ठचोती से जोयणसए एवं चेव गमो णेयव्वो, जो नीलवंतदहस्स सव्वेसिं सरिसके दहसरिस

योजन के चौडे हैं उन में मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी है वहां परिवार सहित सिंहासन है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कांचनगिरि पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! कांचनगिरि पर्वत पर सब बावी-उत्पल वगैरह यावत् कांचन वर्ण भांति यावत् वहां कांचनग कुमार देव रहता है उत्तर दिशा में कांचनक कुमार देव की कंचनका राज्यधानी कही है वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में उत्तरकुरु द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! नीलवंत द्रह से ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन दूर पर उत्तरकुरुद्रह कहा है इस का सब कथन नीलवंत द्रह जैसे कहना इन के साथ द्रह जैसे कहना कंचनक पर्वत पूर्व पश्चिम किनारे पर कहना उत्तर दिशा में राज्यधानी है

र्ति आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ २७ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगामहं जंबूसुदंसणा पण्णत्ता अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधे अट्ठ जोयणं विक्खंभेणं, छजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता, वइरामयामूला रययसुपतिट्ठिया विडिमा, एवं चेतियरूक्खस्स वण्णओ जाव सव्वाइं रिट्ठामय विउलकंधा वेरुलियरुइरखंधा, सुजायवरजायरूवपढमगविसालसाला, णाणामणिरयणविविह साहप्पसाहा वेरुलिय

अर्थ यावत् प्रतिरूप है ॥ २७ ॥ उस मणि पीठिका पर एक बडा जम्बू सुदर्शन वृक्ष है वह आठ योजन का ऊंचा, आधा योजन का भूमि में ऊंडा, दो योजन का स्कंध, आठ योजन का चौडा छ योजन की शाखा है मध्य भाग में आठ योजन चौडा है और सब मीलकर वह साधिक आठ योजन का है इन के वज्र रत्नमय मूल है, चांदीमय सुप्रतिष्ठित अङ्कुर है अरिष्ट रत्नमय कंद, वैडूर्य रत्नमय मनोहर स्कंध वगैरह चैत्यवृक्ष के वर्णन जैसा जानना यावत् सुजात उत्तम चांदी की शाखा है, मणि रत्नमय विविध प्रकार की शाखा प्रशाखा है, वैडूर्य रत्नमय पत्र है, रक्त सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय

देसभाए बारसजोयणाइं बाहल्लेण, तदाण तरंचणं मायाए २ पदेस परिहाणीए सव्वेसु चरमंतेसु दोकोसेणं बाहल्लेणं पण्णत्ते, सव्वकंचणयामये अच्छे जाव पडिरूवे, सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेणय वणसंडेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते दुण्णंवि दोण्हवि ॥ तस्सणं जंबूपीढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता तहेव जाव तोरणा जाव छत्ताइछत्ता ॥ २६ ॥ तस्सणं जंबूपीढस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणि॥तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठजोयणा

है मध्य में बारह योजन का जाडा है, तत्पश्चात् थोडा २ कम होता हुवा चरमांत में दो कोश का जाडा है सब कंचनमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस को एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ रहे हुवे हैं इन दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस जम्बूपीठ के चारों तरफ चार त्रिसोपान हैं वैसे ही हैं यावत् तोरण व छत्रपर छत्र कहना ॥ २६ ॥ उस जम्बूपीठ पर एक बडा समरमणीक भूमि है जैसे मृदङ्ग का तल यावत् मणिका स्पर्श उस रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है वह आठ योजन की लम्बी चौडी अधिक चार योजन की जाडी कही है सब मणिमय स्वच्छ

मालाओ भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पंचधणुसइया देवसयणिज्ज भाणियव्वं ॥ २९ ॥ तत्थ जेसे दाहिणिल्ले साले से एगे मह पासायवडेंसए पण्णत्ते कोस उड्ढं उच्चत्तेण अद्धकोस आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिया अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्ज भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए सीहासण सपरिवार भाणियव्वं ॥ ३० ॥ तत्थण जे पच्चत्थिमिल्ले साले एत्थण एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते तचेव पमाण तहिंपि सीहासण सपरिवार ॥ ३१ ॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले साले तत्थण एगेमह पासायवडेंसए पण्णत्ते तचेव पमाण तेहिंपिसीहासण सपरिवार तत्थण जेसे उत्तरिम विडिमग्ग साले एत्थण एगेमह सिद्धायतण पण्णत्ते कोस आयामेण अद्धकोस

अर्थ

यावत् माला पर्यंत वर्णन पूर्ववत् जानना भूमि भाग है, ऊपर छत है पांचसो धनुष्य की मणिपीठिका है और देव शयन है ॥ २९ ॥ जो दक्षिणदिशा में शाखा है उन पर एक प्रासादावतंसक है वह एक कोश का ऊंचा, आधा कोश का लम्बा चौडा व गगनतल को अवलम्बन करता होवे वैसा है अंदर बहुत रमणीय भूमिभाग है उस भूमिभाग के मध्य भाग में परिवार सहित सिंहासन है ॥ ३० ॥ पश्चिम दिशा के सिंहासन पर एक प्रासादावतंसक है उस का प्रमाण उपरोक्त प्रासादावतंसक जैसे कहना परंतु परिवार रहित सिंहासन कहना ॥ ३१ ॥ जो उत्तर दिशा में शाखा है उस पर एक सिद्धायतन है वह एक कोश का लम्बा, आधा कोश का चौडा, कुच्छ कम देढ कोश का ऊंचा है उस में अनेक स्थंभ

मस, सत्राणेज्ज पत्तविंटा, जम्बूणय रत्तमउयसुकुमालपवाल पल्लवंकुरधरा विचित्त, मणिरयण सुरहिकुसुम फलभारनमियसाला, सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया अहिय मणाणिव्वुइकरा, पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥ २८ ॥ जम्बुएण सुदंसणा ते चउदिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता तंजहा-पुरत्थिमेण दक्खिणेण - पच्चत्थिमेण उत्तरेण, तत्थ जे से पुरत्थिमिल्ले साले एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते—कोस आयामेण, अद्धकोसं विक्खंभेण, देसूण कोस उड्ढं उच्चत्तेण, अणेगखंभ सयसंनिविट्ठ वण्णओ जाव भवणस्स दारा तंचेव पमाणं पंचधणुसयाई उड्ढंउच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं विक्खंभेण जाव वण्ण-

लाल मृदु सुकोमल प्रवाल अंकूर हैं विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधि पुष्प हैं, फल के भार से इस की शाखा नम्न बनी हुई है व छायावंत कांतिवंत, श्रीकं, उद्योतवंत, अत्यंत मन को सुखकारी, प्रसन्नकारी अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के पूर्वादि चारोंदिशिमें चार शाखा हैं उन में से पूर्वदिशा की शाखापर एक भवन कहा है वह एक कोस का लम्बा, आधा कोस का चौड़ा, कुच्छकम एक कोस का ऊंचा व एक स्तंभ वाला है इस का वर्णन करना यावत् भवन के द्वार, पांच सौ धनुष के ऊंचे, अढाइसो धनुष के चौड़े हैं और सबके दि भवन जाने हैं

अट्ठसएण जबुण तदद्धुच्चत्तप्पमाण मेत्ताणं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ ताओणं जघुओ चत्तारि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण कोस उवेहेण जोयणखधे, कोसविक्खभेण तिन्निजोयणाइ विडिमा बहुमज्झदेसभाए चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण सातिरेगाइ चत्तारि जोयणाइ सव्वग्गेण वइरामयमुला सोचेव चेतियरुक्ख वण्णओ ॥ ३४ ॥ जबुएण सुदसणाए अवरुत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ण सामाणिय साहस्सीण चत्तारि जबू साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ जबूएण सुदसणाइ पुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण चत्तारि जबूओ पण्णत्ताओ एव सपरिवारो सव्वो णेयव्वो ॥ जबूए जाव आयरक्खाण सुदसणातिहिं जोयणसइएहिं

अर्थ

इवाले १०८ जम्बू वृक्ष मूल से व्याप्त हैं वे चार योजन के ऊंचे हैं एक कोश के ऊंडे हैं, एक कोश का स्कंध है, वे एक कोश के चौडे हैं तीन योजन की शाखा है, मध्य में चार योजन चौडे हैं सर्वांग साधिक चार योजन के हैं उन का वज्ररत्नमय मूल है वगैरह चैत्य वृक्ष वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३४ ॥ जम्बू सुदर्शन से वायव्यकून, उत्तर दिशा व ईशान कून में अनादृत देवता के चार हजार सामानिक देवता के चार हजार सामानिक जम्बू हैं, जम्बू सुदर्शन से पूर्व दिशी में परिवार सहित चार अग्रम हिषियों के यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव के जम्बूवृक्षों है,यों सब परिवार कहना. जम्बूवृक्ष के वन क

विक्खंभेण देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग खंभसयसन्निविट्ठे वण्णओ, तिदिसिं तओदारा पंचधणुसया अड्ढाइज्जधणुसयं विक्खंभेणं, मणिपेढिया पंचधणुसइया देवच्छंदओ पंचधणुसय विक्खंभो सातिरेगं पंचधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, तत्थणं देवछंदए अट्ठसयं जिणपडिमा जिणुस्सेहप्पमाणाणं, एवं सव्वासिद्धायतण वत्तव्वया भाणियव्वा जाव धूवकुडच्छुया, उत्तिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवेए तहेव ॥ २२ ॥ जंबूसुदंसणामूले बारसहिं पउमवरवेइयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओणं पउमवरवेदियाओ अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं वण्णओ ॥ २३ ॥ जंबूसुदंसणा अण्णेणं

रहे हुए हैं यह वर्णन योग्य है तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे अढाइ सो धनुष्य के चौडे हैं उस में एक मणिपीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी है, उस पर देव छंदक कहा है वह पांच सो धनुष्य का चौडा है, साधिक पांचसो धनुष्य का ऊंचा है, उस देव छंदक में १०८ जिन प्रतिमा हैं वे जिन प्रमाण ऊंची हैं इस तरह सिद्धायतन की सब वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यावत् धूप कुडछे रहे हुवे हैं उसका ऊपरका भाग सोलह प्रकार के रत्नों से सुशोभित है ॥ २२ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के मूल में बारह पद्मवर वेदिका चारों और रही हुई हैं वह आधा योजन की ऊंची पांचसो धनुष्य की चौडी वगैरह वर्णन युक्त है ॥ २३ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष को चारों तरफ चारों ऊंचा-

निप्पकाओ णीग्याओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासायवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दाक्खिण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तत्तव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दाक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिगा भिगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

अर्थ

रुडी, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतसक कहे हैं, १ कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ॥ दक्षिणपूर्व ईशानकौन में पचास योजन जाव वहां चार नदा पुष्करणी कही है जिन के नाम—उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना । ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौण में पचास योजन जावे वहां चार नदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृगा, भृंगणिभा, अजना व कजल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

घणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेण तच्चेण ॥३५॥ जंबू सुद सणाए पुरत्थिमेण पढम वणसंड, पन्नास जोयणाइं उग्गाहित्ता एत्थण एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्वे जाव सयणिज्जं, एवं दाहिणेण पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥३६॥ जंबूएण सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसंड पण्णास जोयणाइं उग्गाहित्ता एत्थण चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओण णंदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस विक्खंभेण पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बडा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोस की लम्बी, आधा कोस की चौडी, पांच सो धनुष्य की

निप्पकाओ णीग्याओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासायवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दाक्खण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचेव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दाक्खण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चेव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

ऊडी, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठ री, मठारी, पक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतंसक कहे हैं, वे एक कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ऐसे ही दक्षिणपूर्व ईशानकौन में पचास योजन जाव वहां चार नदा पुष्करणी कही है जिन के नाम— उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौण में पचास योजन जावें वहां चार नदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृगा, भृगाणिभा, अंजना व कज्जल प्रभा, शेप सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

थणसडहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता तजहा पढमेणं दोच्चाण तच्चेण ॥३५॥ जबू सुद
सणाए पुरत्थिमेण पढम वणसड,पन्नास जोयणाइ उग्गाहित्ता एत्थणं एगेमह भवणे
पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्व जाव सयणिज्ज, एवं दाहिणेण पच्चत्थिमेणं
उत्तरेण ॥३६॥ जबूएण सुदसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसड पण्णास जोयणाइ
उग्गहित्ता एत्थण चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तजहा पउमा पउमप्पभा चेव
कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओण णंदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस
विक्खंभेण पचधणुसयाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन
वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बड़ा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे
पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या
पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम
वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा,
व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौडी, पांच सो धनुष्य की

क्लेत्रेण,मूलेविछिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए,गोपुच्छ संठाणसंठिते सव्व जंबुणयामए अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते,दोण्हवि वण्णओ,तस्सण कूडस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एग सिद्धाय तण कोसप्पमाण सव्वा सिद्धयतणवत्तव्वया, जंबूएण सुदसणाए पुरत्थिमस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एत्थण एगेमहं कूडे पण्णत्ते तचेव पमाण सिद्धायतणंच ॥ जंबूएण सुदसणाये दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेण

अर्थ

ऊपर पतले है, गोपुंछ संस्थानवाले हैं, सब जम्बूनन्दमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, उन को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड चारों ओर हैं दोनों वर्णन योग्य हैं उन कूट पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है, यावत् वहां देव बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में एक सिद्धायतन कोश प्रमाण का है इस सिद्धायतन की वक्तव्यता कहना जम्बू सुदर्शन के पूर्व के भवन से दक्षिण में व दक्षिणपूर्व-अग्निकोण के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है इस का प्रमाण व वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यों सिद्धा-यतन पर्यंत कहना जम्बू सुदर्शन के दक्षिण के भवन से पूर्व में और अग्निकोण के प्रासादावतंसक

एत्यण चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तहय सिरिणिलया, तचेव पमाण तहेव पासाय वडेंसओ ॥ ३७ ॥ जंबूएणं सुदंसणातो पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमिल्ल पासाद वडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एगेमहं कूडे पण्णत्ते, अट्ठा जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण मूले बारस जोयणाइं आयाम विक्खंभेण, मज्झे अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेण, मूले साइरेग सत्ततीस जोयणाइं परिक्खेवेण मज्झे सातिरेगाइं पणुवीस जोयणाइं परिक्खेवेण, उवरिं सातिरेगाइं बारस जोयणाइं परि-

योजन जावे यहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं, उन के नाम, श्रीकांता, श्रीमहिता, श्री चंद्रा व श्रीनिलया. उन का प्रमाण भी वैसे ही जानना, और बीच में एक २ प्रासादावतंसक जानना ॥ ३७ ॥ जम्बू सुदर्शन के भवन से उत्तर में और ईशानकून के भवन से दक्षिण में एक बड़ा कूट कहा है, वह आठ योजन का ऊंचा है, मूल में बारह योजन का लम्बा चौड़ा है, मध्य में आठ योजन का लम्बा चौड़ा है ऊपर चार योजन का लम्बा चौड़ा है, मूल में साधिक सैंतीस योजन की परिधि है, मध्य में साधिक पचीस योजन की परिधि है, और ऊपर साधिक बारह योजन की परिधि है मूल में विस्तारवाला, मध्य मे संकुचित व

पुरत्थिमेण उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे मह कूडे पण्णत्ते तच्चेव पमाण तहेव सिद्धायतणच॥ ३८॥ जंबू सुदसणा अण्णेहिं बहुहिं, तिलएहिं लवएहिं जाव रायरुक्खेहिं नदी रुक्खेहि जाव सव्वता समता सपरिक्खित्ता॥ जंबूएण सुदसणाए उवरिं बहवे अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तजहा सोत्थिय सिरिवच्छ,किण्हा चामर ज्झया जाव छत्ताछिछत्ता ॥ ३९ ॥ जबूएण सुदसणाए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता तजहा- सुदसणा, अमोहाय, सुप्पबुद्धा जसोहरा॥ विदहा जबू सोमणसा, णीतिया णिच्च मडिया ॥ १ ॥ भद्दाय विसालाय सुजाया, सुमणात्तिय सुदसणाए, जबूते नामधज्जा दुवा- लसा ॥ २ ॥ ३९ ॥ से कणट्ठेण भत ! एवं वुच्चति जंबू सुदसणा ? गोयमा !

अर्थ

कूट का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सिद्धायतन कहना ॥ ३८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष की आसपास अन्य बहुत तिलक लवग यावत् नदी वृक्षों रहे हुवे हैं जम्बू सुदर्शन पर बहुत आठ २ मगलिक हैं तद्यथा-स्वस्तिक श्रीवत्स, कृष्ण, चमर यावत् छत्रातिछत्र ॥ ३९ ॥ जम्बू-सुदर्शन के बारह नाम कहे हैं १ सुदर्शन,२ अमोघ,३ सुप्रबुद्ध,४ यशोधर ५ विदेह,६ जम्बू ७ सोमनस ८ णियता ९ सुभद्रा, १० विशाला, ११ सुजाया, १२ सुदर्शन ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! सुदर्शन नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! जम्बू सुदर्शन पर जम्बूद्वीप का अधिपति अनाधृत नामक महर्द्धिक यावत्

दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे कूडे ॥ जम्बुए दाहिणल्ल भवणस्स पच्चत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लपासा, पुरत्थिमेण एत्थेण एगे कुडे पण्णत्ते ॥ जम्बुतो पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स, दाहिणेण, दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एगे महं कुडे पण्णत्ते, एत च्चय पमाण सिद्धायतणच्च जम्बुए पच्चत्थि भवणस्स उत्तरेण उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एग कूडे पण्णत्ते तचेव ॥ जम्बुए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण उत्तर पच्चत्थि पासायवडिंसगस्स पुरत्थिमेण एग महं कुडे पण्णत्ते तचेव जंबु उत्तर भवणस्स

पश्चिम में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के दक्षिण दिशा के भवन से पश्चिम में व नैऋत्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व दिशा में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से दक्षिण में व नैऋत्य-कौन के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से उत्तर में व वायव्यकौन के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बडा कूट कहा है जम्बू के उत्तर दिशा के भवन से पश्चिम में व वायव्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बडा कूट कहा है जम्बू सुदर्शन वृक्ष से उत्तर दिशा के भवन से पूर्व में व ईशानकौन के प्रासादावतंसक से पश्चिम में एक बडा कूट कहा है सब

दीवस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते अणयकायाधिणासी जाव णिच्चा॥४१॥जंबूद्दीवेण भंते! काति चंदा पभासिंसुवा पभासंतिवा पभासिस्संतिवा, कतिसूरिया तविंसुवा तवंतिवा तविस्संतिवा, कतिणक्खत्ता जोय जोएंसुवा जोयंतिवा जोइस्संतिवा कतिमहग्गहा चार चरिंसुवा चरंतिवा चरिस्संतिवा, केवतिताओ तारागण कोडाकोडीओ सोभेंसुवा सोभंतिवा सोभिस्संतिवा ? गोयमा ! जंबूद्दीवेणदीवे दो चंदा पभासिंसुवा ३, दो सूरिया तविंसुवा ३, छप्पण्ण णक्खत्ता जोग जोएंसुवा ३, छावत्तर गहसत चारं चरिंसुवा ३, एगंच सतसहस्स तेत्तीस खलुभव सहस्साइं णवसया

अर्थ

नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप में कितने चन्द्रने प्रकाश किया कितने चन्द्र प्रकाश करते हैं व कितने चन्द्र प्रकाश करेंगे, कितने सूर्य तपे, कितने तपते हैं व कितने तपेंगे, कितने, कितने नक्षत्रों ने योग किया, कितने योग करते हैं व कितने योग करेंगे कितने ग्रह चले, कितने चलते व कितने चलेंगे, कितने ताराओंने शोभा की, कितने तारा शोभा करते हैं व कितने तारा शोभा करेंगे ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में दो चन्द्रने प्रकाश किया दो चन्द्र प्रकाश करते हैं, दो चन्द्र प्रकाश करेंगे, दो सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ५६ नक्षत्रने योग किया, करते हैं व योग करेंगे, १७६ ग्रह चार चरे, चार चरते हैं व चार चरेंगे, एक लाख तेतीस हजार पचास क्रोडाक्रोड तारागण शोभित हुवे, शोभते व शोभेंगे यह

जंबू सुदंसणाते जम्बूदीवाहिवती अणाढिते नाम देवे महिड्डिए जाव पलिओवम ठितीए परिवसति, सेण तत्थ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव जम्बुदीवस्स जंबूसुदंसणाए अणाढियाते रायहाणीए जाव विहरति ॥ ४० ॥ कहिण भंते ! अणाढियस्स देवस्स अणाढिया नाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिरि एव जहा विजयस्स देवस्स जाव समत्त रायहाणीए महिड्डिए अदुत्तरंचेण गोयमा ! जम्बूदीवे दीवे तत्थ २ देसे २ बहवे जंबू रुक्खा जम्बूवणा जंबू वणसंडा णिच्च कुसुमिया जाव सिरिए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति जंबू दीवे दीवे ॥ अदुत्तरंचण गोयमा ! जम्बूदीवस्स

पल्योपम की स्थिति वाला देव रहता है, वह चार हजार सामानिक यावत् जम्बूद्वीप का जम्बू सुदर्शन का अनादृत राज्यधानी का अधिपति पना करता हुआ यावत् विचरता है ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! अनादृत देवकी अनादृत राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में तीच्छी वों सब अधिकार विजय देवकी विजया राज्यधानी जैसे कहना यावत् महार्धिक है अथवा अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में स्थान २ पर जम्बू वृक्ष जम्बू वन वाले जम्बू वनखण्ड सदैव फल फूल वाले यावत् सुशोभित हैं अहो गौतम ! इसलिये जम्बूद्वीप नाम कहा है अथवा जम्बूद्वीप का नाम शाश्वत है यह कदापि

सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ, वण्णओ दोण्हवि, साण पउमवर वेइया अट्ठ जोयण उड्ढ उच्चत्तेण, पंचधणुसय विक्खमेण लवण समुद्द समिया परिक्खेवेण सेस तहेव॥३॥तेण वणसंडे देसूणाइ जाव विहरंति ॥४॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कइदारा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजये, विजयंते, जयंते, अपराजिते ॥ जंबूदीवे विजयाइ सरिसा ॥ कहिण भंते ! लवण समुद्दस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमापरंते धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीओदाए महानदीए उप्पिं एत्थण लवण समुद्दस्स विजय नाम दारे पण्णत्ते अट्ठ

अर्थ

जानना पद्मवर वेदिका आधा योजनकी ऊंची, पांचसो धनुष्यकी चौडी और लवणसमुद्रके जितनी परिधि वाली रही हुई है, शेष वैसे ही कहना ॥ ३ ॥ वनखण्ड भी कुच्छ कम दो योजन का है यावत् विचरता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ये जम्बुद्वीप के विजय सदृश हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के पूर्व दिशा के अंत में धातकी खण्ड द्वीप से पश्चिम में सीतोदा महा नदी ऊपर लवण समुद्र का विजय द्वार कहा है यह आठ

पण्णासा तारागण कोडीकोडीण सोभेसुवा सोभेंतिवा सोभिस्सातिवा ॥ ४२ ॥ जम्बूद्दीव णाम दीव लवणे नाम समुद्दे वलयागार संठाण संठिते सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ १ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे किं समचक्कवाल संठिये विसम चक्कवाल संठिये ? गोयमा ! समचक्कवाल संठित नो विसम चक्कवाल संठिए॥२॥ लवणेण भंते !समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते?गोयमा ! लवणेण समुद्दे दो जोयण सहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण पण्णरस जोयणं सयसहस्साइं एक्कासीइं सहस्साइं सेगाणचत्ताल सय चउयाल किंचि विसेसूणा परिक्खेवेण पण्णत्ते सेण एगाए पउमवर वेइयाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समंता

जम्बूद्वीप का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ ४२ ॥ अब लवण समुद्र का अधिकार कहते हैं जम्बूद्वीप के चारों तरफ लवण समुद्र वलय के आकार मे रहा हुवा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल वाला नहीं है, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र चक्रवाल में कितना चौडा है और उस की परिधि कितनी है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का चक्रवाल में चौडा है और पनरह लाख इक्यासी हजार एक सो गुनचालीस योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ घेरा हुवा है इन दोनों का वर्णन पूर्ववत

सूत्र

लवणा जहा विजयरायहाणीगमो, उट्ठ उत्तरंतहा ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सरय एसण केवइय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसय सहस्साइ पंचाणउइ सहस्साइं दुण्णिय असीए जोयणसये कोसंच दारंतरे लवणे जाव अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ ७ ॥ लवणस्सण भंते समुद्दस्स पएसा धाईय संड दीव पुट्ठा तहेव जहा जंबूदीवे, धायइसंडेवि सोचेव गमो ॥ ८ ॥ लवणेण भंते ! समुद्दे जीवा उदाइत्ता २ सोचेव विही एवं धायइ संडेवि ॥ ९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ लवणे समुद्दे ? गोयमा ! लवणेण समुद्द

अर्थ

दिशा में जयंत का कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अपराजित द्वार कहां कहा है ? वैसे ही राज्यधानी उत्तर में जानना और सब कथन पूर्ववत् कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र के द्वार २ का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! तीन लाख पचानवे हजार दोसो अस्सी योजन व एक कोश का एक द्वार से दूसरे द्वार तक अंतर कहा है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र को धातकी खण्ड द्वीप स्पर्श हुवा है ? यों जैसे जम्बूद्वीप लवण समुद्र का कहा वैसे ही कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से मरकर धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं ? यों जम्बूद्वीप जैसा इस का भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का

जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण, एव तचेव सव्व जबू द्दीवस्स विजयसारस जाव अट्ठट्ठ मगलगा ॥ ४५ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ विजय दार ? विजयदारं जो अट्ठो जबू द्दीवस्स॥४६॥ कहिण भते! लवणगस्स विजयस्स विजयानाम रायहाणी ? गोयमा ! विजयस्स पुरत्थि तिरिमसखेज्ज अणम्मि लवणे धारस्स जबूद्दीवग सरिसा वत्तव्वया जाव सम वेजयतपि अप्पणिज्जेण गमेण लवणस्स दाहिणेण रायहाणी, एव जयतेवि, तस्सवि रायहाणि पच्चत्थिमेण ॥ कहिण भते! लवण समुद्दस्स अपराईए तहेव रायहाणी उत्तरेण अपरायस्स देवस्स अण्णम्मि

योजन का ऊचा, चार योजन का चौडा यों सब जम्बूद्वीप के विजय सदृश यावत् आठ २ मगल कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! विजय द्वार ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! जैसे जम्बूद्वीप के विजय द्वार का कथन किया वैसे ही यहां जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! विजयद्वार से पूर्व तीर्च्छा असख्यात द्वीप समुद्र का उल्लघन करे वहां अन्य लवण समुद्र आता है उस में बारह हजार योजन अवगाहकर आवे वहां विजया राज्यधानी कही है इस का सब कथन जम्बूद्वीप की विजया राज्यधानी जैसे करना ऐसे ही वैजयत का करना, ऐसे ही इस समान वैजयन्ती नामक लवण समुद्र की राज्यधानी का कथन दक्षिण दिशा में करना ऐसे ही पश्चिम

सावीसुया ३ ॥ चारमुचरे णक्खत्तसय जोएसुवा ३ तिण्णि वावण्णा महग्गहसया चारिं चरिसुवा दुण्णिय सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवयसया तारागण कोडिकोडाण सोभिंसुवा ३ ॥ ११ ॥ कम्हाण भंते! लवणसमुद्दे चाउद्दट्ठमुद्दिट्ठा पुण्णमासिणीसु अतिरेगं २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्सण दीवस्स चउदिसिं बाहिरल्लातो वेइयातो लवणसमुद्द पचाणउतिं जोयणसहस्साति उग्गाहित्ताएत्थणचत्तारि महाअलिंजर सठाण सठिया महति महालया महापायाला पण्णत्ता तजहा-वलयामुहे केतुवे जुवे, ईसरे ॥ तेण पाताला एगमेग जोयण सतसहस्स उवेहेण, मूले दसजोयण

अर्थ करते हैं व प्रकाश करेंगे वैसे ही चार सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ११२ नक्षत्रोंने चंद्रमादिक के साथ योग किया, करते हैं व करेंगे, तीन सो बावन ग्रह क्षेत्र में चार चले, चलते हैं व चलेंगे, दो लाख सडसठ हजार नवसो क्रोडा क्रोडा तार शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को अत्यंत अधिक २ क्यों वृद्धिपाता है और क्यों कमी होता है ? अर्थात् भरती ओट क्यों होता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के चारोंदिशी में बाहिर की वेदिका के अंतसे लवण समुद्र में ९५ हजार २ योजन जावे वहां महा अलिंजर (कुंभ) के संस्थान वाले चार

उदये अविले रहले लवणे लिंदसारए कडुए अप्पेज्जे बहुण दुप्पय चउप्पय मियएसु पक्खिसरीसवाण णण्णत्थत जोणियाण सत्ताण उठिय, एत्थ लवणा हिवई देव महिड्डीये॥ पलीओवमठीए सेण तत्थ सामाणिय जाव विहरइ, से तेणठेण गोयमा ! एव वुच्चति लवण समुद्दे २ अदुत्तरंचण गोयमा! लवण समुद्दे सासये जाव णिच्चे ॥१०॥ लवणेण भते ! समुद्दे कइचंदा पभासिंवा पभासिंवा पभासिस्सतिवा, एव पचवण्हवि पुच्छा ? गोयमा ! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसुवा २ चत्तारि सुरिया

पानी लवण जैसा है, निर्मल नहीं है, पंक कर्दम बहुत है, गोबर का रस जैसा है, खारा पानी है, तीक्ष्ण पानी है, कटुक रस है, पीने योग्य नहीं है, मृग, पशु, पक्षी, सरिसर्प इन को पीने योग्य नहीं है उस में उत्पन्न हुवा जीवों को उस पानी का आहार है, परंतु दूसरे के लिये यह आहार नहीं है इस लिये इसका लवण समुद्र नाम कहा है और भी यहां लवणाधिपति महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थितिवाला देव स्वामी है वह सामानिक देव यावत् बहुत वाणव्यंतर देव व देवियोंका आधिपतिपना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये इस का नाम लवण समुद्र है अथवा लवण समुद्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चद्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? यों सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व ताराओं की भी पृच्छा करना अहो गौतम ! लवण समुद्र में चार चद्रने प्रकाश किया, प्रकाश

मज्झिल्लेतिभागे उवरिल्लेतिभागे तेण तिभागे तेत्तीस २ जोयण सहस्साति तिण्णिय तेत्तीसे जोयणसये जोयणति भागच्च बाहल्लेण, तत्थण जे से हेट्ठिल्लेभागे एत्थण वायकायते सचिट्ठति, तत्थण जे से मज्झिल्लेतिभागे एत्थण वाउयाएय आउयाएय सचिट्ठति तत्थण जे से उवरिल्लेभागे एत्थण आउयाते सचिट्ठति ॥ १२ ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे २ बहवे खुड्डालिंजर सठाण सठिया खुड्डपायाला पण्णत्ता, तेण खुड्डा पायाला एगमेग जोयणसहस्स उव्वेहेण मूले एगमग जोयणसत विक्खभेण, मज्झेएगपदेसिया सेढीए एगमेग जोयणसहस्स विक्खभेणं, उप्पि मुहमूले एगमेग जोयणसत विक्खभेण ॥ तेसिण खुड्डा

अर्थ

प्रभंजन इन पाताल कलशों के तीन भाग किये हैं नीचे का भाग, मध्य का भाग व ऊपर का भाग एक २ भाग तेत्तीस हजार तीन सो तेत्तीस योजन व एक योजन के तीन भाग में का एक भाग का जाडा है उन में से नीचे के भाग में वायुकाय, बीच के भाग में वायुकाय व अप्काय साथ और ऊपर के भाग में मात्र अप्काय है ॥ १२ ॥ और भी अहो गौतम ! लवण समुद्र में बहुत छोटे आलिंजर के आकार वाले छोटे पाताल कलश हैं व एक हजार योजन के ऊंडे हैं मूल में एक एकसो योजन के चौडे हैं वहां से एक २ प्रदेश बढते २ मध्य में एक हजार योजन के चौडे है वहां से एक प्रदेश कम

सहस्साति विक्खंभेणं, मज्झे एगपदेसियाए सेढिए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेणं, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, तेसिणं महापायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दसदस जोयणसय बाहल्ला पण्णत्ता, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थणं बहवे जीवा पोग्गलाय वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति सासयाणं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया ॥ तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति तंजहा काले महाकाले वलंब पभंजणे ॥ तेसिणं महापायालाणं ततोतिभागा पण्णत्ता तंजहा-हट्ठिल्लेतिभागे

अर्थ

पाताल कलश कहे हैं, जिन के नाम १ वडवामुख, २ केतुमुख ३ यूप और ४ ईश्वर ये पाताल कलश एक लाख योजन के मूल में ऊंडे हैं मूल में दश हजार योजन के चौडे हैं, वहां से एकेक प्रदेश की श्रेणि से बढते २ मध्य बीच में एक लाख योजन के चौडे हैं वहां से प्रदेश कम होते २ ऊपर दश हजार योजन के चौडे हैं उन की ठीकरी सर्वत्र समान जाडपने में हैं, एक हजार योजन की जाडी है वह वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है वहां बहुत जीव पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं व चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती है, और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है वहां महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, वेलंब व

अट्ठय चुलसिया पातालसता भवति तिमक्खाया ॥ १२ ॥ तेसिं महापातालाण खुड्डाग पातालाणय हिट्ठिम मज्झिलेघतिभागेसु बहवे उराला वाया ससेयति समुच्छति पताति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति तत भाव परिणमति, जेण उदयउच्चाहिज्जति ॥ जच्चाणं तेसिं खुड्डा पायालाण महापायालाण हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु बहवे उरालिय वाया सेयति समुच्छति एयाति वेयति कपति खुज्झति घट्टति फदति ततभाव परिणमति, तयाण से उदये उण्णाहिज्जति २, जयाण ते खुड्डा पायालाण महापायालाणय

अर्थ

सब मीलकर जम्बूद्वीप में सात हमार आठसो चौराशी पाताल कलश कहे हैं + ॥ १२ ॥ जब पाताल कलश के छोटे पाताल कलश में बीच का व नीचे का विभाग में ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाले वायु काय उत्पन्न होते हैं मूर्च्छित होते हैं, हिलते हैं, चलते हैं, कंपित होते हैं, क्षुब्ध होते हैं व संघट होते हैं, परस्पर सर्षण होते हैं, और उस भाव में परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उछलता है, और जब यह कलश के

+ चारों बडे कलश के मध्य मे अव्वा २ छोटे कलशों की नव लड हैं प्रथम लड में २१५, दूसरी में २१६ यों २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलश की नवमी लड है इसी तरह चारों कलश की आसपास लड कहना यह सब सबके कलश सामिल करनें से पूर्वोक्त संख्या होती है

पायालाण कुडा सव्वत्थसमा दसजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय जाव असासयावि पत्तेय २ अद्धपलिओवमठितियाहिं देवेताहिं परिग्गहिया ॥ तेसिण खुड्डग पायालाण ततोतिभागा पण्णत्ता तजहा हेट्ठिल्लेभागे मज्झिल्लेभागे उवरिल्ले-भागे, तेणतिभागा तिण्णि २ तेतिस जोयणसते जोयणतिभाग च बाहल्लेण पण्णत्ता, तत्थण जे से हेट्ठिल्ले भागे एत्थण वाउयाए संचिट्ठति, मज्झिल्लेतिभागे वाउयाते आउयातेय उवरिल्ले आउयाए, एवामेव सव्वावरेण लवण समुद्दे सत्त पायाल सहस्सा

होते २ उपर के मुख स्थान एकसो योजन के चौडे हैं इन छोटे पाताल कलशकी ठिकरी सबम समान दश योजन की जाडी है सब वज्र रत्नमय स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप हैं यहां बहुत जीव व पुद्गल आते हैं, उत्पन्न होते हैं चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती व वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है, यहां आधे पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन छोटे पाताल कलश के तीन विभाग किये हैं उपर का, मध्य का व नीचे का प्रत्येक भाग तीनसो तीतेसी योजन व एक योजन के तीन भाग मेसे एकभाग का है इस में से सब से नीचे के भाग में वायु है, मध्य भाग में वायु व पानी है और उपर के भागमें पानी है

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अतिरेग २ वड्डतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उदमतेसु पातालेसु वड्डति आपूरतेसु पातालेसु हायति से तेणट्ठेण गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरेग वड्डतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भंते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण केवइय अतिरेग वड्डतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरेग वड्डतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स कतिणागसाहस्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अर्थ — अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके ऊंचा उछलता है, वह वायु से पूराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है. इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु वहवे उराले जाव तंतंभाव परिणमाति, तयाण से उदये नो उन्नाहिज्जइ २ अतरा वियण ते थाया उदीराति अंतरावियाण से उदये अण्णाहिज्जति ४ अतरावियण ते याया नो उदीरेति अतरावियण से उदगेण उण्णाहि-ज्जति अतरावियण से उदगे णो उण्णाहिज्जाति एव खलु गोयमा ! लवणेण समुद्दे चउद्दस ट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा॥ १४॥लवणेण भते!समुद्द तीसाए मुहुत्ताण कतिखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणेणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ से केणट्ठेण भते ! जाव

छोटे कलश के नीचे व बीच के विभाग वायु उर्ध्व गमन स्वभाववत नहीं होते हैं यावत् उस भाव में नहीं परिणमते हैं तब पानी ऊंचे उछलता नहीं है इस तरह अहोरात्रि में दो वक्त वायु उत्पन्न होता है तब पानी दो वक्त ऊंचा उछलता है इसी से अहोरात्रि में दो वक्त भरती ओट होता है अब पाताल कलश में वायु नहीं उत्पन्न होता है तब वहां का पानी नहीं उछलता है इससे अहो गौतम! लवण समुद्र में चतुर्दशी, अष्टमी अमावास्या व पूर्णिमा को पानी अधिक २ बढता है और घटता है ॥ १४॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में कितनी वक्त पानी बढता है व कमी होता है ? अहो गौतम! दो वार पानी बढता है व कमी होता है अहो भगवन्! ऐसा किस लिये कहा कि लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में दो वार पानी बढता है व हीन होता है?

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग २ वड्ढतित्रा हायतिवा ? गोयमा ! उड्मतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरतेसु पातालेसु हायति से तेणट्ठेण गोयमा ! लवण सतीसाएसु दुक्खुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण केवइय अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाह स्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अर्थ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके बाहर उछलता है वह वायु से पूराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

सूत्र

अब्भिंतरियवेलं धारेंति बावत्तरि णागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारेंति, सट्ठि णागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेण एगाणाम सयसाहस्सी बावत्तरिंच णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १७ ॥ कतिणं भंते ! वेलंधरणागराया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलंधरा णागराया पण्णत्ता तंजहा गोथूभे सिवए सखे मणोसिलए,॥एतेसिणं भंते ! चउण्हं वेलंधरा नागरायाणं कति आवास पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वता पण्णत्ता तंजहा गोत्थूभे दओभासे संखे दगसीमये ॥१८॥कहिणं भंते! गोथुभस्स वेलंधर णागरायिस्स गोथूणाम आवासपव्वते

अर्थ

गौतम ! ४२ हजार नागदेव लवण समुद्र की आभ्यंतर वेल धारकर रखते हैं, ७२ हजार नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं, और ६० हजार नागदेव अग्रोदक धारकर रखते हैं सब मीलकर एक लाख चम्मोतरहजार नाग देव होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ; वेलधर नागराज कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! वेलधर नागराज चार कहे हैं तद्यथा-गोस्तूभ शिव, शंख और मनोशिला अहो भगवन् ! इन वेलधर नागराजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा-गोस्तुभ दगभास, शंख और दगसीमक ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तुभ नागराजा का गोस्तुभ आवास पर्वत

पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पुरत्थिमेण लवण समुद्द बायालीस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं गोथूभस्स वेलंधर णागरायस्स गोथूभे णाम आवासपव्वते पण्णत्ते, सत्तरस इक्कवीसाइं जोयण सताइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि तीसे जोयण सते कोसंच उव्वेहेण मूले दस बावीसे जोयणसते आयाम विक्खंभेण मज्झेसत्त तेवीसे जोयण सते आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयण सए आयामविक्खंभेण, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइं दोण्णिय बत्तीसुत्तरे जोयण सए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइं दोण्णिय चुलसयति जोयण सते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण,

अर्थ

कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत से पूर्व में लवणसमुद्र से ४२ हजार योजन अवगाहकर जावे वहां गोस्तुभ वेलंधर नागराजा का गोस्तुभ नामक आवास पर्वत कहा है यह सत्तरह सो इक्कीस योजन का ऊंचा चारसो सत्तावीस योजन गहरा (पानी में) है मूल मे एक हजार बावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है बीच में सात सो तेवीस योजन का लम्बा चौडा [गोल] है और ऊपर चारसो चौवीस योजनका लम्बा चौडा [गोल] है मूलमें तीनहजार दोसो बत्तीस योजन में कुछ कम की परिधि है, बीच में दो हजार दोसो चौरासी योजन से कुच्छ कम की परिधि है और ऊपर एक

उवरिं एग जोयणसहस्स तिण्णिएइयाले जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मूले विच्छिण्णे, मज्झेसंखित्ते, उप्पिं तणुए, गोपुच्छ संठाण संठिते, सव्व कणगामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेणं एगाए पउमवर वेदियाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ ॥ गाथूभस्सणं आवास पव्वयस्स उवरिं बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयाति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जातो एत्थणं एगे मह पासायवडेंसके पण्णत्ते, बावट्ठिं जोयणद्धं उड्ढं उच्चत्तेण तदद्ध पमाण अद्ध आयामविक्खंभेण वण्णओ जाव सीहासणं सपरिवारं ॥ १९ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

हजार तीनसो इकतालीस योजन के कुच्छ कम की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, बीच में संकुचित व ऊपर संकीर्ण है गोपुच्छ संस्थान वाला है सब कनकमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है उन की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना गोस्तूभ आवास पर्वत पर बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् वहां देवता बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के बीच में एक बडा प्रासादावतंसक कहा है ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा कहा है यावत् परिवार सहित सिंहासन कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ आवास पर्वत क्यों कहा ? अहो गौतम ! गोस्तूभ

सूत्र

एव वुच्चइ गोथूभे आवास पव्वते ? गोयमा ! गोथूभ आवास पव्वते तत्थ२ देसे २ तहिं २ बहुओ खुड्डा खुड्डियाओ जाव गोथूभ वण्णाइ तहेव जाव गोथूभे, तत्थ देवे महिड्ढिए जाव पलिओवमठितीये परिवसति, सेण तत्थ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव गोथुभस्स आवास पव्वतस्स गोथूभाये रायहाणीए जाव विहरति ॥ से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोथूभस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमेण तिरिय मसखेज्जे दीव समुद्दे वीतीवातिता अण्णमि लवण समुद्द तचेव

अर्थ

आवास पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी बडी बावडियों हैं यावत् गोस्तूभ के वर्ण जैसे बहुत कमल हैं यों सब पूर्ववत् कहना यावत् वहां गोस्तूभ नामक देवता रहता है वह महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाला है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् गोस्तूभ आवास पर्वत व गोस्तूभा राज्यधानी का अधिपतिपना करता हुवा विचरता है इसलिये इस का नाम गोस्तूभ आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! गोस्तूभ आवास पर्वत से पूर्व में असख्यात द्वीप समुद्र उल्लघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में गोस्तूभ देव की गोस्तूभा राज्यधानी कही है इन का प्रमाण

पमाण तहेव सव्व ॥ २१ ॥ कहिण भंते ! सिवगस्स वेलधर णागरायिस्स दगभा-
सेणाम आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवेण दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेण
लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साति उगाहित्ता एत्थण सिवगस्स वेलधर
णागरायिस्स दगभासे नाम आवास पव्वते पण्णत्त, तचेव पमाण ज गोथूभस्स
णवरि सव्व अकामय अच्छे जाव पडिरूवे जाव अच्छो भाणियव्वो ॥ गोयमा !
दगभासेण आवास पव्वये लवण समुद्दे अट्ठ जोयणिये खत्त उदय सव्वतो समताओ
भासति उज्जोवेति तवेति पभासेति सिवय एत्थ देवे महिड्डिये जाव रायहाणी से

अर्थ

पश्चिम दिशा में विजया राज्यधानी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शिव नामक वेलधर
नाग राजा का दगभास पर्वत कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में
लवण समुद्र में बायालीस हजार योजन जावे वहां शिव नामक वेलधर नाग राजा का दगभास आवास
पर्वत कहा है इस का सब कथन गोस्तूभ आवास पर्वत जैसे कहना विशेष में यह पर्वत सब अंक-
रत्नमय स्वच्छ यावत् सब अर्थ कहना अहो भगवन् ! दगभास आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ?
अहो गौतम ! दगभास आवास पर्वत लवण समुद्र के पानी में चारों ओर दीप्ति करता है, उद्योत करता
है, तपता है, कांति बढाता है और वहां शिव नामक महर्द्धिक देव रहता है, इस लिये इस का दगभास

दक्खिणेण, सिविगादगभासस्स सेण तचेव ॥ २२ ॥ कहिण भंते ! सखस्स वेलधर णागरायिस्स सखणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूदीवे २ मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण बायालीस जोयण एत्थण सखस्स वेलधर सखेणाम आवास पव्वते तचेव पमाण नवर सव्वरयणामये अच्छे ॥ सेण एगाए पउमवर वेदियाए एगेण वणसडे जाव अट्ठे बहूउ खुड्डा खुड्डियाओ जाव बहुइ उप्पलाइ सखवण्णाइ सखप्पभाइ सखवण्णप्पभाइ सख तत्थ देवे महड्ढिए जाव रायहाणी

अर्थ

पर्वत नाम कहा इन की राजधानी दगभास पर्वत से दक्षिण दिशा में है शेष वैसे ही जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! शख नामक वेलधर नागराजा का शख नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शख नामक वेलधर नाग राजा का शख नामक आवास पर्वत कहा है इस का प्रमाण गोस्तूभ जैसे जानना परन्तु यह सब रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है इस की आसपास एक २ पद्मवर वेदिका व वन खण्ड है अहो भगवन् ! शख आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बाव-बावडियों प्रमुख में यावत् शख जैसे वर्ण वाले बहुत कमल प्रमुख उत्पन्न होते हैं शख जैसे लावण्य,

पश्चिमेण सक्खस्स आवास पव्वयस्स सक्खा रायहाणी तंचेव पमाण ॥ २३ ॥ कहिण भंते ! मणोसिलकस्स वेलंधर णागराइस्स उदगसीमयेणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स उत्तरे लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साई उगाहित्ता एत्थण मणोसिलगस्स वेलंधर णागरायिस्स उदयसीमय णाम आवासपव्वते पण्णत्ते तंचेव पमाण णवर सव्वफालहामये अच्छ जाव पडिरूवे, गोयमा ! दागसीमतेण आवास पव्वते सीतासीतायाण महाणदीण तत्थण तासोए पडिहम्मति से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ मणोसिलये तत्थ देवे महिड्ढिए जाव सेण

कांतिवंत है यहां अक्षदेव महर्द्धिक यावत् रहता है इस की राज्यधानी पश्चिमदिशा में है इस का प्रमाण पूर्ववत् जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नागराजा का दगसीमक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन अवगाहकर जावे वहां मनोसीलक नाग राजा का उदकसील आवास पर्वत कहा है; इस का प्रमाण वैसे ही जानना विशेष में सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस का सब अर्थ पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! दगसीमक आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम! सीता सीतोदा महा नदियों का प्रवाह इस आवास पर्वत पर्यंत आता है और इस से लगकर पीछा समुद्र में मील जाता है इसलिए

तत्थ चउण्ह सामाणिये जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! मणोसिलगस्स वेलधर णागराइस्स मणोसिलाणाम रायहाणी ? गोयमा ! दगसीमस्स आवास पव्वयस्स उत्तरेण तिरियं असंखेज्ज जाव अण्णंमि लवणे एत्थण मणोसिलाणाम रायहाणी पण्णत्ता, तचेव पमाण जाव मणोसिलए देवे कणगंकेरयय फलिहमया वेलधरा णामावासा अणुवलधर राईण पव्वया होंति रयणमया ॥ १४ ॥ कतिण भंते ! अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता तंजहा कक्कोडए कद्दमए कतिलासे अरुणप्पभे ॥ तेसिण भंते ! चउण्ह

अर्थ

कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नाग राजा की मनोसीला राज्यधानी कहां है ! अहो गौतम ! दगसीमक आवास पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में मनोसीला नामक राज्यधानी कही है यावत् वहां मनोसीलक देव रहता है पहिला आवास पर्वत कनकमय है, दूसरा आवास पर्वत अंक रत्नमय, तीसरा आवास पर्वत चांदीमय और चौथा आवास पर्वत स्फटिक रत्नमय है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! अनुवेलधर नाग राजा कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुवेलधर नाग राजा चार कहे हैं तद्यथा—१ कर्कोटक, २ कर्दमक, ३ कैलास

अणुवेलधर णागराईण कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तंजहा कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाणं जं गोथूभस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेसं जाव सीहासणं सपरिवारं

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बुद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कोन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना, इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बड़ी वावड़ियों में

सूत्र

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पमाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरस्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरस्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरस्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

अर्थ

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परंतु यहां अग्नि कौण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कौण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कौण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

अणुवेलधर णागराईण कइ आवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तंजहा-कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिण्णं भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण जं गोथूभस्स, णवरं सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासणं सपरिवारं

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलंधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलंधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् मतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बड़ी वावडियों में

सूत्र

भट्ठो से महूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पमाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चात्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चात्थिमण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

अर्थ

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परतु यहां अग्नि कोण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कोण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कोण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

एत्थण सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमा दीवे णाम दीवे पण्णत्ते, बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्ततीस जोयण सहस्साइं नवय अडयाले जोयणसये किंचिविसेसाहिये परिक्खेवेणं, जंबूदीव दीवन्तण अद्धकूणणउति जोयणाइं चत्तालीसच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिए जलंताता लवणसमुद्दंतेणं दो कोसे ऊसिए जलंताता सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेणं सव्वता समंता तहेव वण्णओ दोण्हवि ॥ गोयमदीवस्सणं दीवस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा णामए आलिंग जाव आसयति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्ज

सुस्थित देवका गौतम द्वीप कहा है वह बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है ३७९४८ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है जम्बूद्वीप तरफ ८८५ योजन व एक योजन के ९५ भाग में के ४० भाग पानी में ऊंचा है और लवण समुद्र की दिशी में पानी से दो कोस ऊंचा है इस के एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है इस का वर्णन सब पूर्ववत् कहना गौतमद्वीप के अंदर बहुत रमणीय भूमि भाग है जैसे मादलका तल वगैरह पूर्ववत् कहना, यावत् वहां बहुत देव बैठते हैं उस रमणीय भूमिभागके मध्य में लवणाधिपति सुस्थित नामक देव का एक बडा आक्रीडावास नामक भूमि विहार कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१ योजन का चौडा है अनेक स्तंभवाला वगैरह सब वर्णन कहना

भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स एगे मह आकीलावासे णाम भोमेज्ज विहारे पण्णत्ते बावट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं, एकतीसं जोयणाइ कोसंच विक्खंभेणं अणेगखंभसते सण्णिविट्ठ सव्वओभवण वण्णओ भाणियव्वो ॥ आकीलावासस्सणं भोमज्जविहारस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासो तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगे मणिपेढिया पण्णत्ता, सा मणिपेढिया दो जोयणाति आयाम विक्खंभेणं जोयण बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेणं मणिपेढियाते उवरिं एत्थणं देवसयणिज्जे पण्णत्ते वण्णओ॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं

अर्थ

आक्रीडावास भूमि विहारमें बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् मणिका स्पर्श है उसबहुत रमणीय भूमि भाग के मध्यमें एक मणिपीठिका कही है यह मणिपीठिका दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी शेष पूर्ववत् इस मणिपीठिका पर एक देवशयन कहा है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! गौतमद्वीप ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम! गौतमद्वीप में बहुत उत्पल कमल यावत् गौतम जैसी प्रभा वाले हैं इस लिये ऐसा कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! लवणाधिपति सुस्थित नामक देवकी राज्यधानी कहां

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइं, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाइं से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेण तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्व जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थंण

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीपके पश्चिम में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाहकर जावे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सुस्थित देव रहता है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चन्द्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के चन्द्र का चन्द्र नामक द्वीप कहा है यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊंचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जम्बुद्दीवगाण चंदाण चंददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जम्बुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउति जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्हवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा,ण बहुमज्झ देसभाए पासादवडेंसका बावट्ठि जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपाढयाओ दो जोयणाओ जाव

अर्थ

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव यहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! यहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चंद्र समान वर्णवाले हैं, चंद्र समान कांतिवाले हैं, यहां चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह यहां चार हजार सामानिक यावत् चंद्र द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुइ, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाइं से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेण तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्व जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीपके से पश्चिम में तीच्छाँ असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे वहाँ दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाह कर जावे वहाँ सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सुस्थित देव रहता है ॥२७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्र का चंद्रद्वीप कहाँ कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहाँ जम्बूद्वीप के चंद्र का चंद्र नामक द्वीप कहा है यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊंचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

अबुद्दीवगाण चंदाण चंददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जंबुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खंभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्णविवण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयंति ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पासादवडेंसका बावट्ठिं जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपेढयाओ दो जायणाओ जाव

अर्थ

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन करना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! यहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चन्द्र समान वर्णवाले हैं, चन्द्र समान क्रांतिवाले हैं, यहां चन्द्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चन्द्र द्वीप व चंद्र राजधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइ उप्पलाई चंद वण्णाभाइ चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसाति तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अण्णेसिं बहूइ जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहराति से तेणट्ठेण गोयमा ! चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते ! जम्बूदीवगाणं चंदगाण चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चंददीवाण पुरत्थिमेणं तिरिय जाव अण्णमि जम्बूदीवे २ बारस जोयणसहस्साति उग्गाहित्ता तचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते ! जम्बूदीवगाण सूराणं सूरदीवणाम दीवा

क्रीडा करता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा वह द्वीप अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्र की चंद्रका नामक राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रका नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चंद्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है ?

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता तचेव उच्चत्त आयाम विक्खंभेण परिक्खेवो वेदिया वणसंडा भूमिभागा जाव आसयति पासायवडेंसगाण तचेव पमाण मणिपेढिया सीहासण सपरिवारा अट्ठो उप्पलाइ सूरप्पभाति सूराइयइत्थ देवा जाव रायहाणीओ, सकाण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णम्मि जंबुद्दीवे २ सेस तचेव जाव सूरादीवा ॥२९॥ कहिण भंते ! अब्भिंतरे लवणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा !

अर्थ

अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां सूर द्वीप कहा है इस की लम्बाइ चौडाइ ऊंच इ यावत् सब वर्णन चंद्र द्वीप जैसे जानना इस को भी वेदिका वनखण्ड व भूमिभाग है यावत् वहां देव रहते हैं उस में प्रासादावतंसक है इस का प्रमाण भी पूर्वोक्त जैसे कहना इस में मणिपीठिका, सिंहासन वगैरह परिवार सहित कहना इस में सूर्य की कांति जैसे उत्पल वगैरह उत्पन्न होते हैं इस में सूर्य नामक ज्योतिषी का इन्द्र रहता है इस की राज्यधानी लवण समुद्र के सूर्य द्वीप से पश्चिम में अन्य जम्बूद्वीप में सूर्या नामक राज्यधानी है इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में रहकर जम्बूद्वीप की दिशा में फीरनेवाले

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइं उप्पलाइं चंदवण्णाभाइं चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसंति तेण तत्थ पत्तेयं २ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अण्णेसिं बहूइं जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा ! चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते ! जंबूदीवगाण चंदगाण चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चंददीवाण पुरत्थिमेणं तिरियं जाव अण्णंमि जंबूदीवे २ बारस जोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता तंचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते ! जंबूदीवगाण सूराण सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चन्द्र की चन्द्रा नामक राज्यधानी कहां कही है ! अहो गौतम ! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीच्छौं असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रा नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चंद्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है ?

सूत्र

उगाहित्ता एत्थणं बाहिरि लवणगाण चदाण चदद्दीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभाग जोयणस्स उसित्ता जलंतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजोयणसहस्स इ आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥ ३१ ॥ कहिण भते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमल्लातो वेतियताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइ

अर्थ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चद्र का चद्र द्वीप कहा है वह धातकी खण्ड के तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा ? उस द्वीप से पूर्व में तीर्च्छी असख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी है इसका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३१ ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की, वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

जम्बूमंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं अब्भिंतर लवणगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता जहा जंबुद्दीवगा चंदा तहा भाणियव्वा, णवरिं रायहाणीओ अण्णंमि लवणे, सेसं तचेव ॥ एवं अब्भिंतर लवणगाणं सूराणवि लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साति तचेव सव्वं रायहाणीओवि॥ ३०॥ कहिणं भंते! बाहिरि लावणगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमिल्लातो वेदीयंतातो लवणसमुद्दं पच्चत्थिमेणं बारसजोयण सहस्साइं

अर्थात् लवण समुद्र के आभ्यंतर चंद्र के चंद्र द्वीप कहाँ हैं? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे यहाँ अभ्यंतर लवण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है जैसे जम्बूद्वीप के चंद्रद्वीप हैं वैसे ही कहना विशेष में अन्य लवण समुद्र में राजधानी कहना ऐसे ही लवण समुद्र में बारह हजार योजन पर आभ्यंतर लवण समुद्र के सूर्य का सूर्य द्वीप कहा है इस का सब अधिकार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहाँ कहा है? अहो गौतम! लवण समुद्र की पूर्व दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पश्चिम दिशा में बारह हजार

१ लवण समुद्र के शिखा बाहिर धातकी खण्ड की दिशा में फीरनेवाले

सूत्र

उगाहित्ता एत्थण बाहिरि लवणगाण चंदाण चंददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसंडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभागे जोयणस्स ऊसित्ता जलंताते लवण समुद्द तेण दो कोस ऊसित्ता बारसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेण पउमवरवेइया वणसंडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचेव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साणं दीवाणं पुरत्थिमेण तिरियमसंख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्वं ॥ २१ ॥ कहिणं भंते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चाच्छिमल्लातो वेतियंताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइं

अर्थ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चन्द्रका चन्द्र द्वीप कहा है यह घातकी खण्ड के तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा ? इन द्वीप से पूर्व में तीर्च्छी असंख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी है इनका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्य का सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

धायतिखंडदीवं तेणं अट्ठकूमडाति जोयणाति चत्तालीस य पचाणउति भागो जोयणस्स लवणसमुद्दं तेण दो कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीवाणं पच्चत्थिमेण तिरिय मसंखेज्ज लवण चेव बारसजोयणा तहेव सव्व भाणियव्व ॥२२॥ कहिण भते! धायतिसंडे दीवगाणं चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! धायतिसडस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेदियतातो कालोयण समुद्द बारसजोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थण धायतिसंडदीवगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता सव्वतो समता दोकोसा ऊसिता जलतातो बारसजोयण सहस्साइं

अर्थ

दिशा में बारह हजार योजन जावे तब वहां सूर्यद्वीप कहा है यह धातकी खण्ड की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग के ४० भाग जितना ऊंचा व लवण समुद्र से दो कोस का पानी से ऊंचा है शेष सब राज्यधानी पर्यंत वैसे ही कहना अपने द्वीप से पश्चिम में असंख्यात द्वीप समुद्र में अन्य लवण समुद्र में इन की राज्यधानी है ॥ २२ ॥ अहो भगवन्! धातकी खण्डद्वीप के चंद्र के चंद्रद्वीप कहां कहे हैं! अहो गौतम! धातकी खण्डद्वीप की पूर्व की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां धातकी खण्ड के चन्द्र का चन्द्रद्वीप कहा है वह चारों ओर पानी से दो कोस ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है जैसे पीछे कहा वैसे ही विष्कंभ, परिधि, भूमिभाग, प्रासादा

तहेव विक्खंभो परिक्खेवो भूमिभागो पासायवडेंसया मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा अठा तहेव रायहाणीओ ॥ सकाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि धायतिसडेदीवे सेस तहेव एव धायतिसडगावि सूरादिवावि णवरिं धायतिसडस्स दिवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयाओ कालोयण समुद्द बारसजोयण तहेव सव्व जाव रायहाणीओ सूराण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णमि धायतिसड दीवे सव्व तहेव ॥ ३२ ॥ कहिणं भंते ! कालो-यणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! कालोयणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमि-

अर्थ

वतंसक, मणिपीठिका व परिवार सहित सिंहासन है अर्थ इस का वैसे ही कहना यावत् राज्यधानी की पृच्छा करना अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां धातकी खण्ड में चंद्रका राज्यधानी कही है वर्णन पूर्ववत् जानना ऐसे ही धातकी खण्ड के सूर्यद्वीप का कहना परंतु पश्चिम दिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वगैरह सब वैसे ही कहना राज्यधानी सूर्यद्वीप से पश्चिम में जावे वहां अन्य धातकी खण्ड में है ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र की पूर्वदिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में पश्चिम में बारह योजन जावे वहां कालोद चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है यह चारों ओर पानी से दो कोस का ऊंचा है

छातो चेतियताओ कालोयण समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता एत्यण कालोयण चंदाण चददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलताता सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाण पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वे अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पूर्ववत् जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में है, उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतिगताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूगणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्देसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुद्दीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखोयणदी

अर्थ

में चन्द्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चद्र सूर्य द्वीप क्रम से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चन्द्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणि वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

छातो वेतियताओ कोलायणं समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चदाण चददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिछातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरित्थमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाण पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वे अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्यंत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं. उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेतिगताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजायण सहस्साइ उग्गाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूगणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्द चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखायणदी

अर्थ में चन्द्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चन्द्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उस से आगे के समुद्र में हैं और समुद्र के चन्द्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, उन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणि वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चदाण चददीवा, सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलंताओ सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालोयण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओ सगाए दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वे अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्यंत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं, उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चात्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जबुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खर वरुणे खीर घयखोयणदी

अर्थ में चन्द्रद्वीप पूर्वदिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चन्द्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चन्द्र सूर्य द्वीप उस से आग के समुद्र में है और समुद्र के चन्द्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, उन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चन्द्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वरद्वीप, नन्दीश्वर

चंदाण चंदाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ त चेव सव्वं एवं सूराणवि णवर देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियंताओ देवोदगं समुद्दं पुरत्थिमेणं बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता रायहाणीउ सयाण २ पुरत्थिमेण समुद्दं असंखेज्जाइं जोयण सहस्साइं एवं णागे जक्खे भूतेवि चउण्हं दीव समुद्दाणं ॥ २५ ॥ कहिणं भंते ! सयंभूरमणदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! सयंभूरमणस्सदीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयंतातो सयंभूरमणोदगं समुद्दं बारस जोयण सहस्साइं तहेव रायहाणीतो सगाणं २ दीवाणं पुरत्थिमेणं सयंभूरमणोदगं समुद्दं असंखेज्जाइं

यहां सूर्य द्वीप कहा है और द्वीप से पूर्व के समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां उनकी सूर्या नामक राज्यधानी कही है ऐसे ही नागद्वीप, नागसमुद्र, यक्षद्वीप, यक्षसमुद्र भूतद्वीप व भूतसमुद्र का जानना ये चारों द्वीप समुद्र समान जानना ॥२५॥ अहो भगवन्! स्वयंभूरमण द्वीप के चन्द्र का चन्द्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण द्वीप की पूर्व की वेदिका से स्वयंभूरमणोदक समुद्र में बारह हजार इसी क्रमसे राज्यधानी पर्यंत कहना अपने द्वीपसे पूर्वमें स्वयंभूरमणोदक समुद्रमें असंख्यात हजार योजन जावे तब उनकी राज्यधानी कही है ऐसे ही सूर्य का जानना परंतु यहां स्वयंभूरमण समुद्रकी पश्चिम की

जोयण तहेव एव सूराणवि, सयभूरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो रायहाणीओ सकाण २ दीवाण पच्चत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असंखेज्जा सेसं तहेव ॥ कहिंण भंते! सयभूरमणसमुद्दकाण चदाण चददीवा पण्णत्ता? गोयमा! सयभूरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयतातो सयभूरमण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता सेस तचेव, एव सूराणवि, सयभुरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयतातो रायहाणीउ सकाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असंखेज्जाइ सेस तहेव ॥३६॥ अत्थिण भंते ! लवणसमुद्दे वेलधरातिवा णागरायाति अग्घातिवा सिहातिवा

अर्थ

वेदिका से जानना इस की भी राज्यधानी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयभूरमण समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां लग कहना अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहां है ! अहो गौतम ! स्वयभूरमण समुद्र की पूर्व की वेदिका से बारह हजार योजन स्वयभू रमणसमुद्र में जावे वहां चंद्रद्वीप कहा है वगैरह शेष सब पूर्ववत् ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु यहां स्वयभूरमणसमुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना राज्यधानी अपने द्वीप से पूर्व में स्वयभूरमण समुद्र में असंख्यात योजन जावे वहां शेष सब वैसे ही कहना यावत् वहां सूर्य देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !

लवण मुद्दे अत्थि वेल विज्झातिवा हा वुड्ढीतिवा ? हता अत्थि ॥ जहण भंते ! लवण समुद्दे अत्थि वेल धरातिवा णागरायातिवा अग्घा सिहा विज्झातिवा हासवड्ढीतिवा तहाण बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलधराइवा णागरायातिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्झातिवा हासवुड्ढीतिवा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥३७॥ लवणेण भंते ! समुद्द किं ऊसितोदगे कि पच्छडोदगे खुभियजले कि अखुभियजले ? गोयमा ! लवणेण समद्द ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे, खुभियजले नो अखुभियजले ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थेडोदगे

लवण समुद्र में वेलंधर, नाग राजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि वगैरह क्या है ? हां गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में वेलंधर, नागराजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि है वैसेही बाहिर के समुद्र में क्या वेलंधर, नागराजा, अग्र शिखा, नमण ग्राम व वृद्धि है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुच्छ ऊंचा शिखर वाला पानी है अथवा विस्तारवंत है, क्या वायु से पानी क्षुब्ध होता है अथवा अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावाला है, परंतु प्रस्तारवंत नहीं है वायु से क्षुब्ध पानी है परंतु अक्षुब्ध नहीं है अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परंतु प्रस्तारवंत नहीं है, वायु से क्षुब्ध है परंतु

खुभियजले नो अक्खुभियजले तहाणं बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा नो पत्थडोदगा खुभियजला नो अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगाणं समुद्दाणं नो उसितोदगा पत्थडोदगा, नो खुभियजला अक्खुभियजला, पुण्णा पुण्णपमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताये चिट्ठति ॥ ३८ ॥ अत्थिणं भंते ! लवण समुद्दे बहवे उराला बलाहका संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति ? हंता अत्थि ॥ जहाणं भंते ! लवण समुद्दे बहवे उराला बलाहका संसेयंति समुच्छंति वासं वासंति बाहिरएसु नो तिणट्ठे समट्ठे॥ ३९ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं

अथ अक्षुब्ध नहीं है वैसे ही क्या बाहिर के असंख्यात समुद्र का पानी ऊंचा शिखरवन्त, प्रस्तारवत क्षुब्ध व अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! बाहिर के कालोद समुद्र प्रमुख का पानी ऊंचा शिखरवन्त नहीं है, परंतु प्रस्तारवन्त है वायु से क्षुब्ध नहीं है परंतु अक्षुब्ध शांत है क्यों कि इन में पाताल कलश नहीं हैं, यह पानी से परिपूर्ण भरे हुवे हैं पूर्ण प्रमाण भरे हैं, परिपूर्ण घट जैसे भर हुवे हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में बहुत अप्कायरूप मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षते हैं ? हां गौतम ! वैसे ही उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं जैसे लवण समुद्र में बहुत मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं वैसे ही क्या बाहिर के समुद्र में मेघ उत्पन्न होवे हैं व वर्षा करते हैं ? यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ ३९ ॥

चिट्ठइ बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति? गोयमा! बाहिरएसुण समुद्द बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चति बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठति ॥ ४० ॥ लवणेण भंते ! केवतिय उव्वेह परिवुड्डिए पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स समुद्दस्स उभउ पासिं पचाणउतिं २ पदेसे गता पएस उव्वेह परिवुड्डिए पण्णत्ते पचाणउतिं २ वालग्गाइं गता वालग्ग उव्वेह परिवुड्डिते पण्णत्ते, एव पचाणउति २ लिक्खगता लिक्ख उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घडे जैसे भरे हुवे हैं अहो गौतम! बाहिर के समुद्र में बहुत अप्काय के जीव मेघ-वृष्टि बिना उत्पन्न होते हैं व चवते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र भरे हुवे हैं यावत् परिपूर्ण घट समान हैं ॥४०॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र की गहराइ में कितनी वृद्धि होती जाती है? अहो गौतम! लवण समुद्र के दो बाजुम (जम्बूद्वीप व धातकी खण्ड) अदर ९५ ९५ प्रदेश जावे तब एक प्रदेश ९५-९५ वालाग्र जावे तब एक वालाग्र गहराइ वृद्धि पाती है ऐसे ही ९५-९५ लिख जावे तब एक लिख, ऐसे ही यूका, यवमध्य, अगुली, विहस्ति, हाथ, कुक्षि धनुष्य, गाउ, योजन, सब योजन की

परिवड्डिए जूया अवमज्झे अगुलि विहत्थिरयणी कुच्छि धणु उव्वेह परिवड्डीए गाउय जोयण जोयणसय जोयण सहस्साइ गता जोयण सहस्स उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते ॥ ४१ ॥ लवणेण भते ! समुद्द केव तिय उस्सेह परिवड्डिये पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभउपासिं पचाणउति २ पदसे गता सोलस पदेसे उस्सेध परिवुड्डिते पण्णत्त ॥ लवणस्सण समुद्दस्स एतेणव कमेण जाव पचाणउति जोयण सहस्साइ गता सोलस जोयण सहस्साइति उस्सेह परिवुड्डिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भत ! समुद्दस्स के महालये गोतित्थे पण्णत्त ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभयोपासिं पचाणउतिं २ जोयण सहस्साइ गोतित्थे पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भते !

गहराइ जानना ९५ हजार योजन जावे तब एक हजार योजन की गहराइ मानना ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् लवण समुद्र की शिखा कितनी ऊंची है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दोनों बाजु से ९५ ९५ प्रदेश अदर जावे तब १६ प्रदेश शिखा ऊंची है, इसी क्रम से ९५-९५ हजार योजन अदर जावे तब १६ हजार योजन शिखा ऊंची है अहो भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? (गोतीर्थ सो पानी का चढाव उतार) अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजु ९५-९५ हजार योजन में गोतीर्थ है अहो भगवन् ! लवण समुद्र में गोतीर्थ रहित समपानी कितने क्षेत्र में है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन के चक्रवाल

सव्वग्गेण पण्णत्ते कम्हाण भंते ! लवणसमुद्दे जम्बुद्दीवे २ नो उवीलेति नो उप्पीलेइ नोचेव एक्कोदग करेइ ? गोयमा ! जम्बूदीवेण दीवे भरहएरवतेसुवासेसु अरहंत चक्कवट्टि बलदेवावासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणासमणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया पगति उवसता, पगातिपयणुकोह माण माया लोभ मिउमद्दव सपन्ना अलीणा भद्दगा विणीता तेसिण पणिहाए लवणेसमुद्दे जम्बूदीवे नो वीलति नो उप्पलेति नाचेवण एक्कोदक करेति। गगा सिंधुरत्ता रत्तवईसु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाए जाव पलिओवमठितीयाओ

मलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरवत क्षेत्रमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव, जंघाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है और दूसर भद्रिक व विनित प्रकृतिवाले, स्वभाव से ही क्रोध, मान, माया व लोभ पतले करने वाले, मृदता सपन्न, वैराग्य सपन्न ससार में अलिप्त पने मनुष्यों की नेश्राय से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र पानी नहीं डालता है, पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है और भी गगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अधिष्ठायक देव महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं उन की नेश्राय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है और भी चुल्लहिमवत व शिखरी वर्षधर पर्वतमें महर्द्धिक देव रहते

जाव नो चेवण एकोदय करेति ॥

परिवसति, तासिण पणिहाय लवण समुद्द जाव नो चेवण एकोदय करेति ॥ हेमवयएरन्नवएसु चुल्लहिमवंत सिहरिसु वासधरपव्वतेसु देवा महिड्डिया तेसिं पणिहाय हेमवयएरन्नवएसु वासेसु मणुया पगतिभद्दगा रोहिता रोहितंससुवण्णकूलरुप्पकूलासु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाओ तासिं पणिहाय सद्दावति वियडावति वट्टवेयड्ड पव्वतेसु देवा महिड्डिया जाव पलितोवमठितीया पण्णत्ता महाहिमवंत रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्डिया जाव पलिउवम ठितीयाय हरिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभद्दगा, गधावातिमालवंत परितातेसु वट्टवेयड्ड पव्वतेसु देवा महिड्डिया णिसढ णिलवंतेसु वासहर पव्वएसु

उनकी नेश्राय से लवण समुद्रका पानी नहीं आता है, हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव से भद्रिक विनीत है इन के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता है और भी रोहिता, रोहितसा, सुवर्णकुला व रूपकुला इन चार नदियों के महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इनके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है शब्दापाति विकटापाति वृत वैताढ्य पर्वत में महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है महा हिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,

देवा महिड्डिया सव्वाओ दहदेवियाओ भाणियव्वाओ, पउमद्दहाओ तेगिच्छकेसरिद्दहा वसाणेसु देवीयाउ महिड्डिया तासि पणिहाय पुव्वविदेह अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टि बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा, साविगाओ मणुयापगइभद्दगा तसिं पणिहाय लवणे सीता सीतोदगासु सलिलासु देवता महिड्डिया देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया पगतिभद्दगा मंदरे पव्वत देवा महिड्डिया, जंबूएण सुदंसणाए जंबुद्दीवाहिवइअणाढिए णाम देवेमहिड्डिए जाव पलिओवमाठतीए परिवसति, तस्स पणिहाय लवणसमुद्दे णो उवीलेति जाव नोचेवणं एकोदगं करेंति

व विनीत प्रकृति वाले रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है नरकांता नारीकता, हरिकांता व हरिसलिला इन चार नदियों पर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, गंधापाति व माल्यवंत नामक वृत्त वैताढ्य पर्वत में महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभाव से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र का पानी नहीं आता है निषध व नीलवंत वर्षधर पर्वत पर महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभावसे लवणसमुद्रका पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है पद्मद्रह, महापद्मद्रह, पुंडरीकद्रह, महापुंडरीकद्रह, तीगिच्छद्रह केसरीद्रह, इन में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छ देवियों महर्द्धिक हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी

अदुत्तरेणं गोयमा ! लोगठिति लोगाणुभावे जण्णं लवणेसमुद्दे जंबूद्दीवं णो उवीलेति णो उप्पीलेइ णो चेवणं एक्कोदगं करेति ॥ ४५ ॥ इति मंदरोद्देसो समत्तो ॥ लवणेणं समुद्दे धायइसंडे नामदीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठति ॥ १ ॥ धायतिसंडेणं भंते ! किं समचक्कवाल संठिए विसमचक्कवाल संठिए ? गोयमा ! समचक्कवाल संठिए नो

नहीं आता है सीता सीतोदा महा नदियों में महर्द्धिक देवियों रहती हैं, इन के प्रभाव से पानी नहीं आता है देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के युगलिये मनुष्य भद्रिक प्रकृतिवाले यावत् विनीत प्रकृतिवाले हैं, इन के प्रभाव से पानी यहां नहीं आता है मेरु पर्वतपर महर्द्धिकदेव रहते हैं उनके प्रभाव से पानी नहीं आता है, जम्बू सुदर्शन वृक्षपर जम्बूद्वीप का अधिपति अनाधृत नामक देव रहता है इसके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, लवण समुद्र जम्बूद्वीप को पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है अथवा अहो गौतम ! एसी लोकस्थिति लोकानुभाव है कि जिस से लवण समुद्र जम्बूद्वीप में पानी की रेल नहीं लाता है, उस को पीडा नहीं करता है और जलमय नहीं बनाता है यह लवण समुद्र का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ ४५ ॥ यह तीसरी प्रतिपत्ति में मंदर नामक उद्देशा संपूर्ण हुवा लवण समुद्र की चारों ओर चलयो खण्ड नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थानवाला रहा हुवा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

ओयणसते तिण्णिय कोसे धारस्सय २ आबाहाये अंतरे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ धायइ संडस्सणं भंते! दीवस्स पदेसा कालोयणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥ तेणं भंते! किं धायइसंड दीवे कालोयणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे णो खलु ते कालोयणे समुद्दे, एवं कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडेणंदीवे जीवा उद्दाइत्ता २ कालोयणे समुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायंति अत्थेगइया नो पच्चायंति, एवं कालोयणेवि, अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

योजन और तीन कोश का अंतर कहा है ॥६॥ अहो भगवन् धातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश कालोद समुद्र को क्या स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्श कर रहे हैं अहो भगवन् ! वे धातकी खण्ड द्वीप के हैं या कालोद समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे धातकीखंड द्वीप के हैं परंतु कालोद समुद्र के नहीं हैं अर्थात् वह भाग धातकी खण्ड का है परंतु कालोद समुद्र का नहीं है ऐसे ही कालोद समुद्र की पृच्छा करना अहो भगवन्! धातकी खण्ड द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं ऐसे ही कालोदधि समुद्र के कितनेक जीव धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! धातकी

सूत्र

एवं वुच्चइ धायइसंडेदीवे २ ? गोयमा! धायइसंडेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे धायइ रुक्खा धायइवणा धायइसंडा णिच्च कुसुमिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति धायइ महाधायइ रुक्खेसु, सुदंसणे पियदंसणे दुवेदेवा महिड्डिया जाव पलिओवम-ठितीया परिवसंति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरंचण गोयमा ! जाव णिच्च ॥ ८ ॥ धायइसंडेण भंते! दीवे केवति चंदा पभासिंसुवा? कति सूरिया तवइंसुवा २, कइमहग्गहाचार चरिंसुवा २, कइणक्खत्ताजोग जोयंसुवा २, कइतारागण कोडाकोडीओ

अर्थ

खण्डद्वीप ऐसा क्यों नाम दिया गया ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप में स्थान २ पर बहुत धातकी वृक्ष, धातकी वन, धातकी वनखण्ड सदैव कुसुमित यावत् रहते हैं धातकी खण्ड के पूर्वार्ध में उत्तर कुरुक्षेत्र में धातकी वृक्ष है और पश्चिमार्ध उत्तर कुरुक्षेत्र में महा धातकी वृक्ष है वह जम्बू वृक्ष जैसे हैं यावत् शाश्वत हैं वहां सुदर्शन व प्रियदर्शन नामक दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं अहो गौतम ! इस से इस का नाम धातकी खण्डद्वीप कहा है और भी अहो गौतम! इसका नाम शाश्वत है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप में कितने चन्द्र ने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? कितने सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, कितने महाग्रह चार चरे, चरते हैं व चरेंगे, कितने नक्षत्रने

सोमसोमिसुवा ३ ? गोयमा ! बारस चदा पभासिंसुवा, एव चउवीस, ससिरविणो णक्खत्त सताय तिण्णि छत्तीसा, एगच सहस्स छप्पण धायइ सह अट्ठेव सय-सहस्सा तिण्णि सहस्साइ सत्तयसयाइ धायइसंडदीवे तारागण कोडाकोडीण सोमसुवा ३ ॥ ९ ॥ धायइसंडेण दीव कालोदे नाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाण संठिते सव्वओ समता संपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ कालोदेण भंते! समुद्द किं समचक्कवाल सठाण संठिते विसमचक्कवाल सठाण संठिते? गोयमा! समचक्कवाल सठाण संठिते णो विसम चक्कवाल सठाण संठिते ॥ कालोदेण भंते! समुद्द केवतिय

योग किया, करते हैं व करेंगे, कितने कोडाकोडतारा शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ? अहो गौतम ! बारह चंद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे बारह सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, यों सब मीलकर चंद्र सूर्य २४ हुए तीनसो छत्तीस नक्षत्र एक हजार छप्पन ग्रह, आठ लाख तीन हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारा शोभित हुवे, शोभते हैं व शोभित होंगे ॥ ९ ॥ धातकी खण्डद्वीप की चारों ओर कालोद समुद्र वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला रहा हुवा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है, अहो भगवन् ? कालोद

चक्कवाल विक्खंभेणं केवतिय परिक्खेवेण पन्नत्ते? गोयमा! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं एक्काणउतिं जोयणसय सहस्साइं सत्तरिंसहस्साइं छच्चपंचुत्तरे जोयणसये किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेणय दोण्णवि वण्णओ ॥ १० ॥ कालोयणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजए विजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहिणं भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजय णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदसमुद्दस्स पुरच्छिमपेरंत पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीतोदाए महानदीए उप्पिं एत्थणं

अर्थ

समुद्र की कितनी चक्रवाल चौडाइ व चक्रवाल परिधि कही ? अहो गौतम ! उस की आठ लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ कही और एकानवे लाख, सत्तरह हजार, छसो पचतर योजन से कुछ अधिक परिधि कही है, [सब आभ्यंतरद्वीप समुद्र की मीलकर परिधि जानना] इसकी चारों ओर वनखण्ड व एक पद्मवर वेदिका है दोनों वर्णन योग्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के चार द्वार हैं जिन के नाम विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का विजयद्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पूर्व पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध से पश्चिम में सीतोदा महानदी ऊपर कालोद समुद्र का विजयद्वार कहा है यह आठ योजन का ऊंचा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव प्पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोगस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंत नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदय समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है शेष सब वैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

दाहिणओ एत्थण कालोयस्स समुद्दस्स अपराजिए नामंदारे पण्णत्ते सेसं तंचेव ॥ कालो-
दस्सणं भंते ! समुद्दस्स दारस्सय २ एसणं केवतियं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा !
बावीस सय सहस्सा बाणउतिं खलुभवे सहस्साइं छच्चसया छयाला दारंतरं तिण्णि
कोसाये दारस्सय २ अबाहा अंतरे पण्णत्ते॥कालोदस्सणं भंते ! समुद्दस्स पदेसा पुक्खर
वरदीवं तहेव,एवं पुक्खरवरदीवस्सवि जीवा उद्दाइत्ता तहेव भाणियव्वा॥ ११॥सेकेणट्ठेणं
भंते ! एवं वुच्चइ कालोयणसमुद्दे ? कालोयणसमुद्द गोयमा ! कालोदणस्सणं समुद्दस्स
उदके आसलं मासले पेसले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते ॥ काल

अर्थ

द्वार का परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! बावीस लाख बाणवे हजार छ सो छियालीस (२२९२६४६) योजन तीन कोश का प्रत्येक द्वार पर अंतर कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रदेश पुष्करवर द्वीप के प्रदेशको स्पर्श कर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् पुष्करवर द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्रमें कितनेक उत्पन्न होवे हैं यों सब कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! कालोद ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र का पानी आस्वादनीय है, पुष्ट, चमत्कार, मनोहर है इस का वर्ण काला है, उडद के वर्ण जैसा है स्वाभाविक पानी के रस समान है इस में काल व महा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्यण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयस्स समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित नाम द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है शेष सब पैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

वाल सठाण सठिते॥ पुक्खरवरेण भते ! दीवे केवइय चक्कवाल विक्खभेण, केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसजोयण सयसहस्साइ चक्कवाल विक्खभेण एगा जोयण कोडी बाणउति खलु सयसहस्सा अउणाणउतिं भवसहस्साइ अट्ठसया चउणउयाय परिरओ पुक्खरवरस्स,सण पउमवर वेदियाए एक्केणय वणसडेण दोण्हवि वण्णओ, ॥१५॥ पुक्खरवरस्सण भत ! कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिदारा पण्णत्ता तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिते ॥ कहिण भते ! पाक्खरवरस्स दीवस्स विजये णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खरवर दीव पुरच्छिमापेरते पुक्खरोद समुद्द पुरच्छिमद्धस्स पच्चच्छिमेण एत्थण पुक्खरवर दीवस्स विजयेणाम

अर्थ

सोलह लाख योजन चक्रवाल चौडाइवाला है एक क्रोड बाणवे लाख, नेवासी हजार, आठ सो चोराणवे योजन की परिधि है यह पुष्करवर द्वीप एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड से चारों ओर लपेटाया हुवा है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! पुष्करवर द्वीप से पूर्व के अंत में पुष्करोद समुद्र के पूर्वार्ध से पश्चिम में पुष्कर द्वीप का विजय द्वार कहा है यों चारों द्वार का

महाकालायएत्थे दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवमति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ १३ ॥ कालोयणेण भते ! समुद्दकति चदा पभासिसुवा ३, पुच्छा ? गोयमा ! कालोयणेण समुद्दे बायालीस चदा पभासिसुवा ३, बायालीसच दिणगरादिता, कालोधिम्मि एते चरति सबध लेसगा णक्खत्ता सहस्स एगमग छावत्तर चसयमुणेयव्व छसमता छण्णउया महग्गहा तिण्णिय सहस्सा अठावीस कालोदहिमि बाराइसतसहस्साइ नवसय पण्णास तारागण कोडीकोडी सोभेसुवा ३, ॥ १४ ॥ कालोयण समुद्द पुक्खरवरेणाम दीवे वट्टेवलियागार सठाण सठिते सव्वतो समता सपारिक्खित्ता तचेव जाव समचक्कवाल सठाण सट्ठिते णोविसम चक्क-

काल ऐसे दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं इस लिये कालोद नाम कहा है यावत् नित्य है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में कितने चन्द्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे वगैरह सब पृच्छा करना अहो गौतम ! कालोद समुद्र में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य, ११७६ नक्षत्र, ३६९६ ग्रह व २८१२९५० क्रोडाक्रोड तारागण हैं ॥१४॥ कालोद समुद्रकी चारों ओर पुष्करवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है यावत् वह समचक्रवाल है परन्तु विषम चक्रवाल नहीं है । अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप कितना चक्रवाल चौडाइ में है, कितना चक्रवाल परिधि में है ? अहो गौतम !

परिवसाति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चति पुक्खरवरदीवे २ जाव णिच्चे ॥१८॥ पुक्खरवरेण भते! दीवे केवइया चदा पभासिंसुवा,एव पुच्छा? गोयमा! चोयाल चदसय चउयालचेव सूरियाणसय पुक्खरवरमिदीवे चरति, एते पभासेत्ता, चत्तारि सहस्साइ बत्तीसचेवहोंति णक्खत्ता, छच्चसया बावत्तरमहग्गहा, बारस सहस्सा छण्णउइ सय सहस्सा चत्तालीस भवे सहस्साइ चत्तारिसया पुक्खरवरे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३, ॥ १९ ॥ पुक्खरवरदीवस्सण बहुमज्झदेसभाए, एत्थण माणुसुत्तारे नाम पव्वते पण्णत्ते, वट्टे वलयागार सठाण सठिते जेणेव पुक्खरवरदीव दुहा विभयमाणे २ चिट्ठति अब्भितर पुक्खरवरद्धच बाहिर पुक्खरवरद्धच,॥अब्भितर

अर्थ

लिये पुष्कर वरद्वीप कहा गया अथवा इस का नाम शाश्वत है ॥ १८ ॥ पुष्करवरद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा? अहो गौतम, १४४ चद्र, १४४ सूर्य ४०३२ नक्षत्र, १२६७२ महाग्रह और ९६४४४०० क्रोडा क्रोड तारा वहां सोभते हैं यह पुष्करवरद्वीपका कथन हुवा ॥१९॥ पुष्करवर द्वीप के मध्य भाग में मानुषोत्तर पर्वत वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला पुष्कर वरद्वीप के दो भाग करके रहा हुवा है जिन के नाम आभ्यतर पुष्करवरार्ध और बाह्य पुष्करवरार्ध अहो भगवन् ! आभ्यतर पुष्करार्ध कितने चक्रवाल चौडाइ में है और कितनी परिधि है ? अहो गौतम ! आठ हजार योजन चक्रवाल

दारे पण्णत्ते ? तचेव सव्वं, एव चत्तारिविदारा सीया सीयोदा णत्थि भाणियव्वाओ॥ पुक्खरवरस्सणं भंते! दीवस्स दारस्सय २ एसण केवतिय अबाहाए अतरे पण्णत्ते? गोयमा! अडयाल सय सहस्सा बावीस खलु भवे सहस्साइ अगुणुत्तराय चउरो दारतर॥१६॥ पुक्खरवरस्स पदेसा दोण्हवि पुट्ठा जीवा दोसुवि भाणियव्वा ॥ २७ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुचइ पुक्खरवरदीवे ? गोयमा ! पुक्खरवरेण दीवे तत्थ २ देसे२ तहिं२ बहवे पउमरुक्खा पउमवणसडा णिच्च कुसुमिता जाव चिट्ठति, पउम महा पउमरुक्खेसु तत्थ पउम पोंडरियाणामं दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितिया

वर्णन करना यहां सीता सीतोदा नदी कहना नहीं पुष्करवर-द्वीप के प्रत्येक द्वार का कितना२ अंतर कहा है? अहो गौतम ! ४८,२२,४६९ योजन जितना प्रत्येक द्वार का अंतर कहा है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वरद्वीप व पुष्कर वर समुद्र दोनों स्पर्श कर रहे हैं क्या ! वगैरह सब पूर्वोक्त प्रकार कहना दोनों मीवों मरकर दोनों में परस्पर उत्पन्न होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वर ऐसा नाम क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! पुष्कर वरद्वीप में बहुत पद्म वृक्ष व पद्म वनखण्ड कुसुमित यावत् रहते हैं पद्म व महापद्म वृक्षपर पद्म व पुंडरीक नाम के महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं इस

तिण्णिसया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणतु भवे, सोलाइ पुवेसहस्साइ, अडयाल सयसहस्सा ॥२॥ बावीस खलु भवे सहस्साइ दोविसया पुक्खरद्धे, तारागण कोडीकोडीण ॥ ३ ॥ सोभसुवा ३ ॥ २१ ॥ समयक्खेत्तेण भंते ! केवतिय आयाम विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीस जोयण सत सहस्साइ आयाम विक्खंभेण, एगा जोयण कोडी जाव अब्भितर पुक्खरद्ध परिरया से भाणियव्वा जाव अउउत्तरण्ण ॥ २२ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति मणुस्सखेत्ते ? गोयमा ! माणुसखेत्तेण तिविहा मणुस्सा परिवसति तजहा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अतर दीवगा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति माणुसखेत्ते २ ॥ अदुत्तरचण

अर्थ

पुष्करार्द्ध द्वीप में ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, छ हजार तीन सो छत्तीस महा ग्रह, दो हजार सोलह नक्षत्र, अड़तालीस लक्ष बावीस हजार दो सो क्रोडाक्रोड तारा हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! समय क्षेत्र कितना लम्बा चौड़ा व परिधि युक्त है ? अहो गौतम ! समय क्षेत्र ४५ लक्ष योजन का लम्बा चौड़ा है और [illegible] पुष्करार्द्ध जितनी परिधिवाला है अर्थात् १४२३०२४९ योजन की परिधि है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र क्यों कहा है ? अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र में तीन प्रकार के मनुष्य रहते हैं तद्यथा-कर्म भूमक, अकर्म भूमक व अंतर द्वीपक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा यावत

पुक्खरवरद्धेणं भंते ! केवतियं चक्कवालेणं विक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठजोयण सय सहस्साइं चक्कवाल-विक्खंभेणं, कोडीराय लीसा तीस दो सहस्सिया ३ गुणपण्णा पुक्खरमद्ध गारं पय से मणुस्स खेत्तस्स परिरयओ ॥ स केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति अब्भितर पुक्खरद्धे ? अब्भितर पुक्खरद्धे गोयमा ! अब्भितर पुक्खरद्धेणं माणुसुत्तरेणं पव्वएणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते से तेणट्ठेणं गोयमा ! अब्भितर पुक्खरद्धे, अदुत्तरं चणं जाव णिच्चे ॥ २० ॥ अब्भितर पुक्खरद्धेणं भंते ! केवतिया चंदा पभासिंसुवा ३, एवं पुच्छा जाव तारागण कोडा कोडीओ ? गोयमा ! बावत्तरिं चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासेंता ॥ १ ॥

चोराणवे लाख तीस हजार दो सो गुणपचास योजन की आभ्यंतर पुष्करार्ध की परिधि जानना इतनी ही मनुष्य क्षेत्र की परिधि जानना अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्करार्ध ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! आभ्यंतर पुष्करवर द्वीप के चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत रहा हुवा है इसलिये आभ्यंतर पुष्कर द्वीप कहा यावत् नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्कर द्वीप में कितने चंद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ! अहो गौतम ! आभ्यंतर

सूत्र

तारग्ग ज भणिय मणुस्सम्मि लोगम्मि॥चार कलबुया पुप्फ, सठिय जोइस चरति॥५॥ रविससि गहनक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ॥ जेसिं नामागोत्त नपागया पणवेहिं॥६॥छावट्ठि पिडयाइ, चदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ॥ दो चदा दोसूरा हवति एक्कक्कएपिडए ॥७॥ छावट्ठि २ पिडगाइ, नक्खत्ताण मणुयलोगमि छप्पन्न नक्खत्ताय, हुति इक्किक्कए पिडए ॥ ८ ॥ छावट्ठि पिडगाइ महग्गहाणतु मणुयलोयमि, छावत्तर गाहसय होइउ एक्कक्कए पिडए ॥ ९ ॥ चत्तारिय पतीओ चदाइच्चाय मणुयलोगमि, छावट्ठीय२ होइ एक्केकियापती ॥ १० ॥ छप्पण पतीतो, णक्खत्ताणतु मणुयलोगमि॥

अर्थ

इतना तारा समुह कहा ॥ ४ ॥ मनुष्य लोक में जो ज्योतिषी देव के विमान हैं वे सब कदम्ब पुष्प के सस्य न वाले नीचे सकुचित व ऊपर विस्तारवत आधा कविठ जैसे आकारवाले हैं ॥ ५ ॥ सूर्य, चद्रमा ग्रह नक्षत्र व ताराओं जो मनुष्य लोकमें कहे इनका नाम व गोत्र प्रगटपने नहीं कह सकते हैं ॥६॥ इस मनुष्य लोक में चद्र व सूर्य के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में दो चद्र दो सूर्य हैं ॥ ७ ॥ इस मनुष्य लोक में नक्षत्र के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में छप्पन २ नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥ मनुष्य लोक में महा ग्रह के ६६ पिटक हैं और एक २ पिटक में १७६ महा ग्रह हैं ॥ ९ ॥ चद्र व सूर्य की मिलकर चार पक्ति हैं एक २ पक्ति में ६६-६६ चद्र व सूर्य हैं ॥ १० ॥ मनुष्य लोक में नक्षत्र की ५६ पक्ति

गोयमा ! समयक्खित्ते सासये जाव निच्चे ॥ २३ ॥ मणुस्स खेत्तेण भंते! कइचंदा पभासेंसुवा १, कइसूरा तवइंसुवा २, गोयमा ! बत्तीस चंदसय बत्तीस चेव सुरियाणसय सयल मणुस्सलोय चरंति एए पभासेंता ॥ १ ॥ एक्कारस सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाणतु ॥ छच्चसया छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णिय सहस्सा ॥२॥ अट्ठासीइ सत सहस्सा, चत्तालीस सहस्समणुयलोगम्मि, सत्तयसता अणुणा, तारागण कोडी कोडीण ॥ ३ ॥ सोमसवा ३ एसो तारापिंडो सव्वे समासेण मणुयलोगम्मि, बहिया पुणताराओ जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥ ४ ॥ एवइय

मनुष्य क्षेत्र है अथवा अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में कितने चन्द्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! सब मनुष्य लोक में १३२ चंद्र व १३२ सूर्य हैं [२ जम्बूद्वीप, ४ लवण, समुद्र, १२ धातकी खण्ड, ४२ कालोद समुद्र व ७२ पुष्करार्ध द्वीपके यों सब मीलकर १३२ होते हैं] अग्यारह हजार छसो सोल महाग्रह, तीन हजार छसो छन्नु नक्षत्र, अठयासी लाख चालीस हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारागण हैं यह ज्योतिषी चिह्न मनुष्य लोक में संक्षेप से जानना और बाहिर असंख्यात तारागण श्री तीर्थंकर भगवानने कहे हैं

मणुस्साणं ॥१६॥ तेसिं पविसताण, तावक्खेत्त तु वढ्ढतेणियमा ॥ तेणेव कम्मेण पुणो, परिहायति निक्खमताणं ॥ १७ ॥ तेसिं कलबुया पुप्फसंठिता, होंति तावक्खेत्त-पहा, अतोसंकोडा बाहिं वित्थडा चद सूराण ॥ ८ ॥ केण वढ्ढति चदो, परिहाणी केणहाति चदस्स॥कालोवा जाण्हावा, केणणुभावेण चदस्स ॥ १९ ॥ किण्ह राहुवि-माण, णिच्च चदण होइ अविरहिय ॥ चउरंगुलमप्पत्त, हेट्ठा चदस्स त चरति ॥२०॥ बावट्ठिं२ दिवस, दिवसेतु सुक्कपक्खस्स॥जं परिवड्ढ चदो, खवेति तचेव कालेण ॥२१॥

अर्थ

दुःख के फल की प्राप्त होती है ॥ १६ ॥ चद्र सूर्यादिक बाह्य मडल मे ज्यों ज्यों आभ्यतर मडल में प्रवेश करते हैं त्यों त्यों तापक्षेत्र बढता है, और दिन मान भी बढता है, और वेही चद्र सूर्य आभ्यतर मडल से नीकलते हैं त्यों त्यों ताप क्षेत्र कम होता है और रात्रिमान बढता है ॥ १७ ॥ सूर्यादिकका तापक्षेत्र कदबवृक्ष के पुष्पके आकारका है अथवा अर्ध तू गाडीके आकारवाला अदर मेरु पर्वत पास सकुचित और बाहिर लवण समुद्रकी पास विस्तारवत है ॥१८॥ अहो भगवन्! किस कारनसे शुक्लपक्ष में चद्रमा वृद्धि होता है, व किस कारन से कृष्ण पक्ष में चद्रमा हीन होता है, और किस कारन से एक पक्ष कृष्ण व एक पक्ष शुक्ल कहा है? ॥१९॥ अहो गौतम! कृष्ण, अजन रत्नमय राहुका विमान चद्र विमान नीचे चार अगुल की दूरी पर चद्रमा साथ विरह रहित चलता है ॥ २० ॥ चद्र विमान के ६२ भाग करे वैसे

छावट्ठं छावट्ठीयं होइ एक्केकिया पंत्ती ॥११॥ छावत्तर गहाण पंतिसयं होइ मणुयलोगंमि ॥ छावट्ठी छावट्ठी होइ एक्केकिया पंती ॥ १२॥ तेमेरु मणुपरियडंति, पयाहिणावत्त मंडलासव्वे, अणवट्ठिएहिं तेहिं, जोगेहिं चंदसूरा गहगणाय ॥ १३ ॥ णक्खत्त तारागाण, अवट्ठिता मंडलमुणेयव्वा, तेवियपदाहिणावत्त मेवमेरु अणुचरंति ॥ १४॥ रयणियर दिणयराण उड्डेय अहेय संकमोनत्थि॥मंडल संकमण पुण अब्भतर बाहिर तिरिय ॥१५॥ रयणियरदिणयराण णक्खत्ताण महग्गहाणय चार विसेसेण भवेसुह दुक्खवेत्र

है प्रत्येक पंक्ति में ६६–६६ नक्षत्र हैं ॥११॥ मनुष्य लोक में ग्रह की १७६ पंक्ति है प्रत्येक पंक्ति में ६६–६६ ग्रह हैं ॥१२॥ उपरोक्त सब मंडल मेरु पर्वत के चारों ओर प्रदक्षिणा करते हैं अर्थात् क्रम से स्वभाव से ही गति करते हैं वहां चंद्र सूर्य ग्रह अनवस्थित हैं क्यों की यथायोग्य से अन्य मंडल में गमन करते हैं ॥ १३ ॥ और नक्षत्र व तारामंडल अवस्थित हैं अर्थात् उन मंडल में परिभ्रमण नहीं करते हैं वह भी मेरु की आसपास प्रदक्षिणा करते हैं ॥ १४ ॥ चंद्र व सूर्य के ऊपर अथवा नीचे संक्रमण गति नहीं है परंतु अपने मंडल में ही गति है अर्थात् आभ्यंतर व बाहिर के मंडल में तीरछा गमन है ॥ १५ ॥ चंद्र, सूर्य ग्रह व नक्षत्र के चारों की राशि चीकनी है तब वहां मनुष्य लोक में सुख

दीव, चत्तारिय सायरे लवणतोये ॥ धायइ सडे दीवे, बारस चदायँ सूराय ॥ २७ ॥ धायइसडप्पमिई, उद्दिठातिगुणिता भवे चदा॥ आदिल्ल चदसहिता, अणतराणतरे-खत्ते ॥ २८ ॥ रिक्खग्गह तारग्गा, दीवसमुद्दजदिच्छसेणाऊ ॥ तस्स ससीहिंतुगुणित रिक्खग्गह तारगागतु ॥२८॥ बहिरियाओ माणुसनगस्स,चदसूरावट्ठिता ॥ जोगा चदा अभितीजुत्ता॥सुरापुण होंति पूसेहिं।३०। चदातो सूरस्सय,सूरा चदस्स अतर होंति॥पण्णास

अर्थ

चार चद्र,चार सूर्य होते हैं और इस से तीनगुने धातकी खण्डमें बारह चंद्र बारह सूर्य हैं॥२६॥ धातकी खण्ड के आग क द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य को तीनगुना करके पहिले के द्वीप समुद्र के चद्र, सूर्य मीलाना जितना आवे उतनी आगे की सख्या जानना दृष्टान्त—धातकी खण्ड द्वीप में बारह चद्र व बारह सूर्य हैं इन के तीनगुने करने से ३६ होते हैं उस में प्रथम जम्बूद्वीप क दो व लवण समुद्र के चार यों ६ चद्र सूर्य मीलानेसे सब ४२ चद्र व ४२ सूर्य होते हैं इसी तरह आगे भी जानना ॥ २७ ॥ जिस द्वीप समुद्र में नक्षत्र ग्रह व तारा जानने की इच्छा होवे उस द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य की साथ उन के परिवार स गुना करना जैसे लवण समुद्र में चार चद्र हैं प्रत्येक चद्र के २८ नक्षत्र हैं इस से २८×४=११२ लवण समुद्र में नक्षत्र हुवे ॥२८॥ अब मनुष्य क्षेत्र बाहिर चद्र सूर्य का अतर कहते हैं, मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर चद्रमा व सूर्य अवस्थित हैं

पण्णरसात्रिभागेणय, चद्पण्णरसमेव आवरति ॥ पण्णरसविभागेणय, तेणेव कमेण धक्कमाति ॥ २२ ॥ एव वड्ढति चदा,परिहाणि एव होति चदस्स॥ कालोवा जोण्होवा, तणणुभावेण चदस्स ॥ २३ ॥ अतो मणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगाय उववण्णा, पचविहा जोतिसिया चदासूरागह णक्खता॥ २४ ॥ तेणपर जे सेसा, चदाइच्चगहतार णक्खत्ता ॥ णत्थिगतीण विचारो, अवाट्ठिता तेमुणेयव्वा ॥ २५ ॥ एगे जवुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउगुणा होति॥लवणगायतिगुणिया ससिसूरा धायई सडे॥२६॥दो चदा इह

चार २ भाग शुक्ल पक्ष में खुल्ला करता है और ऐसा ही चार भाग कृष्ण पक्ष में राहु अच्छादित करता है अमावास्या के दिन दो भाग खुल्ले रहते हैं ॥ २१ ॥ चद्र विमान के पनरह भाग करे उस में से एक २ भाग प्रतिदिन कृष्ण पक्ष में ढके यों अमावास्या तक सब भाग ढक जावे और शुक्ल पक्ष में एक २ भाग खुल्लाकर दस यों पूर्णिमा में सब मुक्त हो जावे ॥२२॥ इस तरह शुक्ल पक्षमें चद्रमा बढता है व कृष्ण पक्ष में हीन होता है और कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष इसी तरह होते हैं॥ २३ ॥ मनुष्य क्षेत्र में चद्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा ये पांच प्रकार के ज्योतिषी चलनेवाले हैं ॥ २४ ॥ इस से आगे के द्वीप में चद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा अवस्थित हैं इन की गति नहीं है ॥ २५ ॥ अब द्वीप समुद्र गत चद्र सूर्यादिक की संकलना जानने का कारन कहते हैं जम्बूद्वीप में दो चद्र दो सूर्य, इस से दुगुने लवण समुद्र में होने से

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सण पव्वयस्स अंतो मणुया उप्पिं सुवण्णा बाहिं देवा, अदुत्तरंचण गोयमा ! माणुसुत्तर पव्वय मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयंतिवा वीतिवयस्संतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेण गोयमा ! अदुत्तर जाव णिच्च ॥ २६ ॥ जावचण माणुसुत्तरेपव्वए तावचण अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावचण वासेतिवा वासधरातिवा तावचण अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावचण गेहाइवा गेहावणातिवा तावचण अस्सिं लोगेति पवुच्चइ, जावचण गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावचण अस्सिं लोएति पवुच्चइ, जावचण

अर्थ

है वे दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अंदर मनुष्य हैं, उपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, मात्र जंघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

बाहिर परिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सतसहस्साइ छत्तीस सहस्साइ सत चोद्दसोलतर जोयण सते परिक्खेवेण, मज्झे गिरि परिरयेण, एगाजोयण कोडी-बयालीस च सयसहस्साइ चोत्तीसच सहस्सा अट्ठय तेविसा जोयणसते परिक्खेवेण उवरिं गिरिपरिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सयसहस्साइ वत्तीसच सहस्साइ णवय बत्तीसे जोयण सते परिक्खवेण, मूलविच्छिण्णे, मज्झ संखित्ते, उप्पिं तणुये, अतो सण्हे मज्झे उदग्गे बाहिं दरिसणिज्जे इसिंमण्णे सीहणिस्साइ अवध जाव रासिं सठाण साठए सव्व जबूणयामते अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे ॥ उभयो पासिं दोहिं पउमवरवेदियाहिं दोहिं वणसंडेहिं, सव्वतो समता सपरिक्खित्ते, वण्णओ दोण्हिवि॥२५॥

नीचे की परिधि १४२३६७१४ योजन की है बाहिर की बीच की परिधि १४२३४८२३ योजन की है और उपर की परिधि १४२३२९३२ योजन की है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में संक्षिप्त व उपर संकुचित है अदर श्लक्ष्ण है मध्य में ऊंचा व बाहिर देखने योग्य है जैसे सिंह आगे के दो पांव लम्बाकर व पीछे के दो पांव संकुचितकर बैठता है वैसा है अर्धा यव जैसा संस्थान वाला है, सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है दोनो बाजु दो पद्मवर वेदिका व दो वनखण्ड चारों ओर वर्तुलाकार

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सण पव्वयस्स अतो मणुया उप्पिं सुवण्णा बाहिं देवा, अदुत्तरंचण गोयमा! माणुसुत्तर पव्वय मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयतिवा वीतिवयस्सतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेण गोयमा ! अदुत्तर जाव णिच्चे ॥ २६ ॥ जावंचण माणुसुत्तरेपव्वए तावंचण अस्सि लोएति पवुच्चति, जावंचण वासेतिवा वासधरातिवा तावंचण अस्सि लोएति पवुच्चति, जावंचण गेहाइवा गेहावणातिवा तावंचण अस्सि लोगेति पवुच्चइ, जावंचण गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावंचण अस्सि लोएति पवुच्चइ, जावंचण

अर्थ

है ये दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अंदर मनुष्य हैं, ऊपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, मात्र जंघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पडिवासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा साविगाओ मणुया पगति भद्दगाविणीता ताव चाण अस्सिलोएति पवुच्चति जाव चेण समयातिवा आवलियातिवा आणापाणइवा थोवाइवा लवातिवा मुहुत्तातिवा, दिवसातिवा, अहोरत्तातिवा पक्खातिवा मासातिवा उडूतिवा अयणातिवा संवच्छरातिवा जुगाइवा वासातिवा वाससयातिवा, वाससहस्सातिवा, वाससयसहस्सातिवा, पुव्वंगातिवा, पुव्वाइवा, तुडियंगातिवा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णालिए अत्थणिउरे अयुते नउए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियंगातिवा सीसपहेलियातिवा, पलिओवमेतिवा

वगैरह हैं वहांतक मनुष्य क्षेत्र है जहांतक ग्राम यावत् राज्यधानी है वहांतक यह मनुष्य लोक है जहांतक अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, जंघा चारण, विद्या चारण, विद्याधर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका व भद्रिक प्रकृति वाले मनुष्य हैं वहां तक यह मनुष्य क्षेत्र है जहांतक समय, आवलिका श्वासोच्छ्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्रि, पक्ष मास, ऋतु, अयन, संवत्सर युग, वर्ष, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लाख वर्ष, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित ऐसे ही अडड, अवव, हूहूय, उत्पल पद्म, नलिन, अत्थिनिपुर, अयुत, नयुत, पयुत, चूलिका यावत् शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम, सागरोपम,

सागरोवमेतिवा अवसप्पिणीतिवा उसप्पिणीतिवा, तावचण अस्सिलोएति पवुच्चति, जाव चण बादरे विज्जुकारे बायर थणियसद्द ताव चण अस्सि लोगेतिवुच्चति जाव चण बहवे उराले बलाहका संसेयाति समुच्छति वास वासति ताव चण अस्सिलोए, जाव चण बायरे तेउकाए ताव चण अस्सिलोए, जावचण आगरातिवा नदीओतिवा णिधीतिवा ताव चण अस्सिलोएति पवुच्चति, जाव चण अगडातिवा णदीतिवा ताव चण अस्सिलोए, जाव चण चंदोवरागाइतिवा, सूरोवरागाइतिवा चंदपरिएसातिवा, सूरपरिएसातिवा, पडिचंदातिवा, पडिसूरातिवा इंद धणूइवा उदगमच्छेइवा कप्पिहसिताणिवा ताव चण अस्सिलोएति पवुच्चइ; जाव चण चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्ततारारूवेण

अर्थ उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी है वहां लग मनुष्य लोक है जहां लग बादर विद्युत व बादर स्थनित शब्द है वहां लग यह लोक कहा है जहांलग बादर मेघ उत्पन्न होवे व प्रलय होवे वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग बादर तेउकाया है वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग आगर व निधि है वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग अगड नदी वगैरह है वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, चंद्र की चारों ओर कुंडल, सूर्य की चारों ओर कुंडल, प्रतिचंद्र, प्रतिसूर्य, इन्द्रधनुष्य, उदक मत्स्य, व कपि हसित हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा का गमनागमन,

अभिगमण निगमण वुड्डि निवुड्डि अणवट्ठित संठाण संठिती आयंवेज्जति तावचण अस्सिंलोएति पवुच्चति ॥ २७ ॥ अतोण भंते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्डोववण्णगा कप्पोववन्नगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्डोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गतिसमावण्णगा, उड्डमुह कलंबुया पुप्फसठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ? अहो गौतम ! व देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु ज्योतिषी लोक में अपने स्थानों के विमान में उत्पन्न होते हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब-पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

महता महता णट्टगीय वादिय तंति तलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवादितरवेण महया उक्किट्ठ सीहनायबोलकलयल सद्देण, विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा अस्थ पव्वयराय पव्वइंदं पदाहिणावत्त मंडलायरमेरु अणुपरियट्टंति ॥ २८ ॥ जयाणं भंते ! तेसिं देवाणं इंदे चयति से कहमिदाणी पकरेंति ? गोयमा ! चत्तारि पंचसामाणिया तओट्ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जाव तत्थ अण्णे इंदे उववण्णे भवति ॥ २९ ॥ इंदट्ठाणेणं भंते ! केवतियं कालविरहते उववातेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा ॥ ३० ॥ बाहिरियाणं भंते ! मणुस्स-

अर्थ

विकुर्वित परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्र, ताल, तन्तल, त्रुटित, घन, शुसिर, व पडह के शब्द से बडे २ सिंहनाद जैसा कोलाहल करते हुवे विपुल भोगोपभोग भोगते हुवे, स्वच्छ निर्मल मेरुपर्वतराज को प्रदक्षिणा करते हुवे मेरु की पर्यटणा करते रहते हैं ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! जब उनका इन्द्र चवता है, तब वे इन्द्र बिना कैसे करते हैं ? अहो गौतम! जहां लग अन्य इन्द्र उत्पन्न होवे नहीं वहां लग, वहां के चार पांच सामानिक देव इन्द्र का स्थान अंगीकार कर रहते हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्र उत्पन्न होने का स्थान कितना काल तक विरहित रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास विरहित रहता है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र के बाहिर के ...

अभिगमण निगमण वुड्ढि निवुड्ढि अणवट्ठित संठाण संठिती आघवेज्जति तावचण अस्सिंलोएति पवुच्चति ॥ २७ ॥ अतोण भंते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्डोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्डोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गतिसमावण्णगा, उड्डमुह कलंवुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवास्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं यहां लग यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु ज्योतिषी लोक में अपने अपने ज्योतिषी के विमान में उत्पन्न होते हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

अण्णाण समोवगाढाहिं लेस्साहिं, ते पदेसे सव्वतो समता ओभास उज्जोवेति, तवेति पभासेति ॥ ३१ ॥ जहेण भंते ! तेसिणं देवाण इंदे चयति से कहमिदाणि पकरेति ? गोयमा ! जाव चत्तारि पच सामणिया तठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव तत्थ अण्णेइंदे उववण्णे भवति ॥ इयट्ठाणेण भंते ! केवतिय काल विरहिए उववाएण ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा॥३२॥ पुक्खरवरेण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाणे जाव सपरिक्खित्ताण चिट्ठति ॥ पुक्खरोदेण भंते ! समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खभेण केवतिय परिक्खे-

अर्थ

लेश्या से स्थिर जैसे स्थित बने हुवे वे चंद्र सूर्य उन प्रदेशों को प्रकाशित करते हैं, उद्योत करते हैं, तपते हैं, प्रकाश करते हैं व प्रकर्ष से प्रकाश करते हैं ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! जब इन का इन्द्र चवता है तब इन्द्र बिना वे क्या करते हैं ? अहो गौतम ! यावत् जहां लग इन्द्र होवे नहीं वहांलग चार पांच सामानिक उस स्थान को अंगीकारकर विचरते हैं अहो भगवन् ! इन्द्र स्थान का कितना विरह कहा है? अहो गौतम! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास का विरह होता है ॥ ३२ ॥ पुष्करवरद्वीप की चारों ओर पुष्करवसे दीप समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है अहो भगवन् ! पुष्करोदधि समुद्र कितना चक्रवाल विष्कंभपने है, व कितनी परिधि है ? अहो गौतम ! संख्यात लाख योजन की चक्रवाल चौडाई है और

खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण नक्खत्त तारारूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा,नो चारोववण्णगा चाराठितीया,नो गतिरातिया नो गतिसमावण्णगा,पकिट्ठग सठाण सठितेहिं जायण सयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सय साहस्सीहिय बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं-महया २ अहतगीय वादितरवेण दिव्वाइ भोग भोगाइ भुंजमाणा विहरति, जाव सुभलेस्सा, सीयलेस्सा मदालेस्सा मदयवलेस्सा चित्तरलेस्सा कुडाइव ठाणठिता

ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषी देव हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चारस्थित हैं, गति में रक्त है या गति समापन्न हैं क्या? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व उत्पन्न व कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु अपने २ विमान में उत्पन्न होते हैं चलने वाले नहीं हैं परंतु स्थिर हैं, गति में रक्त व गति समापन्न नहीं हैं पकी हुई ईंट के संस्थान वाले हैं अनेक लाख योजन पर्यंत ताप क्षेत्र और लाखों गम बाहिर की विकुर्वित परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत वादित्र के शब्द से दीव्य भोगोपभोग भोगवते हुवे विचरते हैं यावत् शुभ लेश्या, शीतलेश्या, मंदलेश्यावंत हैं चित्रांतर लेश्यावंत व परस्पर अवगाहित

सूत्र

॥३४॥ वरुण वर, दीव वरुणोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागार जाव चिट्ठति समचक्कवाल, विसठिति तहेव सव्व भाणियव्व, विक्खंभ परिक्खेवो संखेज्जाइं जोयण दारंतरंच पउमवर वणसंडे पएसा जीवा• अत्थे• ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति वरुणोदे समुद्दे ? गोयमा ! वरुणदस्सण समुद्दस्स उदये से जहा नामए चंदप्पभाइवा मणिसिलागाइवा वरसिंधु वरवारुणीइवा पत्तासवेइवा पुप्फासवेइवा चोयासवेइवा फलासवेइवा महुमेरएइवा जातिप्पसन्नाइवा खज्जूरसारेइवा मुद्दियासारेइवा कापिसाइणेइवा सुपक्कए खोयरसेइवा पभूतसंभारसंचिता पोसमास सतभिसय जोग ठविया निरुवहत विसिट्ठ दिण्ण कालोवयारी सुद्धोवा उक्कोसगमट्ठ

अर्थ

द्वीपके चारों ओर वारुणोदधिसमुद्र वर्तुल वलयाकार यावत् रहा हुवा है वह सम चक्रवाल संस्थानवाला है चौडाइ व परिधि संख्यात योजन की कहना द्वारांतर भी ऐसे ही कहना पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह पूर्ववत् जानना अहो भगवन्! वारुणोदधि नाम क्यों कहा है? अहो गौतम! वारुणोदधि का पानी जैसे चंद्र प्रभा मदिरा, मणशिला का मदिरा, प्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी (मद्य विशेष) पत्रका आसव, पुष्पका आसव, चूया वनस्पतिका आसव, फलका आसव, मधुमेरक, जातवंत रसका मदिरा, खजूर सार द्राक्ष सार, कापिशायन, अच्छी तरह पकाया हुवा सेंदी का रस समान मद्य, बहुत संभार से बना हुवा, पोष मास में बनाने के योग मदिरा निरुपहत, बहुत उपचार से बनाइ हुइ सूरा, सुधा अमृत

परिक्खेवेण पण्णत्ते, पउमवरवेइया वणसंडवण्णओ दारंतरेयं पदेसा जीवा तहेव सव्व सेकेणट्टेण भंते ! एवं वुच्चइ वारुणवरदीवे २ ? गोयमा ! वारुणवरेणं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे खुड्डा खुड्डियाओ जाव विलपंतियाओ अच्छाओ पत्तेय २ पउमवरवेइया वणसंड परिक्खित्ता वारुणोदग पडिहत्थाओ पासादीयाओ ४, तासुणं खुड्डा खुड्डियासु जाव विलपंतियासु बहवे उप्पाय पव्वया जाव खडहडगा सव्वफलिहामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पभा ॥ एत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिव सति, से तेणट्टेणं जावणिच्च, जोतिस सव्वं संखेज्जगुणं जाव तारागण कोड कोडीओ,

पद्मवर वेदिका, वनखण्ड है द्वार के अंतर प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह सब पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! किसलिये वारुणवर नाम कहा ? अहो गौतम ! वरुणवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों हैं वे स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व वनखण्ड वेष्टित है वारुणोदक (मदिरा समान पानी) कर परिपूर्ण प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं उन छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों में बहुत उत्पात पर्वत यावत् खडहडक हैं सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ व वरुणप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस लिये इस का वरुणवर नाम कहा है अथवा यह यावत् नित्य है, ज्योतिषी सब संख्यातगुने जानना यावत् कोडाकोड ताराओं कहना ॥ १४ ॥ वारुणवर

वण्णेण उववेता गधेणं उववेया रसेण उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सण समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएण पण्णत्ते, वारुणा वारुणिकता इत्थे दो देवा महड्डिया जाव परिवसति, से तणट्ठेण जाव णिच्चे, सव्व जोतिस संखेज्जकेण णातव्व ॥ ३५ ॥ वारुणोण्णएण समुद्द खीरवरेणामदीवे वट्टे ज व चिट्ठति, सव्व सखेज्जग विक्खभे परिक्खेवोय जाव अट्ठो बहुओ खुड्डा खुड्डिओ वावीओ जाव सरसर पतियाओ खीरोदग पडिहच्छाओ पासादियाओ॥ तासुण

अर्थ

कंदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी यहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम रखा यावत् इस का नाम नित्य शाश्वत है चंद्रादिक ज्योतिषी सब संख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३५ ॥ वरुणोदधि के चारों ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है यह वर्तुलाकार समचतुस्र संस्थान वाला है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा है व संख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना वहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा सुखाइतथरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपला अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलविणी अहिय महुर२ पेज्जइसीसरत्त णेत्ता कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस विञ्वो कहाव विभमविलास वेल्ल हल गमल करणी त्रिवण अहियसत्त जणणीय होति सगामदेसकाले कायर नरसमरपसरकरणी कहिणाण त्रिज्जुपति हियया ग मउयकरणीहोति उववेसितामभाणीगति खलावितेग सघलेंमि पिसभावुप्फालिया सरभग सेण सहगारसुरभिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणाणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सर्विंशदियगाय पल्हायाणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान स्वरूप से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, पुस से बनाइ हुइ कर्दम समान एलायची प्रमुख वस्तु से बनाई हुई काली प्रभाकारी निर्मल प्रधानवत् वारुणी अती रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ट के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—जीभमेव नशा चढे ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपोल स्थल कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य रने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, सताप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, वल्लभ मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनवाली, रण सग्राम सूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, वपवासित बनाई हुई सहकारके सुगंधित व आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर का वृद्धि करने वाली, पुष्टि करते वाली, कंदर्प बढाने वाली,

सूत्र

वण्णेण उववेता गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सणं समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव असाएणं पण्णत्ते, वारुणा वारुणिकता इत्थं दो देवा महड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे, सव्व जोतिसं संखेज्जकेण णातव्वं ॥ ३५ ॥ वारुणोण्णएणं समुद्दं खीरवरेणामदीवे वट्टे जाव चिट्ठति, सव्व सखेज्जग विक्खभे परिक्खेवोय जाव अट्ठो बहुओ खुड्डा खुड्डिओ वावीओ जाव सरसर पंतियाओ खीरोदग पडिहच्छाओ पासादियाओ॥तासुणं

अर्थ

कदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी यहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम रखा यावत् इस का नाम नित्य शाश्वत है चन्द्रादिक ज्योतिषी सब सख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३५ ॥ वरुणोदधि के चारों ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है वह वर्तुलाकार समचतुस्र सस्थान वाला है सख्यात योजन का चक्रवाल चोडा है व सख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना यहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा सुखाइतवरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपसा अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलंबिणी अहिय महुर २ पेज्जइसीसरच णेत्ता कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस तिव्वो कहाव विभमविलास वेल्ल हल गमल करणी त्रिवण अहियसत्त जणणीय होति सगामदेसकाले कायर नरसमरपसरकरणी कहियाण विज्जुपाति हियया ग मठयकरणाहोति उववेसितासमाणीगति खलावितेग्ग सयलेंमि विसभावुप्फालिया सरभग्ग वेण सइगारसुरभिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सविंदियगाय पल्हायणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान उत्कर्ष से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, मुख से बनाए हुए कर्दम समान एलायची प्रमुख वस्तु से बनाई हुई कार्म्ति चमत्कारी निर्मल प्रभानवत् वारुणी अती रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ट के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—जीभमेंव नसा चढ ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपाल स्थल कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य करने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, उल्लाप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, वल्लुभ मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनेवाली, रण संग्राम सूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, उपलक्षित बनाई हुई सहकारके सुगंधित व आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर का वृद्धि करने वाली, पुष्टि करने वाली, कंदर्प बढाने वाली,

सूत्र

सु उसहो मारु पल्लु अज्जुन तरुण सरपत्ते कोमल अच्छीयतण पण्डग वरिच्छु वारिणीण लवगपत्त पुप्फ पल्लव, ककोलग सफलरुक्खा महुसुगुच्छगुम्म कलितो एलवट्टी महुरपऊर पिप्पली फलीतवल्ली वर त्रिविर वारणीण अप्पोदगपीतसइर सममूभिमागानिज्झाए सुहेसिताण सुपोसीत सुधाताण रोग परिवज्जिताण निरुवहतसरीराण कालप्पसवाण त्रितीयतचीय समपसूताण अजण वरगवेलय वलय जलधरत जच्च जण रिट्ठ ममर परहुत समप्पभाण गावीण कुडदोह-

अर्थ

पौंडग वनस्पति, श्रेय वारुणी, लवग वृक्ष के पत्र, पुष्फ, फल, व कुपलवाले अकूर, ककोल नामक फल वृक्ष, गुच्छ, गुल्म सहित इलायची की लकडी का रस, जेठीमध मधुरपीपरफल की वेल का रस और प्रधान वारुणि सुरा विशेष जैसा स्वाद योग्य होवे, और श्रेष्ठ भूमि में विचरनेवाली, अल्प उदक वाला कर्दम रहित श्रेष्ठ भूमि भाग में निर्भय से बैठने वाली, रोग रहित, निर्भय स्थान में रहने वाली, उपद्रव रहित, अखंड शरीरवत क्रीडा से सुख पूर्वक प्रसववाली, दो तीन वार प्रसूत हुई ऐसी, वर्ण में अजन समान, वहिष शृंग समान, जम्बू, अरिष्ट व भ्रमर समान काली गाय होवे और जिस का दुग्ध रहने का स्थान घडा कुडा समान होवे, उसका दुग्ध चार स्थानक से परिणमा हुवा होवे, ऐसी श्याम वर्णवाली गाय का दुग्ध

खुड्डीयाखुड्डीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाए पव्वयगा सव्वरयणमया जाव पडिरूवा॥ पुंडरीय पुप्फदंता इत्थं दोदेवामहिड्डियाजाव परिवसंति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे जाव जोतिसं सव्वं संखेज्ज ॥ ३९ ॥ खीरवरेणं दीवं खीरोदणाम समुद्दे वट्टे वलियागार संठाण संठिए जाव परिक्खित्ताणं चिट्ठति समचक्कवाल संठिते नो विसमचक्कवाल संठिते, संखेज्जाइं जोयणाइं सहस्साइं विक्खंभो परिक्खेवो तहेव सव्वं जाव अट्ठो, गोयमा ! खीरोयस्सणं समुदस्सउदगं से जहा नामते

बावडीयों यावत् सरसर पंक्तियों में दुग्ध जैसा पानी भरा हुवा है उन बावडीयों में बहुत उत्पात पर्वत हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं यहां पुंडरीक व पुष्पदंत नामक महर्धिक दो देव रहते हैं इसलिये नित्य कहा है चंद्रादिक ज्योतिषी देव संख्याते कहे हैं ॥ ३९ ॥ क्षीरवर द्वीप के चारों ओर क्षीरोदधि नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है सम चक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा व संख्यात योजन की परिधिवाला है वैसे ही सब कहना यावत् अहो भगवन् ! क्षीरोद ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जैसे अर्जुन नाम ईक्षु रस सहित, कोमल पत्र सहित, और अंकुर तृणाग्र वाली औषधि का रस, परिस्नु देश विशेष,

खीराद समुद्द घतवरे णाम दीवे वट्ट वलयाकार सठाण सठिए जाव परिक्खि-
विज्ञाण चिट्ठइ समचक्कवाल णो विसमचक्कवाले सखेज्ज विक्खम परिधि पदेसा
जाव अट्ठो गोयमा ! घतवरेणाम दीव तत्थ २ देस २ नहिं बहवे खुड्डाखुड्डिया
वावीओ जाव घतोदग पडहत्थाओ उप्पाय पव्वगा जाव खडखडगा सव्वकच
णमया अच्छा जाव पडिरूवा कणग कणगप्पभा इत्थ दो देवा महिड्डिया चदा
सखेज्जा ॥३८॥ घतवरेण दीव घतोदेणाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाण सठिते जाव
चिट्ठति, समचक्कवाल सठाण सठिते तहेव दारा पदेसा जीवाय अट्ठो गोयमा! घयोदय-

अर्थ

समचक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं हैं सख्यात योजन की चक्रवाल चौडाइ है और सख्यात
योजन की परिधि हैं यावत् अर्थ कहा है घृतवर द्वीप में बहुत छोटी बडी बावडीयो मे पानी घृत जैसा
भरा हुवा है उन पर उत्पात पर्वत यावत् खडक रहे हुवे है वे सब कांचनमय यावत् प्रति रूप हैं यहां
कनक व कनकप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं, इस लिये घृतवर द्वीप नाम कहा है, चद्रमादिक
ज्योतिषी सब असंख्यात हैं ॥ ३८ ॥ घृतवर द्वीप के चारो ओर वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला
घृतोद समुद्र रहा है यह समचक्रवाल सस्थानवाला है वैसे ही द्वार प्रदेश, और जीव का जानना इस

धाण वद्दत्थी पच्छुवाण रुद्धाण मधुमासकाल संगहिते होज्ज चाउरक्केवहोज्ज-तासि, खीर महुरस विपिगच्छ बहुदव्व संपयुत्ते, पयत्त मंदगीसु कड्डिती आउत्तरसद गुड मच्छंडितो वाउतेरसो चाउरत चाउरंतचक्कवट्टिस्स उवट्ठाविए आसादणिज्जे विसायणिज्जे पीणणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे जाव वण्णेण उववेए जाव फासेण भवेयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्सणं से उदगे एत्तो इट्ठतराएचेव जाव आसाएणं पण्णत्ते, विमल विमलप्पभाए इत्थदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेणं सखेज्जा चंदा जाव तारा ॥ ३७ ॥

मधुर रस सहित होवे उसे मंदाग्नि से पकाकर उसमें शक्कर, गुड, मिश्री डालकर चातुरंत चक्रवर्ती के लिये खाने योग्य खीर बनावे वह स्वाद योग्य, शरीर में पुष्टि करनेवाली यावत् सब गात्र को आनंदकारी होवे, सुवर्ण गंध यावत् स्पर्श युक्त होवे अहो भगवन् क्षीर समुद्र का पानी क्या ऐसा है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्षीरोद समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत यावत् आस्वाद योग्य है यहां विमल और विमल प्रभ नामक दो महर्द्धिक देव यावत् रहते हैं इस कारन से क्षीरोद समुद्र ऐसा नाम कहा है इस में संख्यात ज्योतिषी हैं ॥ ३७ ॥ क्षीरोद समुद्र के चारों ओर घृतवर द्वीप वर्तुल वलयाकार है वह

घतोदेण समुद्द खोदवरेणाम दीवे वट्ट वलयागारे जाव चिट्ठति, तहेव जाव अट्ठो ॥ खोदवरेण दीव तथ २ दसे २ तहिं २ खुड्डा खुड्डीओ जाव खोदोदग पडहत्थाओ उप्पात पव्वतगा सव्ववेरुलियामया जाव पडिरूवा, सुप्पभा महाप्पभा इत्यदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, सेतेणट्ठेण सव्व जोइस तहेव जाव तारा ॥ ४० ॥ खाक्वरण दीव खादोदेणाम समुद्दे वट्टेवलयागार जाव संखेज्जाइ जोयणसत परिक्खेवण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! खोउदस्सण समुदस्स उदये जहासे आसल मासल पसत्थे वीसत निद्ध सुकुमाल भूमिभागेसु छिन्नेसु कट्ठुलट्ठु विसट्ठु निरुवहय

अर्थ

॥ ३९ ॥ घृतोद समुद्र के चारों ओर इक्षुरस नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार कहा है यावत् अर्थ पर्यंत कहना अहो भगवन् ! इक्षुवर द्वीप नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! इक्षुवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी बावडियों यावत् इक्षुरस समान पानी भरा है, वहां उत्पात पर्वत हैं वे वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं वहां सुप्रभ व महाप्रभ नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस से इक्षुवर द्वीप कहा है सब ज्योतिषी चद्रादिक संख्यात हैं ॥ ४० ॥ इक्षुवर द्वीप के चारों ओर इक्षुवर समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् संख्यात योजन की परिधि हैं यावत् अहो भगवन् ! उस का इक्षुवर नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मनोहर प्रशस्त, विश्रांत, स्निग्ध सुकुमाल भूमि भाग जहां होवे, वैसा देश में इक्षु स

रसण समुद्दस्स उदये जहा से जवगगफुल्लसल्लइ विमुकुल कणियार सरसवसुविसुद्ध कोरटदाम पिंडितरस्सामिद्ध गुण तेय दीविय निरुवहत विसिट्ठ सुंदरतरस्ससुजाय दधिमथित तद्दिवस सगाहित णवणीय पदुघणावित सुकढितउद्दावसज्जवीसादितस्स, अहिय पीवर सुरामिगंध मणहर मधुर परिणाम दरसणिज्ज पच्छाणिमल्लसुहोव भोगस्स सरयकालम्मिहोज्ज गोघयवरस्समह भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे गोयमा ! घतोदयस्सण समुद्दस्स एतो इट्ठुत्तरे जाव अस्साएण पण्णत्ते कन्ते सुकताय इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति सेस तहेव जाव तारागण कोडि कोडीओ ॥ ३१ ॥

का अर्थ की पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! घृतवर समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ! अहो गौतम ! उसका पानी विकसित कणयर के पुष्प व कोरंट वृक्ष के पुष्पमाला समान श्वेत पिण्डवाला, स्निग्धपना का गुण सहित, ददीप्यमान, निरुपम, सुंदर ऐसा दधि का मन्थन करके मक्खन नीकाले, फीर उस तपाकर घृत बनावे, जो बहुत सुगंध युक्त, देखने योग्य, प्रशस्त, निर्मल, मुख से भोगने योग्य शरत्काल में गोघृतवत् होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते है कि क्या घृतवर समुद्र का ऐसा पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उस से भी अधिकतर आस्वादने योग्य है और भी यहां कांत सुकांत नामक दो देव रहते हैं शेष सब वैसे ही जानना चंद्रादि ज्योतिषी संख्यात हैं यावत् संख्यात कोडाकोड ताराओं हैं

सूत्र

किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, मूले विच्छिन्ना मज्झेसंखित्ता उप्पि तणुया, गोपुच्छ साठण,साठिया सव्व अजणमया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता, पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ता वण्णओ, तेसिण अजण पव्वयाण उवरि पत्तेय २ बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा पण्णत्ता से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा जाव सयति॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सिद्धायतणा, एगमेक जोयणसय आयामेण पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, बावत्तरि जोयणाति उड्ढ उच्चत्तेण, अणेगखभ सयसन्निविट्ठाण वण्णओ, गोयमा !

अर्थ

वेदिका और वनखंड हैं वे दोनों वर्णन योग्य हैं उन अजनगिरी पर्वतपर बहुत समरमणिक भूमिभाग है जैसे मादलकातल वगैरह यावत् वहां बैठते हैं उस बहुत रमणीय भूमिभाग के मध्य में पृथक् सिद्धायतन कहे हैं वे एक सो २ योजन के लम्बे, पचास २ योजन के चौडे, बहत्तर योजन ऊंचे हैं सेकडों स्थंभ सहित हैं, उन का वर्णन जानना अहो गौतम ! उस सिद्धायतन के चार द्वार चार दिशी में कहे हुवे हैं जिन के नाम देवद्वार २ असुरद्वार ३ नागद्वार और ४ सुवर्ण द्वार उनपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले चार देव रहते हैं जिन के नाम-देव, असुर, नाग और सुवर्ण वे द्वार सोलह

चत्तारि अंजण पव्वया पण्णत्ता, तेणं अंजणग पव्वयगा चउरासिति जोयण सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं एगमेगं जोयण सहस्सं उव्वेहेणं मूले दस जोयण सहस्साइं, किंचिविसेसाहिए आयाम विक्खंभेणं, धरणियले दस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेणं ततोणंतरंचणं माताए २ पदेस परिहायेमाणा २ उवरिं एगमेगं जोयण सहस्सं आयाम विक्खंभेणं, मूले एकतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसं जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं धरणियले एकतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए देसूणं परिक्खेवेणं सिहरितले तिण्णि जोयण सहस्साइं एगंच बावट्ठं जोयण सत

चार दिशि में चार अंजन गिरि पर्वत कहे हैं वे अंजनगिरि पर्वत ८४ हजार योजन के ऊंचे एक हजार योजन के गहरे, मूल में दश हजार योजन से अधिक लम्बे चौडे है, धरणितल में दश हजार योजन लम्बे चौडे हैं तदनंतर एक २ प्रदेश कमहोते २ ऊपर एक हजार योजन लम्बे चौडे रहे हैं मूल में इकतीस हजार छसो तेवीस योजन से किंचित अधिक परिधि है, धरणितल में एकतीस हजार छसो तेवीस योजन में कुछ कम परिधि है शिखरतल में तीन हजार एक सो बासठ योजन से कुछ कम परिधि है मूल में विस्तारवाले बीच में संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुच्छ संस्थानवाले स्वच्छ है, प्रत्येक को एक पद्मवर

सूत्र

पण्णत्ता, तेण दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेण तावतियं चेव पवेसेण सेस तचेव जाव वणमालाओ, एवं पिच्छाघर मंडवावि तचेव पमाण, जे मुहमंडवाण दारावि तहेव णवर बहुमज्झदेस भाये पेच्छाघरमंडवाण अक्खाडगा, मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणप्पमाणातो सीहासणा अपरिवारा जाव दामा थूभावि चउद्दिसिं तहेव णवरिं सोलस जोयणप्पमाणा, साइरेगाइं सोलसउच्चा,- सेस तहेव जाव जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा तहेव चउद्दिसिं तचेव पमाण जहा विजयाए रायहाणीए, णवर मणिपे-

अर्थ

द्वार कहना प्रेक्षागृह मंडप के मध्यभाग में अखाटक है उन के मध्य भाग में मणिपीठिका है वह आठ योजन के प्रमाण है उस पर परिवार रहित सिंहासन है यावत् दाम-माला है चारों दिशाओं स्तूप भी पूर्ववत् कहना परंतु वे स्तूप सोलह योजन प्रमाण हैं साधिक सोलह योजन के ऊंचे हैं शेष सब वैसेही कहना. जिन प्रतिमा है, चारों दिशी में चैत्यवृक्ष हैं वगैरह सब विजया राज्यधानी जैसे कहना विशेष में मणिपीठिका सोलह हजार योजन की ऊंची हैं उन चैत्यवृक्ष के चारों दिशी में चार मणिपीठिकाओं हैं वे आठ योजन की चौडी चार योजन की जाडी है उस पर महेन्द्रध्वजा ६४ योजन

तेसिण सिद्धायतणाण पत्तेय २ चउद्दिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा—देवदारे, असुरदारे, णागदारे, सुवण्णदारे ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा—देवे, असुर, णागे, सुवण्णे ॥ तेणदारा सोलस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण अट्ठ जोयणाइ विक्खभेण, तावतिय पवेसेण सेतावरकणगथूभियागा जाव वणमाला ॥ तेसिण दाराण चउद्दिसिं चत्तारिमुहमडवा पण्णत्ता, तेण मुहमडवा एगमेग जोयण सय आयामेण, पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, सातिरेगाइ सोलस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण चउद्दिसिं चत्तारि चत्तारिदारा

योजन ऊंचे व आठ योजन चौडे हैं उन का प्रवेश भी आठ योजन का है वे श्वेत कनकमय वगैरह वर्णन योग्य यावत् लम्बी लटकती हुई वनमाला है उन द्वार की चार दिशी में चार मुख मंडप कहे हैं वे एक सो योजन के लम्बे पचास योजन के चौडे और साधिक सोलह योजन के ऊचे यावत् वर्णन योग्य है. उन मुख मंडप की चार दिशी में चार द्वार कहे हैं वे द्वार सोलह योजन के ऊंचे आठ योजन के चौडे व उतने ही प्रवेश वाले हैं शेष सब वनमाला पर्यंत पूर्ववत् जानना ऐसेही प्रेक्षागृह मंडप का वर्णन जानना उस का प्रमाण वैसेही कहना जैसे मुख मंडप के द्वार कहे वैसेही प्रेक्षा गृह मंडप के

भाग मणिपेढिया सोलस जोयणाइं ...
तासिय मणिपेढियाण उप्पिं देवछंदगा सोलस जोयण आयाम विक्खंभेण सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण सव्वरयणमया अट्ठसय जिणपडिमाणं सव्वो सोचेव गमो जहेव माणिमय सिद्धायणस्स तत्थण जेसिं पुरत्थिमिल्लेण अंजणपव्वते तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि नंदापुक्खरिणीओ पन्नत्ताओ तंजहा णंदोत्तराय णंदा आणंदा णंदिवद्धणा॥ताओ णंदापुक्खरणीओ एगमेगं जोयणसयसहस्सं आयाम विक्खंभेण दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ सण्हाओ जाव पडिरूवाओ पत्तेयं २ पउमवरवेइया

अर्थ

सोलह योजन लम्बा चौडा कहा है और सधिक सोलह योजन ऊंचा है सब रत्नमय हैं यहां १०८ जिन प्रतिमा हैं इस का सब अधिकार वैमानिक सिद्धायतन का कहा वैसे ही कहना यहां जो पूर्व दिशा का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशा में चार नंदापुष्करणि हैं जिनके नाम, नंदोत्तरा, नंदा आनंदा और नंदीवर्धना यह नंदा पुष्करणियों एक लाख योजन की लम्बी चौडी है, दश योजन की ऊंडी हैं, स्वच्छ श्लक्ष्ण है प्रत्येक को पद्मवर वेदिका और वनखण्ड हैं यहां यावत् त्रिसोपान प्रतिरूप को हैं, व तोरण हैं उस नंदा पुष्करणी के बीच में पृथक् २ दधि मुख पर्वत हैं ये दधि मुख पर्वत

ढियाओ सोलस जोयणप्पमाणाओ ॥ तेसिण चेइयरुक्खाण चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढिओ अट्ठ जोयण आयाम विक्खंभेण, चउजोयण बाहल्लाओ, महिंदज्झयाण चउसट्ठि जोयणुच्चा जोयणउव्वेहो जोयणविक्खंभा सेस तहेव, एव चउद्दिस चत्तारि नदा पुक्खरणीओ णवर खोयरसपडिपुण्णाओ, जोयण सयं आयामेण, पन्नास जोयणाइ विक्खंभेण, दस जोयणाइ उव्वेहेण सेस तहेव, मणोगुलिया गोमाणसीया अडयालीस २ सहस्साओ पुरच्छिमेणवि सोलससहस्सा, पच्चत्थिमेणवि सोलससहस्सा, दाहिणेणवि अट्ठ सहस्साओ, उत्तरणवि अट्ठ सहस्साओ, तहेव सेस उल्लोया भूमिभागा, जाव बहुमज्झदेस भूमि

की ऊंची है एक योजन गहरी जमीन में व एक योजन की चौडी है शेष वैसेही कहना, ऐसे चारों दिशा में चार नंद पुष्करणीयों हैं, इन में पानी इक्षुरस जैसा भरा है, ये एक सो योजन लम्बी है, पचास योजन चौडी है, दश योजन गहरी हैं शेष सब वैसे ही कहना. मनोगुलक और गोमाणसीका अडतालीस हजार हैं जिस में से सोलह हजार पूर्व में, सोलह हजार पश्चिम में, दक्षिणमें आठ और उत्तर में आठ हजार वैसेही बहुत भूमिभाग यावत् उस के मध्यभाग में मणिपीठिका है, यह सोलह योजन की लम्बी चौडी व आठ योजन की जाडी है उन मणिपीठिका पर देव छंदक कहा है यह

सुवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव उप्पि अट्ठट्ठ मंगलया ॥ तत्थण जेसे दक्खिणिल्लेण अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा भद्दाय विसालाय कुमुयाय पुंडरिगिणी तचेव प्पमाण तहेव दहिमुह पव्वया तचेव पमाण जाव सिद्धायणे ॥ तत्थण जेसे पच्चत्थिमेण अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारिणंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा णंदिसेणाय अमोहाय गोत्थुभाय सुदंसणा तचेव सव्वं भाणियव्वं जाव सिद्धाययण ॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि नंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा विजया वेजयंति

अर्थ

मन पर्वत यावत् सिद्धायतन वगैरह कथन कहना जो पश्चिम दिशा में अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदापुष्करणियों हैं जिन के नाम—नंदिसेना, अमोघा, गोस्तुभ व सुदर्शना इसका भी सिद्धायतन पर्यंत कथन पूर्ववत् जानना उत्तर दिशा में जो अंजनक पर्वत है, उन की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणियों कही हैं जिन के नाम—विजया, वैजयन्ती, जयंती और अपराजिता इन में सिद्धायतन पर्यंत सब कथन पूर्ववत् जानना यहां बहुत भवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक देव चातुर्मासिक

१ चतुर्मासिक पूर्णिमा व प्रतिपदा तीन है अषाढ महिने की, कार्तिक व फाल्गुन महिने की.

पत्तेय १ वणसंड परिक्खित्ता तत्थ २ जाव तिसोमाण पडिरूवेगा, तोरणा, ॥ तासिणं पुक्खरिणीण बहु मज्झदेसभाए पत्तेय २ दहिमुहपव्वए पण्णत्ते ॥ तेण दहिमुह पव्वया चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण एग जोयण सहस्स उव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लगसठाण संठिता, दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेण, इक्कतीस जोयण सहस्साइं छच्चतेवीस जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवर वेतिया वणसंड वण्णओ, बहु समरमणिज्ज भूमिभागा जाव आसयति, सिद्धायतण तचेव पमाण त अजण पव्वए

चौसठ हजार योजन के ऊंचे हैं एक हजार योजन के जमीन में हैं, सब स्थान समपल्यंक संस्थान वाले हैं दश हजार योजन के चौडे हैं इकतीस हजार छसो तेवीस योजन की परिधि है सब रत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक की चारों ओर पद्मवर वेदिका व वनखण्ड हैं बहुत रमणीय भूमि भाग यावत् वहां देव बैठते हैं सिद्धायतन का प्रमाण वैसे ही जानना यों अंजनक पर्वत की वक्तव्यता कहना यावत् ऊपर आठ २ मंगल कहे हैं दक्षिण का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणीयों हैं जिन के नाम—भद्रा, विशाला, कुमुदा और पुंडरीकिणी इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना दधि

सूत्र

वलयागार संठाण संठिए जाव सव्व तहेव अट्ठो जहाक्खोदोदगस्स जाव सुमणस सोमणसाय इत्थ देवा महिड्डीया जाव परिवसति सेस तहेव जाव तारग्ग ॥ ४२ ॥ नंदिसरोद समुद्द अरुणोनाम दीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ अरुणेण भंते! दीवे किं समचक्कवाल संठिये, विसमचक्कवाल संठिए? गोयमा! समचक्कवाल संठिए नो विसम चक्कवाल संठिए केवइय चक्कवाल? गोयमा! संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण, संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता,

अर्थ

संस्थानवाला कहा है इस का सब कथन पूर्ववत् कहना इक्षुवर समुद्र जैसे यहां का पानी इक्षुरस समान है यावत् सुमनस व सोमनस ये दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं शेष सब वैसेही जानना यावत् संख्याते चंद्रमादिक ज्योतिषी हैं ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर समुद्र माते अरुण नामक नवषा द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला है अहो भगवन्! अरुण द्वीप क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है? अहो गौतम! सम चक्रवाल संस्थानवाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थानवाला नहीं है अहो भगवन्! अरुण नामक द्वीप कितना चौडा है और उन की कितनी परिधि है? अहो गौतम! संख्यात लाख योजन चौडा है और संख्यात लाख योजन की परिधि है और भी पद्मवर

जयती अपराजिता, सेस तहेव जाव सिद्धाययणा सव्वो चेतियपरिवरण्णा णेयव्वा, तत्थण बहवे भवणवइ वाणमंतर जाइस वेमाणिया देवा चाउमासिय पडिवएसु संवच्छरेसुय अण्णेसु बहु जिणजम्मण निक्खमण णाणुप्पयात परिणिव्वाण मादि-एसुय देवकज्जेयसुय देवसमुदरसुय देवसमतीसुय देवसमवाएसुय देवपउमणेसुय एगत-ओसहिया समुवागया समाणा पमुदित पकीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ कारेमाणा पालेमाणा सुहसुहेण विहरति कयस्सास हरिवाहणाय तत्थ दुवे देवा महिड्डीया जाव पलिउमाठितीया परिवसति से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्च जोतिस संखेज्ज ॥ ४२ ॥ णंदी सरवरण्ण दीवे णंदिस्सरवरोदे णामं समुद्दे वट्टे

प्रतिपदा संवत्सर में और अन्य बहुत जिनभगवान के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और निर्वाण कल्याण इत्यादि दिनों में, देव कार्य, देव समुदाय, देव गोष्टि, देव संबंधी समवाय, और देव संबंधी जीत व्यवहार के प्रयोजन में देवता एकत्रित होते हैं वहां आनंद क्रीडा, अष्टाधिका महामहोत्सव करते हुवे सुख पूर्वक विचरते हैं और भी कैलास व हरिवाहन नामक दो महर्द्धिक देव यावत् यहां रहते हैं अहो गौतम ! इस लिये नंदीश्वर द्वीप ऐसा नाम कहा यावत् यह नाम शाश्वत है ज्योतिषी चन्द्रादिक सब संख्याते हैं यह नंदीश्वर द्वीप का कथन हुवा ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर द्वीप के चारों ओर नंदीश्वर समुद्र वर्तुल वलयाकार

सव्व जाव अट्ठो खोदयोदगपडिहत्थओ उप्पाय पव्वयगा सव्व वइरामया अच्छा जाव पडिरूवा अरुणवर महाभद्दा इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिवसति॥ ४६॥एवं अरुणवरो देवि समुद्दे जाव अरुणवर महाअरुणवरा एत्थ दो देवा, सेस तहेव अरुणवरोदण समुद्द अरुणवरोभासे नामं दीवे वट्टे जाव देवा अरुणवराभास भद्दा अरुणवरोयमास महाभद्दा महिड्डिया सेस तहेव ॥ ४८ ॥ एवं अरुणवरोभासोदेवि समुद्दे णवरिंदेवा अरुणवरोभासवर अरुणवरो भास महावरा, एत्थ दो देवा महिड्डीया ॥ ४९ ॥ कुंडलदीवे कुंडलभद्दाय कुंडलमहाभद्दाय एत्थ दो देवा ॥ ५० ॥

अर्थ

वैसेही सब कहना, यहां की सब वावडियों में पानी इक्षुरस समान है, उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, अरुणवरभद्र व अरुणवरमहाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं ॥ ४६ ॥ ऐसेही अरुणोवर समुद्र का जानना यावत् यहां अरुणवर और महाअरुणवर ऐसे दो देव रहते हैं शेष वैसेही ॥ ४७ ॥ अरुणवर समुद्र के चारों ओर अरुणवरभास नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् अरुणवरभासभद्र और अरुणवरभासमहाभद्र ऐसे दो देव महर्द्धिक है, ॥ ४८ ॥ ऐसेही अरुणवर भास समुद्र का जानना, परंतु यहां अरुणवर भासवर और अरुणवर भासमहावर नामक दो देव महर्द्धिक रहते हैं, ॥ ४९ ॥ इस से अनन्तर बारहवा कुंडल द्वीप है इस में कुंडलभद्र व कुंडल महाभद्र

पउमवर वणसंडा दारा दारंतराय तहेव, संखिज्जाइं जोयण सहस्साइं दारंतर जाव अट्ठो-वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ उप्पाय पव्वयका सव्ववइरामया अच्छा जावपडिरूवा असोग वीयसोगा एत्थ दुवेदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेण जाव संखेज्जाग सव्व ॥४४॥ अरुणदीवं अरुणोदे नाम समुद्दे तस्सवि तहेव परिक्खवो अट्ठोक्खोदो दग णवरि सुभद्द सुमणभद्दा एत्थ दोदेवा महिड्डिया सेसं तहेव ॥४५॥ अरुणोदग समुद्द अरुण वरनामे दीवे वट्टेवलयागार संठाण संठिए सेस तहेव संखेज्जग

पादिका वनखण्ड द्वारांतर वैसेही कहना प्रत्यक द्वार में संख्यात लाख योजन का अंतर है यावत् अर्थ कहते हैं उस में बावडियों प्रमुख हैं, इक्षुरस समान पानी भरा है वहां उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है अशोक और विनशोक नामक दो महर्धिक देव वहां रहते हैं इसलिये अरुणद्वीप कहा है सब ज्योतिषी संख्याते हैं ॥ ४५ ॥ अरुण द्वीप के चारों ओर अरुणोद नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है उस की चौडाई संख्यात लाख योजन है परिधि भी संख्यात लाख योजन की है अर्थ की पृच्छा ? यहां पानी समुद्र के पानी जैसा है इस का सब कथन इक्षुरस समुद्र जैसा जानना परंतु यहां सुमण व सुमणभद्र ऐसे दो महर्द्धिक देव रहते हैं शेष वैसेही कहना, ॥ ४६ ॥ अरुणोदक समुद्र माते अरुणवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है संख्यात योजन का लम्बा चौडा है

गोयमा! समचक्कवाल नो विसमचक्कवाल ... रिक्खेवेण पण्णत्ते ? ... सव्वत्थमणोरमाय इत्थ देवा सेस तहेव ... दीवे समुद्दे संखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण द...... संखेज्जाइ जा। तंसंपि सव्व संखेज्ज भाणियव्व अट्ठोवि तहेव, खोदोयरस णवर सुमणसामाणसाय यत्थ दो देवा महिड्डीया तहेव रुयगाओ आढत असंखिज्ज विक्खम परिक्खेवो, दारतरच जोइसय सव्व असंखेज्ज भाणियव्व ॥ ५७ ॥ रुयगोदण समुद्द रुयगवरे णाम दीवेवट्टे, रुयगवरभद्द,

अर्थ

अहो गौतम ! सम चक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं है अहो भगवन् ! यह कितना चक्रवाल चौडा है ? अहो गौतम ! संख्यात योजन का चौडा है यहां सर्वार्थ और मनोरम ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं ॥ ५६ ॥ रुचकोद समुद्र का इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यह संख्यात योजन का लम्बा चौडा है संख्यात योजन की परिधि है, प्रत्येक द्वार का अंतर भी संख्यात योजन का है, सब ज्योतिषी भी संख्यात हैं अर्थ इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यहां सोमनस व सुमानस ऐसे दो देवता रहते हैं वैसे ही कहना यों रुचक समुद्र पर्यंत सब संख्याते हैं इसके आगे सब असंख्यात है द्वीप समुद्र की चौडाइ परिधि, द्वार का अंतर, ज्योतिषी सब असंख्याते हैं ॥५७॥ रुचकवर द्वीप के चारों ओर रुचकवरभद्र नामक द्वीप कहा है यहां रुचकवरभद्र व रुचकवर महाभद्र नामक देव हैं तदनतर रुचकवर समुद्र कहा है यहां रुचकवर

कुंडलोदे समुद्दे चक्खुसुह चक्खुकताय इत्थ दो देवा महिड्ढिया,॥ ५१ ॥कुंडलवरदीवे कुंडलवरभद्दा कुंडलवरमहाभद्दा एत्थदो देवा महिड्ढिया ॥ ५२ ॥ कुंडलवरोदे समुद्दे कुंडलवर कुंडल महावरा एत्थ दो देवा महिड्ढिया ॥ ५३ ॥ कुंडलवरोभासे दीवे कुंडलवरोभासभद्दे कुंडलवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा, ॥ ५४ ॥ कुंडलवरोभासोदे समुद्दे कुंडलवराभासवर कुंडलवरोभासमहावरा, इत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमाठितीया परिवसति ॥ ५५ ॥ कुंडलवरो भास समुद्दं रुयगे नाम दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति॥किं समचक्कवाल विसमचक्कवाल?

नामक दो देव रहते हैं ॥५०॥ बारहवा कुंडलोद समुद्र है वहां चक्षुशुभ व चक्षुकांत नामक दो महर्धिक देव रहते है ॥५१॥ तेरहवा कुंडलवरभद्र द्वीप वहां कुंडलवरभद्र और कुंडलवर महाभद्र नामक दो महर्धिक देव रहते हैं ॥५२॥तत्पश्चात कुंडलवर समुद्र हैं इसमें कुंडलवर व कुंडलमहावर नामक दो महर्धिक देव रहते हैं, ॥ ५३ ॥ कुंडलवराभास चौदहवा द्वीप है वहां कुंडलवराभासभद्र व कुंडलवराभासमहाभद्र ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं तत्पश्चात् कुंडलवराभास समुद्र है वहां कुंडलवराभासवर व कुंडलवरा भास महावर नामक दोदेव महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं ॥ ५५ ॥ कुंडलवराभास समुद्र के चारों ओर रुचक द्वीप वलयाकार यावत् रहा हुवा हैं, अहो भगवन् ! वह क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है ?

समुद्द,हारवर भामवर,हारवरावभाम महावरा एत्थ दो देवा एव ॥ सव्वे तिपडोयाराणेयव्वा जाव सूरवरो भासोद्दे समुद्दे दीवे भद्दानामा वरनामा होंति उदहीसु जाव पच्छिम भावच खोतवरादि, सयमूरमणपज्जतेसु वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ पव्वयगाय सव्व वइरामय,देवदीवे दो देवा महिड्ढीया देव भद्दा महाभद्दा एत्थ दो देवा, देव समुद्दे देववर देव महावराय एत्थ जाव सयभूरमणे सयभूरमणभद्द सयभूरमणमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढिया सयभूरमणेण्णदीव सयभूरमणोद नाम समुद्दे तहेव वट्टे वलयागार जाव

अर्थ

पीछे द्वीप या समुद्र का नाम लगाना इक्षुवर द्वीप से स्वयभूरमण द्वीप पर्यंत सब द्वीप में पुष्करणियों हैं सब में इक्षुरस समान पानी है सब में उत्पात पर्वत हैं वे सब वज्र रत्नमय हैं सूर्यवरावभास समुद्र से आगे देव द्वीप है यहां देवभद्र और देव महाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं उस से आगे देवोदधि समुद्र है यहां देववर व देव महावर नामक दो महर्धिक देव हैं इस से आगे नाग द्वीप नाग नाम समुद्र, यक्षद्वीप यक्षसमुद्र,भूतद्वीप,भूतसमुद्र,स्वयभूरमण द्वीप स्वयभूरमणसमुद्र है इससे आगे द्वीपसमुद्र नहीं है परंतु मात्र अलोक है स्वयभूरमणद्वीप में स्वयभूरमण भद्र और स्वयंभूरमण महाभद्र देव हैं स्वयभूरमण द्वीप की चारों ओर स्वयभूरमण समुद्र वर्तुल वलयाकार है असंख्यात योजन का लम्बा चौडा है असंख्यात योजन की परिधि है अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! स्वयभू

रुयगवरमहाभद्दाय इत्थदो देवा महिड्डिया रुयगवरोदे समुद्द रुयगवरा रुयगमहावरा, इत्थ दोदेवा महिड्डिया रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभास भद्द, रुयगवरोभासमहाभद्दाय इत्थदादेवा-रुयगवराभासोदे समुद्दे रुयगवरो भासवर, रुयगवरोभासमहावरा इत्थ दो देवा ॥हारदीवे हारभद्द हारमहाभद्दा इत्थ दो देवा॥हारोदे समुद्दे हारवरमहावरा यत्थ दो देवा ॥ हारवरेदीवे हारवरभद्द हारवरमहाभद्दा हारवरोदे हारवर, हारमहावरा, हारवरवरो भासेदीवे हारवरवरोभासभद्द हारवरवरोभास महाभद्दा, हारवरवरोभासोदे

रुचक महावर नाम दो देव हैं तदनंतर रुचक वरावभास द्वीप है यहां रुचकवराभास भद्र और रुचक वरावभास महाभद्र देव हैं तत्पश्चात् रुचकवरावभास समुद्र है यहां रुचक वरावभासवर और रुचक वरावभास महावर ऐसे दो देव हैं तत्पश्चात् हार द्वीप है यहां हारभद्र व हार महा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हार समुद्र है यहां हारवर व, हारमहावर देव हैं तत्पश्चात् हारवर द्वीप है यहां हारवर भद्र व हारवरमहाभद्र देव हैं तत्पश्चात् हारवर समुद्र है इस में हारवर व हार महावर दो देव हैं तत्पश्चात् हारवरावभास द्वीप है, यहां हारवरावभासभद्र व हारवरावभासमहा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हारवरावभास समुद्र है यहां हारवराभासवर और हारवरावभास महावर देव हैं ये सब द्वीप समुद्र के तीन नाम जानना यावत् सूर्यावराभास पर्यंत कहना द्वीप में भद्र व महाभद्र और समुद्र में वार व महावारदेव है सब के

देवोदे समुद्दे पण्णत्ते एव णागे जक्खे भूतेसयभूरमणे दीवे एगे सयभूरमणेसमुद्दे णाम-धेज्ज पण्णत्ते ॥ ५९ ॥ लवणस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स उदए आइले रइल कदे लवणे कडुए अपेज्ज बहूणं दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरिसवाण णण्णत्थण, तज्जोणियाण सत्ताण ॥ कालोयस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! आसले मासले पसले काले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते॥पुक्खरोदस्सणं भंते !

अर्थ

नाम का एक ही द्वीप है, देवोदधि नाम का एक ही समुद्र है, ऐसे ही नाग द्वीप, नाग समुद्र, यक्ष द्वीप, यक्ष समुद्र, भूतद्वीप, भूत समुद्र, स्वयभूरमण द्वीप, स्वयभूरमण समुद्र के नाम के एक २ ही द्वीप समुद्र हैं ॥५९॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी मलिन, गोमूत्र जैसा, लवण जैसा, कटुक, खार युक्त, अपेय, और उस ही पानी में उत्पन्न होनेवाले मत्स्य कच्छादि सिवाय अन्य पशु पक्षी परिसर्प वगैरह को पीने योग्य नहीं है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! पुष्टकारी, व मनोहर है वर्ण से श्याम वर्णवाला, माष (उडिद) की राशि जैसा है, और स्वाभाविक पानी जैसा स्वाद है अहो भगवन् ! पुष्करोद समुद्र का कैसा पानी है ? अहो गौतम ! स्वच्छ निर्मल, अतिपथ्य, हलका व स्फटिक समान श्वेत है, और

असंखेज्जाइं जोयण सतसहस्साइं परिक्खेवेण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! सयभूरमणोदे उदये अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते, सयभूरमणवर सयंभूरमणमहावरा, यत्थ दोदेवा महिड्डीया, सेस तहेव जाव असंखेज्जाओ तारागण कोडीओ सोभिंसुवा ३ ॥ ५८ ॥ केवतियाण भंते ! जंबुद्दीवे नामधेज्जेहिं पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जा जंबुद्दीवा दीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥केवतियाण भंते! लवणसमुद्दा पण्णत्ता? गोयमा! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता॥एवंधायति सडाने एव जाव असंखेज्जा सूरदीवानामधेज्जेहिं पण्णत्ते, एगे देवेदीवे पण्णत्ते एगे

रमण समुद्र का पानी निर्मल, स्वच्छ, पथ्य, निरोगी, आविर्वत, हलका स्फटिक वर्ण जैसा, और स्वाभाविक पानी के स्वाद वाला है वहां स्वयंभूरमणवर और स्वयंभूरमणमहावर ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं शेष सब वैसे ही पूर्ववत् जानना वहां असंख्यात क्रोडा क्रोडी ताराने शोभा की, शोभा करते हैं व शोभा करेंगे ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के नामवाले कितने द्वीप कहे हैं? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के नाम के कितने द्वीप कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं ऐसे ही धातकी खण्ड नाम के असंख्यात द्वीप यावत् सूर्यवराभास नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं परंतु देव द्वीप

सूत्र

णो तिणट्ठे समट्ठे वारुणोदए एत्तो इट्ठतराएचेव जाव आसाएण पण्णत्ते ॥ खीरोदस्सण भंते ! उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नामए रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स चतुरक्क गोखीरे पयत्तमदग्गिसु कढित आउत्तखंडमच्छंडितोववेते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेए भवतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! खीरोयस्स एत्तो इट्ठ जाव अस्सासिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! खीरोयस्स एत्तो इट्ठ जाव अस्साएण पण्णत्ते॥घतोदस्सण जहा नामए सारतिक्खस्स गोघयवरस्स मंडेसल्लइ किण्णियार पुप्फवण्णाभे सुकढित उदार सज्झवीसंदिते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेते

अर्थ

चार स्थान परिणमित गौ का दुग्ध को मंद अग्नि से पकावे, उस में उत्तम गुड सक्कर वगैरह डालकर चतुरंग चक्रवर्ती के लिये भाग भोग्य बनावे यावत् वह वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे अहो भगवन् ! क्या क्षीरोद समुद्र का पानी एसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक स्वादवाला क्षीरोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! घृतोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे सल्लकी अथवा कणयर के पुष्प समान श्वेत अच्छा तरह उष्ण किया हुवा स्वच्छ गो घृत वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं क्या एसा घृतोद समुद्र का पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिक स्वादवाला घृतोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! इक्षुरस समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? जैसे जातिवंत, पक्व होने से हरताल जैसे पीले

समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएण पण्णत्ते ? गोयमा ! अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते॥ वारुणोदस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएण पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा णामए पत्तासवातिवा चोयासवेतिवा खज्जुरसारेतिवा मुद्दियसारेतिवा सुपिक्कखोयरसेतिवा, मेरएतिवा काविसायणेतिवा चंदप्पभातिवा मणोसिलागातिवा वरसिधूतिवा वरवारुणीतिवा अट्ठपिट्ठ परिनिट्ठियातिवा जंबूफल कालियावण्णा वरप्पसण्णा उक्कासमदप्पत्ता ईसिं उट्ठावलंबिणी ईसिं तंबच्छिकरणी, ईसिं वोच्छेयकडुई आसेला मांसला पेसला वण्णेणं उववेता जाव

स्वाभाविक पानी समान स्वादवाला है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे पत्र का आसव, पुष्प का आसव, खर्जुर का आसव, द्राक्षासव, पक्का हुवा इक्षु का रस, मेरक पत्रजाति, कापिसायन, चंद्र प्रभा मदिरा विशेष, मणशीला का मदिरा, वरप्रधान सिंधु, प्रधान वारुणी, मदिरा, आठवार पिष्ट परिणत मदिरा, जम्बूफल समान कृष्ण वर्ण वाली मदिरा कृष्ण रसवंत, ओष्ट से पाने से किंचित् विलग होवे, पढने से चक्षुओं लाल होवे, आस्वाद योग्य, पुष्टकारी, मनोहर वर्ण युक्त यावत् संस्कार युक्त है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी क्या ऐसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है वारुणोदधि समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत इष्टकार यावत् स्वादवंत है अहो भगवन् ! क्षीरोद समुद्र का पानी कैसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम ! जैसे

गोयमा ! चत्तारिसमुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता तजहा—लवणे, वरुणोदे, खीरोदे घउदे ॥ कतिण भंते ! समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? तजहा—कालोयण पुक्खरोदे सयभूरमणे ॥ अवसेसा समुद्दा उस्सण्ण खोयरसाए पण्णत्ता समणाउसो!॥६१॥कइण भंते! समुद्दा ? अवसेसा समुद्दा उस्सण्ण खोयरसाए पण्णत्ता समणाउसो॥६१॥ कइण भंते! समुद्दा बहु मच्छ कच्छभाइण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पण्णत्ता ? तजहा—लवणे कालोयणे सयभूरमणे अवसेसा समुद्दा अप्प कच्छमच्छ माइण्णा पण्णत्ता लवणेण भंते ! समुद्दे कतिमच्छजाति कुलकोडिजोणी पमुह सतसहस्सा पण्णत्ता ?

अर्थ

पृथक् २ स्वादवाला है ? अहो गौतम ! चार समुद्र का पानी पृथक् २ स्वादवाला है जिन के नाम-लवणसमुद्र, वारुणोदधि, क्षीरोदधि और घृतोदधि, अहो भगवन् ! कितने समुद्र का पानी स्वाभाविक पानी जैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! तीन समुद्र का पानी स्वभाविक पानी जैसा स्वादवाला है जिनके नाम-कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयम्भूरमणसमुद्र अहो आयुष्मंत श्रमणो ! शेष सब समुद्र का पानी प्राय इक्षुरस समान ही है ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! बहुत मत्स्य कच्छ वाले कितने समुद्र हैं ? अहो गौतम ! ऐसे तीन समुद्र हैं जिन के नाम—लवण, कालोद और स्वयंभूरमण, शेष सब समुद्र अल्प कच्छ, मत्स्य वाले हैं अहो भगवन् !

भंवेतारूवासिया ? नो तिणट्ठे समट्ठे एतो इट्ठतराए ॥ खोदोदगरस से जहा नामए उच्छुण जवाण पुंडवाण हारियाण विजराण भेरुड उच्छूणवा कालपोराणतिभागणिव्वा डियवाडाण चलवगणरजत परिमागालियमिचो जेय रसे होज्जा वत्थपूते चाउ जातिग सुवासिते अइपत्थ लहुए वण्णेण उववेते जाव भंवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, एतो इट्ठतराए ॥ एव ससगणावि समुद्दाण यढो जाव सयभूरमणस्सावि णवरि अच्छे जहा पुक्खरोदस्स ॥ ६० ॥ कातिण भंते ! समुद्दा पत्तेगरसा पण्णत्ता ?

इक्षु के टुकडे होवे उस का उपर व नीचे का भाग काटकर मध्य भाग को स्वच्छ पेलों से पलाने के यंत्र से रस नीकाले, उसे कपडे मे छानकर तृण रहित बनावे, पुनः उस में दालचिनी एलायची केसर कर्पूर वगैरह डालकर सुवासित बनावे अत्यंत पथ्यकारी मिरोमी इसका और वर्ण यावत् स्पर्श से युक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं कि क्या ऐसा पानी है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है, इस से भी अत्यंत इष्ट हैं यों सब समुद्र का पानी इक्षु समान जानना यावत् भूतोदधि समुद्र पर्यंत कहना अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला हैं? अहो गौतम! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी स्वच्छ जातिवंत निर्मल पुष्करोदधि जैसा है ॥ ६० ॥ अहो भगवन्? कितने समुद्र का पानी

सूत्र

जोयण सयाइ उक्कोसेण, सयभूरमणे जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण दस जोयण सयाइ ॥ ६३ ॥ कवतियाण भंते ! दीव समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा! जावइया लोगे सुभानामा सुभा वण्णा जाव सुभाफासा एवतिया दीव समुद्दा णामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥६४॥ दीव समुद्दाण भंते! कवतिया उद्धार समएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया अड्ढाइज्जाइ उद्धार सागरोवमाण उद्धार समया एवतिया दीव समुद्दा उद्धार समएण पण्णत्ता ॥ ६५ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! किं पुढवि परिणामा आउपरिणामा जीव परिणामा पोग्गल परिणामा ? गोयमा ! पुढवि परिणामावि

अर्थ

स्वयंभूरमण समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् कितने नाम वाले द्वीप समुद्र हैं? अहो गौतम! लोकमें जितने शुभ नाम, शुभ वर्ण शुभगंध शुभरस शुभ स्पर्श वाली वस्तु के नाम हैं उतने नामवाले द्वीप समुद्र हैं ॥६४॥ अहो भगवन्! द्वीपसमुद्र कितने अद्धा समय जितने हैं? अहो गौतम! उद्धार अढाइ सागरोपम के जितने समय होवे उतने द्वीप समुद्र हैं ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र क्या पृथ्वी परिणाम हैं, अप् परिणाम हैं, जीव परिणाम और पुद्गल परिणाम हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालोयणेण भंते! समुद्द कतिमच्छजाति प०० त्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयभूरमणेण भंते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेण भंते समुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेणं पंच जोयण सयाइं एवं कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन्! कालोद समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोड कही है?अहो गौतम! नव लाख कुल कोड़ कही. अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साढे बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर के कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

ओयण सयाई उक्कोसेणं सयंभूरमणे जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेणं
दस ओयण सयाइं ॥ ६४ ॥ कतिविहाणं भंते ! दीव समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावइया लोए सुभानामा सुभा वण्णा जाव सुभाफासा एवतिया दीव समुद्दा
नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥ ६४ ॥ दीव समुद्दाणं भंते ! केवतिया उद्धार समएणं पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावइया अड्ढाइज्जाइं उद्धार सागरोवमाणं उद्धार समया एवतिया दीव
समुद्दा उद्धार समएणं पण्णत्ता ॥ ६५ ॥ दीव समुद्दाणं भंते ! किं पुढवि परिणामा
आउपरिणामा जीव परिणामा पोग्गल परिणामा ? गोयमा ! पुढवि परिणामा...

...समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बड़ी अवगाहना कही ? अहो गौतम ! ...
...असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् ! कितने ...
...अहो गौतम ! लोक में जितने शुभ नाम शुभ वर्ण शुभ गंध शुभ रस शुभ स्पर्श ...
...द्वीप समुद्र हैं ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! ...
...के जितने समय हैं उतने द्वीप समुद्र हैं ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ...
...परिणाम हैं, और ...

...पुद्गल ग्रहण किये बिना और
...ग्रहण किये बिना सर्व भी छद्मस्थ जानने देखने समर्थ नहीं है, क्यों की दीर्घ
और ह्रस्व करने की विधि बहुत ही सूक्ष्म है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र सूर्य के विमान नीचे जो तारा सूर्य
ज्योतिषी देव हैं वे क्या कांति से हीन अथवा तुल्य है चंद्र सूर्य के समविभाग में तारा रूप हैं वे क्या
कांति से हीन व तुल्य है, और चंद्र सूर्य ऊपर तारा हैं व क्या कांति में हीन व तुल्य हैं ? अहो गौतम !
वे तारा कांति में हीन व तुल्य हैं अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र सूर्य के नीचे जो तारा रूप विमान हैं
व कांति में हीन और तुल्य है यावत् ऊपर के तारा कांति में हीन व तुल्य है ? अहो गौतम ! जैसे ...

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालोयणेण भंते! समुद्द कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयभूरमणेण भंते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेण भंतासमुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेण पंच जोयण सयाइ एवं कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन् कालोद समुद्र में मच्छ की कितने लाख कुल कोट कही है? अहो गौतम! नव लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साडे बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर के कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

परिणामेवा,एव चाकिंखादिय त्रिसएहिंवि सुरूवपरिणामे, दुरुवपरिणामेय एव सुब्भिगध परिणामेव, दुब्भिगध परिणामेय॥एव सुरस परिणामेय, दुरस परिणामेय एव सुफासपरिणामेव दुफासपरिणामेय ॥ २॥ सेणूण भंते! उच्चावए सुसद्द परिणामेसु, उच्चावएसु रूवपरिणामेसु, एव गध रस-फास-परिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमतिवि वत्तव्वसिया? हता गोयमा! उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमति वत्तव्वसिया ॥३॥ सेणूण भते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, दुब्भिसद्दावा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हता गोयमा ! सुब्भिसद्दा दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ॥ सेणूण भते ! सुरूवा पोग्गला

ऐसे ही गंध के दो भेद सुरभिगंध परिणाम व दुरभिगंध परिणाम रस परिणाम के दो भेद-सुरस परिणाम व दुरस परिणाम ऐसे ही शुभ स्पर्श परिणाम व दुष्ट स्पर्श परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! उत्तम अधम शब्द परिणाम, उत्तम अधम रूप परिणाम, ऐसे ही गंध परिणाम, रसपरिणाम व स्पर्श परिणाम मे परिणमते हुए पुद्गल परिणमते हैं ऐसा क्या कहना ? हां गौतम ! उत्तम अधम शब्द परिणाम में यावत् परिणमने वाले पुद्गल परिणमते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! शुभशब्द के पुद्गल दुष्ट शब्दपने क्या परिणमते हैं अथवा दुष्ट शब्द के पुद्गल शुभशब्द पने क्या परिणमते है ? हां गौतम ! शुभ शब्द के

आउपरिणामावि जीवपरिणामावि पोग्गल परिणामावि ॥ ६३ ॥ दीव समुद्दाण भते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढवि काइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणतखुत्तो ॥ इतिदीव समुद्दा उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६७ ॥ कतिविहेणं भते ! इंदियविसये पोग्गल परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय विसए पोग्गल परिणामे पण्णत्ते तंजहा—सोइंदिय विसये जाव फासिंदिय विसए ॥ १ ॥ सोइंदिय विसएणं भते ! पोग्गल परिणामे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुब्भिसद्द परिणामेय दुब्भिसद्द

पृथ्वी परिणाम, अप परिणाम, जीव परिणाम व पुद्गल परिणाम इन चारों परिणाम मय है ॥६६॥ अहो भगवन्! द्वीप समुद्र में सब प्राण, भूत, जीव व सत्व क्या पृथ्वीकायापने यावत् त्रसकायापने परिणमे? हां गौतम! एक वार अथवा अनंत वार यों द्वीप समुद्र का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय विषय रूप पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय विषय के पुद्गल परिणाम के पांच भेद कहे हैं, जिन के नाम—श्रोत्रेन्द्रिय का विषय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का विषय. ॥१॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय विषय का पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! इस के दो भेद कहे हैं उनका-सुरभिशब्द परिणाम और दुरभिशब्द परिणाम यों ही चक्षु इन्द्रिय विषय के दो भेद सुरूप व दुष्ट रूप परिणाम

पोग्गलेखिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता पभू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेण महिड्ढीए जाव गिण्हित्ता ? गोयमा ! पुग्गल खिवित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती भवित्ता, तओ पच्छा मंदगती भवति, देवेण महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्वावि पच्छावि सीहे सीहगई चेव तुरिए तुरियगई चेव, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जाव तमेव अणुपरियाट्टित्ताण गिण्हित्तए ॥५॥ देवेण भंते! महिड्ढीए जाव महाणुभागे बाहिरए पुग्गले अपरियाइत्ताय पुव्वामेव बाल अछेत्ता अभित्ता पभू गंठित्तए !

अर्थ

पहिले पाषाणादि पुद्गल डाल और जम्बूद्वीप की प्रदक्षिणा कर उसे पुन ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? हां गौतम! वह समर्थ है अहो भगवन् ! ऐसा क्यों कहा कि महर्धिक देव पाषाणादि डालकर यावत् लेने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जिस पुद्गल का प्रक्षेप किया जाता है उसकी प्रथम शीघ्र गति होती है और पीछे से मंद गति होती और महर्द्धिक यावत् महानुभाग इवको पहिले पीछे शीघ्र त्वरित गति होती है, इसलिये ऐसा कहा है यावत् जम्बूद्वीपको परिवट्टना करके उसपुद्गलको ग्रहण कर सकता है ॥५॥ अहो भगवन्! महर्द्धिवाला देव यावत् महानुभागवाला देवता बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना ही पहिले से बाल का छेदन भेदन किये बिना ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम

दुरूवत्ताए परिणमंति दुरुवा पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुब्भिगंधा पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति दुब्भिगंधा पोग्गला सुब्भिगंधात्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुरसा दुरसत्ताए दुरसा सुरसत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुफासा दुफासा त्ताए दुफासा सुफासत्ताए ? हंता गोयमा ! ॥ तचेव भंते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! एवं सुरूवा दुरूवा एवं गंधावि रसावि फासावि तचेव सुफासा दुफासा दुफासासुफात्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥ ४ ॥ देवेणं भंते ! महिड्डिए जाव महाणुभावे पुव्वामेव

पुद्गल दुष्ट शब्दपने परिणमते हैं और दुष्ट शब्द के पुद्गल शुभ शब्दपने परिणमते हैं अहो भगवन् ! सुरूप के पुद्गल क्या दुष्ट रूपपने परिणमते हैं अथवा दुष्ट रूप के पुद्गल सुरूप पने क्या परिणमते हैं ? हां गौतम ! ऐसे ही सुरभि गंध के पुद्गल दुरभिगंध पने परिणमते हैं और दुरभिगंध के पुद्गल सुरभिगंध पने परिणमते हैं सुरस के पुद्गल दुष्ट रसपने परिणमते हैं और दुष्ट रस के पुद्गल सुरसपने परिणमते हैं और शुभ स्पर्श के पुद्गल दुष्ट स्पर्श पने और दुष्ट स्पर्श के पुद्गल शुभस्पर्श पने परिणमते हैं इस तरह शब्द रूप, गंध रस व स्पर्श का वर्णन हुआ ॥ ४ ॥ अहो गौतम ! कोई महर्धिक यावत् महानुभाववाला देव

सूत्र

अभेत्ता पमूदीही करित्तए ?, हस्सीकरेत्तए ? णोतिणट्ठे समट्ठे ॥ एवं चत्तारिविगमा॥ पढमबीयमगेसु अपरियाइत्ता एगतरियग अछेत्ता अभेत्ता सेस तहेव तचेवण सधि छउमत्थ ण जाणति णपासति एव सुहुमचण दीही करेज्जवा हस्सी करेज्जवा॥१॥ अत्थिण भंते ! चंदिम सूरियाण हेट्ठिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि समवि तारारूवा, अणुवि तुल्लावि उप्पिंपि तारारूवा अणुंपि तुल्लावि ? हंता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति अत्थिण चंदिम सूरियाण जाव उप्पिंपि तुल्लावि ? गोयमा !

अर्थ

गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ऐसे ही चारगमा कहना पहिले दूसरे में ग्रहण किये विना और तीसरे चौथे भाग में छेदन भेदन रहित कहना सभी भी छद्मस्थ जानने देखने समर्थ नहीं है, क्यों की दीर्घ और ह्रस्व करने की विधि बहुत ही सूक्ष्म है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चद्र सूर्य के विमान नीचे जो तारा रूप ज्योतिषी देव हैं वे क्या कांति से हीन अथवा तुल्य है चंद्र सूर्य के समविभाग में तारा रूप हैं वे क्या कांति से हीन व तुल्य है, और चद्र सूर्य ऊपर तारा हैं व क्या कांति में हीन व तुल्य हैं ? अहो गौतम ! वे तारा कांति में हीन व तुल्य हैं अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र सूर्य के नीचे जो तारा रूप विमान हैं व कांति में हीन और तुल्य है यावत् उपर के तारा कांति में हीन व तुल्य है ? अहो गौतम ! जैसे २

णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पुव्वामेव बालं छित्ताभित्ता पभू गण्ठित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव बालं अछित्ता अभित्ता पभू गण्ठित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव बालं छेत्ता भेत्ता पभू गण्ठित्तए? हंता पभू॥ तंचेवणं सिंधि छउमत्थे ण जाणति न पासति, एव सुहुमंचणं गण्ठिज्जा॥ देवेण भंते! महिड्डिए पुव्वामेव बालं अछेत्ता

वह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये विना पहिले से बालका छेदन भेद कर ग्रहण करने में क्या समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर बालका पहिले से ही छेदन भेदन किये विना ही ग्रहण करने में समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर और बाल को पहिले से ही छेदन भेदन कर क्या उसे ग्रहण करने में समर्थ है? हां गौतम! वह समर्थ है इसको छद्मस्थ नहीं जान सकते हैं नहीं देख सकते हैं क्योंकी वह बहुत सूक्ष्म होती है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग वाले देव पहिले से ही बालका छेदन भेदन किये विना ही दीर्घ अथवा ह्रस्व करने में क्या समर्थ है? अहो

सूत्र

मिल्लाओ चरिमंताउ केवतिय अबाहए जोतिस चारचरंति ? गोयमा ! एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोतिसए चार चरेति ॥ एव दक्खिणिल्लाओ पच्चत्थिमिल्लाओ उत्तरिल्लाओ एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयण जाव चार चरति ॥ ९ ॥ लोगन्ताओ भंते ! केवतिय अबाहाए जोतिसए पन्नत्ते ? गोयमा ! एक्कारसेहिं एक्कारसेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोतिसे पन्नत्ते ॥ १० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो केवतिय अबाहाए सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति केवतिय अबाहाए सूरिए विमाणे चार चरति केवतिय अबाहाए चदविमाणे चार चरति केवइयं अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ? गोयमा ! इमीसेण

अर्थ

चाल चलते हैं ? अहो गौतम ! मेरू पर्वत से ११२१ योजन के अन्तर से ज्योतिषी चलते हैं, ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लोकान्त से लोक में कितने दूर ज्योतिषी रहे हैं ? अहो गौतम ! ११११ योजन पर ज्योतिषी है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से कितने दूर ऊपर सब से नीचे के तारे चाल चलते हैं, कितनी दूर पर सूर्य का विमान चलता है कितनी दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितनी दूर पर ऊपर के तारों के विमान चलते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से ७९०

जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियम बंभचेरवासाइं उक्कडाइं उस्सियाइं भवंति तहातहाण तेसिं देवाण एवं पण्णायति तंजहा अणुत्ते वा तुल्लत्ते वा सेतेणट्ठेण गोयमा ! अत्थिणं चंदिमसूरियाणं जाव उप्पिंपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि ॥ ७ ॥ एगमेगस्सण भंते ! चंदिम सूरियस्स केवतिओ णक्खत्त परिवारो पण्णत्तो ? केवतिओ महग्गह परिवारो पण्णत्तो, केवतिओ तारागण कोडाकोडीओ परिवारो पण्णत्तो ? गोयमा ! एग मेगस्सण चंदिम सूरियस्स अट्ठासीयगहा अट्ठावीसंच होइ णक्खत्ता एग ससीपरिवारो पण्णत्तो, एनो तारागण छावट्ठिसहस्साइं णवचेवसयाइं पंचसत्तराइं एगससी परिवारो तारागण कोडाकोडीण ॥ ८ ॥ जबूद्दीवेण भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थि

तारा रूप विमान के अधिष्ठाता देवोंने पूर्व भव में तप, नियम, ब्रह्मचर्य प्रमुख उत्कृष्ट किया अपने वे देवता कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य होते हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा है कि चंद्र सूर्य के नीचे तारा यावत् ऊपर के तारा कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! एक चंद्रमा के कितना नक्षत्रोंका परिवार, कितने ग्रहका परिवार व कितने ताराओं का परिवार है? अहो गौतम! एक चंद्र सूर्य का अठाशी ग्रह अट्ठाइस नक्षत्र और छासठ हजार नवसो पचत्तर कोडाकोडी तारा का परिवार है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् जम्बूद्वीप के मेरु से पूर्व के परिमाण से ज्योतिषी कितने अन्तर पर रहकर

सूत्र

तोण भंते ! केवइए अवाहाए चदविमाणे चार चरइ, केवइय सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ? गोयमा ! सूरविमाणातोण असीएहिं जोयणेहिं अबाहाए चदविमाणे चार चरति, जोयणसए अबाधाए स०व उवरिल्ले तारारूवे चार चराति ॥ चदविमाणाओण भंते ! केवतिय अवाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरति ? गोयमा ! चदविमाणातोण वीसाए जोयणेहिं अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चराति, एवामेव से पुव्वावरेण दसुत्तरसत जोयण बाहल्ले तिरिय मसखेज्जे जोतिस विसए पण्णत्ते ॥ ११ ॥ जम्बूद्दीवेण भंते ! कयरे नक्खत्ते सव्वब्भतरिल्ल तारारूवे चार चारति, कयरे नक्खत्ते सव्व बाहिरिल्ल

अर्थ

दूर ऊपर चद्रका विमान है और कितनी दूरपर उपर के तारारूप विमान है ? अहो गौतम ! सूर्य विमान से चद्र विमान ८० योजन ऊपर है और १०० योजन ऊपर तारा रूप विमान है अहो भगवन् ! चद्र विमान से तारा कितने दूरपर है ? अहो गौतम ! चद्र विमान से ऊपर वीस योजन तारारूप है यों सब मीलकर ११० योजन में तीरछा असख्यात योजन पर्यंत ज्योतिषी के विमान कहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में कौनसा नक्षत्र सब के अभ्यंतर तारारूप में चाल चलता है, कौनसा नक्षत्र सब से बाहिर तारारूप में चाल चलता है कौनसा नक्षत्र सब से ऊपर तारारूप चाल चलता है और

रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्ज सत्तहिं णउएहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति अट्ठहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सूरविमाण चार चरइ, अट्ठहिं असीएहिं जोयण सएहिं अबाहाए चंदविमाण चारचरइ नवहिं जोयण सएहिं अबाधाए सव्वउवरिल्ल तारारूवे चार चरति॥सव्वहिट्ठिल्लाओण भंते ! तारारूवातो केवतिय अबाहाए सूरविमाण चार चरइ, केवतिय आबाहाए चंदविमाणे चार चरइ, केवतिय अबाहाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ? गोयमा ! सव्वहेट्ठिल्लातोण दसहिं जोयणेहिं सूरविमाणे चार चरति, णवएहिं जोयणेहिं अबाधाए चंदविमाणे चार चरति, दसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरति ॥ सूरविमाण

योजन ऊंचे सब ज्योतिषी के नीचे तारा मंडल कहा है, ८०० योजन ऊंचे सूर्य विमान चलता है, ८८० योजन ऊंचा चंद्र विमान चलता है, ९०० योजन ऊंचा ऊपर के तारा रूप विमान चलते हैं अहो भगवन् ! सब से नीचे के तारारूप विमान से कितने दूर पर सूर्य का विमान चलता है, कितने दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितना दूर पर ऊपर के तारा रूप मंडल है ? अहो गौतम ! सब से नीचे के तारा रूप विमान से १० योजन ऊपर सूर्य का विमान चलता है, ९० योजन ऊपर चंद्र का विमान चलता है और ११० योजन ऊंचे ऊपर के तारा विमान चलते हैं अहो भगवन् सूर्य विमान से कितनी

चंदविमाणाण भंते ! केवतियं आयाम विक्खंभेण केवइयं परिक्खेवेण केवतियं बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छप्पन्नएगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण, तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण, अट्ठावीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते॥ सूरविमाणस्स सच्चेव पुच्छा ? गोयमा ! अडयालीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण, चउव्वीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं गहविमाणेवि अद्ध जोयणं आयाम विक्खंभेण तं तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण, कोस बाहल्लेण पण्णत्ते, ताराविमाणेणं कोस आयाम विक्ख-

॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमान कितना लम्बा चौडा व कितना परिधिवाला व कितना जाडा है ? अहो गौतम ! एक योजन के ६१ भाग में से ५६ भाग का लम्बा चौडा है, इस से तीन गुनी से अधिक परिधि है और एक योजन के एकसठिये अट्ठाइस भाग का जाडा है सूर्य विमान की पृच्छा? अहो गौतम ! एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का लम्बा चौडा है इससे कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है और एक साठये २८ भागका जाडा है ग्रह विमान आधा योजन का लम्बा चौडा है तीन गुनी से अधिक परिधि है, और एक कोस जाडा है तारा विमान एक कोस का लम्बा चौडा है

चारं चरति, कयरे नक्खत्ते सव्व उवरिल्लं चार चरति, कयरे णक्खत्ते सव्व हेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति ? गोयमा! जम्बूद्दीवे अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्लं तारारूवे चार चरति, मूल णक्खत्ते सव्व बाहिरिल्लं तारारूवे चार चरति, साती णक्खत्ते सव्वुप्परिल्लं जाव चरति, भरणी णक्खत्त सव्व हेट्ठिल्ल तारारूवे चार चरति ॥१२॥ चंदविमाणेण भंते ! किं संठित ? गोयमा ! अद्ध कविट्ठ सठाण संठित, सव्व फालि-तामये अब्भूगतमूसितप्पहसिते वण्णओ, एव सूरविमाणावि, एव गहविमाणावि, नक्खत्त विमाणावि, ताराविमाणावि, सव्वे अद्ध कविट्ठ सठाण संठिते ॥ १३ ॥

कौनसा नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में अभिजित नक्षत्र सब से अभ्यंतर तारारूप में चाल चलता है मूल नक्षत्र सब से बाहिर के तारारूप में चाल चलता है स्वाति नक्षत्र सब से ऊपर यावत् चाल चलता है और भरणि नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमान का क्या संस्थान कहा हुवा है ? अहो गौतम ! अर्ध कपिठ फल के संस्थान है सब स्फटिक रत्नमय है अभ्युद्गत कांतिवाला वगैरह वर्णन सब पूर्ववत् जानना ऐसे ही सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा विमान का जानना ये सब अर्ध कपिठ के संस्थान वाले

ग्गितगतीण ऊसियसुणिमियसुजाय अप्फोडियाणगुलाण वयरामय णक्खाण वयरामय दंताण वयरामयदाढाण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज जोतगसुजोत्ति याण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोरमाण मणोहराण अमियगतीण अमिय बलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महया अप्फाडितसीहनाइय बोल कलयलरवेण महुरेण मणहरेणय पूरेता अंबरदिसाओय सोभयता चत्तारिदेव साहस्सीउ सीहरूव धारिण देवा,ण पुरिच्छिमिल्लं बाहं परिवहंति ॥ ५ ॥ चंदविमाणस्सणं दक्खिणेणं सेयाणं

अर्थ

उन की गति गर्वयुक्त है, ऊंचे से नीची लटकती हुई उन की पुच्छा है, वज्र रत्नमय नख हैं, वज्र रत्नमय दाढा है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है, रक्त सुवर्णमय ओक्तर से जोते हुवे हैं, इच्छानुसार चलने वाले प्रीतिकारी गमन वाले, मन जैसे शीघ्र गति वाले, मनोरम गति वाले, मनोहर गति वाले, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम वाले हैं बड़े २ आस्फोटित सिंह नाद कलकल और मनोहर शब्द से आकाश को पूरते हुवे, दशोंदिशि को शोभित करते हुवे चार हजार देव पूर्व दिशा की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ५ ॥ चंद्रमा के दक्षिण दिशा में चार हजार देव हस्ती के रूप से विमान उठाते हैं वे हस्ती श्वेत शुभकांति वाले शंख दल समान विमल निर्मल दधि पिण्ड, गोक्षीर, समुद्र

भेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, पंचधणुसयाइ बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ १४ ॥ चंदविमाणेण भंते! कतिदेव साहस्सीओ परिवहति? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहति, चंदविमाणस्सण पुरत्थिमेण सेयाण सुभगाण सप्पभाण संखतलविमलनिम्मल दधिघण गोखीर फेण रययणिगर पगासाण थिर लट्ठ पउट्ट पीवर सुसिलिट्ठ सुतिक्ख-दाढा विडंबियत मुहाण रत्तुप्पल पत्तमउय सूमाल तालु जीहाण, पसत्थ सलट्ठ वेरुलिय भिसंत कक्कडक्खाण विसाल पीवरोरु पडिपुण्णविउल खंधाण मिउविसत्थय पसत्थ सुकुमाल सुहुम लक्खण विच्छिण्ण केसरसडोव सोभिताण चंकामिय ललित पुलित धवलग-

कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है, और ५०० धनुष्य का जाडा है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानको कितने हजार देव उठाते हैं ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव चंद्र विमान को उठाते हैं जिन में से चार हजार देव पूर्व दिशा में सिंहरूप धारन कर उठाते हैं उनका वर्णन करते हैं वे सिंह सुभग प्रभावाले श्वेत तल जैसे निर्मल क्षीर समुद्र, गोदुग्ध, समुद्र का फेण, चंद्र जैसा श्वेत हैं स्थीर लष्ट अतीव पुष्ट स्निग्ध व गोल तीक्ष्ण दाढा सहित मुखवाले हैं उन की जिव्हा और तालु रक्त कमल जैसा सुकोमल है उन के नख प्रशस्त वैडूर्य रत्नमय और कर्कश दीखते हैं, विस्तीर्ण और पुष्ट उरु स्थल हैं, प्रतिपूर्ण विपुल स्कंध हैं, मृदु, विशद प्रशस्त, सूक्ष्म लक्षणवंत व विस्तार वाली केशरा का आटोप है, चक्रमीता, ललिता, पुलिता, गति और चाल से

सूत्र

वइरामयातिक्खलअकुस कुभजुयलतारोडियाणं तवणिज्जसुबद्ध कच्छदप्पि यघलुद्धराण जबूणयाविमलघणमडलवयरामय लालालालियताल णाणा मणिरयण घटपासग रयतामय रज्जुबद्धलबिय घटाजुयल महुर समणहराण अल्लीणपमाणजुत्त वट्टियसुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालग्गत्त परिपुच्छणाण उवचिय पडिपुण्ण कुम्मचलणलहुविक्कमाण अकामयणक्खाण तवणिज्जतालुयाण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज जातस जोतियाण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोहराण अमिय गईण अमियबलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महयागभीर गुलगुलाइयरवेण महुरेण

अर्थ

तिलक से परिमंडित हैं उन की गरद में अनेक प्रकार के मणिरत्नमय चत्कृष्ट मुद्धलिय आभूषण हैं वैडूर्य रत्नमय दड वाला निर्मल वज्ररत्नमय तीक्ष्ण इष्ट अंकुश कुमस्थल पर रखा है रक्त सुवर्णमय कम्पर का पथ है जम्बूनद रत्नमय निर्मल निबद्ध मडल है वज्ररत्नमय लोल हैं अनेक मणिरत्नमय घटा व पासा हैं, चांदी की रस्सी से पथ बंधे हुवे हैं उन घंटा युगल के शब्द से मनोहर दीखते हैं छप रहित प्रमाणोपेत गोल अच्छे लक्षण वाली प्रशस्त रक्त सुवर्णमय जिव्हा वतालू है रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुवे है, उन का गमन इच्छानुसार, प्रीतिकारी, मन के अनुसार, व मनोहर है अपरिमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रमवत, है बडे गभीर गुलगुलाट और

सुभगाण सुप्पभाण सभतल विमल णिम्मल दधिघण गोक्खीरफेण रयणियर प्पकासाण वयरामयकुंभजुयल सुट्ठित पीवरवर वइरसोंडावित दित्त सुरत्त-पउमप्पकासअब्भुण्णवमुहाण तवणिज्ज विसाल चपल चलत चवल कण्ण विमलज्जुलाण मधुवण्ण भिसत णिद्धपिंगलपत्तल तिवण्णमणि रयणलो-यणाण अब्भुगतमउलमल्लिया धवल सरिस संठित णिव्वणदढ मसिण फलियामय सुजाय दंत मुसलोवसोभिताण कंचणकोसपविट्ठ दंतग्ग विमल मणिय रयणरुइल्लेप्पेरत चित्तरूवग्ग विराइयाण तवणिज्जविसाल तिलग पमुह परिमंडिताण णाणामणिरयण गुलिये गेवेज्जबद्धगलयवरभूसाण वेरुलिय विचित्त दंडनिम्मल

फेन और चांदी समान प्रकाश वाले हैं वज्ररत्नमय कुंभस्थल के युगल में पुष्ट वज्ररत्नमय सूंडादंड से देदीप्यमान रक्त पद्म समान मुख है रक्त सुवर्णमय विस्तार वाले अति चपल नेत्र हैं, मधुर वर्ण से देदीप्यमान स्निग्धशीलता हुवा पीला कज्जलादि दोष रहित कास पीले व श्वेत वर्ण वाले मणिरत्न मय नेत्र है अति ऊंचे कोमल मालतिपुष्प जैसे धवल, छिद्र रहित दृढ देदीप्यमान स्फटिक रत्नमय मालिरव दो मनक दन्तमूशल हैं उन दन्तमूशल के अग्रभाग में सुवर्णवलय जडे हुवे हैं निर्मल मणिरत्न से मनोहर दांत के अग्र भाग विविध रूप से विराजित हैं रक्त सुवर्णमय विशाल

पीवरसुसठितकडीण उलंबपलंब लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगंडाणं समखुर वालिधराण समलिहितितिक्खग्ग गुप्पसिंगाण तणुसुहुम सुजातणिद्ध लोमच्छविवराण उवचित मंसल विसाल पडिपुण्ण खंधपमुहसुंदराण वेरुलिय भिसत कडक्खसु णिरिक्खणीण जुत्तप्पमाण पधाण पसत्थ रमणिज्ज गग्गरगल, सोभिताण घरघरग सुबद्धकंठ मंडियाण,णाणामणि कणगरयण घंटिये वेयत्थग सुकय रतिय मालियाणवरघंटा गलगलंलिय सोभंत सस्सिरीयाण पउमप्पल सगल सुरभिमाला विभूसियाणं वइरखुराण विविह विक्खुराण फलियकामयदंताण, तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज

अर्थ प्रतिपूर्ण विपुल विस्तार वाले कपोल हैं, किंचित् नम्र ओष्ठ हैं, घन निचित श्रेष्ठ लक्षण युक्त चंक्रमित, ललित वक्रवाली चपल गति है, पुष्ट गोल सुस्थित कटिभाग है, अवलंब प्रलंब ऐसे लक्षण युक्त प्रशस्त रमणिक पुच्छ है, समखुर हैं, समान व तीक्ष्ण शृंग हैं, पतली सूक्ष्म साविवत स्निग्ध रोमराजी है, पुष्ट मांसल विशाल प्रतिपूर्ण वैडूर्य रत्नमय देदीप्यमान कटाक्षवाला उन का निरीक्षण है, प्रमाणोपेत प्रधान प्रशस्त रमणिक गलकंबल है, घुघरवाला कण्ठ में धारन किया है, अनेक मणिरत्नोंवाला कच्छ आभूषण से बनाई हुई वरमाला धारन की है प्रधान घण्ट से सुशोभित सश्रीक हैं पद्मवर उत्पल कमल की सुगंधमाला से विभूषित हैं, उन के खुर वज्ररत्नमय हैं, स्फटिक रत्नमय दंत हैं, रक्त सुवर्णमय जिव्हा

मणहरेण पूरिता अंबर दिसाओय सोभयता चत्तारि देव साहस्सीओ गयरूव धारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति ॥ ६ ॥ चंदविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सप्पभाणं चकमिय ललिय पुलित चवल चपल ककुह सालीणं सण्णय पासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं मियमाइत पीणरतिपासाणं झसविहग सुजातकुच्छीणं पसत्थ णिद्धमधु गलित भिसत पिंगलनक्खाणं विसाले पीवरोरुय पडिपुण्णविपुलखंधाणं वट्ट पडिपुण्णविपुल कण्णकडियाणं, इसिं आणयवसणो वट्टाणं घणणिचित सुबद्धलक्खणुण्णत चकमितललित चलचवल गव्वितगतीणं वट्टिय

मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूरते और दशों दिशी को शोभित करते हुए चार हजार देव हाथी के रूप से दक्षिण दिशा की बाहा उठाते हैं ॥ ६ ॥ चंद्र विमान से पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ के रूप से विमान उठाते हैं वे वृषभ श्वेत, सुभग कान्ति वाले हैं उन के पासे (पसली) चक्रमित, ललित व पुलित गति से हलन चलन वाले स्कंध से सुशोभित हैं झोलते हुवे हैं, सुजात हैं प्रमाणोपेत और आनंदकारी हैं मत्स्य मच्छ अथवा पक्षी जैसी उन की कुक्षि है मधुर मधुसमान पीली देदीप्यमान नख चक्षु है उन के विस्तीर्ण स्कंध है गोल

धारण तिक्खइ गईण सिक्खितगतीण सण्णतपासाण सगयपासाण सुजाय पासाण मितमाइतपीणरइयपासाण अझसविहगमुजात कुच्छीण पीणपीवर वट्टित सुसाठित कडीण उलंब पलंब लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगडाण तणुसुहुम सुजाय णिद्धलोमच्छविधराण मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण विकिण्ण केसरवालिधराण ललियलास गाललाड वरभूसणाण मुहमडगोपुच्छ चमर थोसग परिमडिय कडीण तवणिज्ज खुराण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज जोतग सुजोतियाण, कामगमाण पीतिगमाण मणागमाण मणोहराण अमितगतीण अमिय बलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमेण महया

अर्थ पसली नम्र, सुजात, परिमित, पुष्ट हैं मत्स्य अथवा पक्षी जैसी कुक्षि है उस का व पुष्ट कटिभाग गोल है, अवलम्ब ऐसे लक्षणोंवाला पुछ है पतली स्निग्ध सूक्ष्म सुजात रोमराजी है, मृदु सुकुमाल विशाल सूक्ष्म और लक्षणोपेत स्कंध के केश (केशवाली) है, ललित लासक नामक उत्तम आभूषण के धारक हैं, सुखकारी गाय पुच्छ के चामर और थोपग आभरण विशेष से उन का कटि प्रदेश परिमंडित है रक्त सुवर्णमय खुर है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुए हैं इच्छानुसार उन का गमन है और भी उन का गमन प्रीतिकारी और मन को अनुसरता हुआ है अमित गति बल, वीर्य पुरुषाकार और पराक्रम है यह बड़े २ हेषारव अथवा किलकिल मधु।

जोयण सुव्वांतियाणं कामगमाणं पीतिगमाणं मणोगमाणं मणोहराणं अमियगतीणं अमियबलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमाणं महया गंभीरगज्जिय रवेणं महुरेणं महया मणहरेणं पूरेंता अंबरदिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ वसहरूवधारिणं देवाणं पञ्च- त्थिमिल्लं बाहं परिवहंति ॥ ७ ॥ चंदविमाणस्सणं उत्तरेणं सेताणं सुभगाणं सुप्प- भाणं जच्चाणं वरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउल मल्लियच्छीणं घणणिचित सुबद्ध लक्खण उण्णत चंकमितललित पुलिय चल चवल चंचल गतीणं, लंघण वग्गण धावण

और वामू हैं, रक्त सुवर्णमय खोल से सोते हुए हैं, इच्छानुसार प्रीतिकारी मनानुकूल व मनोहर मन का गमन है, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम युक्त हैं, बडे गंभीर शब्द से गर्जारव करते हुवे मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे दशोदिशी में शोभा करते हुवे चार हजार देव वृषभ के रूप से पश्चिम दिशी की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ७ ॥ चंद्र विमान से उत्तर में चार हजार देव अश्व के रूप से विमान उठाकर चलते हैं, उन का वर्णन करते हैं वे श्वेत, उज्वल, सुभग, शोभित हैं, तरुण हरिमेला (वनस्पति विशेष) मल्लिका वनस्पति उन समान उज्वल उन के नेत्रों हैं, निविड मांसल जैसे उन्नत चंक्रमित ललित पुलित चपल चपल गति है, उछलना, कूदना, दौडना, धणिधप, चलना, त्रिपदी छेदना ऐसी गति है उन की

तुरगरूवधारीण देवाण उत्तरिल्लं वाहं परिवहति ॥ १० ॥ एवं णक्खत्त विमाण स्सवि पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि देव साहस्सीओ परिवहति तंजहा-सीहरूव धारीणं देवाणं एगा देव साहस्सी, पुरच्छिमिल्लं वाहं एवं चउदिसिंपि, एवं तारगाणवि णवरिं दो देव साहस्सीउ परिवहति तंजहा-सीहरूव धारीणं देवाणं पंचदेवसया पुरच्छिमिल्लं वाहं परिवहति, एवं चउदिसिंपि ॥ ११ ॥ एतेसिणं भंते ! चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त ताररूवाणं कयरे कयरेहिंतो सिग्घगतीवा मंदगतीवा ? गोयमा ! चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती, सूरेहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगति, णक्खत्तेहिंतो तारा सिग्घगती, सव्वप्पगती चंदा, सव्वासिग्घगतीओ तारारूवे ॥ ११ ॥ एएसिणं

अर्थ

दो हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ १० ॥ ऐसे ही नक्षत्र विमान की पृच्छा कहना नक्षत्र विमानको चार हजार देव उठाते हैं, जिनमें से सिंह रूप से एक हजार देव पूर्व दिशा में, यावत् एक हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र और ताराओं में से किस की गति मंद है और किस की गति शीघ्र है ? अहो गौतम ! चंद्र से सूर्य की गति शीघ्र है, सूर्य से ग्रह की गति शीघ्र है, ग्रह से नक्षत्र की गति शीघ्र है, और नक्षत्र से तारा की शीघ्र है सब से मंद गति चंद्र की है और सब से शीघ्र गति तारा की है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र

हयहेसिय किलकिलाइय रवेण महुरेणय मणहरेणय पूरिंता अंबरदिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ हयरूवधारीण देवाण उत्तरिल्ल बाहं परिवहंति, ॥ ८ ॥ एवं सूरविमाणस्सवि पुच्छा ? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहंति ॥ ४ ॥ पुव्वकमेण, ॥ ९ ॥ एवं गहविमाणाणं भंते ! कतिदेव साहस्सीओ परिवहंति ? गोयमा ! अट्ठदेव साहस्सीओ परिवहंति तंजहा सीहरूवधारीणं दो देव साहस्सीओ पुरच्छिमिल्लं बाहं परिवहंति, दाहिणेणं गयरूव धारीणं दो देव साहस्सीओ दाहिणिल्लं बाहं दो देव साहस्सीओ वसभरूवधारीणं, देवाणं पच्चत्थिमिल्लं बाहंपरिवहंति दो देव साहस्सीओ

मधुर, मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे चार हजार देव अश्वरूप से उत्तर दिशाके चन्द्र विमान की बाहा उठाते हैं ॥ ८ ॥ ऐसे ही सूर्य विमान की पृच्छा करना ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव सूर्य विमान उठाते हैं इस का क्रम भी पूर्वानुसार जानना अर्थात् चार हजार देव पूर्व में सिंहरूप से हैं दक्षिण दिशामें चार हजार देव हाथी के रूप से, पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ रूप से और उत्तर दिशा में चार हजार देव अश्व रूप से हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! ग्रह विमान को कितने हजार देव उठाते हैं ? अहो गौतम ! आठ हजार देव ग्रह विमान उठाते हैं जिस में से दो हजार देव पूर्व में सिंह रूप से, दो हजार देव दक्षिण में हस्ती रूप से दो हजार देव पश्चिम में वृषभ रूप से और

उक्कोसेण दोगाउयाइ, ताराख्वे जाव अतरे पण्णत्ते ॥ ३ ॥ चदस्सणं भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो कतिअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताओ तजहा—चदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा ॥ तत्थण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीए चत्तारि २ देवी साहस्सीओ परिवारो पण्णत्तो

अर्थ

आश्रो को अन्तर है यह जघन्य २६६ योजन उत्कृष्ट १२२४२ योजन का अंतर है और निर्व्याघात आश्रो जघन्य ५०० धनुष्य उत्कृष्ट दो गाउ का अंतर है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रमा को कितनी अग्र महिषियों कही है ? अहो गौतम ! चार अग्रमहिषियों कही है जिन के नाम—चंद्रप्रभा, दोषिनाभा, अर्चिमाली और प्रभंकरा एक देवि को चार २ हजार देवी का

---

१ निषध नीलवंत पर्वत ४०० योजन ऊंचे हैं उपर ५०० योजन ऊंचे कूट हैं ये मूल में ५०० योजन लम्बे चौडे हैं मध्य में ३७५ योजन और उपर २५० योजन लम्बे चौडे हैं कूटके दोनों आठ २ योजन दूर तारामंडल चलता है इस से २५०+१६= २६६ योजन का अंतर रहा.

२ दस हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा है, इन के दोनों पस ११२१ योजन दूर तारा मंडल चलता है इस तरह तीनों के योजन मील कर १२२४२ योजन के अंतर हुआ

भंते ! चंदिम सूरिय जाव ताराख्वाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पड्डीयावा महिड्डीयावा ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिड्डिया, णक्खत्तेहिंतो गहामहिड्डीया, गहेहिंतो सूरामहिड्डीया, सूरेहिंतो चंदामहिड्डीया ॥ सव्वप्पड्डिया तारा सव्वमहिड्डीया चंदा ॥ १२ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे तारारूवस्सय २ एसणं केवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते तंजहा-वाघातिमेय निव्वाघातिमेय, तत्थणं जेसे वाघातिमे से जहण्णेणं दोण्णिछावट्ठे जोयणसये उक्कोसेणं बारस जोयण सहस्साइं दोण्णिय बायाले जोयणसए तारारूवस्सय २ आबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ तत्थणं जेसे णिव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंचधणुसयाइं

सूर्य यावत् तारा में से कौन २ अल्प ऋद्धि वाले हैं और कौन २ महा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! तारा से नक्षत्र महा ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्र से ग्रह महा ऋद्धि वाले हैं, ग्रह से सूर्य महा ऋद्धि वाले हैं और सूर्य से चंद्र महा ऋद्धि वाले हैं सब से अल्प ऋद्धि वाले तारा हैं और महर्धिक चंद्र हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में तारा २ में परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! अंतर के दो भेद कहे हैं तद्यथा व्याघात आश्री और निर्व्याघात आश्री उस में के व्याघात

समुग्गएसु बहुयाओ जिणस कहाओ चिट्ठति, जाओण चदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो अण्णेसिंच बहूण जोतिसियाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ तासिण पणिहाय नापभू चद जोइसराया चदवडेंसए विमाणे सभाए सुम्माएचद सीहासणसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! पभू चद जोणिसिंदे जोतिसराया चदवडेंसए विमाणे समाए सुहम्माए चदसि सीहासणसि चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं अन्नेहिय बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिय देवीहिय सद्धिं सपरिवुडे

अर्थ

समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा को चद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में माणवक वर्ता चैत्य है वज्ररत्नमय गोल डब्बे हैं जिन में जिनदाढा है ये जिनदाढा ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा चंद्र यावत् अन्य ज्योतिषी देव व देवियों को अर्चनीय पूजनीय हैं यावत् सेवा करने योग्य हैं इस से अहो गौतम ! चद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा के चन्द्र विमानकी सुधर्मा सभामें चंद्र सिंहासन पर रहा त्रुटित सख्यातवाली देवियों साथ भोग भोगनेमें समर्थ नहीं है परतु वह चद्रा वतसक विमान में सुधर्मा सभा में चद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक यावत्

पभूण ततो एगमेगा देवी अन्नाइ चत्तारि २ देवी साहस्साइं परिवार विउव्वित्तए, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवी साहसीओ पण्णत्ताओ सेत्त तुडिए ॥ १४ ॥ पभूण भंते ! चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसिंसीहासणसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ नो पभू चंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसि सीहासणसि तुडिएण सद्धिं विपुल भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! चंदस्सण जोतिसिंदस्स जोइसरण्णो चंद-वडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवगंसि चेतियखंभंसि वइरामतेसु गोलवट्ट

परिवार है यों सोलह हजार देवी जानना और प्रत्येक अग्रमहिषी चार २ हजार रूप की विकुर्वना करने में समर्थ होवे यों सब मीलकर देवियों का सोलह हजार का परिवार हुवा यह त्रुटित सस्पूर्ण हुई ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में चंद्र सिंहासन पर त्रुटित साथ दिव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वह भोग भोगने में समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र नाम के ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में यावत् त्रुटित साथ भोग भोगने में

मूल

जयती, अपराजिता, तेसिंपि तहेव ॥ १५ ॥ चदविमाणेण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? एव जहा ठिती पदे तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ १६ ॥ एतेसिण भते ! चदिम सूरिय गह नक्खत्ततारारूवाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! चदिमसूरियाए तेण दोण्णवि तुल्ला सव्वत्थोवा, सखेज्जगुणा णक्खत्ता, सखेज्जगुणागहा, सखेज्जगुणाओ तारगाओ ॥ जोइस उद्देसओ सम्मत्तो ॥ २ ॥ * * * * * * *

कहिण भते ! वेमाणियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ? कहिण भते ! विमा-

अर्थ

की चार अग्रमहिषी कहना तद्यथा-विजया, वेजयंति जयंती और अपराजिता ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानवासीदेव की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में स्थिति कही वैसेही कहना यावत् तारा की जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! इन चंद्र सूर्य, ग्रह नक्षत्र और ताराओं में कौन किससे अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! चंद्र और सूर्य परस्पर तुल्य और सब से थोडे हैं, इस से नक्षत्र संख्यात गुने, इस से ग्रह संख्यात गुने और इस से तारा संख्यात गुने अधिक हैं, यों ज्योतिषी का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ २ ॥ :. .. :: : .: ::

अहो भगवन् ! वैमानिक देव के विमान कहां कहे हैं ? और वैमानिक देव कहां रहते हैं ? अहो

महया हय नट्ट गीय वाइय तंतीतल ताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइय रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए, केवलपरियार तुडिएण सद्धिं भोग भोगाइं बोसाढिए (बुद्धीए) नो चेवण मेहुणवत्तिय ॥ १४ ॥ सूरस्सण भंते ! जातिसिंदस्स जोतिसरन्नो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा सूरिप्पभा, आतयाभा, अच्चिमालि, पभंकरा ॥ एवं अवसेस जहा चंदस्स णवरिं सूरवडेंसकेविमाणे सूरंसि सीहासणंसि तहेव सव्वेसिं गिगहाईण चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा- विजया, वेजयती,

सोलह हजार आत्मरक्षक और अन्य बहुत ज्योतिषी देव व देवियों के साथ परवरा हुवा बडे नृत्य गीत, वादित्र, तंती, तल, ताल, त्रुटित, घन, मृदंग के शब्द से दीव्य भोगोपभोगता हुवा विचरता है देवियों के वृन्द को मात्र दृष्टि से देखे परंतु मैथुन वार्ता करे नहीं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य नामक ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा को कितनी अग्रमहिषी कही ? अहो गौतम !, चार अग्रमहिषी कही जिनके नाम सूर्य प्रभा, अर्चि प्रभा, अर्चिमालीनी और प्रभंकरा शेष अधिकार सब चंद्रवत् जानना परंतु इतना विशेष कि सूर्यावतंसक विमान और सूर्य सिंहासन कहना. वैसे ही सब ग्रहादिक ज्योतिषी

बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए चोद्दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए सोलसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एवं देवीणवि पुच्छा ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए छच्चदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पंचदेवीसया पण्णत्ता ॥ २ ॥ सक्कस्सणं भंते! देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं केवइय कालठिई पण्णत्ता, एवं मज्झिमियाए, बाहिरियाएवि ? गोयमा ! सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो देवाणं अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं पंचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झि-

अर्थ

आभ्यंतर परिषदा में बारह हजार देव, मध्य की परिषदा में चौदह हजारदेव, और बाहिर की परिषदा में सोलह हजार देव कहे हैं अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा में कितनी देवी, मध्य परिषदा में कितनी देवी और बाहिर की परिषदा में कितनी देवी कही हैं ? अहो गौतम! आभ्यंतर परिषदा में सातसो देवी, बीच की परिषदा में छ सो देवी और बाहिर की परिषदा में पांच सो देवी कही हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की अभ्यंतर परिषदा में देवो की कितनी स्थिति कही, बीचकी परिषदा के देवोंकी कितनी स्थितिकही और बाहिर परिषदा के देवों की कितनी

णिवासवा परिवसति ! जहा ट्ठाणपदे तहा सव्व भाणियव्वं, णवरि परिसाओ भाणियव्वाओ जाव सक्के अण्णेसिंच बहुण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय जाव विहरति ॥ १ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा—समिता चंडा जाया, अब्भिंतरिया समिता, मज्झिमियाचंडा, बाहिरिया जाया ॥ २ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरिया परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ? मज्झिमियाए बाहिरियाए तहेव पुच्छा ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए

गौतम ! जैसे स्थानपद में वर्णन किया वैसा ही यहां सब कहना विशेष में यहां तीन परिषदा जानना यावत् शक्र देवेन्द्र और अन्य बहुत सौधर्म विमानवासी देव और देवियों का अधिपतिपना करता हुवा यावत् विचरता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की कितनी परिषदा है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही हैं जिन के नाम—समिता, चंडा और जाया आभ्यंतर की समिता, मध्य की चंडा और बाहिर की जाया ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा में कितने देव रहते हैं, मध्य परिषदा में कितने देव कहे हैं और बाहिर की परिषदा में कितने देव कहे हैं ? अहो गौतम ! शक्रदेवेन्द्र की

परिसाए दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चोद्दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए णव देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए अट्ठ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता ॥ देवाण ठिती पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए देवाण सत्तपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए छपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता बाहिरियाए पचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए पचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए

अर्थ — में दश हजार देव, बीच की परिषदा में बारह हजार देव और बाहिर की परिषदा में चौदह हजार देव हैं देवी की पृच्छा? अहो गौतम! आभ्यंतर परिषदा में नव सो देवी, मध्य परिषदा में आठ सो देवी और बाहिर की परिषदा में सात सो देवी हैं देवों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा के देवों की सात पल्योपम की, मध्य परिषदा के देवों की, छ पल्योपम और बाहिर के परिषदा के देवों की पांच पल्योपम की स्थिति कही है देवियों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा की पांच पल्योपम की मध्य परिषदा की चार

मियाए परिसाए देवाण चत्तारिं पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण तिण्णपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए दोण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए एग पलिओवमं ठिती पण्णत्ता, अट्ठो सोचेव जहा भवणवासीण कहिण भंते ईसाणगाणं देवाण विमाणा पण्णत्ता ? तहेव सव्व जाव ईसाणेइत्थ विंद जाव विहराति॥ ४ ॥ ईसाणस्सण भंते! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तउपरिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिता चंडा जाया, तहेव सव्व, णवरिं अब्भिंतरियाए

स्थिति कही ! अहो गौतम ! शक्र देवेन्द्र के अभ्यंतर परिषदा, के देवोंकी पांच पल्योपमकी मध्य परिषदा के देवों की चार पल्योपम की और बाहिरकी परिषदा के देवों तीन पल्योपमकी स्थिति है आभ्यंतर परिषदा के देवी की तीन पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी को दो पल्योपम और बाहिर की परिषदा की देवी की एक पल्योपम की स्थिति है शेष भवनवासी देवो की परिषदा के देव जैसा ही जानना, ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र देव राजाकी कितनी परिषदा हैं? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही जिन के नाम-समिता, चण्डा और जाया इस का कथन सब पूर्वोक्त जैसे जानना विशेष में आभ्यंतर परिषदा

ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अद्धपचमाइ सागरोवमाइ तिण्णि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, अट्ठामोचेव ॥ एव माहिंदस्स तहेव जाव तत्थ परिसाए छदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती देवाण, अब्भितरियाए परिसाए अद्धपचमाइ सागरोवमाइ, सत्तपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपचमाइ सागरोवमाइ, छप्पलिओवमाइ बाहिरियाए परिसाए अद्ध. पचमाइ सागरोवमाइ पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, तहेव सव्वेसिं इदाणठाणगमेण विमाण।

अर्थ

देव और बाहिर की परिषदा में दश हजार देव हैं स्थिति-आभ्यतर परिषदा में साढे चार सागरोपम सात पल्योपम, मध्य परिषदा में साढे चार सागरोपम छ पल्योपम, और बाहिर की परिषदा में साढे चार सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति है इसी तरह इन्द्रों स्थानपद से जानना यहां क्रम से परिषदा कहते हैं ब्रह्म इन्द्र की तीन परिषदा-आभ्यतर में चार हजार देव, मध्य में छ हजार देव और बाहिर की परिषदा में आठ हजार देव हैं आभ्यतर परिषदा के देवों की स्थिति साढे आठ सागरोपम और पांच पल्योपम मध्य परिषदा में साढे आठ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में साढे आठ

तिण्णिपलिओवमाइं ठितीपण्णत्ता। अट्ठो तहेव भाणियव्वो ॥ १५ ॥ सणकुमाराण पुच्छा ? तहेव ठाणपदगमेण जाव सणकुमारस्स तओ परिसाओ समितादि तहेव, णवरिं अब्भितरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहास्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ अब्भितरियाए परिसाए देवाण ठिती अद्धपचमाइं सागरोवमाइं, पचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपचाइं सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं

पल्योपमकी और बाहिरकी परिषदाकी देवीयों की तीन पल्योपमकी स्थिति कही है कार्य सब भवनपति जैसे कहना ॥१५॥ सनत्कुमार की पृच्छा? इसका सब कथन स्थानपदसे जानना यावत् समितादि तीन परिषदा कहना विशेष में आभ्यंतर परिषदा में आठ हजार देव, मध्य परिषदा में दश हजार देव और बाहिर की परिषदामें बारह हजार देव हैं (यहां देवियों नहीं है) आभ्यंतर परिषदाके देवकी साडेचार सागरोपम और पांच पल्योपम की स्थिति है, बीचकी परिषदाकी साडे चार सागरोपम और चार पल्योपमकी कही है और बाहिर की परिषदा के साढे चार सागरोपम और तीन पल्योपम की स्थिति कही है कार्य पूर्ववत् जानना ऐसे ही माहेन्द्र देवेन्द्र का कहना यावत् यहां आभ्यंतर परिषदामें छ हजार देव, मध्य परिषदामें आठ हजार

वमाइ सत्तपलिओवमाइ ठिती, मज्झिमियाए परिसाए बारससागरोवमाइ छच पलिओवमाइ ठिती बाहिरियाए परिसाए बारससागरोवमाइ पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता अट्ठो सोचेव ॥ महासुक्क पुच्छा ? गोयमा ! जाव अब्भिंतरियाए एग देव साहस्सीओ मज्झिमियाए परिसाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ ॥ ठिती अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धसोलससागरोवमाइ पचपलिओवमाइ, मज्झिमियाए अद्धसोलससागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ बाहिरियाए अद्धसोलससागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइ अट्ठो सोचेव ॥ सहस्सारेपुच्छा ? जाव अब्भिंतरियाए परिसाए पचसवसया, मज्झिमियाए परिसाए एगादेवसाहस्सीओ,

अर्थ

है स्थिति आभ्यतर परिषदा में १५॥ सागरोपम पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में १५॥ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में १५॥ सागरोपम तीन पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् सहस्रार की तीन परिषदा आभ्यतर में पांच सो देव, मध्य में एक हजार और बाहिर में दो हजार स्थिति अभ्यतर की १७॥ सागरोपम सात पल्योपम, बीच की १७॥ सागरोपम छ पल्योपम और बाहिर की १७॥ सागरोपम पांच पल्योपम की है आणत प्राणत इन दोनों का एक ही इन्द्र होने से इन की तीन परिषदा

णेतव्वा, ततो पच्छा परिसाओ पत्तेय२ वुच्चाति॥ बंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ अब्भितरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ, मज्झिमियाए परिसाए छदेव साहस्सीओ, बाहिरियाए अट्ठदेव साहस्सीओ ॥ देवाण ठिती अब्भितरियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं, चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं, तिण्णि पलिओवमाइं अट्ठोसो चेव ॥ लंतगस्सवि जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए दो देव साहस्सीओ मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए छदेवे साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती भाणियव्वा अब्भितरियाए परिसाए देवाण बारस सागरो-

सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति है कार्य पूर्ववत् लंतक देवेंद्र की तीन परिषदा आभ्यंतर में दो हजार देव, मध्य में चार हजार देव और बाहिर की परिषदा में छ हजार देव हैं आभ्यंतर परिषदामें देवों की स्थिति बारह सागरोपम सात पल्योपम, बीचकी परिषदामें बारह सागरोपम छ पल्योपम और बाहिरकी परिषदा की बारह सागरोपम पांच पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् महा शुक्र की तीन परिषदा आभ्यंतर परिषदा में एक हजार देव, मध्य परिषदा में दो हजार देव और बाहिर की परिषदा में चार हजार देव

सूत्र

देवाण तहेव अच्चुए परिवारे जाव विहरति॥अच्चुयस्सण देविंदस्स तओ परिसाओ प० अब्भिंतर परिसाए देवाण पणुवीस सय, मज्झिमियाए अड्ढाइज्जसया, बाहिर परिसाए पचसया ॥ अब्भिंतराय एकवीस सागरोवमाइ सत्तपलिओवमा, मज्झिमियाए एक्कवीस सागरोवमाइ छपलिओवमा, बाहिराए एक्कवीस सागरोवमाइ पचपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥ कहिण भते ! हिट्ठिम गेविज्जगाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ? कहिण भते ! हिट्ठिम गेवेज्जगा देवा परिवसति? जहेव ठाणपए तहेव, एव मज्झिम गेविज्जगा उवरिम गेविज्जगा, अणुत्तराय जाव अहमिंदा नाम ते देवा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ पढमो वेमाणियउद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ० ०

अर्थ

बाहिर की परिषदा में ५०० देव हैं आभ्यंतर परिषदा में २१ सागरोपम सात पल्योपम मध्य परिषदा में २१ सागरोपम ६ पल्योपम और बाहिर की परिषदा में २१ सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति कही है अहो भगवन् ! नीचे के ग्रैवेयक के स्थान कहां कहे हैं ? और वे कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थानपद में कहा वैसे ही जानना ऐसे ही मध्य ग्रैवेयक, उपर की ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानका जानना यावत् अहमेन्द्र पर्यंत कहना यह वैमानिक का प्रथम उद्देशा हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

बाहिरियाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती अब्भितरियाए अट्ठारस सागरोवमाइं, सत्तपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता एव मज्झिमियाए अट्ठारस सागरोवमाइं छपलिओवमाइं, बाहिरियाए अट्ठारस सागरोवमाइं, पचपलिओवमाइं अट्ठो सोचेव ॥ आणयपाणयस्सावि पुच्छा जाव तओ परिसाओ, णवरिं अब्भितरियाए अड्ढाइज्जा देवसया, मज्झिमियाए पच देवसया, बाहिरियाए एगादेव साहस्सीओ ॥ठिती अब्भितरियाए एगूणवीस सागरोवमाइं, पच पलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइं चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ ठिती अट्ठो सोचेव ॥कहिण भते ! आरणच्चुयए

आभ्यतर में २५० देव, बीच की परिषदा में ५०० और बाहिर की परिषदा में १००० देव हैं आभ्यतर परिषदा में स्थिति गुनीससागरोपम और पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में गुनीस सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में गुनीस सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति कही कार्य पूर्ववत जानना अहो भगवन् ! आरण अच्युत का इन्द्र कहां रहता है ? यावत् विचरता है इस की तीन परिषदा कही है आभ्यतर परिषदा में १२५ देव, बीच की परिषदा में २५० और

अणुत्तरोववाइया पुच्छा? गोयमा! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ १ ॥ सोहम्मीसाण कप्पेसु-विमाण पुढवी केवइयं बाहल्लेण पण्णत्ता? गोयमा ! सत्तावीस जोयणसयाइ बाहल्लेण, एवं पुच्छा? सणकुमार माहिंदेसु छव्वीस जोयणसयाइं, बंभलंतएसु पणवीस, महासुक्क सहस्सारेसु चउवीस, आणयपाणय आरणच्चुएसु तेवीस सयाइं, गेविज्जविमाण पुढवी बावीस, अणुत्तरविमाण पुढवी एक्कवीस जोयणसयाइ बाहल्लेण ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते! कप्पेसु विमाणे केवतियं उड्ढं उच्चत्तेण पण्णत्ता? गोयमा! पंच जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, सणकुमारमाहिंदेसु छ जोयणसयाइं, बंभलंतएसु सत्तजोयण सयाइं

अर्थ गौतम ! आकाशास्ति काया के आधार में हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी का कितना जाडपना है? अहो गौतम! २७०० योजनकी विमान की नीव का जाडपना है, आगमी पृच्छा करना सनत्कुमार माहेन्द्र में २६०० योजनकी विमानकी नीवका जाडपन है, ब्रह्म और लांतक देवलोक में २५०० योजनका विमानकी नीवका जाडपन है, महाशुक्र और सहस्रार में २४०० योजनका जाडपना है आणत प्राणत आरण और अच्युत में २३०० योजन का विमानकी नीवका जाडपना है, ग्रैवेयक विमानमें २२०० योजन का पृथ्वी का जाडपना है और पांच अनुत्तर विमान की पृथ्वी का २१०० योजन का जाडपना है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने ऊंचे हैं ? अहो गौतम !

सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु विमाणे पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणोदधि पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ सणकुमारे माहिंदे कप्पेसु विमाणे पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता । बंभलोएण भंते ! कप्पे विमाण पुढवी पुच्छा ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ लंतगेण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! तदुभय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ महासुक्क सहस्सारेसुवि तदुभय पइट्ठिया आणय जाव अच्चुएसुण भंते ! कप्पेसु पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ गेविज्जविमाण पुढवीण पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता

अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनोदधि के आधार से पृथ्वी रही है ? अहो भगवन् ! सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक में पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है अहो भगवन् ! ब्रह्म देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है लंतक की पृच्छा, अहो गौतम ! दोनों के आधार से रही है महाशुक्र और सहस्रार में घनोदधि और घनवात इन दोनों के आधार से रही है आनत से अच्युत देवलोक में विमान आकाशास्तिकाया के आधार से हैं ग्रैवेयक की पृच्छा ? अहो गौतम ! आकाशास्ति काया के आधार से है अनुत्तर विमान की पृच्छा ? अहो

॥ ४ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केवतियं आयामविक्खंभेण केवतियं परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय जहा नरगा तहा अनुत्तरोववाइया संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय तत्थणं जेते संखेज्जवित्थडे से जंबुद्दीवप्पमाणा, तत्थ जेते असंखेज्जवित्थडा असंखेज्जाइं जोयण सयाइं जाव परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ ५ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! विमाणा कतिवण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचवण्णा पण्णत्ता तंजहा—किण्हा नीला लोहिया हालिद्दा सुकिला ॥ सणंकुमार माहिंदेसु चउवण्णा नीला

अर्थ

और श्वेत ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने लम्बे चौडे हैं और कितनी परिधिवाले है ? अहो गौतम ! वे विमान दो प्रकार के है संख्यात योजन के विस्तारवाले और असंख्यात योजन के विस्तारवाले, यों नरक का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् अनुत्तरोपपातिक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं इन में जो संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं वे जम्बूद्वीप प्रमाण हैं, और असंख्यात योजन के विस्तारवाले यावत् असंख्यात योजन की परिधि कही है ॥५॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने वर्णवाले हैं ? अहो गौतम ! पांच वर्णवाले कहे हैं जिन के नाम—कृष्ण, नील, लोहित, हालिद्र और शुक्ल सनत्कुमार और माहेन्द्र में चार वर्णवाले विमान हैं जिन के नाम—नील, लोहित, हालिद्र

महासुक्कसहस्सारसु अट्ठ,आणय पाणय आरणअच्चुएसुनव जोयणसयाइ॥गेवेज्जविमाणाणं भंते ! केवइयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता ? गोयमा! दस जोयणसयाइं अणुत्तरविमाणाणं एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते! कप्पेसु विमाणा किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—आवलियाए बाहिराय ॥ तत्थणं जेते आवलिय पविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टा तंसा चउरंसा ॥ तत्थणं जे ते आवलिय बाहिरा तेणं णाणा संठाण संठिता पण्णत्ता, एवं जाव गवेज्जविमाणा ॥ अणुत्तरोववातिय विमाणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टाय तंसाय

५००योजन ऊंचे हैं, ऐसेही सनत्कुमार और माहेन्द्रमें ६०० योजन ऊंचे हैं, ब्रह्म और लंतकमें ७००योजन ऊंचे,महाशुक्र और सहस्रारमें ८०० योजन ऊंचे, आणत, प्राणत, आरण और अच्युतमें ९००योजन ऊंचे,नव ग्रैवेयक में विमान १००० योजन ऊंचे हैं, और अनुत्तर विमान ११०० योजनकी ऊंचाइवाले हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में जो विमान हैं, वे किस संस्थानवाले हैं ? अहो गौतम ! विमानके दो भेद आवलिका प्रविष्ट सो श्रेणिबद्ध और आवलिका बाहिर सो पुष्पावकीर्ण इनमें जो आवलिका प्रविष्ट हैं, वे वर्तुल,त्र्यंस और चतुरंस,यों तीन प्रकारके हैं, और जो आवलिका बाहिर हैं वे विविध प्रकार के संस्थानवाले हैं यों ग्रैवेयक विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में विमान दो प्रकार के हैं वर्तुल

इट्ठतरगा चेव जाव गंधेणं पण्णत्ता, जाव अणुत्तर विमाणा॥ सोहम्मीसाणेसु विमाणा केरिसया फासेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए आईणेतिवा रूवेइवा तहेव सव्वो फासो भाणियव्वो जाव अणुत्तरोववातिया विमाणे ॥ ८ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! विमाणा के महालिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण्णं जंबूदीवे २ सव्वदीव समुद्दाणं सोचेवगमो जाव छम्मासे वीईवएज्जा जाव अत्थेगइया विमाणावासा वीइवएज्जा अत्थेगइया विमाणावासा नो वीइवएज्जा जाव अणुत्तरो-

अर्थ

नुत्तर विमान पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान का कैसा स्पर्श कहा है ? अहो गौतम ! जैसे मृगचर्म रुइ वगैरह सब स्पर्श का वर्णन करना यावत् अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र में यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा है इस की परिधि ३१६२२७ योजन से कुछ अधिक है कोई देवता तीन चिमटि बजावे उतने में इक्कीस बार इस की पर्यटना कर आवे ऐसी दीव्य शीघ्रगति से छमास पर्यंत परिभ्रमण करे तो भी कितनेक विमानों को उल्लंघ सकता है और कितनेक विमानों का उल्लंघन नहीं सकता है यों अनुत्तरोपपातिक विमान पर्यंत कहना।

जाव सुक्किला ॥ एवं बंभलोग लंतएसु तिवण्णा लोहिया जाव सुक्किला ॥ महासुक्क सहस्सारेसु दुवण्णा हालिद्दाय सुक्किलाय ॥ आणत पाणत आरण अच्चुतेसु सुक्किला, एवं गेविज्जविमाणेसुवि अणुत्तरोववाइय विमाणे परम सुक्किला वण्णेणं पण्णत्ता ॥६॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसयाए पभाए पण्णत्ता ? गोयमा ! णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयपभाए पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयपभाए पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? से जहा नामए कोट्ठ पुडाणवा एवं जाव एत्तो

और शुक्ल ब्रह्मलोक और लंतक में रक्त पीत और श्वेत यों तीन वर्णवाले विमान हैं महा शुक्र सहस्रार में पीत श्वेत ऐसे दो वर्णवाले विमान हैं आणत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक विमान में शुक्ल वर्ण पाते हैं और अनुत्तरोपपातिक विमान परम शुक्ल वर्णवाले कहे हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी प्रभावाले हैं ? अहो गौतम ! वे सदैव प्रकाशवंत, उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना वे भी सदैव प्रकाशवंत हैं, सदैव उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी गंधवाले हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोष्ठ पुडा वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना इससे भी अधिक इष्टतर यावत् गंधवाले कहे यों

दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जवा असंखेज्जवा उववज्जति, एवं जाव सहस्सारो॥आणयादि गेवेज्जा अणुत्तराय एक्कावा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जावा उववज्जति॥ १२ ॥ सोधम्मीसाणेसुणं भंते ! देवा समये २ अवहीरमाणा २ केवतिय कालेण अवहिरिया सिया ? गोयमा ! तेण असंखेज्जा समय २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरति नोचवण अवहिरिया जाव सहस्सारो ॥ आणतादिगेसु चउसुवि गेवेज्जसुय समये २ जाव केवतिकालेण अवहीरिया सिया ? गोयमा ! तेणं असंखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जखेत्त पलियस्स सुहुमस्स असंखेज्जेण

अर्थ — में कितने देव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार पर्यंत कहना आणत से अनुत्तरोपपातिक तक एक दो तीन यावत् संख्यात उत्पन्न होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में से देवता को समय २ में अपहरते कितने समय में अपहरण होवे ? अहो गौतम ! वे देव असंख्यात हैं प्रतिसमय एक २ अपहरन करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जाय तो भी अपहरण नहीं होता है यों सहस्रार पर्यंत कहना आनतादि चार देवलोक, नव ग्रैवेयक में यावत् कितने काल में अपहरन होवे ? अहो गौतम ! वे असंख्यात देव हैं

सवाइय विमाणा अत्थेगातिया विमाणा वीइवएज्जा अत्थेगातिया नो वीईवएज्जा ॥९॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा किमया पण्णत्ता? गोयमा ! सव्वरयणामया पण्णत्ता, तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमति चयति उववज्जति सासयाण ते विमाणे दव्वट्ठयाए जाव फासपज्जवेहि असासया जाव अणुत्तरोववाया विमाणा ॥१०॥ सोहम्मीसाणेसुण देवा कओहिंतो उववज्जति उववातो नेयव्वा जहा वक्कतीए, तिरिएसु मणुएसु एव पचेदियेसु समुच्छिमवज्जेसु उववाय वक्कतीगमेणजाव अणुत्तरा ॥११॥ सोहम्मीसाणेसु देवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? गोयमा! जहण्णेण एक्कोवा

इसमें कितनेक का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अर्थात् चार अनुत्तर विमान असंख्यात योजन के हैं और सर्वार्थ सिद्ध विमान एक लक्ष योजन का है ॥९॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान किसके हैं ? अहो गौतम ! सब रत्नमय हैं वहां बहुत जीव और पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं और चवते हैं वे द्रव्यसे शाश्वत हैं और वर्ण पर्याय यावत् स्पर्श पर्याय से अशाश्वत हैं या अनुत्तर विमान पर्यंत जानना ॥१०॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में जीव कहां से आकर उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! समूर्छिम वर्जकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार देवलोक पर्यंत जानना यहां से आगे मात्र मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥११॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशानदेवलोक में एकसमय

सूत्र

असंखेज्जति भागे उक्कोसेणं जोयण सतसहस्स, एव एक्केक्का ओसारित्ताण जाव अनुत्तराण एक्कारयणी, गेविज्जअणुत्तरेण एगा भवधार णिज्जसरीरये, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥ १४ ॥ सोधम्मीसाणेसु देवाण सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणीण असंघयणी पण्णत्ता, नवट्ठी नेवच्छिरा णेवण्हारु णवसंघयण मत्थि जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव तेसिं संघातत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया ॥१५॥ सोधम्मीसाणसु देवाण सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा सरीरा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते समचउरंस संठाण

अर्थ

हाथ की, महाशुक्र सहस्रार में चार हाथ की, आणत प्राणत आरण व अच्युत ये चार देवलोक में तीन हाथ की, नव ग्रैवेयक में दो हाथ की और पांच अनुत्तर विमान में एक हाथ की शरीर की अवगाहना है नव ग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमान में उत्तर वैक्रेय शरीर नहीं करते हैं ॥१४॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर कौनसे संघयणवाले हैं ? अहो गौतम! छ संघयण में से एक भी संघयण नहीं है क्योंकि उनका हड्डी, शिरा, नस नहीं है परंतु जो इष्ट कांत यावत् मनोज्ञ पुद्गल हैं वे संघयणपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥१५॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का संस्थान कैसा कहा है ? अहो गौतम! उन के शरीर के दो भेद भवधारणीय और उत्तर वैक्रेय उन में जो भवधारणीय है

कालेण अवहीरति नो चेवण अवहीरियासिया ॥ अणुत्तरोववाइया पुच्छा ? तेण असंखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ पलिओवम असंखेज्जति भागमेत्ते अवहीरति नोचेवण अवहीरियासिया ॥ १३ ॥ सोहधम्मीसाणेसुण भंते ! कप्पेसु देवाण के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय ॥ तत्थण जे से भवधारणिज्जे से जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जति भागे, उक्कोसेण सत्तरयणीओ ॥तत्थण जे से उत्तर वेउव्विए से जहण्णेण अंगुलस्स

वहां से प्रतिसमय एक २ अवहरते २ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भाग तक अपहरन करे परंतु अपहरन होवे नहीं अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा? अहो गौतम! वे असंख्यात हैं प्रत्येक समय में एक अपहरन करते हुवे पल्योपम के असंख्यात वे भाग तक अपहरन करे परंतु अपहरन होवे नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवताओं के शरीर की कितनी अवगाहना कही है? अहो गौतम! अवगाहना के दो भेद हैं तद्यथा—भवधारणीय और उत्तर वैक्रय उस में भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ, उत्तर वैक्रय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजनकी, यों एक एक हाथ कम करते अनुत्तरोपपातिक विमानमें एक हाथ की अवगाहना जानना अर्थात् सनत्कुमार माहेन्द्र में ७ हाथ की, ब्रह्म और लंतक में पांच

साणेसुण भंते ! कप्पेसु देवाण सरीरगा केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए कोट्ठापुडाणवा तहेव सव्वं जाव मणामतरा चेव गंधेण पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववातिया॥ १८॥सोधम्मीसाण देवाण सरीरगा केरिसया फासेण गोयमा! थिरमउय णिद्ध सुकुमाल छवीय फासेण पण्णत्ता, एवं जाव अणुत्तरोववातिया ॥ १९॥ सोहम्मीसाण देवाण केरिसगा पुग्गला उस्सासत्ताए परिणमति ? गोयमा ! जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव एतेसिं उस्सासत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया, एव जाव आहारत्ताएवि जाव अणुत्तरोववातिया ॥ २० ॥ सोधम्मीसाणे देवाण कतिलेसाओ

अर्थ

सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर की गंध कैसी कही ? अहो गौतम ! जैसे कोष्टपुट यावत् मनामतर गंध कही यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का कैसा स्पर्श है ? अहो गौतम ! उन के शरीर स्थिर मृदु सुकोमल व स्निग्ध सुकोमल स्पर्शवंत हैं, यावत् अनुत्तर विमान के देव पर्यंत कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देव कैसे पुद्गल उच्छ्वासपने ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जो पुद्गल इष्टकांत यावत् उच्छ्वासपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ऐसे ही आहार कलिये पुद्गल ग्रहण करते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों को

दग देवाण भते ! अपज्जत्तगाण केवइय कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अतोमुहुत्त उक्कोसणवि अतोमुहुत्त मव्वट्ठ सिद्धग देवाण भते ! पज्जत्तगाण केवइय कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्ण मणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई

पर्याप्ताओंकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तर मुहुर्त की और उत्कृष्ट भी अन्तर मुहुर्त की अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महाविमान वासी पर्याप्त देवताओंकी कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम! अजघन्य अनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम में अन्तर मुहुर्त कम

रत्नप्रभा पृथ्वी १३ पाथडे का अलग २ आयुष्य

पाथड		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार वर्ष	१० लाख वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	भाग	०	०	०		१	२	३	४	५	६	७	८	०
	छेदक	०	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	भाग	०	०		१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
	छेदक	०	०		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

शर्कर प्रभा पृथ्वी में ११ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़ा		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सा०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	मा०	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
	छ०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
उत्कृष्ट	सा०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	मा०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०
	छ०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०

वालुप्रभा पृथ्वी के ९ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७	८	९
जघन्य	सा०	३	३	३	४	४	५	५	६	६
	मा०	०	४	८	३	७	२	६	१	५
	छ०	०	९	०	०	९	०	९	२	९
उत्कृष्ट	सा०	३	३	४	४	५	५	६	६	७
	मा०	४	८	३	७	२	६	१	५	०
	छ०	०	९	०	०	९	९	९	०	०

पंकप्रभा के ७ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़ा		१	२	३	४	५	६	७
जघन्य	सा०	७	७	७	८	८	९	९
	मा०	०	३	६	२	५	१	४
	छ०	७	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	सा०	७	७	८	८	९	९	१०
	मा०	३	६	२	५	१	४	०
	छ०	७	७	७	७	७	७	७

धूम्रप्रभा के ५ पाथडे आयुष्य

		पाथडे	१	२	३	४	५
जघन्य		सा०	१०	११	१२	१४	१५
		भा०	०	२	४	१	३
		छ०	५	५	५	५	०
उत्कृष्ट		सा०	११	१२	१४	१५	१७
		भा०	२	४	१	३	०
		छ०	५	५	५	५	५

तम प्रभा के ३ पा० आयुष्य

	पाथडे	१	२	३
जघन्य	सा०	१७	१८	२०
	भा०	०	२	१
	छ०	३	३	३
उत्कृष्ट	सा०	१८	२०	२२
	भा०	२	१	०
	छ०	३	३	०

तमस्तमप्रभा का एकही पाडे का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
२२	३३

भुवनपति के देवता देवी की स्थिति का यंत्र

	दक्षिण के		उत्तर के	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
देव असुर कुमार	१०००० वर्ष	१ सागरो०	१०००० वर्ष अ०	१ सागरो अ
देवी असुर कुमारी	१०००० वर्ष	३॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	४॥ पल्यो
नवनीकाय देवता	१०००० वर्ष	१॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	२ पल्यो
नवनीकाय देवी	१०००० वर्ष	॥। पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	१ पल्यो

पृथ्वीकायाका आयुष्य

पृथ्वीकाया	जघन्य	उत्कृष्ट
सून्हा पृथ्वी	अन्तर मु०	१०००० वर्ष
मधा पृथ्वी	अन्तर मु०	१२००० वर्ष
वालु पृथ्वी	अन्तर मु०	१४००० वर्ष
मणशिला पृथ्वी	अन्तर मु०	१६००० वर्ष
शाकरा पृथ्वी	अन्तर मु०	१८००० वर्ष
खर पृथ्वी	अन्तर मु०	२२००० वर्ष

तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उत्कृष्टायुष्य

	समूर्च्छिम	गर्भज
जलचर	क्रोडपूर्व वर्ष	१ क्रोड पूर्व वर्ष
स्थलचर	८४००० वर्ष	३ पल्योपम
खेचर	७२००० वर्ष	१ पल्यका असंख्या-तवे भाग
उरपर	५३००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष
भुजपर	४२००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष

धूम्रप्रभा के ५ पाथडे आयुष्य

	पाथडे	१	२	३	४	५
जघन्य	सा०	१०	११	१२	१४	१५
	मा०	०	२	४	१	३
	छे०	५	५	५	५	०
उत्कृष्ट	सा०	११	१२	१४	१५	१७
	मा०	२	४	१	३	०
	छे०	५	५	५	५	५

तम प्रभा के ३ पा० आयुष्य

	पाथडे	१	२	३
जघन्य	सा०	१७	१८	२०
	मा०	०	२	१
	छे०	३	३	३
उत्कृष्ट	सा०	१८	२०	२२
	मा०	२	१	०
	छे०	३	३	०

तमस्तमप्रभा का एकही पाथडे का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
२२	३३

भुवनपति के देवता देवी की स्थिति का यंत्र

	दक्षिण के		उत्तर के	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
देव असुर कुमार	१०००० वर्ष	१ सागरो०	१०००० वर्ष अ०	१ सागरो अ
देवी असुर कुमारी	१०००० वर्ष	३॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	४॥ पल्यो
नवनीकाय देवता	१०००० वर्ष	१॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	२ पल्यो
नवनीकाय देवी	१०००० वर्ष	॥। पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	१ पल्यो

१२ चक्रवर्ती का आयुष्य

१ भरत राजा	८४ लाख पूर्व
२ सागर राजा	७२ लाख पूर्व
३ माघव राजा	५ लाख वर्ष
४ सनत्कुमार रा	३ लाख वर्ष
५ शांति राजा	१ लाख वर्ष
६ कुंथु राजा	९० हजार वर्ष
७ अर राजा	८४ हजार वर्ष
८ संभूम राजा	६० हजार वर्ष
९ महापद्म राजा	३० हजार वर्ष
१० हरिषेण राजा	१० हजार वर्ष
११ जयचद्र राजा	३ हजार वर्ष
१२ ब्रह्मदत्त राजा	७ ० वर्ष.

९ बलदेव का आयुष्य

१ अचल	८५ लाख वर्ष
२ विजय	७० लाख वर्ष
३ भद्र	६५ लाख वर्ष
४ सुप्रभ	५५ लाख वर्ष
५ सुनद	१७ लाख वर्ष
६ आणद	८५ हजार व
७ नद	६५ हजार व
८ पद्म (राम)	१५ हजार व
९ बल भद्र	१२०० वर्ष

९ वासुदेव के आयुष्य

१ त्रिपृष्ट	८४ लाख वर्ष
२ द्विपृष्ट	७२ लाख वर्ष
३ स्वयभू	६० लाख वर्ष
४ पुरुषोत्तम	३० लाख वर्ष
५ पुरुष सिं	१० लाख वर्ष
६ पुरुष पुंड	६५ हजार व
७ दत्त	५६ हजार व
८ लक्ष्मण	१२ हजा व
९ कृष्ण	१ हजा व

वासुदेव जितनाही भवनवासु देवकाका आयुष्य होता है

२४ तीर्थंकरोका आयुष्य

१ ऋषभनाथजी	८४ लाख पूर्व
२ अजितनाथजी	७२ लाख पूर्व
३ संभवनाथजी	६० लाख पूर्व
४ अभिनंदनजी	५० लाख पूर्व
५ सुमतिनाथजी	४० लाख पूर्व
६ पद्मप्रभुजी	३० लाख पूर्व
७ सुपार्श्वनाथजी	२० लाख पूर्व
८ चन्द्रप्रभजी	१० लाख पूर्व
९ सुविधिनाथजी	२ लाख पूर्व
१० शीतलनाथजी	१ लाख पूर्व
११ श्रेयांसनाथजी	८४ लाख वर्ष
१२ वासुपूज्यजी	७२ लाख वर्ष
१३ विमलनाथजी	६० लाख वर्ष
१४ अनंतनाथजी	३० लाख वर्ष
१५ धर्मनाथजी	१० लाख वर्ष
१६ शांतिनाथजी	१ लाख वर्ष
१७ कुंथुनाथजी	९५ हजार वर्ष
१८ अरनाथजी	८४ हजार वर्ष
१९ मल्लिनाथजी	५५ हजार वर्ष
२० मुनिसुव्रतजी	३० हजार वर्ष
२१ नमीनाथजी	१० हजार वर्ष
२२ रिष्टनेमीजी	१ हजार वर्ष
२३ पार्श्वनाथजी	१०० वर्ष
२४ वर्द्धमान स्वामीजी	७२ वर्ष

सौधर्म देवलोक के देवों के १३ प्रतरोंका अन्तर आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प
उत्कृष्ट	०	०	०	०	०	०	१ सा	१ सा	१	१	१	१	२
भाग	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	०
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

इस यन्त्र में एक सागर के १३ भाग में के भाग ग्रहण करना.

सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी का आयुष्य का यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृष्ट	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
भाग	१	०	५	११	४	१०	२	०	२	८	१	७	०
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

देवीयों के दोनों यत्र में एकपल्प के १३ भाग में के भाग ग्रहण करना

सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवीयों के आयुष्यका यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृष्ट	३	७	११	११	१९	२२	२६	३०	३४	३८	४२	४६	५०
भाग	११	९	७	५	३	१	१२	१०	८	६	४	२	०
छेदो	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

अकर्म भूमि मनुष्य	
देव कुरु	३ पल्योपम
उत्तर कुरु	३ पल्योपम
हरीवास	२ पल्योपम
रम्यक वास	२ पल्योपम
हेम वय	१ पल्योपम
एरण वय	१ पल्योपम
५६ अंतर्द्वीप	१ पल्योपमके असं॰वे भाग

कर्मभूमी मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य

अवसर्पिणी में	उत्सर्पिणी में
पहिला आरा ३ पल्योपम	२० वर्ष
दूसरा आरा २ पल्योपम	१२० वर्ष
तीसरा आरा १ पल्योपम	१ क्रोड पूर्व
चौथा आरा १ क्रोड पूर्व	१ पल्योपम
पांचवा आरा १२० वर्ष	२ पल्योपम
छठा आरा २० वर्ष	३ पल्योपम

ज्योतिषी का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
चंद्रदेव पावपल्य	एक पल्य १ लाख वर्ष
चद्रदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५० हजार वर्ष
सूर्यदेव पावपल्य	१ पल्य १ हजार वर्ष
सूर्यदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५०० वर्ष
ग्रहदेव पावपल्य	एक पल्य
ग्रहदेवी पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेव पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेवी पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारा देव पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारादेवी पल्य का आठवा भाग	पल्य का आठवा भाग कुछ अधिक

यह सनत्कुमार देवलोक के देवता का आयुष्यका यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	०	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेद	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१२

माहेन्द्र देवलोक के देवता का आयुष्य का यन्त्र
सर्व स्थान कुछ अधिक मानना

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदक	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

ब्रह्मदेवलोक का आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४	५	६
जघन्य	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	७	८	८	९	९	१०
भाग	३	०	३	०	३	०
छेद	६	६	६	६	६	६

लांतक देवका आयुष्यका यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५
जघन्य	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	१०	११	१२	१३	१४
भाग	४	३	२	१	०
छेद	५	५	५	५	५

महाशुक्रदेवका आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१४	१४	१४	१४
उत्कृ	१४	१५	१६	१७
भाग	३	२	१	०
छेद	४	४	४	४

सहस्रारदेव का आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१७	१७	१७	१७
उत्कृ	१७	१७	१७	१८
भाग	१	२	३	०
छेद	४	४	४	४

ईशान देवलोक के देवता का आयुष्य का यन्त्र

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१ प०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
उत्कृष्ट	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२
भाग	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

इस यंत्र में अंक जो दीये हैं उस से कुछ अधिक आयुष्य सर्व स्थान जानना

ईशान देवलोक की परिग्रही देवी का आयुष्य का यन्त्र

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृ	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९
भाग	८	३	११	६	१	९	४	१२	७	२	१०	५	०
छेद	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

ईशान देवलोक की अपरिग्रही देवी का आयुष्य का यंत्र

प्रस्तर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृ	४	८	१२	१६	२१	२५	२९	३३	३८	४२	४६	५०	५५
भाग	३	६	९	१२	२	५	८	११	१	४	७	१०	०
छेद	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

॥ पञ्चम पर्याय पदम् ॥

कइविहाणं भंते ! पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता तंजहा-जीव पज्जवाय, अजीवपज्जवाय ॥ जीव पज्जवाणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीव पज्जवा नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखिज्जा नेरइया, असंखिज्जा असुरकुमारा, असंखिज्जा नागकुमारा, असंखिज्जा सुवण्णकुमारा, असंखिज्जा विज्जुकुमारा, असंखिज्जा अग्गिकुमारा, असंखिज्जा दीवकुमारा, असंखिज्जा उदधिकुमारा,

अर्थ

अब पांचवे पद में उदयिक भाव आश्री सब जीव अजीव के पर्याय में परस्पर हीनाधिक का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! पर्याय कितनी कही है ? अहो गौतम ! पर्याय के दो भेद कहे हैं जीव पर्याय व अजीव पर्याय अहो भगवन् ! जीव पर्याय क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत हैं ? अहो गौतम ! जीव पर्याय संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत जीव पर्याय हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव पर्याय संख्यात व असंख्यात नहीं हैं परंतु अनंत हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात नारकी, असंख्यात असुरकुमार, असंख्यात नागकुमार, असंख्यात सुवर्ण कुमार, असंख्यात विद्युत्कुमार,

आणत स्वर्ग के आयुष्य का यंत्र					पाणत देवका आयुष्य					आरणदेवका आयुष्य					अच्युत देवका				
प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४
जघन्य	१८	१८	१८	१८	जघन्य	१९	१९	१९	१९	जघन्य	२०	२०	२०	२०	जघन्य	२१	२१	२१	२१
उत्कृष्ट	१८	१८	१८	१९	उत्कृष्ट	१९	१९	१९	२०	उत्कृष्ट	२०	२०	२०	२१	उत्कृष्ट	२१	२१	२१	२२
भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०
छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४

पण्णत्ता ॥ इतिपण्णवणाए भगवईए चउत्थ ठिईय पय सम्मत्त ॥ ४ ॥

की स्थिति कही है ॥ इति पन्नवणा भगवती का चौथा स्थिति नामक पद समाप्त ॥ ४ ॥

पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहण ट्ठयाए सीय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे - असखिज्जइभागहीणेवा, सखिज्जइभागहीणेवा, सखिज्जगुणहीणेवा, असखिज्जगुणहीणेवा ॥ अह अब्भहिए असखेज्जइभाग मब्भहिए सखज्जइभाग मब्भहिए असखिज्जगुण मब्भहिएवा

अनत पर्याय नारकी को कही है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि नारकी को अनत पर्याय हैं ? अहो गौतम! नारकी नारकी से तुल्य है, क्यों कि सब को एकसाही जीव है, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों कि सब जीव के लोकाकाश समान आकाश प्रदेश हैं, अवगाहना से कदाचित् हीन, क्वचित् तुल्य व कदाचित् अधिक है यदि हीन होवेतो असख्यात भाग हीन होवे जैसे नरक के एक जीवकी ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसर की अगुल के असख्यातवे भाग की अवगाहना होवे २ सख्यात भाग हीन होवे सो एक की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसरे की ४९८ धनुष्य की

इस म द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ तुल्य कहे यह द्रव्य से उदयिक भाव पयाय, अवगाहना अर्थ कहा यह क्षेत्र से उदयिक भाव पर्याय, स्थिति अर्थ कहा यह काल से उदयिक भाव पयाय, वर्णादि कहा यह भाव से उदयिक भाव पर्याय और ज्ञान दर्शन कहा यह क्षयोपशमिक व क्षायिक भाव पयाय यों सब स्थान जानना

असंखिज्जा दिसाकुमारा, असंखिज्जा वाउकुमारा, असंखिज्जा थणिय कुमारा ॥ असंखिज्जा पुढवि काइया, असंखिज्जा आउकाइया, असंखेज्जा तेउकाइया, असंखिज्जा वाउकाइया, अणंता वणस्सइकाइया, असंखिज्जा बेइंदिया, असंखिज्जा तेइंदिया, असंखिज्जा चउरिंदिया, असंखिज्जा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया, असंखिज्जा मणुस्सा, असंखिज्जा वाणमंतरादेवा, असंखिज्जा जोइसिया, असंखिज्जा वेमाणिया, अणंतासिद्धा सेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जीव पज्जवा नोसंखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

असंख्यात अग्निकुमार, असंख्यात द्वीपकुमार, असंख्यात उदधिकुमार, असंख्यात दिशाकुमार, असंख्यात वायुकुमार, असंख्यात स्तनित कुमार, असंख्यात पृथ्वीकाया, असंख्यात अप्काया, असंख्यात तेउकाया, असंख्यात वायुकाया, अनंत वनस्पतिकाया, असंख्यात बेइन्द्रिय, असंख्यात तेइन्द्रिय, असंख्यात चतुरेंद्रिय, असंख्यात तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात मनुष्य असंख्यात वाणव्यंतर देव, असंख्यात ज्योतिषि, असंख्यात वैमानिक और अनंत सिद्ध हैं इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि जीव पर्याय संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने पर्याय कहे हैं * ? अहो गौतम !

* अब नारकी प्रमुख सब जीवों को अल्पाग्र उदीयक, क्षयोपशमिक व क्षायिक भाव आश्रित पर्याय ...

हीणेत्रा, सखिज्जगुणहीणेवा, असखिज्जगुणहीणेवा, अणतगुणहीणेवा ॥ अहअब्भहिए अणतभाग मब्भाहिएवा, असखिज्जभाग मब्भहिएवा, सखिज्जभाग मब्भाहिएवा, सखिज्जगुण मब्भहिएवा, असखिज्जगुण मब्भहिएवा, अणतगुण मब्भहिएवा ॥ नीलवण्ण पज्जवेहिं लोहियवण्ण पज्जवेहिं, पीयवण्ण पज्जवेहिं, सुक्किलवण्ण पज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए ॥ सुब्भिगध पज्जवेहिं, दुब्भिगध पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए ॥ तित्तरस

होवे तो असख्यात भाग हीन भी है जैसे एक नरीये का दश हजार वर्षका आयुष्य है और दूसरेका सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, यह असख्यात भाग हीन सख्यात भाग हीन में एक का तीन सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, सख्यात भाग हीन एक का सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का दश हजार वर्ष कम का है, यह असख्यात गुण हीन और सख्यात गुण हीन एक का १२ सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है यह सख्यात गुण हीन है यदि अधिक होवे तो असख्यात भाग अधिक जैसे एक नेरीये का तत्तीस सागरोपम में दश हजार वर्ष कम का आयुष्य है और एक का सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है यह असख्यात भाग अधिक हुवा २ सख्यात भाग अधिक एक का १२ सागरोपम का आयुष्य है और एक का ३३ सागरोपम का आयष्य है मरूयात गुन अधिक एक का तीन सागरोपम का

सखिज्जगुण मब्भहिए, ठिइए सिय हीण सिय तुल्ले सिय अब्भहिएवा, जइ हीणे असखिज्जइभागहीणेवा, संखिज्जइभागहीणेवा, संखिज्जगुणहीणेवा असंखिज्जगुणहीणेवा, अह अब्भहिए असंखिज्जइभाग मब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भहिएवा, संखिज्जइगुण मब्भहिएवा, असंखिज्जइगुण मब्भहिएवा ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं सियहीणे सियतुल्ले, सिय मब्भहिए ॥ जइहीणे अणंतभागहीणेवा, असंखिज्जभागहीणेवा, संखिज्जभाग

अवगाहना होवे, संख्यात गुना हीन होवे जैसे एक की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे जब दूसरे की १०२ धनुष्य की अवगाहना होवे, अथवा असंख्यात गुण हीन होवे जैसे एक नरीये की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसरे किसी नरीये की अंगुल के असंख्यातवा भाग की अवगाहना होवे यह असंख्यात गुना हीन जानना यह चार भाग हीन आश्रिय जानना अब अधिक का कहते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक होवे जैसे कोई नेरीये की पांच सो धनुष्य में अंगुल का असंख्यातवा भाग कम जितनी अवगाहना होवे और दूसरे की संपूर्ण पांच सो धनुष्य की अवगाहना होवे यह असंख्यात भाग अधिक जानना संख्यात भाग अधिक होवे-जैसे किसी की ४९८ धनुष्य की अवगाहना होवे और अन्य की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे यह संख्यात भाग अधिक जानना स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है. यदि हीन

लुक्खफास पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ॥ आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं, सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं, सुय अण्णाण पज्जवेहिं, विभगणाण पज्जवेहिं, चक्खु दसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, ओहिदसण पज्जवेहिय, छट्ठाण वडिए ॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ नेरइयाण नो सखिज्जा, णो असखिज्जा, अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ २ ॥ असुरकुमाराण भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ असुर

पीत वर्ण पर्यव, शुक्ल वर्ण पर्यव, सुरभिगध पर्यव, दुरभिगध पर्यव, तिक्त रस पर्यव, कटुक रस पर्यव, कषाय रस पर्यव, अम्बट रस पर्यव, मधुर रस पर्यव कर्कश स्पर्श पर्यव, मृदु स्पर्श पर्यव, गुरु स्पर्श पर्यव, लघु स्पर्श पर्यव, शीत स्पर्श पर्यव, ऊष्ण स्पर्श पर्यव, स्निग्ध स्पर्श पर्यव, व रूक्ष स्पर्श पर्यव के साथ भङ्ग षड्गुण हानि वृद्धि करना वैसे ही आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, विभग ज्ञान पर्यव, चक्षु दर्शन पर्यव, अचक्षु दर्शन पर्यव, व अवधि दर्शन पर्यव की साथ उक्त जैसे षड्गुन हीन अधिक हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि नारकी के संख्यात नहीं है असंख्यात नहीं है परतु अनत पर्यव हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के अनंत पर्यव कहे हैं अहो

पज्जवेहिं, कडुयरस पज्जवेहिं, कसायरस पज्जवेहिं, अंबिलरस पज्जवेहिं, महुररसपज्ज वेहिय छट्ठाण वडिए ॥कक्खडफास पज्जवेहिं,मउयफास पज्जवेहिं गरुयफास पज्जवेहिं, लहुयफास पज्जवेहिं सीयफास पज्जवेहिं, उसिण फास पज्जवेहिं, निद्धफास पज्जवेहिं,

आयुष्य है, और एक का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, और ४ असंख्यात गुन अधिक एक का दश हजार वर्ष का आयुष्य है एक का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है अब भाव से कहते हैं—काला वर्ण पर्यव से अनंतभाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुन हीन असंख्यातगुन व अनंतगुण हीन यह षट्गुण हीन कहे अब अधिक होवे सो १ अनंत भाग अधिक २ असंख्यात भाग अधिक ३ संख्यात भाग अधिक ४ संख्यात गुण अधिक ५ असंख्यात गुण अधिक व ६ अनंत गुण अधिक यों षट्गुण अधिक कहे× जैसे कालावर्ण पर्यव का कहा, वैसे ही नील वर्ण पर्यव,रक्त वर्ण पर्यव,

× अनंत जीवों की राशि से भाग देते जो रहे सो अनंत भाग हीन, असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण राशि से भाग देते जो रहे सो असंख्यात भाग हीन और उत्कृष्ट संख्याते कृष्ण पर्यायवाले नारकी से भाग देते जो रहे उस संख्यात भाग हीन कहना अब गुना आश्रिय कहते हैं-उत्कृष्ट संख्यातेको जघन्य संख्यात से गुने करते जितने होवे उस अपेक्षा से संख्यात गुण हीन, असंख्यात लोकाकाश प्रदेश की राशी के वर्ण के प्रमाण से गुणा करते जितने होवे यह असंख्यात गुणहीन, और अनंत जीवों को वर्ण से गुणा करते जितने होवे सो अनंतगुणहीन

ओहियणाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं विभंगणाण पज्जवेहिं चक्खुदसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, ओहिय दसण पज्जवेहिं, छट्ठाण वडिए॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ असुर कुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं जहा नेरइया जहा असुर कुमारा तहा नागकुमारावि जाव थणिय कुमारावि ॥ ३ ॥ पुढवि काइयाण भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ?गोयमा!पुढवी

अर्थ

आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, व विभंग ज्ञान पर्यव, चक्षुदर्शन पर्यव अचक्षुदर्शन पर्यव व अवधि दर्शन के पर्यव की साथ षट्गुण हीन अधिक मानना अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा है कि असुरकुमारको अनंत पर्यव कहे हैं, यों सब नारकी जैसे जानना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही नागकुमार यावत् स्तनित कुमार का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस तरह पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया द्रव्य से तुल्य है, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना से हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यातगुन हीन, यों चार स्थान हैं और अधिक है तो

कुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! असुरकुमारे असुर कुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिइए चउट्ठाण वडिए काल-वण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए एवं नीलवण्ण पज्जवेहिं, लोहियवण्ण पज्जवेहिं हालिद्दवण्ण पज्जवेहिं सुक्किलवण्ण पज्जवेहिं, सुब्भिगंध पज्जवेहिं, दुब्भिगंध पज्जवेहिं, तित्तरस पज्जवेहिं, कडुयरस पज्जवेहिं, कसायरस पज्जवेहिं, अंबिल रस पज्जवेहिं महुररस पज्जवेहिं कक्खडफास पज्जवेहिं मउयफास पज्जवेहिं, गरुयफास पज्जवेहिं, लहुयफास पज्जवेहिं, सीयफास पज्जवेहिं, उसिण फास पज्जवेहिं, णिद्धफास पज्जवेहिं, लुक्खफास पज्जवेहिं, आभिणि बोहिय नाण पज्जवेहिं, सुयणाण पज्जवेहिं,

भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि असुर कुमार को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार २ असुर कुमार से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक (१ असंख्यात भाग हीन २ संख्यात भाग हीन, ३ संख्यात गुण हीन और ४ असंख्यात गुण हीन) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और काला वर्ण पर्यव से छ स्थान हीनाधिक ऐसे ही नील वर्ण पर्यव रक्त वर्ण पर्यव, पीत वर्ण पर्यव, शुक्ल वर्ण पर्यव, सुरभिगंध पर्यव, दुरभिगंध पर्यव, तिक्त रस पर्यव, कटुक रस पर्यव, कषाय रस पर्यव, अम्बट रस पर्यव, मधुर रस पर्यव, कर्कश स्पर्श पर्यव, शीत स्पर्श पर्यव, उष्ण स्पर्श पर्यव, स्निग्ध स्पर्श पर्यव व रूक्ष स्पर्श पर्यव वैसे ही

ओहियणाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं विभंगणाण पज्जवेहिं चक्खुदसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, आहिय दसण पज्जवेहिं, छट्ठाण वडिए॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ असुर कुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव जहा नेरइया जहा असुर कुमारा तहा नागकुमारावि जाव थणिय कुमाराधि ॥ २ ॥ पुढवि काइयाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! पुढवी

आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, व विभग ज्ञान पर्यव, चक्षुदर्शन पर्यव अचक्षुदर्शन पर्यव व अवधि दर्शन के पर्यव की साथ षट्गुण हीन धिक जानना अहो गौतम' इसलिये ऐसा कहा है कि असुरकुमारको अनत पर्यव कहे हैं; यों सब नारकी जैसे जानना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही नागकुमार यावत् स्तनित कुमार का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस तरह पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया द्रव्य से तुल्य है, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना से हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो असख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, सख्यात गुण हीन व असख्यातगुन हीन, यो चार स्थान है और अधिक है तो

काइए पुढवी काइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सियअब्भहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जगुणहीणवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अब्भहिए असंखिज्ज भाग मब्भाहिएवा, संखिज्जभाग मब्भहिएवा, संखिज्ज गुणमब्भहिएवा, असंखिज्ज गुणमब्भहिएवा ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सिय मब्भाहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज भागहिणेवा, संखिज्ज गुणहीणवा अह अब्भहिएवा असंखिज्ज भाग मब्भाहिएवा, संखिज्ज भाग मब्भाहि-

असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुण अधिक व असंख्यातगुन अधिक, स्थिति आश्रिय स्यात हीन स्यात तुल्य व स्यात अधिक है यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन क्यों कि किसी का बावीस हजार वर्ष का संपूर्ण आयुष्य है और किस का एक समय कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है, २ संख्यात भाग हीन क्यों कि किसीका पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसीका आवलिका कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है वैसे ही संख्यात गुन हीन किसी का पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसी का दो हजार वर्ष काही आयुष्य है यों तीन स्थान पाते है परंतु चौथा स्थान नहीं पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में संख्यात वर्ष काही आयुष्य है २९६ आवलिका का एक भव, एसे एक मुहूर्त में ६५५३६ भव होते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात

एश्रा, सखिज्जगुण मब्भहिएश्रा ॥ वण्णपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खुदसण पज्जवेहिंय छट्ठाणवडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा' एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता॥४॥आउकाइयाण भंते केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ आउकाइयाण अणता पज्जवा ? गोयमा आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ल, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिई तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस फास मइअण्णाण सुयअण्णाणय अचक्खुदसण पज्जवेहिए छट्ठाणवडिए से एणट्ठेण

अर्थ

भाग अधिक, व सख्यात गुन अधिक है पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्श की पर्याय से वैसे ही मति अज्ञान की पर्याय श्रुत अज्ञान की पर्याय व अचक्षुदर्शन की पर्याय मे षट्स्थान हीनाधिक हैं ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पृथ्वी काया के पर्यव सख्यात असख्यात नहीं परंतु अनंत हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया के अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस तरह अप्काय के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया अप्काया की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य है, प्रदेश आश्रिय तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक पृथ्वी जैसे स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक पृथ्वीकाया जैसे पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श

काइए पुढवी काइयस्स दव्वट्टयाए तुल्ले पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जगुणहीणवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अब्भहिए असंखिज्ज भाग मब्भहिएवा, संखिज्जभाग मब्भहिएवा, संखिज्ज गुणमब्भहिएवा, असंखिज्ज गुणमब्भहिएवा ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सिय मब्भहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज गुणहीणवा अह अब्भहिएवा असंखिज्ज भाग मब्भहिएवा, संखिज्ज भाग मब्भाहि-

असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुण अधिक व असंख्यातगुन अधिक, स्थिति आश्रिय स्थान हीन स्थान तुल्य व स्थान अधिक है यदि हीन है सो असंख्यात भाग हीन क्यों कि किसी का बावीस हजार वर्ष का संपूर्ण आयुष्य है और किस का एक समय कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है, २ संख्यात भाग हीन क्यों कि किसीका पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसीका आवलिका कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है वैसे ही संख्यात गुन हीन किसी का पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसी का दो हजार वर्ष का ही आयुष्य है यों तीन स्थान पाते है परतु चौथा स्थान नहीं पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में संख्यात वर्ष का ही आयुष्य है २५६ आवलीका का एक भव, ऐसे एक मुहूर्त में ६५५३६ भव होते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात

मूल

एत्ता, संखिज्जगुण मब्भहिएत्ता ॥ वण्णपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खुदंसण पज्जवेहिंय छट्ठाणवडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा'एवं वुच्चइ पुढवि काइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ ४ ॥आउकाइयाण भंते केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ आउकाइयाण अणंता पज्जवा ? गोयमा आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाएं चउट्ठाणवडिए, ठिई तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस फास मइअण्णाण सुयअण्णाणय अचक्खुदंसण पज्जवेहिए छट्ठाणवडिए से एणट्ठेण

अर्थ

भाग अधिक, व संख्यात गुन अधिक है पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्श की पर्याय से वैसे ही मति अज्ञान की पर्याय श्रुत अज्ञान की पर्याय व अचक्षुदर्शन की पर्याय मे षट्स्थान हीनाधिक हैं ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पृथ्वी काया क पर्यव संख्यात असंख्यात नहीं परंतु अनंत हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया के अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस तरह अप्काय के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया अप्काया की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य है, प्रदेश आश्रिय तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक पृथ्वी जैसे स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक पृथ्वीकाया जैसे पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाण अणतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएस ट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण गंध-रस फास मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए,तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ तेउकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥६॥ वाउकाइयाण पज्जवा पुच्छा ?

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अप्काया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव है ! अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति से तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान,श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन में षट् स्थान हीनाधिक है ! अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

गोयमा ? घाउकाइयार्ण अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ वाउकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गध-रस फास पज्जवेहिं मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ वाउकाइयाण अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ वणस्सइकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ वणस्सइ काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वणस्सइकाइए वण

अर्थ

अहो गौतम ! वायुकाया के अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! वायुकाया को अनंत पर्यव किस तरह कहे हैं ? अहो गौतम ! वायुकाया वायुकाया से द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक और पांच वर्ण दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्यव किस तरह कहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया वनस्पतिकाया से द्रव्य आश्रीय तुल्य प्रदेश आश्रीय तुल्य, अवगाहना आश्रीय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण गंध-रस फास मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए,तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥६॥ वाउकाइयाणं पज्जवा पुच्छा ?

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अपकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव है ? अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति से तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन में षट् स्थान हीनाधिक है ? अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

सखिज्जगुणहीणेवा, असंखिज्जगुणहीणेवा अहअब्भहिए असंखिज्जइ भागमब्भहिएवा, सखिज्जइभाग मब्भाहिएवा,सखिज्जगुण मब्भाहिएवा,असंखेज्जगुण मब्भहिएवा ॥ ठिईए तिट्ठाण वडिए,वण्ण गंध रस फास आभिणिबोहियणाण सुयनाण मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए,सेएणट्ठेण गोयमा! एववुच्चइ बेइंदियाण अणतापज्ज- वा पण्णत्ता॥एव तेइंदियाणवि, नवर दो दसणा, चक्खुदसणअचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए॥९॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण पज्जवा जहा नेरइयाण तहा भाणियव्वा ॥१०॥मणुस्साण भंते! केवइया पज्जवा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता॥सेकेणट्ठेण

अर्थ

यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक, सख्यात भाग अधिक, सख्यातगुन अधिक व असंख्यातगुण अधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, मति अज्ञान श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन के पर्यवकी साथ षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रियों को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसेही तेइन्द्रिय का जानना और चतुरेन्द्रिय का भी वैसेही कहना परतु दर्शन दो जानना चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन इन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक ॥९॥ तिर्यंच पंचेन्द्रियक पर्यव नारकी जैसे कहना ॥१०॥ अहो भगवन्! मनुष्य को कितने पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं। अहो भगवन्! किस कारण से ऐसा कहा गया है कि

स्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईएतिट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से एणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ बेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! बेइंदिया बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे, सियतुल्ले, सिय अब्भाहिएवा ॥ जइहीणे असंखिज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जइभागहीणेवा

आश्रीय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वनस्पति काया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य हैं प्रदेश से तुल्य हैं, अवगाहना आश्रीय स्यात् हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं यदि हीन हैं तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, व असंख्यात गुण हीन हैं

वाडिया, वण्णाईहिं छट्ठाण वडिया ॥ जोइसिय वेमाणियावि एव चेव णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिया ॥ १२ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए॥वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण

अर्थ

जानना ज्योतिषी वैमानिक का भी वैसे ही कहना परन्तु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्योंकि मात्र असख्यात वर्ष की स्थिति है परतु सख्यात वर्ष की स्थिति नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी जघन्य अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य क्यों कि जघन्य अवगाहना सब की एकसी होती है, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्यों कि जघन्य अंगुल के असख्यातवे भाग की अवगाहनावाले

भंते! एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा प० ? गोयमा! मणुस्से मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास आभिणिबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण मणपज्जवणाण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिंअण्णाणेहिं, तिहि दसणेहिय छट्ठाण वडिए, केवल दसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेएणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ११ ॥ वाणमंतरा उगाहणट्ठयाए ठिइए चउट्ठाण

मनुष्य को अनंत पर्यव हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य हैं अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकी मनुष्य में असंख्यात वर्षका आयुष्य भी है और वर्ण गंध, रस, स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन और अवधि दर्शन इन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक हैं, और केवल ज्ञान केवल दर्शन आश्रिय तुल्य हैं क्योंकि सब केवलज्ञान केवलदर्शन सदृश होते. हैं उन में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है अहो गौतम ! इस लिये मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ११ ॥ वाणव्यन्तर का अवगाहना व स्थिति चार स्थान हीनाधिक हैं और वर्णादि आश्रिय षट् स्थान हीन

वाडिया, वण्णाईहिं छट्ठाण वडिया ॥ जोइसिय वेमाणियावि एव चेव णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिया ॥ १२ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए॥वण्णगधरसफास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिं अण्णाणहिं, तिहि दसणेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण

अर्थ

जानना ज्योतिषी वैमानिक का भी वैसे ही कहना परतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्योंकि मात्र असंख्यात वर्ष की स्थिति है परतु सख्यात वर्ष की स्थिति नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी जघन्य अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य क्यों कि जघन्य अवगाहना सब की एकसी होती है, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्यों कि जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की अवगाहनावाले

अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगाहणगाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ उक्कोसोगाहणयाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! उक्कोसोगाहणए नेरइए, उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,ठिईए, सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहिए ॥ जइहीणे असखिज्जइ भागहीणेवा, सखिज्जइ भागहीणेवा, अह अब्भहिए असखिज्ज भागमब्भहिएवा, सखिज्ज भागमब्भहिएवा ॥ वण्ण-गध रस-फास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहि तिअण्णाणेहिं, तिहिदसणेहिं, छट्ठाण वडिए

नारकी की स्थिति जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपमकी होती है वर्ण,गंध,रस, स्पर्श,तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की अवगाहनावाले नेरीये को कितने पर्यव कहे हैं अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से उत्कृष्ट अवगाहनावाले नेरीये को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकी उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकी से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय हैं तुल्य क्यों कि

सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ उक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणतापज्जवा पण्णत्ता॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए नेरइए अजहण्णेमण्णुक्कोसोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे तुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे असखेज्ज भागहीणेवा सखेज्ज भागहिणेवा सखेज्जगुण हीणेवा, असखेज्जगुण हीणेवा अहअब्भहिएवा असखे-

अर्थ

सबकी उत्कृष्ट अवगाहना एकसी है, स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तब असख्यात भाग हीन, सख्यात भाग हीन और जब अधिक है तब असख्यात भाग अधिक व सख्यात भाग अधिक हैं यहां पर दो स्थान हीनाधिक पाते हैं क्यों कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले की स्थिति बावीस सागरोपम से तेत्तीस सागरोपम की है पांच वर्ण, दो गध, पांच रस, आठ स्पर्श, तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकीको अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्य अनुत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! मध्यम अवगाहनावाले नारकी को

उजभाग मब्भाहिएवा,सखेज्ज भागमब्भाहिएवा, सखेज्जगुण मब्भाहिएवा, असखेज्जगुण मब्भाहिएवा वीईए सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहीए जइहीणे असखेज्ज भागहीणेवा सखेज्जभागहीणेवा असखेज्जगुणहीणेवा, सखेज्जगुणहीणेवा अह: अब्भहिए असखेज्जइ भाग अब्भाहिएवा, सखेज्जइ भाग अब्भहिएवा, सखेज्जगुण अब्भहिए, असखेज्जगुण अब्भहिएवा वण्णगधरसफास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवंवुच्चइ अजहण्णुक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ जहण्णठिईयाण भंते !

भनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्' किस कारन से ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहना वाले नारकी को भनंत पयव कहे हैं'अहो गौतम! मध्यम अवगाहनावाले नारकी मध्यम अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं यदि हीन होवे तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असख्यात गुण हीन हैं और अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यातगुण अधिक हैं यों चार स्थान हीनाधिक हैं स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए नेरइए जहण्णेणं ठिईए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिंअन्नाणेहिं तिहिंदंसणेहिं छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसठिईएवि, एवं अजहण्णमणुक्कोस-

अर्थ

जब हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ वैसे ही तीनज्ञान, व तीन दर्शन तीन अज्ञान से षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहनावाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले नारकी जघन्य स्थितिवाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक हैं, स्थिति आश्रिय तुल्य हैं, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव से वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक

ठिईएवि, एवं नवरं सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता? सेकेण-ट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णगुणकालए नेरइए जहण्णगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले,

अहो गौतम! इसलिये जघन्य स्थितिवाले नारकीको अनंतपर्यव कहे हैं ऐसेही उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकी का जानना वैसेही मध्यम स्थितिवाले नारकीका जानना, परंतु स्थिति आश्रिय चारस्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन्! जघन्य कालागुणवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से जघन्य काला गुणवाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! जघन्य कालागुणवाले नारकी जघन्य कालागुण वाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव आश्रिय वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक हैं इस लिये अहो गौतम ! जघन्य काला गुणवाले नारकी

अवसेसहिं वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं तिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दंसणेहिं, छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालगाणं नेरइयाणं अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवंचेव, नवर कालवण्ण पज्जवेहिंवि, छट्ठाणवडिए, एवं अवसेसा चत्तारि वण्णा, दो गंधा, पंचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण आभिणिबोहियणाणीण भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभि

अर्थ

को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुणवाले नारकी का जानना मध्यम काला गुणवाले नारकी का भी वैसे ही कहना परंतु काला गुण आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे काला वर्ण का कहा वैसे ही शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले के साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के

चोहिय णाणी नेरइयए जहण्णाभिणिबोहिय णाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाण पज्जवेहिं, ओहिणाण पज्जवेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, अण्णाणनत्थि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिबोहिय णाणीणं नेरइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, एवं चेव नवरं अभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणीवि, एवं चेव णवरं जस्सणाणा तस्स

पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य, श्रुत ज्ञान अवधि ज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक है इस में अज्ञान नहीं होने से ग्रहण नहीं कीये हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ षट्स्थान हीनाधिक कहना, ऐसेही श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान का कहना, तीन ज्ञान का कहा वैसे ही तीन अज्ञान का कहना परंतु जहां ज्ञान होवे वहां अज्ञान नहीं कहना और

अण्णाणा नत्थि, जहा णाणा तहा अण्णाणावि भाणियव्वा, णवर जस्स अण्णाणा तस्स-णाणा नभवति ॥ जहण्ण चक्खुदसणीण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णचक्खु दसणीण नेरइयाण अणता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहण्णचक्खुदसणीण णेरइए जहण्णचक्खुदसणि णरसणेरइयस्स दव्वट्ठयाएतुले, पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्ण गध रस फासपज्जवेहिं तिहिंणाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं छट्ठाणवडिए, चक्खुदसण पज्जवेहिंतुल्ले, अचक्खुदसण पज्जवेहिं ओहिदसण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए

अर्थ

जहां अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं कहना अहो भगवन् ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य चक्षु दर्शनी नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी जघन्य चक्षु दर्शनी नारकीकी साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चारस्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध रस व स्पर्श वैसे ही तीन ज्ञान तीन अज्ञान, अचक्षु दर्शन व अवधि दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना और चक्षुदर्शन की साथ तुल्य कहना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा

ओहिय अणी नेरइयए जहण्णाभिबोहिय नाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाण पज्जवेहिं, ओहिणाण पज्जवेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, अण्णाणनत्थि, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णाभिबोहिय णाणीण नेरइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, एवं चेव नवरं अभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणीवि, एवं चेव णवरं जस्सणाणा तस्स

पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य, श्रुत ज्ञान अवधि ज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक हैं, इस में अज्ञान नहीं होने से ग्रहण नहीं कीये हैं अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ षट्स्थान हीनाधिक कहना, ऐसेही श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान का कहना, तीन ज्ञान का कहा वैसे ही तीन अज्ञान का कहना परंतु जहां ज्ञान होवे वहां अज्ञान नहीं कहना और

एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण असुरकुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगाहणएवि एव ॥अजहण्ण मणुक्कोसोगाहणएवि, एव चेव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए, एव जहा नेरइया तहा असुरकुमारा, एव जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ जहण्णोगाहणगाण भत ! पुढविकाइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,

तीन दर्शन की साथ षट स्थान हीनाधिक, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का कहना मध्यम अवगाहना का भी वैसे ही कहना परतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही शेष सब जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत सब का कहना ॥१४॥अहो भगवन्! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?अहो गौतम! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया से द्रव्य से तुल्य,

सेएणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि, अजहण्णमणुक्कोस चक्खुदंसणीवि, एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं अचक्खुदंसणीवि ओहिदंसणीवि॥१३॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते! असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णोगाहणए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णादिहिं छट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं अण्णाणे तिहिं दंसणेहिंय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा!

गया है कि जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी का अनंत पर्यव कहे हैं एसे ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शनी को भी जानना मध्यमचक्षुदर्शन का वैसाही कहना परंतु चक्षुदर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही अचक्षुदर्शन व अवधि दर्शन का कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को कितने पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार का अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस स्पर्श, तीन ज्ञान तीन अज्ञान व तीन

तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं, मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसठिईएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणका-अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि, एवं चेव, णवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणकालयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णगुणकालए पुढविकाइए जहण्णगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए

द्रव्यसे तुल्य, प्रदेशसे तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस आठ स्पर्श दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया के अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाली पृथ्वीकाया का मानना मध्यम स्थितिवाली पृथ्वीकाया का वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन् ! जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया की

ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाण पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणएणवि, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवं चेव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णे ठिईयाण भंते ? पुढवि-काइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाठिईयाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णट्ठिईए पुढविकाइए जहण्णाठिईयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठस्पर्श, दो अज्ञान, व अचक्षुदर्शन के पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम! जघन्य अवगाहनावाले पृथ्वी काया को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले का जानना मध्यम अवगाहनावाले पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया की साथ

सूत्र

वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण मइअण्णाणी पुढविकाइयए जहण्ण मइअण्णाणिस्स पुढवि काइयस्स दव्वट्टयाएतुल्ले पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, मइअण्णाण पज्जवेहि तुल्ले, सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खु दंसण पज्जवहिंय छट्ठाण वडिए, सेएवट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णमइअण्णाण पुढविकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसमइअण्णाणीवि, जहण्णमणुक्कोस मइअण्णाणीवि एवं चेव, णवरं सठाणण छट्ठाण वडिए एवं सुयअण्णाणीवि, अचक्खु दंसणीवि, एवं चेव, एवं जाव वणस्सई

अर्थ

कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे गये हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक, मति अज्ञान पर्यव की साथ तुल्य, श्रुतअज्ञान पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य मति अज्ञानवाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट का जानना मध्यम मति अज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही श्रुत अज्ञान व अचक्षु

तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवरं सट्ठाणेणं छट्ठाणवडिए ॥ एवं पंचवण्ण दोगंध पंचरसा अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण मइअण्णाणीणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं

साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, कालावर्ण पर्यव की साथ तुल्य शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श की साथ ऐसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये जघन्य काला गुण वाली पृथ्वी काया का अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुण वाली पृथ्वी काया का जानना मध्यम काला गुण वाली पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श का कहना जघन्य मति अज्ञान वाले पृथ्वी काया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया को अनंत पर्यव

वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण मइअण्णाणी पुढविकाइयए जहण्ण मइअण्णाणिस्स पुढवि काइयस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए,ठिईए तिठाण वडिए,वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, मइअण्णाण पज्जवेहि तुल्ले, सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवहिय छट्ठाण वडिए, सेएवट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णमइअण्णाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसमइअण्णाणीवि, जहण्णमणुक्कोस मइअण्णाणीवि एव चेव, णवर सठाणण छट्ठाण वडिए, एव सुयअण्णाणीवि, अचक्खु दसाणिवि, एव चेव, एव जाव वणस्सई

अर्थ

कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनत पर्यव कहे गये हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक, मति अज्ञान पर्यव की साथ तुल्य, श्रुतअज्ञान पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य मति अज्ञानवाली पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट का जानना मध्यम मति अज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही श्रुत अज्ञान व अचक्षु

तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण पुढविकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवरं सट्ठाणेण छट्ठाणवडिए ॥ एवं पंचवण्ण दोगंध पंचरसा अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण मइअण्णाणीण भंते ! पुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं

साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, कालावर्ण पर्यव की साथ तुल्य शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श की साथ वैसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये जघन्य काला गुण वाली पृथ्वी काया का अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुण वाली पृथ्वी काया का जानना मध्यम काला गुण वाली पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श का कहना जघन्य मति अज्ञान वाले पृथ्वी काया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया को अनंत पर्यव

ओगाहणाए चउट्ठाणवडिए॥ जहण्णठितीयाण भते! बेइंदियाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, सेकणट्ठेण भते! बेइंदियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णाठिईए बेइंदिए जहण्णठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, टितीएतुल्ले वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्ण ठिईयाण बेइंदियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता एव उक्कोसठितीएवि, णवर दोणाणा अब्भहिया, अजहण्ण मणुक्कोसठिईए जहा उक्कोसठितीए णवर ठिईए तिट्ठाणवडिए॥ जहण्णगुणकालयाण बेइंदियाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा

अर्थ

मानना परतु इन में ज्ञान नहीं है मध्यम अवगाहना का भी जघन्य अवगाहना जैसे ही कहना परतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन्! जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय की पुच्छा, अहो गौतम! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से अनत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम? जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय जघन्य स्थितिवाले बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव वैसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना अहो गौतम! इस लिये जघन्य स्थितिवाली बेइन्द्रियकी अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले बेइन्द्रिय का जानना प.सू.

काइया ॥ १५ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! बेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए बेइंदिए जहण्णोगाहणगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसोगाहणएवि णवरं णाणणत्थी ॥ अजहण्णो मणुक्कोसोगाहणए जहा जहण्णोगाहणए, णवरं सट्ठाणे

दर्शन का जानना जैसे पृथ्वी कायाका कहा वैसे ही अप्कायां यावत् वनस्पतिकाया का जानना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, दो ज्ञान, दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन के पर्यव की साथ छ स्थान हीनाधिक जानना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले बेइंद्रिय का

पचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्णाभिबोहियणाणीण भंते ! बेइंदियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिनिबोहियणाणीण बेइंदियाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी बेइंदिए जहण्णाभिणिबोहिअण्णाणिस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, अचक्खु दंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए,

अर्थ जघन्य गुण काला बेइंद्रिय को अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला व मध्यम गुण काला का जानना परंतु मध्यम गुण काला में स्वस्थान आश्रित षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध पांच रस, व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय के साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व स्पर्श पर्यव वैसेही श्रुत ज्ञान

पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्ण गुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालयस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठितीए तिट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं पंचवण्णा दो गंधा,

दो ज्ञान आधिक कहना मध्यम स्थितिवाले का उत्कृष्ट स्थितिवाले जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक मानना जघन्य गुणकाला बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला बेइंद्रिय को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला बेइंद्रिय जघन्य गुण काला बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही दो ज्ञान दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक मानना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि

याण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहए पचिंदिए तिरिक्खजोणियस्सए जहणोगाहणगस्स पचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए ॥ वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दसणहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहणेणोगाहणगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता, एव उक्कोसोगाहणएवि,

अर्थ

जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पचेन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पचेन्द्रिय को अनत पर्यव कहे हैं ! अहो गौतम ! जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले तिर्यंच पचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, क्षेत्र से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जघन्य अवगाहनावाले संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो ज्ञान दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक, क्यों कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यंच में अवधि ज्ञान व विभग ज्ञान नहीं होता है और उक्त दोनों

से तणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं, बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवंचेव, णवरं छट्ठाणवडिए सट्ठाणेणं एवं सुयणाणीवि, मइअण्णाणीवि, सुयअण्णाणीवि, अचक्खुदंसणीवि णवरं जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि ॥ जत्थ दंसण तत्थ णाणावि, अणाण्णावि, एवंचेव तेइंदियावि, चउरिंदियाणवि, एवं चेव णवरं चक्खुदंसणं अब्भहियं, ॥ १६ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणि

पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना और आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य जानना अहो गौतम ! इसलिये जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का भी वैसे परन्तु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही श्रुतज्ञान का जानना जैसे आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान का कहा वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान का जानना अचक्षु दर्शन का भी वैसे ही कहना परन्तु जहां ज्ञान वहां अज्ञान नहीं और अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं और जहां दर्शन है वहां ज्ञान अज्ञान दोनो ही है ऐसा कहना जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय का जानना चतुरेन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु चक्षुदर्शन अधिक जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

ठिईए तुल्ले, वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं, दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दसणेहिं, छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णाठिईयाण पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण अणता पज्जवा, एव उक्कोसठिईएवि, एव चेव णवर दो णाणा अब्भहिया, अजहण्णमणुक्कोसठिइएवि एव चेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा तिण्णि दसणा ॥ जहण्ण गुणकाल गाण भते ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा १ण्णत्ता से कणट्ठेण भते! एव वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता

अर्थ न्द्रिय जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पचन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गध, रस व स्पर्श मैंस ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ पट् स्थान हीनाधिक जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच अपर्याप्त होते हैं इस से उस में सम्यक्पना का अभाव होने से ज्ञान नहीं पाता है अहो गौतम ! इसलिये एसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पचन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं एसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले तिर्यंच पचेन्द्रिय का जानना परतु इस में दो ज्ञान अधिक जानना अर्थात् दो ज्ञान, दो अज्ञान व दर्शन होते हैं उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं उस में दो ज्ञान दो अज्ञान निश्चय ही होते हैं मध्यम स्थिति का उत्कृष्ट स्थितिवाले

णवर तिहिंणाणेहिं तिहिं ... गाहणए तहा जहण्णमणुक्कोसागाहणावि, णवर ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णट्ठिईयाण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अनंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जहण्णठिईए पांचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णठिईए पांचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,

अर्थ

सहित जीव तिर्यंच में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यंच को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले तिर्यंच का जानना परंतु तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे उत्कृष्ट अवगाहना का कहा वैसे ही मध्यम अवगाहनावाले का जानना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचे-

यव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहिय णाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियणाणीस पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए,वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले,सुयणाण पज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसण पज्जवेहिं अचक्खुदंसण पज्ज-

अर्थ

हीनाधिक जानना अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला का जानना मध्यम गुण काला का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही पांचों वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण,

पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण कालए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए जहण्णगुण कालयस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ॥ ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिंतुल्ले, अवसेसहि वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिंतिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दसणहिं छट्ठाणवडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ अजहण्णगुणकालगाण पंचिंदिए तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसगुणकालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव पचवण्णा, दोगधा पचरसा अट्ठफासा भाणि-

जैसे कहना परंतु इस में स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन कहना अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान

सूत्र

जहण्णोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णोहियणाणिस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस फास पज्जवेहिं आभिणिबोहियणाण सुयणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, ओहियण्णा पज्जवेहिं तुल्ले, अण्णाणणात्थि, चक्खुदसण पज्जवेहिं अचक्खुदसण पज्जवेहिं, ओहिदसण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणी पचेंदिय तिरिक्खजोणियाण अणत पज्जवा ॥ एव उक्कोसोहिणाणीवि, अजहण्ण मणुक्कोसोहिणाणीवि एव चेव, णवर सट्ठाणण छट्ठाणवडिए, जहा आभिणि

अर्थ

पचेन्द्रिय जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान, वर्ण,गंध, रस व स्पर्श वैसे ही आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन व अवधि दर्शन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक अवधि ज्ञान आश्रिय तुल्य, इस में अज्ञान नहीं है, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि जघन्य अवधि ज्ञान वाले तिर्यंच पचेन्द्रिय के अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवधिज्ञानी का जानना मध्यम अवधि ज्ञानी का भी वैसे ही कहना- परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे आभिनिबोधिक ज्ञानी

वहिं छट्ठाण वडिए से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणीबोहियणाणीण पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि णवर ठिईए तिट्ठाण वडिए॥ तिण्णिणाणा तिण्णिदसणा, सट्ठाणे तुल्ले सेसेसु छट्ठाणवडिए, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि ॥ जहण्णोहिणाणीण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोहियणाणी पंचिंदिए तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा ? गोयमा !

गंध, रस, व स्पर्श वैसे ही श्रुत ज्ञान चक्षुदर्शन व अचक्षु दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान आश्रिय तुल्य, अहो गौतम ! इसलिये एसा कहा है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी का कहना, स्वस्थान आश्रिय तुल्य कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और स्वस्थान आश्रिय भी षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसेही श्रुतज्ञानी का जानना जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच

तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणएवि एवचेव णवरं ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असंखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाणा दोअण्णाणा, दो दसणा, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवचेव णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ

तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परंतु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परंतु अवधि ज्ञान व

मोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीय, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि, अत्थित्ति भाणियव्वं ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साणं दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना अवधिज्ञानी जैसे विभंग ज्ञानी का कहना चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना परंतु इस में जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

तुल्ले, आगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणएवि एवचेव णवर ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असंखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाणा दोअण्णाणा, दो दसणा, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवचेव णवर ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ

तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परंतु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परंतु अवधि ज्ञान व

ओहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभगणाणीय, चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि, अत्थित्ति भाणियव्व ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साण दव्वट्ठयाए तुल्ले, - पएसट्ठयाए

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना अवधिज्ञानी जैसे विभग ज्ञानी का कहना चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना परंतु इस में जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है-वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणयावि एवचेव णवरं ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाणा दोअण्णाणा, दो दसणा, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवचेव णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ

तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परंतु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परंतु अवधि ज्ञान व

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिइयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दंसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं

अवधि दर्शन नहीं होते हैं मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रित चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रित तुल्य वर्ण, गंध, रस

मणुस्साणं अणता पज्जवा, १०॥ एव उक्कोसठिईएवि, णवरं दोणाणा अन्नाणा दोदसणा, अजहण्णम-णुक्कोसठिईएवि एव, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णगुण कालयाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनन्त पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक केवल दर्शन आश्रिय तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्यकी

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं मणुस्साणं अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिईयस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णठिईयाणं

अर्थ

अवधि दर्शन नहीं होते हैं मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मन पर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य वर्ण, गंध, रस

मणुस्साणं अणता पज्जव प०॥एव उक्कोसठिईएवि,णवर दोणाणा अन्नाणा अभहिया,अजहण्णम-णुक्कोसठिईएवि एव,णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,आइल्लेहिं चउहिंणाणहि छट्ठाण वडिए,केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले,तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णगुण कालयाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक केवल दर्शन आश्रिय तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्य की

कालएमणूस जहण्णगुणकालगमणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाण वडिए केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले तिहि अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेतेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालगमणूसाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवंचेव, णवरं सट्ठाणे

साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य, शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही पहिले चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य अहो गौतम ! इस लिये एसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला मनुष्य के अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला मनुष्य का मानना मध्यमगुण काला मनुष्य का भी वैसे ही कहना परतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच, रस, व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य

छट्ठाणवडिए ॥ एव पंचवण्णा, दोगधा, पंचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण भंते ! मणूसाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहिय णाणीण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी मणुस्से जहण्णाभिणिबोहिय णाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ आभिणि

आभिनिबोधिक ज्ञानवाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं। अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी जघन्य, आभिनिबोधिक ज्ञानीकी साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस, व स्पर्श के पर्यव आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक आभिनिबोधिक ज्ञानी के पर्यव की साथ तुल्य श्रुत ज्ञान के पर्यव व चक्षु दर्शनकी साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी के अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी का जानना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक तीन ज्ञान व तीन दर्शन के पर्यव की

वेहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए सेसेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण अणता पज्जव पण्णत्ता॥एव उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, णवर आभिणिबोहिय नाणपज्जवेहिं तुल्ले ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए,अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव सुयणाणीवि॥ जहण्णोहिणाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणीण मणुस्साण

साथ षट् स्थान हीनाधिक कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसेही श्रुतज्ञानका जानना अहो भगवन् ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक दो ज्ञान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक, अवधि ज्ञान

अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोहिणाणी मणुस्से जहण्णोहिणाणिस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, आगाहणट्ठयाए तिट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्णगधरस फास पज्जवेहिं दोहिणाणेहिं छट्ठाणवडिए, ओहिणाण पज्जवहिं तुल्ले, मणपज्जवणाणपज्जवहिं छट्ठाणवडिए तिहिं दसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणीण मणूसाण अणता पज्जवा ॥ एव उक्कोसोहिणाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसोहिणाणीवि एवचेव ॥ णवर ओगाहणठयाए चउट्ठाण वडिए सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव मणपज्जवणाणीवि भाणियव्वो, णवर आगाहणट्ठयाए

अर्थ

आश्रिय तुल्य, मन.पर्यव ज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक ऐसे ही उत्कृष्ट अवधि ज्ञान का जानना मध्यम अवधि ज्ञान का वैसे ही कहना परतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक जैसे अवधि ज्ञानी का कहा वैसे ही मन पर्यव ज्ञानी का कहना परतु अवगाहना आश्रिय तीन स्थान जैसे आभिनिबोधिक ज्ञानी का कहा वैसेही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का कहना अवधि ज्ञानी जैसे विभग ज्ञानी का कहना चक्षु दर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है वहां ज्ञान नहीं है और जहां दर्शन है वहां ज्ञान व अज्ञान

वोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, णवर आभिणिबोहिय नाणपज्जवेहिं तुल्ले ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि ॥ जहण्णोहिणाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोहिणाणीणं मणुस्साणं

साथ षट् स्थान हीनाधिक कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसेही श्रुतज्ञानका जानना अहो भगवन् ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक दो ज्ञान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक, अवधि ज्ञान

ट्टयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं केवल दसण पज्जवेहिं तुल्ले, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ केवलणाणीण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव केवलदंसणीवि मणुस्से भाणियव्वे ॥ १८ ॥ वाणमतरा जहा असुरकुमारा ॥ एव जोइसिया वेमाणिया, णवर ठिईए तिट्ठाण वडिए भाणियव्वा, सेत्त जीवपज्जवा ॥ १९ ॥ * ॥ अजीव पज्जवाण भते ! कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा रूवि अजीव पज्जवाय, अरूवि अजीव पज्जवाय ॥ अरूवि

अर्थ

ज्ञान सिवा अन्य ज्ञान व केवल दर्शन सिवा अन्य दर्शनों का अभाव होने से नहीं ग्रहण कीये हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि केवल ज्ञानी के अनत पर्यव कहे हैं जैसे केवल ज्ञानी का कहा वैसे ही केवल दर्शनी का जानना ॥ १८ ॥ जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही वाणव्यतर का कहना ज्योतिषी व वैमानिक का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना यह जीव पर्यव सपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ अब अजीव पर्यव का वर्णन करते हैं अहो भगवन् ! अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अजीव पर्यव के दो भेद कहे हैं १ रूपी अजीव पर्यव और २ अरूपी अजीव पर्यव अहो भगवन् ! अरूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ?

सूत्र

तिट्ठाणवडिए, जहा आभिणिबोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय भाणियव्वा, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीवि भाणियव्वो, चक्खुदंसण अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि ॥ केवल-णाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ केवलणाणीणं भंते! मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! केवलणाणी मणुस्से केवलणाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएस-

अर्थ

दोनों हैं अहो भगवन् ! केवल ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक × स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक वर्षों की मात्र संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव से छट्ठे स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान व केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य केवल

× अपर्याप्त अवस्था में केवल ज्ञान नहीं होता है परंतु केवल समुद्घात करते संपूर्ण लोक व्यापी केवली के प्रदेश होने से असंख्यात गुनी हीनाधिक होती है

नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तेण नो संखेज्जा नो असंखेज्जा, अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणु पोग्गला, अणंता दुपए सियाखंधा, जाव अणंता दसपएसियाखंधा, अणंता संखिज्ज पएसियाखंधा, अणंता असंखेज्ज पएसियाखंधा,अणंता अणंत पएसियाखंधा,से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ तेण नो संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाण भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणंता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

असंख्यात नहीं परंतु अनंत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनंत हैं ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल, अनंत द्विप्रदेशिक स्कंध, यावत् अनंत दश प्रदेशिक स्कंध अनंत संख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनंत असंख्यात प्रदेशिक स्कंध व अनंत अनंतप्रदेशिक स्कंध हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे संख्यात व असंख्यात नहीं परंतु अनंत रूपीअजीव पर्यव जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं। अहो भगवन्! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

अजीवपज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ?, तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे, अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्त अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेण भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

अहो गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दश भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु पुद्गल अहो भगवन् ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ तेण नो सखज्जा नो असखज्जा, अणता ? गोयमा ! अणता परमाणु पोग्गला, अणता दुपए सियाखधा, जाव अणता दसपएसियाखधा, अणता सखिज्ज पएसियाखधा, अणता असखेज्ज पएसियाखधा, अणता अणत पएसियाखधा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ तेण नो सखज्जा असखेज्जा अणता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

असख्यात नहीं परतु अनत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनत हैं ? अहो गौतम ! अनत परमाणु पुद्गल, अनत द्विप्रदेशिक स्कध, यावत् अनत दश प्रदेशिक स्कध अनत सख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनत असख्यात प्रदेशिक स्कध व अनत अनतप्रदेशिक स्कंध हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे सख्यात व असख्यात नहीं परतु अनंत रूपीअजीव पर्यव जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

अजीवपज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ?, तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्तं अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

भा॰ गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दश भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश और ४ परमाणु पुद्गल अहो भगवन् ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

मब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भहिएवा संखिज्जगुण मब्भहिएवा, असंखिज्जगुण मब्भहिएवा, अणतगुण मब्भहिएवा ॥ एवं सेसवण्ण गंध रस - फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, फासाण सीय उसिण णिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥२२॥ दुपएसियाण खंधाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ दुपएसियाण खंधाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले

अर्थ

भाधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक व अनंत गुण अधिक है ऐसे ही सब वर्ण, गंध, रस व स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना स्पर्शमें शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष ये चार स्पर्श लेना अहो गौतम ! इस कारनसे ऐसा कहा गया है कि परमाणु पुद्गल के अनंत पर्यव हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध द्विप्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य क्यों कि द्विप्रदेशिक सब स्कंध समान हैं, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों की सब में दो प्रदेश हैं अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठए तुल्ले, ठिईए सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भाहिए, जइहीणे असखेज्जइभागहीणेवा, सखेज्जइ भागहीणेवा, सखिज्जगुण-हीणेवा, असखेज्जगुण हीणेवा, अह अब्भहिए, असखिज्जइ भाग मब्भहिएवा, सखिज्जइभाग मब्भाहिएवा, सखिज्जगुण मब्भहिएवा, असखिज्जगुण मब्भहिएवा, कालवण्ण पज्जवेहिय सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भहिए, जइहीणे, अणतभागहीणे, असखज्जइभागहीणेवा, सखेज्जइभागहीणेवा सखेज्जइगुणहीणेवा, असखिज्जइगुणहीणेवा, अणतगुणहीणेवा, जइ अब्भहिए, अणतभागे मब्भहिएवा असखिज्जभाग

स्थिति से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तो असख्यात भाग हीन, सख्यात भाग हीन, सख्यात गुण हीन व असख्यात गुण हीन है, परमाणु पुद्गल की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल की है जब अधिक होवे तब असख्यात भाग अधिक, सख्यात भाग अधिक, सख्यात गुण अधिक व असख्यात गुण अधिक काले वर्ण पर्याय से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तब अनत भाग हीन, असख्यात भाग हीन, सख्यात भाग हीन, सख्यात गुण हीन, असख्यात गुण हीन, व अनत गुण हीन, यों छ स्थान हीन है जब अधिक है तो अनत भाग

मज्झहिएवा, संखिज्जइभाग मज्झहिएवा संखिज्जगुण मज्झहिएवा, असंखिज्जगुण मज्झहिएवा, अणतगुण मज्झहिएवा ॥ एव सेसवण्ण गंध - रस - फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, फासाण सीय उसिण णिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥२२॥ दुपएसियाण खंधाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता॥ से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ दुपएसियाण खंधाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले

अर्थ

अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक व अनंत गुण अधिक है ऐसे ही शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना स्पर्शमें शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष ये चार स्पर्श लेना अहो गौतम ! इस कारनसे ऐसा कहा गया है कि परमाणु पुद्गल के अनंत पर्यव हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध द्विप्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य क्यों कि द्विप्रदेशिक सब स्कंध समान हैं, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों को सब में दो प्रदेश हैं अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठए तुल्ले, ठिईए सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भाहिए, जइहीणे असंखेज्जइभागहीणेवा, संखेज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जगुण-हीणेवा, असंखेज्जगुण हीणेवा, अह अब्भहिए, असंखिज्जइ भाग मब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भाहिएवा, संखिज्जगुण मब्भहिएवा, असंखिज्जगुण मब्भाहिएवा, कालवण्ण पज्जवेहिंय सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भहिए, जइहीणे, अणंतभागहीणे, असंखज्जइभागहीणेवा, संखेज्जइभागहीणेवा संखेज्जइगुणहीणेवा, असंखिज्जइगुणही-णेवा, अणंतगुणहीणेवा, जइ अब्भहिए, अणंतभागे मब्भाहिएवा असंखिज्जभाग

स्थिति से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं जब हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है, परमाणु पुद्गल की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल की है जब अधिक होवे तब असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक काले वर्ण पर्यव से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं जब हीन है तब अनंत भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन, व अनंत गुण हीन, यों छ स्थान हीन है. जब अधिक है तो अनंत भाग

वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्जपएसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जइगुण-हीणेवा अह अब्भहिए संखेज्जइभाग मब्भहिएवा संखेज्जइगुण मब्भहिएवा, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहि उवरिल्लेहि चउफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! असंखिज्जपएसिए खंधे असंखिज्जपएसियस्स

अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो संख्यात भाग हीन व संख्यात गुण हीन और अधिक होवे तो संख्यात भाग अधिक संख्यात गुन अधिक अवगाहना आश्रिय दो स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व चार स्पर्श आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की साथ

पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे, सिय तुल्ल सिय अब्भहिए, जइहीणे पदसहीणे, अहमब्भहिए पदेस अब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय, पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ एव तिपएसिएवि, णवरं ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणेवा, दुपएसहीणेवा, अह अब्भहिए पएसमब्भहिएवा, दुपएस मब्भहिएवा, एवं जाव दस पएसिए, णवर ओगाहणाए पएसपडिवुड्ढीकायव्वा, जाव दस पएसिए, णवर पएसहीणेवि ॥ संखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव

यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक होवे (द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेशावगाही भी होवे हैं और दो प्रदेशावगाही भी होते हैं) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व चार स्पर्श आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही तीन प्रदेशिक का कहना परंतु अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन, दो प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक व दो प्रदेश अधिक होवे ऐसे ही दश प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना परंतु जैसे एक २ प्रदेश स्कंध में बढाते जावे, वैसे ही अवगाहना में भी बढाना यावत् दश प्रदेशिक स्कंध में नव प्रदेश हीन अथवा अधिक जानना संख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा? अहो गौतम!

वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्जपएसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जइगुणहीणेवा अह अब्भहिए संखेज्जइभाग मब्भहिएवा संखेज्जइगुण मब्भहिएवा, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहि उवरिल्लेहि चउफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! असंखिज्जपएसिए खधे असंखिज्जपएसियस्स

अर्थ अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो संख्यात भाग हीन व संख्यात गुण हीन और अधिक होवे तो संख्यात भाग अधिक संख्यात गुन अधिक अवगाहना आश्रिय दो स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व चार स्पर्श आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की साथ

खधस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, ॥ वण्णाइहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिं छट्ठाणवडिए अणतपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्टेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अणतपदेसिए खधे अणतपदेसियस्स खधस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पदेसट्टयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहि अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ २३ ॥ एगपएसोगाढाणं

द्रव्य से तुल्य प्रदेश से चार स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्णादि और चार स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक अनंत प्रदेशिक स्कंधकी पृच्छा। अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से अनन्त पर्यव कहे हैं! अहो गौतम ! अनंत प्रदेशिक स्कंध अनंत प्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकि आकाश प्रदेश असंख्यात हैं स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काल भी असंख्यात हैं वर्ण, गंध, रस व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक ॥ २३ ॥ अब क्षेत्र आश्रिय प्रश्न करते हैं, अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही पुद्गल के

पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईउवरिल्लचउफासेहिय, छट्ठाण वडिए ॥ एव दुपएसोगाढेवि, जाव दसपएसोगाढेवि ॥ सखिज्ज पएसोगाढाण पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! सखिज्ज पएसोगाढे

अर्थ कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्याय हैं अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही के अनत पर्याय किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! एक २ प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल अन्य एक प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है क्यों कि अनत प्रदेश भी एक प्रदेश अवगाही होता है अवगाहना की अपेक्षा तुल्य हैं क्योंकि दोनों एक प्रदेशावगाही हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्शकी अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं यह जैसा एक प्रदेश अवगाही पुद्गलका कथन कहा ऐसाही द्विप्रदेशावगाही यावत् दश प्रदेशावगाही का कथन करना संख्यात प्रदेशावगाही का प्रश्न ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल के अनत

पोग्गल संखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ असंखिज्ज पएसोगाढाण पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! असंखिज्ज पएसोगाढपोग्गले असंखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णाईहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥२४॥ एगसमयठितीयाणं

पर्याय ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल अन्य संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की आपेक्षाकर द्रव्यार्थ पने तुल्य हैं, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना से दो स्थान हीनाधिक है स्थिति आश्रिय चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की आपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ असंख्यात प्रदेशावगाही की पुच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल अन्य असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ २४ ॥ अबकाल आश्रिय कहते हैं ॥ अहो

पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठिईयस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्टयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले वण्णगधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए॥एव जाव दस समय ठितीयाण,सखेज्जसमयठिईयाण एवचेव, णवर ठिईए छट्ठाणवडिए ॥ असखिज्ज समयठितीयाण एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥२५॥

अर्थ भगवन् ! एक समय स्थिति वाले पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! एक समय स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक समय स्थिति वाले अन्य एक समय की स्थितिवाले पुद्गल की साथ द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण रस गंध स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ जैसा यह एक समय की स्थिति का कहा वैसाही दश समय की स्थिति तक का कहना संख्यात समय की स्थिति वालेका भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष संख्यात समय की स्थिति के समय द्विस्थान हीनाधिक कहना क्योंकि संख्यात समयकी ही स्थिति है ऐसे ही असंख्यात समयकी स्थितिवालेका भी कहना जिस में इतना विशेष की स्थिति चतुस्थान हीनाधिक हैं क्यों कि असंख्यात काल की स्थिति है ॥ २५ ॥ एक गुनकाल

एगगुणकालगाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसाहिं वण्णइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एवं जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एवं चेव॥ णवर सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एवं असंखिज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एवं

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काल पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काल वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा वैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होवे हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

अणतगुण कालएवि, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए ॥ एवं जहा कालए वण्णस्स पज्जवा भाणियव्वा, तहा सेसाणवि वण्ण गंध रस फासाण वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अणतगुण लुक्खे ॥ २६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! दुपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएखध जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठ॰

अर्थ

जिस में इतना विशप स्वस्थान काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना, क्योंकि असख्यात हैं ऐसे ही अनंत गुण काल वर्ण की पर्याय का कहना, जिम में इतना अधिक स्वस्थान में षट्स्थान हीनाधिक हैं यह जिस प्रकार काले वर्ण पुद्गलों की वक्तव्यता कही उस ही प्रकार शेष बाकी रहे चारों वर्ण के पुद्गलों की व्याख्या करनी, और ऐसे ही दो गंध की पांच रस की और आठ स्पर्श की वक्तव्यता कहना यावत् २० वा बोल अनंत गुण रूक्ष पुद्गल तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? (परमाणु पुद्गल अत्यन्त सूक्ष्म होने से और सर्वेव एक ही आकार में रहने से उस की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना नहीं होती है इसलिये उस का प्रश्न नहीं पूछने द्विप्रदेशिक स्कन्ध का प्रश्न यहां पूछा है) अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं ?

एगगुणकालगाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ल, अवसेसेहिं वण्णइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसगुण कालए ॥ सखिज्जगुण कालएवि एव चेव॥ णवर सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एव असखज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एव

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनत पर्याय कहे है, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा वैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होते हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

अणतगुण कालएवि, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए ॥ एव जहा कालए वण्णस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, तहा सेसाणवि वण्ण गध रस फासाण वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अणतगुण लुक्खे ॥ २६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! दुपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णो गाहणए दुपएसिएखध जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठ-

अर्थ

जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना, क्योंकि असंख्यात हैं ऐसे ही अनंत गुण काल वर्ण की पर्याय का कहना, जिस में इतना अधिक स्वस्थान में षट्स्थान हीनाधिक है यह जिस प्रकार काले वर्ण पुद्गलों की वक्तव्यता कही उस ही प्रकार शेष बाकी रहे चारों वर्ण के पुद्गलों की व्याख्या करनी, और ऐसे ही दो गंध की पांच रस की और आठ स्पर्श की वक्तव्यता कहना यावत् २० वा बोल अनंत गुण रूक्ष पुद्गल तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? (परमाणु पुद्गल अत्यन्त सूक्ष्म होने से और सदैव एक ही आकार में रहने से उस की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना नहीं होती है इसलिये उस का प्रश्न नहीं पूछते द्विप्रदेशिक स्कन्ध का प्रश्न यहां पूछा है) अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं !

एगगुणकालगाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसराहिं वण्णइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एवं जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एवं चेव॥ णवरं सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एवं असंखज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एवं

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा वैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होवे हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! जहा जहण्णोगाहणए दुपएसिए एवं उक्कोसोगाहणएवि, एवं अजहण्ण मणुक्कोसोगाहणएवि एवंचेव॥जहण्णोगाहणगाणं भंते ! चउपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएतहा, उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि ॥ एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, चउप्पएसिए

अर्थ भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि त्रिप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय ? अहो गौतम ! जिस प्रकार द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा वैसा ही त्रिप्रदेशिक स्कंध का कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना और ऐसे ही अजघन्यउत्कृष्ट अवगाहना वाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना क्यों कि जघन्य अवगाहना वाला त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाश प्रदेश को अवगाहकर रहता है, मध्यम अवगाहना वाला त्रीप्रदेशिक स्कन्ध दो आकाश प्रदेश अवगाहकर रहता है ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला चतुप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसा द्विप्रदेशिक स्कन्ध का कहा वैसा ही चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का भी कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना वाले चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का कहना, और एसे ही अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा-स्यात् हीन है स्यात् तुल्य है स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है और यदि अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है क्यों कि जघन्य एक प्रदेश अवगाही और उत्कृष्ट

याए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सेस वण्ण गंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीतउसिण णिधलुक्ख फासेहिं छट्ठाण वडिए सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण दुपएसियाण खंधाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणए वि याण, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणओणत्थि ॥ २७ ॥ जहण्णोगाहणयाण भंते ! तिपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहनावाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा से द्रव्यार्थ पने तुल्य हैं प्रदेशार्थ पने भी तुल्य हैं, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय हैं जिस प्रकार जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा उस ही प्रकार उत्कृष्ट अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहना किन्तु द्विप्रदेशिक स्कंध की अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहना नहीं होती है क्योंकि जो द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहा है वह जघन्य अवगाहनावाला कहा जाता है और जो दो आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह उत्कृष्ट अवगाहनावाला कहा जाता है इस के अंतर में कुछ भी नहीं होता है इस लिये मध्यम अवगाहना नहीं होती है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो

गाहणगस्स, संखिज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाह णट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णादि- उवरिल्ल चउफासे पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए ॥ एवं उक्कोसोगाहणएवि अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवरं, सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ २९ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! असंखेज्जपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए असंखिज्जपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स असंखिज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

अर्थ

नाकी अपेक्षा तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं, ॥ जैसा यह संख्यात प्रदेशिक जघन्य अवगाहना का कहा वैसाही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना और अजघन्य अवगाहना का भी ऐसा ही कहना, जिसमें इतना विशेष स्वस्थान अवगाहनाकी अपेक्षा दोस्थान हीनाधिक हैं ॥२९॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, अहो भगवन् ! किस कारन अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाला एक असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, अवगा-

णवर ओगाहणट्ठयाए सिय हीणेसिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइहीणे, पदेसहीणे, अहअब्भहिए, पदेस अब्भहिए, एव जाव दस पएसिए णेयव्व, णवर अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पएस परिवुड्ढी कायव्वा, जाव दसपएसियस्स, सत्तपएसा परिवुड्ढिज्जति ॥२८॥-- जहण्णोगाहणगाण भते ! संखिज्ज पदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणता पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए संखिज्जपएसिए जहण्णो-

चतुष्प्रदेशिक अवगाही और मध्यम दो तथा तीन प्रदेश अवगाही होता है इसलिये चार प्रदेश अवगाह की अपेक्षा एक प्रदेश हीन और एक प्रदेश अवगाह की अपेक्षा द्वीप्रदेश अवगाही एक प्रदेश अधिक कहा जाता है यों आगे भी सर्व स्थान कहना ऐसे ही यावत् दश प्रदेश अवगाही पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष कि अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाह के सूत्र में अवगाहना की अपेक्षा एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक अजघन्योत्कृष्ट स्कन्ध में सात प्रदेश हीनाधिक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! -जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा कर द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक है क्यों कि संख्यात प्रदेशिक है अवगा-

तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ उक्कोसोगाहणएवि एवचेव, णवर ठिईए तुल्ले, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाण भते ! अणतपदेसियाण पुच्छा? गोयमा ! अणता से केणट्ठेण ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए अणतपएसिए खधे, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स अणतपदेसियस्सखधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए, चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ ३१ ॥ जहण्णाठिईयाण भते ! परमाणु पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता,

क्योंकि उत्कृष्ट अवगाहना वाला चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध सर्व लोकव्यापी होते हैं वे अचत महिमा स्कन्ध और केवलि समुद्घात कर्म स्कन्ध यह दोनोंही होते हैं दड कपाट मंथन अन्तर पूर करते चार समयकी ही स्थिति होती है ज्यादा नहीं होती है इसलिये स्थिति आश्रिय तुल्य है, अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना वाला अनत प्रदेशिक के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाहनावाला अनत प्रदेशिक स्कध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहनावाले स्कध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ॥ ३१ ॥ जघन्य स्थितिवाले

पएसट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए एव ॥ उक्कोसोगाहणएवि ॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणाएवि एव चेव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ २० ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! अणत पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए अणतपएसिएखंधे जहण्णोगाहणगस्स अणतपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए

हना की अपेक्षा तुल्य है. स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक मानना॥२०॥ अहो भगवन्! जघन्य अवगाहनावाले अनंत प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं किसलिये अहो भगवन ! ऐसा कहा है ? अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहना अनंत प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अनंत प्रदेशी स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट्स्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना जिस में इतना विशेष स्थिति अपेक्षा तुल्य कहना

पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणे, अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए तुल्ले, वणाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ एव उक्कोसठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठिईए एवंचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसपएसिए णवर आगाहणट्ठयाए तिसुविगमएसु पएस परिवड्ढी कायव्वा ॥ जाव दसपएसिए णव पएसा वाड्ढिज्जति, जहण्णठिईयाण भंते ! संखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते !

अर्थ

स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपन तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है अधिक है तो भी एक प्रदेश अधिक है स्थितिकी अपेक्षा तुल्य है, वर्ण गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्शकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले द्विप्रदे और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति का भी ऐसा ही कथन करना जिस में इतना विशेष स्थिति के स्थान चार स्थान हीनाधिक करना ॥ यों यावत् दश प्रदेशी तक कथन करना, जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा तीनों ही सूत्र में प्रदेशों की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक स्कन्ध में नव प्रदेश तक वृद्धि हाव ॥ अहो भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला

सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! जहण्णठिईए परमाणुपोग्गले जहण्ण ठिईयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिइए तुल्ले, वण्णाईहिं दुफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसेठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्को सट्ठिइएवि एवंचेव णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए जहण्णठिईयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए दुपएसिए जहण्ण ठिईयस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल के अनंत पर्याय किस कारन से है ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने भी तुल्य है, क्योंकि एक प्रदेशी है, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा भी तुल्य है, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के द्विस्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना का भी ऐसे ही कहना, परंतु जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है जघन्य स्थिति द्विप्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा है ? अहो गौतम! एक जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक

पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए असंखिज्ज पएसिएखंधे जहणठिईअस्स असंखज्ज पएसियस्सखंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवं चेव णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए ॥ ३२ ॥ जहण्णठिईयाणं अणंत पदेसियाणं पुच्छा ?

अर्थ

धिक है एसे ही उत्कृष्ट स्थितिकाभी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थितिका भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति आश्रिय चतुस्थान हीनाधिक कहना अहो भगवन्! जघन्य स्थितिवाले अनंत प्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ! किस कारन से अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण, गंध, रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है एसे ही उत्कृष्ट स्थिति का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है ॥ ३२ ॥ जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा

भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिइए संखिज्ज पएसिए खंधे जहण्णठिईयस्स संखिज्ज पएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णठिईयाणं भंते ! असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

स्कन्ध । प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य प्रदेशिक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य हैं, वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा, द्रव्यार्थपने तुल्य हैं, प्रदेशार्थपने चतुस्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा तुल्य हैं, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीना-

दुयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिय तुल्ल, अवसेसा वण्णा गंधिय गंधरसदुफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवचेव, णवर सट्ठाण छट्ठाणवडिए जहण्णगुण कालयाण भंते! दुपएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्ण गुणकालए दुपएसिए जहण्णगुण कालगस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइ हीण

अर्थ

अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं? किस कारन से अहो भगवन्! अनंत पर्याय कहे हैं? अहो गौतम! एक जघन्य गुण काला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुण काला द्विप्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काला वर्ण की अपेक्षा तुल्य है अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस ऊपरके चार स्पर्श की अपेक्षा छस्थान हीनाधिक है॥ एसे ही उत्कृष्ट गुनकालकाभी कहना, अजघन्योत्कृष्ट गुणकाले काभी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान षट्स्थान हीनाधिक है,॥ ऐसे ही यावत् दश प्रदेशी पर्यन्त कहना, जिसमें इतना विशेष अवगाहनामें एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक में

गोयमा ! अणंता, से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्णठिईए अणंत पदेसिए जहण्णठिईयस्स अणंत पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले, वण्णादि अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठिईएवि एवंचेव णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण कालयाणं परमाणु पोग्गलाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्णगुण कालए परमाणु पोग्गले जहण्णगुण कालगस्स परमाणु पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, उगाहण-

कहा ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुण काला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुण काले परमाणु की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काल वर्ण के पर्यव की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष चार वर्ण नहीं कहना क्योंकि यहां फक्त काल वर्ण का ही वर्णन है, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काल वर्ण के परमाणु का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट गुण काला वर्णवाले परमाणु का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान काल वर्ण की पर्याय आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है जघन्य गुण काले द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ?

तुल्ले, पएसट्टयाए दुट्ठाण वडिए ओगाहणट्टयाए दुट्ठाण वडिए ठितीए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसे वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एवंचेव, नवर सट्ठाणेछट्ठाण वडिए॥ जहण्णगुण कालगाण असंखिज्ज पएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पण्णत्ता॥ सेकेणट्टेण? गोयमा! जहण्णगुणकालए असंखिज्ज पएसिए जहण्णगुणकालगस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णादि उवरिल्ले चउफासेहिय

अर्थ भगवन्! किस कारन अनन्त पर्याय कही है? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस व ऊपर के ४ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना अजघन्यगुन काला अनंत प्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने

पदेसहीणे अब्भहिए, पएस मब्भहिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए एव उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवचेव नवर छट्ठाणे सट्ठाण वडिए, एव जाव दसपएसिए, णवर ओगाहणाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा ओगाहणा तहेव॥ जहण्णगुण कालगाण भते! सखिज्ज पएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता? से केणट्ठेण? गोयमा! जहण्ण गुण कालए सखिज्ज पएसिए जहण्णगुण कालगस्स सखिज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए

नव प्रदेश की वृद्धि करना अहो भगवन्! जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा? अहो गौतम! अनंतपर्याय हैं अहो भगवन्! किस कारन अनंतपर्याय हैं? अहो, गौतम! एक जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कंध से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है कालेवर्ण के पर्याय की अपेक्षा भी तुल्य है, अपूर शेष ४ वर्ण सब रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] गुन काले का भी इस ही प्रकार कहना जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय षट् स्थान हीनाधिक करना जघन्य गुन काले असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं अहो

सूत्र

-अविल महुररसपज्जवेहिय एव चेव भाणियव्वा, णवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधा न भण्णइ, दुब्भिगंधस्स सुब्भिगंधो न भण्णइ, तित्तस्स अवसेसा न भण्णति, एवं कडुयादी णिविसेस तचेव ॥२२॥-जहण्णगुण- कक्खडाणं अणंतपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण-गुणकक्खडे अणंतपएसिए जहण्णगुणकक्खडस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए,

अर्थ

प्रमानु पुद्गलको सुभिगंध के स्थान दुर्भिगंध नहीं कहना और दुर्भिगन्धी के सुभिगंधी नहीं कहना वैसे तिक्त रस प्रमानु का अन्य चारों रस मय नहीं कहना क्यों कि यह सब प्रतिपक्षी हैं, ऐसे ही कटुकादि पांचों रसों का जानना और सब वैसा ही कहना ॥ २२ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं, इस में कर्कश मृदु गुरु और लघु यह चारों स्पर्श असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध तक नहीं पाते हैं, फक्त अनंत प्रदेशिक स्कन्ध में ही पाते हैं इसलिये इन का प्रश्न यहां पूछते हैं अहो भगवन् ! जघन्यगुन कर्कश स्पर्श के अनंत प्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन ! जघन्य गुन कर्कश स्पर्श के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन कर्कश अनंत प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य गुन कर्कश अनंत प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ पट स्थान हीनाधिक है

छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवं चेव
नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणकालगाणं भंते ! अणंतपएसियाणं पुच्छा ?
गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! जहण्ण-
गुणकालए अणंतपएसिए जहण्णगुणकालगस्स अणंतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,
पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, काल-
वण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं अट्ठफासपज्जवेहिय-छट्ठाणवडिए ॥ एवं
उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवं चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाण
वडिए, एवं नील लोहिय हालिद्द सुक्किल्ल, सुब्भिगंध दुब्भिगंध तित्त कडुय कसाय

तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा-चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की
अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण की अपेक्षा परस्पर तुल्य है अपर शेष ४ वर्ण-२ गंध ५ रस
८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना अजघन्योत्कृष्ट
(मध्यम) गुन कालेका भी ऐसेही कहना जिसमें इतना विशेष स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है, जैसे
काले वर्ण के पुद्गलों का कथन कहा, ऐसे ही हरे लाल पीले श्वेत, इन चारों वर्णों का, सुगिगंध दुर्गंध
दोनों गंधों का, तिक्त कटुक कषाय अम्बट व मधुर इन पांचों रस का भी कहना जिस में इतना विशेष

ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रसेहिं-छट्ठाणवडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले ॥ उसिणफासाणभण्णइ, णिद्ध लुक्खफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एव उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणसीएवि एव चेव णवर सट्ठाणे छट्ठाण- वडिए जहण्णगुणसीयाण दुपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेण भंत ! एव वुच्चइ ?गोयमा! जहण्णगुणसीए दुपएसिए जहण्णगुणसीयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले,

अर्थ

गाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्पर्श नहीं कहना क्यों कि यह प्रतिपक्षी है, स्निग्ध रूक्ष की अपेक्षा षट स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट शीत स्पर्श का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) शीत स्पर्श का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना अधिक कि स्वस्थान षटस्थान आश्रिय हीनाधिक कहना जघन्य गुण शीत द्विप्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंतपर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किसकारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम! एक जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक अन्य जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ तुल्य है अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक

वण्ण-गंध रस-पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, कक्खडफास पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं सत्तफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसगुण कक्खडेवि ॥ अजहण्णमणुक्कोस गुणकक्खडफासेवि एवं चेव, णवरं सठाणे छट्ठाणवडिए ॥ एवं मउय गुरुय लहुएवि भाणियव्वा ॥ ३४ ॥ जहण्णगुणसीयाणं भंते ! परमाणु पोग्गलाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए परमाणुपोग्गले जहण्णगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाएतुल्ले,

अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, ५ वर्ण २ गंध ५ रस अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, कर्कश स्पर्श की तुल्य अपेक्षा है अपर शेष सात स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण कर्कश स्पर्श अनंत प्रदेशिक स्कंध का कहना और अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] गुण कर्कश स्पर्श का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान कर्कश स्पर्श के पर्याय से षट्स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही कोमल, भारी, और लघु का भी कहना यह चारों स्पर्श का हुवा ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य गुन शीत स्पर्श परमाणु पुद्गल में कितने पर्याय पाते हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय पाते हैं किस कारन अनंत पर्याय पाते हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुन परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अव-

सीयस्स संखिज्ज पएसिएयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, उसिणणिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाण वडिए, ॥ एवं उक्कोसगुणसीएवि अजहण्णमणुक्कोसगुण सीएवि एवं चेव णवरं सट्ठाण सट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण सीयाणं असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण जहण्णगुण सीत असंखिज्जपएसिए जहण्णगुण सीतस्स असंखेज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीय फास

अर्थ

अहो गौतम ! एक जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, ऊष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी जानना ऐसे ही अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी जानना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्शकी पर्याय षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक की पुच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय है, अहो भगवन्! किस कारन अनंत पर्याय हैं? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य

सिय अब्भहिए, जइ हीणे पएसहीण, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, ॥ उसिण णिद्ध लुक्खफास पज्जवेहि छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोस-गुणसीएवि एवचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं जाव दसपएसिए, णवर ओगा-हणट्ठयाए, पएपसरिवुड्ढी कायव्वा, जावदस पएसियस्स नवपएसियसा पएसावुड्ढीअति ॥ जहण्णगुणसीयाण संखेज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए संखिज्जपएसिए जहण्णगुण

प्रदेश अधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस के पर्यव की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्श की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है जैसा यह द्विप्रदेशिक का कहा ऐसे ही तीन, चार, पांच यावत् दश प्रदेशिक का कहना जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेश पर्यंत नव प्रदेश अधिक करना जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहा है किस कारन अनंत पर्याय कहा है ?

सीयस्स संखिज्ज पएसिएयस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाह-
णट्टयाए दुट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफास
पज्जवेहिं तुल्ले, उसिणणिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाण वडिए, ॥ एवं उक्कोसगुणसीएवि
अजहण्णमणुक्कोसगुण सीएवि एवं चेव णवर सट्ठाण मट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण
सीयाण असंखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण
भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण जहण्णगुण सीत असंखिज्जपएसिए जहण्णगुण
सीतस्स असंखेज्ज पएसियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए
चउट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीय फास

अर्थ

अहो गौतम ! एक जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी जानना ऐसे ही अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी जानना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्शकी पर्याय षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय है, अहो भगवन्! किस कारन अनंत पर्याय है? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य

पज्जवेहिं तुल्ले उसिणणिद्ध लुक्ख फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एवं उक्कोसगुण सीएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणसीएवि एव चेव, णवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए जहण्णगुणसीयाणं अणंत पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए अणंत पएसिए जहण्णगुण सीतस्स अणंत पदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं छट्ठाणवडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसहिं

गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस के पर्याय की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्णस्निग्ध रुक्ष स्पर्श के पर्यव की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुन शीत का जानना मध्यमगुन शीत का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक जघन्यगुण शीत अनंत प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत कहे हैं ? अहो गौतम! जघन्य गुन शीत अन्य जघन्य गुण शीत की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से षट्स्थान हीनाधिक अवगाहना से चार स्थान, स्थिति से चार स्थान हीनाधिक वर्णादि पर्यव से षट्स्थान, शीत की साथ तुल्य अपर शेष सात स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है एवं ही उत्कृष्ट गुन शीत का भी कहना, अजघन्योत्कृष्ट गुन शीतका भी ऐसाही कहना जिस में इतना अधिक स्वस्थान शीत के पर्याय कर षट् स्थान हीनाधिक हैं जैसे शीत स्पर्श का वर्णन कहा,

सत्तफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एव उक्कोसगुणसीएवि॥अजहण्णमणुक्कोस गुणसीएवि एवचेव, नवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए एव उसिणेणिद्धे लुक्खे जहासीए, परमाणु पोग्गलास्स तहेव पडिपक्खो, सव्वेसि नभण्णाची भाणियव्व ॥२५॥ जहण्णपएसियाण भते ! खधाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णपएसिए खधे जहण्णपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ उक्कासपएसियाण खधाण पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ — एसा ही उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श का कहना, सर्व स्थान प्रतिपक्ष स्पर्श को छोडकर कहना, शीत का उष्ण प्रतिपक्षी तैसे उष्ण का शीत प्रतिपक्षी, स्निग्ध का रूक्ष प्रतिपक्षी तैसा रूक्ष का स्निग्ध प्रतिपक्षी यों जिस प्रकार शीत परमाणु आदि की व्याख्या की तैसे सब की करना ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य (द्विप्रदेशिक) स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन् ! जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है

अणत पज्जवा पण्णत्ता ? से केणणेट्ठ भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! उक्कोस पएसिएखधे उक्कोसपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ अजहण्णमणुक्कोस पएसियाण खधाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेण भंते ? गोयमा! अजहण्णमणुक्कोस पएसिएखधे अजहण्णमणुक्कोस पएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण

वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ उत्कृष्ट (अनंत प्रदेशिक) स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! उत्कृष्ट स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ४ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ अजघन्या उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अजघन्यानुत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अजघन्य अनुत्कृष्ट स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की

वड्डिए, वण्णाईहिं अट्ठफासे पज्जवेहि छट्ठाण वडिए, जहण्णोगाहणगाण पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, स केणट्ठेण गोयमा ! जहण्णोगाहणए पोग्गले जहण्णोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ल, ठितीए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाणवडिए, उक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर ठिईए तुल्ले, अजहण्णमणुक्कोसगाहणगाण पोग्गलाण पुच्छा? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण ? गोयमा !

अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य एक प्रदेशावगाही अवगाहना वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अनंत पर्याय किस कारन है ? अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल अन्य जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ऊपर के चार प्रदेश की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, क्यों कि उत्कृष्ट अवगाहनावंत या सर्व लोक व्यापक अचित्त महा स्कन्ध और केवली समुद्घात के समय कर्म स्कन्ध यह

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए आगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! पोग्गलाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेणं

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ? किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काल वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ! अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! पोग्गलाण केव-इया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काल वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ? किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काल वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्व-ट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ° अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

कट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! पोग्गलाण केव- इया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ! किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काले वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथने लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

* षष्ठम विरह पदम् *

बारस, चउवीसाइ, सतरय, एगसमय, कत्तोय, उवट्टण, परभावियाउयच, अट्ठेव चआगरिसा ॥ १ ॥ निरयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारसमुहुत्ता मणुयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥ देवगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता

अर्थ

अब छठ पद में जीव का उपपातादि सम्बधी विरह (अतर) कहते हैं इस के आठ द्वार हैं जिस के नाम १ सामान्य से बारे मुहूर्त का उपपात उद्वर्तन का विरह द्वार २ चौवीस मुहूर्तादि विशेष उपपात उद्वर्तन द्वार, ३ उपपात उद्वर्तन का अतर, ४ एक समय में उपपात उद्वर्तन, ५ कहां से आकर कर उत्पन्न होवे यह आगतद्वार ६ मरकर कहां जावे सो गतद्वार, ७ परभवका आयु कितने प्रकारसे बंध, और ८ आठवा आगरिसा द्वार प्रथम विरह द्वार सामान्य से कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में कितने काल का विरह होता है ? [एकादि जीव नरक में उत्पन्न हुवे बाद फिर जितने काल बाद दूसरा जीव आकर उत्पन्न होवे उसे विरह कहते हैं] अहो गौतम ! जघन्य से एक समय उत्कृष्ट बारा मुहूर्त [प्रश्न प्रथमादि सातों नरक म से किसी भी नरक में चौवीस मुहूर्त से कम विरह नहीं कहा तो यहां १२ मुहूर्त का विरह

गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाण पोग्गलाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसगुण कालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एवं चेव ॥ णवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, एवं जहा कालवण्ण पज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वण्ण गंध रस फासाणं वत्तव्वयाभाणियव्वा जाव अजहण्ण मणुक्कोसगुण लुक्खे सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, सेत्तं रूवि अजीव पज्जवा ॥ सेत्तं अजीव पज्जवा ॥ सेत्तं पज्जवा ॥ इति पण्णवणा भगवईए विसेसपय पंचमं सम्मत्तं ॥ ५ ॥

भी चतुस्थान हीनाधिक है काले वर्ण के पर्यव की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष वर्ण गंध-रस स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं, इस कारन अहो गौतम ! ऐसा कहा जघन्य काले गुन के पुद्गल के अनंत पर्याय ऐसे ही उत्कृष्ट काले गुन के भी असंख्यात पर्याय कहना और अजघन्य उत्कृष्ट काले गुन का भी ऐसा ही कहना विशेष-स्वस्थानमें षट् स्थान हीनाधिक कहना यों जिस प्रकारसे काले वर्ण के पुद्गल की व्यक्तव्यता कही तैसे ही शेष वर्ण गंध रस स्पर्श की व्यक्तव्यता कहना यावत् अजघन्योत्कृष्ट गुन रूक्ष पुद्गल स्वस्थान षट् स्थान हीनाधिक है यह रूपी अजीव के पर्यव का अधिकार हुवा यह अजीव के पर्यव का अधिकार हुवा और यह सर्व प्रकार के पर्यव का अधिकार समाप्त हुवा इति भगवती पन्नवना का पर्यव विशेष नामक पांचवा पद समाप्तम् ॥ ५ ॥

※ षष्ठम विरह पदम् ※

बारस, चउवीसाइ, सतरय, एगसमय, कत्तोय, उव्वट्टण, परभावियाउयच, अट्ठेव चआगरिसा ॥ १ ॥ निरयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारसमुहुत्ता मणुयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥देवगईण भंते!केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता

अर्थ

अब छठे पद में जीव का उपपातादि सम्बंधी विरह (अंतर) कहते हैं इस के आठ द्वार हैं जिस के नाम १ सामान्य से बारे मुहूर्त का उपपात उद्वर्तन का विरह द्वार २ चौवीस मुहूर्तादि विशेष उपपात उद्वर्तन द्वार, ३ उपपात उद्वर्तन का अंतर, ४ एक समय में उपपात उद्वर्तन, ५ कहां से आकर कर उत्पन्न होवे यह आगतद्वार ६ मरकर कहां जावे सो गतद्वार, ७ परभव का आयु कितने प्रकारसे बंधे, और ८ आठवा आगरिसा द्वार प्रथम विरह द्वार सामान्य से कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में कितने काल का विरह होता है ? [एकादि जीव नरक में उत्पन्न हुवे बाद फिर जितने काल बाद दूसरा जीव आकर उत्पन्न होवे उसे विरह कहते हैं] अहो गौतम ! जघन्य से एक समय उत्कृष्ट बारा मुहूर्त [प्रश्न प्रथमादि सातों नरक में से किसी भी नरक में चौवीस मुहूर्त से कम विरह नहीं कहा तो यहां १२ मुहूर्त का विरह

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ सिद्धिगईणं भंते ! केवइयं काल विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा ॥ १ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं काल विरहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईणं भंते ! केवइयं

किस प्रकार कहा ? उत्तर—समुच्चय सातों नरक में कोई भी जीव उत्पन्न नहीं होवे इस आश्रिय बारह मुहूर्त का विरह कहा है] अहो भगवन् ! तिर्यंचगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का (यह तिर्यंच गति का विरह अन्य गति में आकर उत्पन्न होवे उस अपेक्षा से कहा है, क्योंकि पांच स्थावर में तो वे ही मरकर समय २ असंख्यात, तथा वनस्पति में अनंत उत्पन्न होते हैं) अहो भगवन् ! मनुष्य गतिका कितना विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त अहो भगवन् ! देवगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का। अहो भगवन ! सिद्ध गति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ महीने का ॥ १ ॥ अब निकलने आश्रिय विरह कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में निकलने आश्रिय कितने काल का विरह कहा है ? [एक जीव नरक का मरे बाद दूसरा जीव मरे उस का जितना अंतर पडे] अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त अहो भगवन् ! तिर्यंच गति में निकलने का कितने

काल विराहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ मणुयगईण भंते ! केवइय कालं विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता एवं देवगइएवि ॥ १ ॥ २ ॥ रयणप्पभापुढवि नेरइयाण भंते ! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ॥ सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सत्तराइंदियाइं ॥ वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अद्धमास॥ पंकप्पभा

अर्थ

काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का अहो भगवन् ! मनुष्य गति का कितने काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का अहो भगवन् ! देवता का निकलने आश्रिय कितने काल का विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का और सिद्ध तो सादि अपर्यवसित (सादि अनंत) हैं वे चवते नहीं है इसलिये उन का चवन आश्रिय विरह नहीं होता है यह प्रथम द्वार ॥ २ ॥ अब चौवीस दंडक का अलग २ कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के उत्पात आश्रिय कितने काल क

पुढवि नेरइयाण भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा ॥ तमप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नोत्तर जानना] शर्कर प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्द्रह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूम्रप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ ३ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का, जैसा असुर

मुहुत्ता॥णागकुमाराण भते'केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा!जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता॥एव सुवण्णकुमाराण विज्जुकुमाराण अग्गिकुमाराण, दीवकुमाराण, दिसा कुमाराण, उदहि कुमाराण, वाउकुमाराण, थणियकुमाराणय पत्तय २ जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाण भते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहिय उववाएण पण्णत्ता एव आउकाइयाणवि, तेउकाइयाणवि, वाउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि,अणुसमयम विरहिय उववाएण प०॥५॥बेइदियाण भते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता?गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण अतोमुहुत्ता॥एव तेइदियाय

अर्थ

कुमार का कहा ऐसा ही नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार वायुकुमार, और स्तनित कुमार इन दशोंही भवनपति देवों को अलग २ जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का विरह जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि चारों स्थावर म समय २ असख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में साधारन आश्रिय समय २ अनत जीवों उत्पन्न होते हैं इसलिये अविरहित जानना ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चौरिन्द्रिय का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तका समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रियका भी जघन्य एक समयका उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तका, गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रियका जघन्य

चउरिंदियाय सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता। गब्भवक्कंतिय मणुस्साण भंते! पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ ६ ॥ वाणमंतराण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ॥ जोइसियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाण भंते? केवइय काल विरहिया उववाएण

एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का, समूर्च्छिम मनुष्य का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का (यद्यपि समूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य अंतर्मुहूर्त का है तथापि किसी वक्त में ऐसा ही जोग बनता है कि कोई भी समूर्च्छिम २४ मुहूर्त तक उत्पन्न नहीं होता है) गर्भज मनुष्य का जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ वाणव्यन्तर देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, ज्योतिषी देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सौधर्म ईशान देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सनत्कुमार देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट नव दिन बीस मुहूर्त का, माहेन्द्र देवलोक का

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ॥ ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता॥सण कुमार देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण णवराइदियाइ वीस मुहुत्ताइ ॥ माहिंद देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण बारसराइदियाइ दस मुहुत्ताइ ॥ बमलोए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अद्धतेवीसराइदियाइ ॥ लतग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण पणयालीस राइदियाइ ॥ महासुक्कदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण असीतिराइदियाइ ॥सहस्सार देवाण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण राइदियसत, आणय देवाण पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह दिन दश मुहूर्त,ब्रह्मदेवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट साडे बावीस अहोरात्रि लांतक देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पैंतालीस अहोरात्रि, महाशुक्र देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट अस्सी अहोरात्रि, सहस्रार देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक सो (१००) अहोरात्रि, आनतदेवलोक में और प्राणत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात महीने आरण और अच्युत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात वर्ष, ग्रीवेक की नीचे की त्रिक में संख्यात सो वर्ष

जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जमासा, पाणय देवाण पुच्छा ? जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जमासा ॥ आरण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखेज्जवासा ॥ अच्चुय देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जवासा ॥ हेट्ठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जाइ वास सयाइ, ॥ मज्झिम गेविज्जग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जाइ वाससहस्साइ उवरिम गेविज्जग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखेज्जाइ वाससयसहस्साइ ॥ विजय वेजयत जयत अपराजिय देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण

वर्ष, मध्यम ग्रैवयक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सख्यात हजार वर्ष, ऊपर की ग्रैवेक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात लाख वर्ष, विजय वेजयत जयत और अपराजित विमान में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात काल और सर्वार्थ सिद्ध विमान का जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का सख्यातवा भाग का अहो भगवन् ! सिद्ध भगवत सिद्धपने उत्पन्न होवे तो कितने काल का विरह होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ मास का (यहा सख्यात महीने आये वहां, पूरा नहीं सख्यात सो वर्ष आये वहां पूरे हजार वर्ष नहीं, जहां सख्यात हजार वर्ष आये वहां पूरे लाख नहीं और जहां सख्यात लाख

असखेज्ज काल॥सव्वट्ठसिद्ध देवाण पुच्छा ?गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण पलिओवमस्स सखेज्जइभाग ॥ सिद्धाण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ ७ ॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते ! केवइय काल विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता एवासिद्धि वज्जाउव्वट्टणाएवि भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवर जोइसिय वेमाणिएसु चयति अहिलावो कायव्वो॥२॥ ८ ॥

अर्थ

वर्ष कोड वहां पूरा क्रोड वर्ष नहीं ९९९९८९९ वर्ष इग्यारा महीने २९ दिन जानना कुछ भी कम सर्व स्थान समझना) ॥ ७ ॥ अब निकलन (मरने) आश्रिय विरह कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में निकलने का विरह पडे तो कितना काल का पडे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का अर्थात् चौवीस मुहूर्त के बाद कोइ भी पहिली नरक का नेरीया जरूर ही मरे यों यावत् जैसे उत्पन्न होने का विरह कहा वैसही मर चवने का विरह कहना यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत परन्तु चवने में सिद्ध नहीं कहना क्योंकि सिद्ध सादि अपर्यवसित है, कभी चवते नहीं हैं और ज्योतिषी विमानिक के स्थान उद्वर्तन नहीं कहना किन्तु चवन कहना क्योंकि-व मरकर नीचे उत्पन्न होते हैं ॥इति दूसराद्वार ॥८॥

नेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ मणूसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ देवाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ देवाणं भंते! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइयाणं भंते! किं संतरं

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [तब ही विरह पड़ता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह भ्रम तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

उववज्जति निरतर उववज्जति? गोयमा! सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति ॥ एव जाव अहे सत्तमाए सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति॥ असुरकुमाराण भते! देवा किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ एव जाव थणियकुमारा सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति पुढवि काइयाण भते! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति? गोयमा! नो सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ एव जाव वणस्सइकाइया नो सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ बेइंदियाण भते! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उवव-

अर्थ

होते हैं और अतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अब चौबीस दण्डक आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के जीव अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं जैसा रत्नप्रभा नरक का कहा वैसा ही सातोंही नरक का जानना अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अतर रहित भी उत्पन्न होते हैं ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के जीव अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया अतर सहित उत्पन्न नहीं होवे

नेरइयाण भते ! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उववज्जति, निरतरपि उववज्जति ॥ तिरिक्खजोणियाण भते ! किं सतर उववज्जति, निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति ॥ मणूसाण भते ! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति? गोयमा! सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति ॥ देवाण भते ! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति॥देवाण भते!किं सतर उववज्जतिनिरतर उववज्जति ? गोयमा!सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति॥रयणप्पभा पुढवि नेरइयाण भते!किं सतर

अब तीसरा अतर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरिये अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [तब ही विरह पडता है] और अतर रहित निरतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह त्रस तिर्यंच आश्रिय] निरतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी और अतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! देवता अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

सूत्र

वजा भाणियव्वा जाव वेमाणिया, णवरं जोतिसिय वेमाणिएसु चयण अभिलावो कायव्वो ॥ २ ॥ १० ॥ नेरइयाण भंते ! एगसमएण केवइया उववज्जति ? गोयमा! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा उववज्जति ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ असुरकुमाराण भंते ! एग समएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण सखिज्जावा असखेज्जावा ॥ एव णागकुमारा जाव थणियकुमारावि भाणियव्वा ॥ पुढविकाइयाण भंते ! एग

अर्थ

परतु सिद्ध भगवंत का उद्वर्तन नहीं कहना और ज्योतिषी तथा वैमानिक का चवन कहना ॥ इति तीसरा द्वार॥ १० ॥ चौथा एकसमय में उत्पन्न होने आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीये एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात जैसा यह समुच्चय नरक का कहा वैसे ही रत्नप्रभा आदि सातों नरक का कहना अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात ऐसे ही नाग कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समय २ में विरह रहित असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही यावत् वायु काया

ज्जति, निरतरपि उववज्जति ॥ एव जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सतरवि उवव-
ज्जति निरतरंपि उववज्जति ॥ मणूसाण भते! किं सतर उववज्जति निरतरं उववज्जति?
गोयमा!सतरपि उववज्जति निरंतरपि उववज्जति ॥ एव वाणमतर जोइसिया सोहम्म
जाव सव्वट्ठसिद्ध देवाय सतरपि उववज्जति निरंतरपि उववज्जति ॥ सिद्धाण भते !
किं सतर सिज्झति निरतर सिज्झति ? गोयमा ! सतरपि सिज्झति निरतरपि सिज्झति
॥ १ ॥ नेरइयाण भते ! किं सतर उवट्टति निरतर उवट्टति ? गोयमा ! सतरपि
उवट्टति निरतर उवट्टति॥एव जाव जहा उववाओ भणिओ तहा उवट्टणावि सिद्ध-

परतु निरन्तर उत्पन्न होते हैं एसे ही वनस्पति काया तक कहना अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम ! अन्तर सहित भी उत्पन्न होते हैं और निरतर भी उत्पन्न होते हैं, एसे ही तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक यावत् सर्वार्थ सिद्ध विमान पर्यंत कहना सब निरतर दोनों प्रकार उत्पन्न होते हैं ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध भगवत अंतर सहित सिद्ध होते हैं कि निरंतर सिद्ध होते हैं अहो गौतम ! दोनों हो प्रकार सिद्ध होते हैं ॥१॥ अब निकलने आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नरक के जीवों अंतर सहित निकलते हैं कि निरतर निकलते हैं ? अहो गौतम ! जैसा उत्पन्न होने का कहा वैसा ही उद्वर्तन-निकलने का भी कहना

जोणिया, गब्भवक्कतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ समुच्छिममणुस्सा, वाणमतरा जोइसिया सोहम्मीसाण सणकुमार माहिंद बभलोय लतक महा सुक्क सहस्सार कप्पदेवा एते जहा नेरइया॥ गब्भवक्कतिय मणुस्साणयपाणय आरण अच्चुय गेविज्जगअणुत्तरो-ववाइयाय एते जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा उववज्जति सिद्धाण भते ! एग समएण केवइया सिज्झति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण अट्ठसय॥ ११॥नेरइयाण भते! एग समएण केवइया उवट्टति? गोयमा! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखिज्जावा असखिज्जावा उवट्टति, एव जहा

अर्थ

जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्य आणत प्राणत आरण अच्युत यह चार देवलोक में नव ग्रैवेयक में पांच अनुत्तर विमान में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात ही उत्पन्न होते हैं क्यों कि गर्भज मनुष्य तो सख्यात ही हैं और नववे देवलोक से यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक मनुष्य ही मरकर जाते हैं, इसलिये एक समय में सख्यात ही उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! सिद्ध एक समय में कितने सिद्ध होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट एक सो आठ सिद्ध होते हैं ॥ ११ ॥ अब उद्वर्तन कहते हैं अहो भगवन् ! नरकमें से एक समय में कितने जीवों का उद्वर्तन होता है अर्थात् एक समय में कितने जीवों निकलते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य

समएण केवइया उववज्जति ? गोयमा ! अणुसमय अविरहिय असखेज्जा उववज्जति॥ एव जाव वाउकाइयाण॥ वणस्सइकाइयाण भते ! एग समएण केवइया उववज्जति? गोयमा! सट्ठाणुववाय पडुच्च अणुसमय अविरहिय अणता उववज्जति ॥ परट्ठाणुववाय पडुच्च अणुसमय अविरहिय असखेज्जा उववज्जति ॥ बेइदियाण भते ! केवइया एगसमएण उववज्जति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा ॥ एव तेइदिय चउरिंदिय सम्मुच्छिमपचिदियतिरिक्ख

पर्यंत कहना अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! स्वस्थान आश्रिय अर्थात् वनस्पति से मरकर पुन वनस्पति में उत्पन्न होना उस अपेक्षा समय २ में विरह रहित अनन्त उत्पन्न होते हैं और परस्थान आश्रिय असख्यात उत्पन्न होते हैं क्योंकि वनस्पति छोड अन्य स्थान में असख्यात ही जीवों हैं अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय, समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और प्रथम सौधर्म देवलोक से यावत् आठवे सहस्रार देवलोक तक नरक वैसे ही एक समय में

सूत्र

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, णो बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहितो, णोतेइंदिय तिरिक्खजोणिएहितो, णो चउरिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जदि जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-

अर्थ

अहो गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय से तो नेरीये उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं तो क्या जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं ? अहो गौतम जलचर स्थलचर खेचर तीनों से ही होते हैं यदि अहो भगवन् ! जलचर तिर्यंच

में विपुल गिरि पर सन्थारा ले वे भी मुक्ति में गये। आगे छटे अध्याय में उसी काकन्दी के निवासी, धृति धर नामक गाथापति के सम्बन्ध में भी ठीक ऐसा ही कहा गया है। तब सातवें और आठवें अध्यायों में यह उल्लेख पाया जाता है कि–साकेत नगर–निवासी कैलाश और हरिचन्दन नामक गाथापतियों ने समय पर भगवान् महावीर का उपदेश सुन दीक्षा को अङ्गीकार किया। बारह वर्षों तक चारित्र का पालन कर, अपने अन्तिम समय में उसी विपुलगिरि पर सन्थारा ले मोक्ष-धाम को सिधार गये। आगे नौवें अध्याय में भी राजगृह के निवासी वारत्तक नामक गाथापति के सम्बन्ध में ठीक इसी प्रकार का वर्णन पाया जाता है। उनके दीक्षित होने, चारित्र-पालन करने तथा सन्थारा ले मोक्ष में जाने, आदि का वर्णन ठीक आठवें अध्याय ही के समान है। इसी प्रकार दशवें और ग्यारहवें अध्यायों में उल्लेख है, कि दुतिपलाश उद्यान से सुशोभित वाणिया गाँव के निवासी सुदर्शन और पूर्णभद्र गाथापतियों ने भी दीक्षा ले पाँच वर्ष का चारित्र पालन किया। तथा अपने अन्तिम समय में उसी विपुल गिरि पर सन्थारा ले वे भी मोक्ष धाम को गये। आगे बारहवें तथा तेरहवें अध्यायों में वर्णन किया गया है, कि श्रावस्ति नगरी के निवासी क्रमशः सुमन-भद्र और सुप्रतिष्ठ नामक गाथापतियों ने दीक्षा धारण की। सुमन-भद्र मुनि ने अनेक वर्षों तक चारित्र पाला। और सुप्रतिष्ठ मुनि ने सत्ताईस वर्ष तक चारित्र पाला। और, तब ये दोनों भी अपने अपने अन्तिम समय में, विपुलगिरि पर सन्थारा ले, मुक्ति में गये। आगे के चौदहवें अध्याय में राजगृह के निवासी मेघ नामक गाथापति का उल्लेख है। उन्हों ने भी समय पाकर, दीक्षा धारण की। अनेकों वर्षों

मूल.-उक्खेओ पन्नरमस्स अज्झयणस्स एव वयासी एव खलु जबू तेण कालेण तेण समएण पोलासपुरे नयरे, सिरीवणे उज्जाणे तत्थण पोलासपुरेनयरे विजये नाम राया होत्था। तस्सण विजयस्स रन्नो सिरीनाम देवी होत्था, वण्णओ । तस्सण विजयस्स रन्नो पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अइमुत्ते नाम कुमारे होत्था, सुकुमाले। तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव सिरीवणे विहरइ। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई जहा पण्णत्तीए जाव पोलासपुरे नयरे उच्च जाव अडइ।

भावार्थ जम्बूस्वामी ने सुधर्मस्वामी से कहा- भगवन्! छठे वर्ग के चौदह अध्यायों में, जो वर्णन किया गया है, उसका श्रवण तथा मनन मैंने किया। अब अगले अध्याय में, जो भी कुछ भगवान् ने श्रीमुख से वर्णन किया है, उसे कथन की कृपा करें। हे जम्बू! सुन। उसी काल में एक पोलासपुर नामक नगर था। जो श्रीवन-नामक एक परम मनोहर उद्यान से सुशोभित था। उन दिनों वहाँ विजय नामक राजा राजासीन थे। उसकी रानी का

नाम श्री देवी था। उन विजय राजा के पुत्र और श्री देवी का अङ्गज अइमुत्त एवन्ता-नामक कुमार था। जो बड़ा ही सुकुमार तथा सुशील था। एक दिन भगवान् महावीर भव्य प्राणियों को धर्म का बोध करते-कराते हुए उसी पोलासपुर नगर के बाहर 'श्रीवन' नामक बाग में पधार गए। भगवान् की भव रोग-नाशिनी आज्ञा को प्राप्त कर उनके सबसे बड़े शिष्य, इन्द्रभूति जिस प्रकार भगवतीजी सूत्र में वर्णन है, वैसे ही यहाँ पोलासपुर में, धनी तथा निर्धनी सभी घरों में भेदा भेद के भावों का जरा भी विचार अपने हृदय में न रखते हुए भिक्षा के लिये जाते।

मूल.—इम चण अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए बहूहिं दारए य दारियाहि य डिंभए हि य डिंभिया हि य कुमारए हि य कुमारिया हि य सद्धिं सपरिवुडे स या गिहाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव इदट्ठाणे तेणेव उवागए, तेहिं बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं सपरिवुडे अभिरममाणे २ विहरइ। तए णं भगव गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इदट्ठाणस्स अदूर सामते ण वीईवयइ। तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम अदूर मामतेण वीई वयमाण पासइ २ त्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागए उवागइ त्ता भगव गोयम एव वयासी-के

णं भंते ! तुम्हे ? किं वा अडह ?

ण भते ! तुब्भे ? कि वा अडह ।

भावार्थ एक दिन उसी समय अचानक अइमुत्त कुमार भी स्नान कर वस्त्रालङ्कारों से सुसज्जित बन, अनेक दारक-दारिका, डिम्भक डिम्भिका और कुमार एव कुमारिकाओं के साथ, घर से निकल कर जहाँ इन्द्रस्थान-अर्थात् खेलन या क्रीडा करने की जगह थी, उधर आ निकले । और उन सभी के साथ वे भी वहाँ खेलने लगे । भगवान् के सब से बड़े शिष्य श्री इन्द्रभूति (गौतम स्वामी) जो पोलासपुर नगर में सभी धनी निर्धनियों के घर में भिक्षार्थ आये हुए थे, उस दिन उस क्रीडा भूमि के निकट हो कर प्रस्थान कर रहे थे । उन दिव्य तपोधारी एव तेजस्वी गौतम स्वामी को अइमुत्त कुमार ने अपने क्रीडा-स्थल के बिल कुल समीप ही से निकलते हुए देखा । खेल को परे रख, वह उनके पास आया और उनसे उनका परिचय पूछने लगा । एव उनके, यों इधर-उधर घर घर फिरन का कारण जानना चाहा ।

मूल'—तए ण भगव गोयमे अइमुत्त कुमार एव वयासी अम्हेण देवाणुप्पिया समणा णिग्गथा ईरिया समिया जाव बभयारी उच्चनीय जाव अडामो । तएण अतिमुत्ते कुमारे भगव गोयमे एव वयासी ए हण भते ! तुब्भे जा ण अह तुब्भ भिक्ख दवावेमीति कट्टु

भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हइ २ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागये। तए णं सा सिरी देवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया, भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाण खाइम साइमेणं पडिलाभेइ जाव पडिविसज्जेइ।

भावार्थ—इस पर गौतमस्वामी ने अइमुत्त कुमार को उत्तर में इस प्रकार कहा—हम पाँच महाव्रत, पाँच समिति आदि और नौ नियम पूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, श्रमण-निर्ग्रन्थ हैं। भिक्षार्थ इधर उधर घरों में हम जा रहे हैं। स्वामीजी की इन बातों को श्रवण कर अइमुत्तकुमार बोला भगवन्! आप भिक्षा के लिए फिर रहे हैं। अतएव चलिये आप को मैं भिक्षा दिलाता हूँ। ऐसा कह कर कुमार ने स्वामीजी की अँगुलियें पकड़ लीं। और, उन्हें अपने घर लाया। कुमार की माता श्रीदेवी ने श्रीगौतम स्वामी को अपने घर अतिथि के रूप में आये हुए देख कर, बड़ी प्रसन्नता प्रकट की तथा विधि-पूर्वक वन्दना कर उच्च भावों के साथ, अति ही निर्मल शान्त करण से, अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य यह चारों ही प्रकार का आहार उन्हें वहराया।

मूल —तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम एव वयासी—कहिण भते ! तुब्भे परिव सह ? तए ण भगव गोयमे अइमुत्त कुमार एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरीए धम्मोवएसए भगव महावीरे आइगरे जाव सपाउकामे इहेव पोलासपुरस्स नयरस्स वहिया सिरिवणे उज्जाणे अहा पडिग्गह उग्गह उग्गिण्हित्ता सजमेण जाव अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तत्थण अम्हे परिवसामो । तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयम एव- वयासी-गच्छामि ण भते ! अह तुब्भेहिं सद्धिं समण भगव महावीर पायवदए । अहासुह देवाणुप्पिया ! ।

भावार्थ तत्पश्चात्, उन अइमुत्त कुमार ने गौतमस्वामी को यूँ निवेदन किया कि भगवन् ! आप कहा निवास करते हैं ? उत्तर में गौतम स्वामी ने कुमार से कहा—हे देवानुप्रिय ! धर्म का फिर से उत्थान करने वाले और मोक्षाभिलाषी, मेरे धर्माचार्य एव धर्मोपदेशक भगवान् महावीर इसी पोलासपुर नगर के वाहर स्थित 'श्रीवन' नामक उद्यान में, सयम और तपस्या से आराधना करते हुए आजकल विराजते हैं । वहाँ, मैं भी, उनकी सेवामें रह कर काल-यापन कर रहा हूँ । यह सुन कर कुमार बोला भगवन् ! मैं भी आपके साथ, उन परम प्रभु के

दशनाथ मै आऊँ, तो क्या हानि है ? स्वामीजी ने फर्माया—कोई हानि नहीं। जिस प्रकार तुम्हें सुख हो, निःशङ्क-भाव से तुम वैसा ही कर सकते हो।

मूल—तए ण से अइमुत्ते कुमारे भगव गोयमेण सार्द्धि जणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ २ त्ता वदइ जाव पज्जुवासइ। तए ण भगव गोयमे जेणेव समणे भगव महावीर तेणेव उवागए जाव पडिदसेइ २ त्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। तएण समणे भगव महावीर अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसिय धम्मकहा। तए ण से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठ ज णवर देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव पव्वयामि। अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडिबध करेह।

भावार्थ तब इन अइमुत्त कुमारने, गौतम स्वामी के साथ, भगवान् महावीर के पास, आकर उन्हें विधि विधान के साथ वन्दना की। इतना ही कर वे कुमार चुप न रहा। वह उनकी सेवा में भी सलग्न हुआ।

गौतम स्वामी ने भी भगवान् के पास आ उन्हें आहार दिखाया । फिर भोजन ग्रहण कर लेने पर, संयम और तपस्या में, अपनी आत्मा को संलग्न किया । उधर भगवान् महावीर अइमुत्त कुमार को धर्मोपदेश देने लगे । धर्मोपदेश श्रवण कर कुमार का हृदय बाँसों उछल पड़ा । उस हृदयंगम कर वह भगवान् से यूँ बोला—भगवन् ! मैं माता पिता से पूछ कर आऊँगा और आपसे दीक्षा ग्रहण करूँगा । भगवान् ने फर्माया-हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार तुम्हें सुख प्राप्त हो, उस प्रकार करो ! परन्तु किसी भी शुभ काम में, किसी भी प्रकार का विलम्ब करना ठीक न ।।

मूल—तए ण से अइमुत्ते कुमारे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागए जाव पव्वत्तितए अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—बाले सि ताव तुम पुत्ता ! असबुद्धे सि तुम पुत्ता ! किं न तुम जाणासि धम्म ? तए ण से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एव वयासी—एव खलु अह अम्मयाओ ! ज चेव जाणामि त चेव न याणामि ज चेव न याणामि त चेव जाणामि । तए ण त अइमुत्त कुमार अम्मापियरो एव वयासी—कह न तुम पुत्ता ! ज चेव जाणासि जाव त चेव जाणासि ?

होंगे। मैंने इसी लिए कहा था कि–जो मैं जानता हूँ, उसको मैं नहीं जानता और जिसे मैं नहीं जानता हूँ, उसे मैं जानता हूँ। पूजनीय! अब तो बहुत हो गई। आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर मेरी तो अब दीक्षा ग्रहण करने की ही प्रबल इच्छा है। इस पर फिर भी उस के माता पिताने उसे अनेकों प्रकार के अनुकूल तथा प्रतिकूल वचनों से समझाने की भरपूर चेष्टा की। परन्तु भगवान् के क्षणभर के सत्सङ्ग मात्र से, कुमार के शुभ कर्मों का उदय हो आया था। अत वह तो टस से मस भी न हुआ। अब उस का निश्चय अटल था। तब तो उसके माता-पिता ने उस से, अन्त में, यूँ कहा–पुत्र! कम से कम यह बात तो मानलो, कि एक दिन का राज्य ही करते हुए हम तुम्हें अपनी आखों देख लें। कुमार ने अपनी मौन के द्वारा अपने माता पिता के प्रस्ताव का अनुमोदन कर समर्थन किया। अपने कुमार के इन भावों को देख, उनका कण्ठ गद्गद् हो गया। और शरीर रोमाञ्चित। फिर उन्हों ने कुमार का विधान के साथ राज्याभिषेक किया। कुमार ने राज्य की बागडोर को अपने हाथ में ले कर, सर्व प्रथम अपने दीक्षोत्सव ही की आज्ञा दी। तब महाबल की भांति कुमार ने भी दीक्षा धारण कर, सामायिक से ले कर ग्यारह अङ्गों का सम्पूर्ण मथन कर डाला। उन्हों ने गुण रत्न संवत्सर, आदि तपस्याएँ भी खूब ही कीं। अनेकों वर्षों तक चारित्र-पालन किया। अन्तिम समय में, विपुलगिरि पर संथारा ले, मोक्ष धाम में वे जा विराजे।

मूल.–उक्खेवओ सोलसस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जम्बू! [illegible]

ण वाणारसीए णयरीए काम महावणे चेइए, तत्थण वाणारसीइ अलक्खे णाम राया होत्था। तेण कालेण तेण समए ण समणे भगव महावीरे जाव विहरइ परिसा निग्गया तए ण अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासइ, धम्मकहा। तए ण से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए जहा उदायणे तहा णिक्खते, णवर जेट्ठ पुत्त रज्जे अहिसिंचइ, एक्कारस अगा, बहूवासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे एव जबू ! समणेण जाव छट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

भावार्थ श्री जम्बू स्वामी ने श्री सुधर्म स्वामी से कहा भगवन् ! छठे वर्ग के पन्द्रहवें अध्याय में, जो वर्णन था, वह आपने कृपा कर के मुझे कह सुनाया। उसका ध्यान, धारणा और निधि ध्यासन-पूर्वक मैने मनन भी किया। आगे इसी वर्ग के सोलहवें अध्याय में वर्णन है, उसे जानने की मेरी उदग्र इच्छा है। अस्तु। उसी को फर्माने की अनुकम्पा आप अब मुझ पर दिखाइए। जम्बू ! सुनो ! भगवान् महावीर के समय में काम महावन नामक बाग से सुशोभित एक वाणारसी नगरी थी। उस समय वहाँ 'अलक्ष' नामक एक राजा अपने राज का सञ्चालन करता था। उसी अवधि में भगवान् महावीर छोटे-बड़े सभी गावों में धर्मोपदेश देते हुए वहाँ पधारे। भगवान् की पधरा

बनी उसी बाग में हुई। सारे नगर में, बिजली की भाँति आपके शुभागमन का सुसंवाद पहुँच गया। अबतो आप के दर्शन करने तथा व्याख्यान श्रवण करने के लिए जनता नगरी की दशों दिशाओं से सिमिट सिमिट कर आने लगी। प्रभु के पदार्पण का यह शुभ सन्देश राजा अलख को भी एक दिन मिला। सन्देश के श्रवण करते ही, राजा बड़ा ही प्रसन्न हुआ। ~~और कौणिक की तरह बड़े ठाट-पाट से,~~ एक दिन प्रभु की सेवा में आ उपस्थित हुआ। भगवान् ने उसे भी धर्मोपदेश सुनाया। उपदेश श्रवण कर राजा अलख ने भगवान् महावीर के पास उदाई राजा ~~की तरह~~ दीक्षा धारण करली। अन्तर केवल यही है, कि इन्होंने अपने बड़े पुत्र के सिर-कन्धों राज का सारा भार-रक्खा। अलख मुनि ने ग्यारह अङ्ग तक का ज्ञानाभ्यास किया तदनन्तर, अनेकों वर्षों तक चारित्र-पालन कर अन्तिम समय में विपुलागिरि पर सन्थारा ले, मुक्ति धाम को वे सिधारे। जम्बू! अन्तगड़ के छटे वर्ग में इस प्रकार भगवान् महावीर ने वर्णन किया है।

❀ इति षष्टमो वर्गः ❀

सप्तमो-वर्गः

मूल —जइण भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेव ओ जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा—नंदा तह नंदवई नंदोत्तर नंदसेणिया चेव । मरुया सुमरुया महमरुया मरुद्देवा य अट्ठमा ॥ १ ॥ भद्दाय सुभद्दाय सुजाया सुमणातिया । भूयदिन्नाय बोद्धव्वा सेणिय भज्जाण नामाइं । जइण भंते ! तेरस अज्झयणा पन्नत्ता पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सेणिए राया,वण्णओ । तस्सण सेणियस्स रण्णो नंदा नाम देवी होत्था वण्णओ । सामी समोसढे परिसा निग्गया । तए ण सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जाव हट्ठ तुट्ठा कोडुंबिय पुरिसे सद्दावइ २ त्ता जाए जहा पउमावइ जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा । एवं तेरस वि देवीओ णंदागमेण

णेयव्वाओ णिक्खेवओ ।

भावार्थ.-श्री जम्बू स्वामी ने श्री सुधर्म स्वामी से कहा भगवन् ! छठे वर्ग में, जो वर्णन था, वह मैंने सुना। आगे सातवें वर्ग में, जो वर्णन है, अब उसी को कृपा कर के फ़र्मावें । जम्बू ! सुनों । सातवें वर्ग में कुल तेरह अध्याय हैं। उनके नाम-इस प्रकार हैं:-(१) नन्दा, (२) नन्दमति, (३) नन्दोत्तरा, (४) नन्द सेना, (५) महया, (६) सुमरुता, (७) महा मरुता (८) मरुदेवी, (९) भद्रा, (१०) सुभद्रा, (११) सुजाता, (१२) सुमति, और (१३) भूत दिन्ना। यह तेरह ही, राजा श्रेणिक की रानियाँ हैं। इन तेरह रानियों में से एक एक रानी का एक-एक अध्याय में, वर्णन है। यों उनके नाम से ये तेरह अध्याय हैं। भगवन् ! सातवें वर्ग के, इन तेरह अध्यायों में से, प्रथम के अध्याय में किस विषय का वर्णन है ? जम्बू ! सुनो ! भगवान् महावीर की मौजूदगी के समय में, राजगृह नामक एक नगरी गुणशील नामक एक बाग से सुशोभित थी। उस समय वहां राजा श्रेणिक का शासन था। उस श्रेणिक राजा के नन्दा नाम की एक महारानी थी । उसी अर्से में, भगवान् महावीर धर्मोपदेश करते-करते एक वार वहाँ पधारे। जनता भगवान् के पदार्पण की सूचना पाते ही दर्शनार्थ दौड़ पड़ी। राजा श्रेणिक की महारानी नन्दा को जब यह सूचना मिली, तो वह भी अति ही प्रसन्न हुई। उसने अपने किसी एक कौटुम्बिक पुरुष को बुला कर रथ तैयार करवा मँगाया। तब रथ पर सवार हो वह भी भगवान् के दर्शनार्थ गई । भगवान् का सदुपदेश श्रवण कर उसे संसार के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई। और वैराग्य उसके हृदय में जोर पकड़ गया।

थी, फिर क्या था। उसने राजा श्रेणिक की आज्ञा प्राप्त कर, पद्मावती रानी के समान दीक्षा धारण करली। ग्यारह अङ्गों तक उसने शास्त्रों का अध्ययन किया। और, बीस वर्ष चारित्र-पालन। अन्तिम समय में सन्थारा ले, वे मुक्ति में गई। इसी प्रकार, अवशेष रानियों का वर्णन भी समझना चाहिए। सभी रानियाँ समय-समय पर दीक्षा धारण कर, अन्त में मोक्ष में पहुँची। एक-एक रानी का एक-एक अध्याय, यों पूरे तेरह अध्यायों का वर्णन पाठक वृन्द समझें।

❀ इति-सप्तमो-वर्ग ❀

अष्टमो-वर्ग

मूल –जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगड़ दसाण सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते । अट्ठमस्स ण भते ! वग्गस्स अतगड़दसाण समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगड दसाण अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–काली सुकाली महाकाली कण्हा सुकण्हा महाकण्हा वीरकण्हा य बोद्धव्वा रामकण्हा तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्हा नवमी दसमी महासेण कण्हाय । जइण भते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

भावार्थ श्री जम्बूस्वामी ने सुधर्मस्वामी से कहा भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी, जो मुक्ति में पधार गये, उन प्रभु ने आठवें अङ्ग श्री अन्तगढ सूत्र के सातवें वर्ग में जो वर्णन फर्माया, वह आप से मैंने सुना । परन्तु

भगवन्! अन्तगढ के आठवें वर्ग में भगवान् ने क्या फ़र्माया है, कृपा कर उसे फ़र्मावें। जम्बू! सुनो। आठवें अङ्ग श्री अन्तगड-सूत्र के आठवें वर्ग में कुल दस अध्याय हैं। वे इस प्रकार हैं —(१) काली, (२) सुकाली, (३) महा काली, (४) कृष्णा, (५) सुकृष्णा, (६) महाकृष्णा, (७) वीरकृष्णा, (८) राम कृष्णा, (९) पितृसेन कृष्णा और (१०) महासेन कृष्णा। यों दसों ही रानियों के नाम से दस अध्याय हैं। भगवन्! इन दस अध्यायों में से प्रथम अध्याय में क्या वर्णन है?

मूल.—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णामं नयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थणं चंपाए नयरीए कोणिए राया, वण्णओ। तत्थणं चंपाए णयरीए सेणियस्स रण्णो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, वण्णओ। जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठमेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

भावार्थ—हे जम्बू! सुनो। भगवान् महावीर के विद्यमान समय में, पूर्ण भद्र नामक, मनोहर उद्यान से सुशोभित, 'चम्पा' नामक एक परम सुन्दर नगरी थी। वहाँ उस समय कौणिक राजा—राज कर रहा था। उसी के राज घराने में राजा श्रेणिक की तो पत्नी, और राजा कौणिक की छोटी माता 'काली' नामक एक रानी थी।

अष्टमो-वर्ग

मूल —जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अंतगड दसाण सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पराणत्ते । अट्ठमस्स ण भंते ! वग्गस्स अंतगडदसाण समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पराणत्त ? एव खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अंतगड दसाण अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पराणत्ता, त जहा—काली सुकाली महाकाली कराहा सुकराहा महाकराहा वीरकराहा य वोद्धव्वा रामकराहा तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकराहा नवमी दसमी महासेण कराहाय । जइण भंते ! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पराणत्ता, पढमस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पराणत्ते ?

भावार्थ श्री जम्बूस्वामी ने सुधर्मस्वामी से कहा भगवन् ! श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी, जो मुक्ति में पधार गये, उन पुरुषों ने आठवें अङ्ग श्री अन्तगढ सूत्र के सातवें वर्ग में जो वर्णन फर्माया, वह आप से मैंने सुना । परन्तु

साध्वी उमी रत्नावलि नामक तपस्या को करने में सलग्न हो गई। वह 'रत्नावलि-तप' इस प्रकार है –

			२२२															
१	२	३	२०२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
			२०२															

रत्नावलि-तप

			२२२															
१	२	३	२०२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
			२२२															

।२।२।
।२।२।२।
।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।
।२।२।२।
।२।२।

३५

मूलः—चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठ छट्ठाइ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ२त्ता सव्वकाम गुणियं

उन्हीं दिनों भगवान् महावीर विचरते-विचरते एक बार वहाँ पधारे। काली रानी ने भगवान् का उपदेश श्रवण कर नन्दा रानी की भाँति दीक्षा ग्रहण की। सामायिक से लेकर ग्यारह अङ्ग पर्यन्त का ज्ञानाभ्यास उन्होंने किया। तपस्या करने में भी कुछ कमी उठा न रक्खी। कभी वे उपवास करती थीं तो कभी बेला और कभी तेला। यों, नाना भाँति की तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करने में तत्पर हो कर, वे इधर-उधर विचरने लगीं।

मूल—तए ण सा काली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्ज चदणा अज्जा तेणेव उवागया उवागच्छित्ता एव वयासी-इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तव उवसपज्जेत्ताण विहरेत्तए। अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह। तए ण सा काली अज्जा अज्जचदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवोकम्म उवसपज्जित्ता ण विहरइ, तजहा—

भावार्थ—एक दिन, वे 'काली' नामक साध्वी, श्रीमती सतीजी श्री चन्दनबाला आर्याजी के पास आ कर बोलीं-हे महाभागा ! मेरी ऐसी इच्छा है, कि आपकी आज्ञा प्राप्त होने पर, मैं-रत्नावलि नामक तपस्या की आराधना करू। श्रीमती चन्दनबालाजी ने कहा-हे देवानुप्रिये ! जिस प्रकार तुम्हें, सुख प्राप्त हो, वैसा ही तुम करो। तपस्या करने में तनिक भी विलम्ब न करो। इस प्रकार अपनी गुराणीजी की आज्ञा प्राप्त कर, वे 'काली' नामक

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारस्सम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दस्सम करेइ २ त्ता सव्व कामगुणिय पारेइ २ त्ता वारसम करेइ २त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठ छट्ठाइ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्व काम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ । एव खलु एसा रयणावलीए तवो कम्मस्स पढमा परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहिं मासेहिं वावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ ।

भावार्थ -उन काली नामक आर्याजी ने,रत्नावलि तपस्या करने के लिए उपवास किया । पारणा करके बेला किया । पारणा करके तेला किया । पारणा करके आठ बेले किये । पारणा करके उपवास किया । पारणा करके बेला किया । पारणा करके तेला किया । यों अन्तर रहित चोला किया । पाँच किये । छ: किये । सात,आठ,नौ,दस,ग्यारह,

पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता बावीसइम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२ त्ता चउवीसग करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता छव्वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता अट्ठावीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता बत्तीसइम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता चोत्तीसइम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोत्तीस छट्ठाइ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता चोत्तीसइम करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बत्तीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तीम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२ त्ता अट्ठावीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छव्वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउवीसइम करेइ२ त्ता सव्व कामगुणिय पारेइ २ त्ता बावीसइम करेइ करेइ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वीसइम

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारस्सम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दस्सम करेइ २ त्ता सव्व कामगुणिय पारेइ २ त्ता वारसम करेइ २त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठ छट्ठाइ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्व काम गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ । एव खलु एसा रयणावलीए तवो कम्मस्स पढमा परिवाडी एगेण सवच्छरेण तिहिं मासेहिं वावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ ।

भावार्थ - उन काली नामक आर्याजी ने,रत्नावलि तपस्या करने के लिए उपवास किया । पारणा करके बेला किया । पारणा करके तेला किया । पारणा करके आठ बेले किये । पारणा करके उपवास किया । पारणा करके बेला किया । पारणा करके तेला किया ! यों अन्तर रहित चोला किया । पाँच किये । छः किये । सात,आठ,नौ,दस,ग्यारह,

प रह,तेरह,चौदह,पन्द्रह और सोलह किये। फिर चौंतीस-बेले किये। पारणा करके सोलह दिन की तपश्चर्या की। पारणा करके पन्द्रह दिन की तपस्या की। यों चौदह, तेरह, बारह, ग्यारह, दस,नौ, आठ, सात, छ, पाँच, चार, तीन, दो और उपवास किया। पारणा कर के आठ बेले किये। पारणा करके तेला किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके उपवास किया। फिर पारणा किया। इस प्रकार, उन्होंने 'रत्नावलि तप' की एक परिपाटी (लड़ी) की। ऐसी तपस्या की एक बार लड़ी करने में पूरा-पूरा एक वर्ष, तीन महीने और बाईस दिन लगते हैं। जिस प्रकार सूत्र में विधि बताई है, उसी तरह इन आर्याजी ने इस की आराधना की। ऐसी एक परिपाटी करने में तीन सौ चौरासी दिन उपवास के और अठ्यासी दिन पारणे के, यों सब चार सौ बहत्तर दिन होते हैं।

मूल.—तयाणंतर चण दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेइ २ त्ता विगइवज्ज पारेइ २ त्ता छट्ठ केरइ २ त्ता विगइवज्ज पारेइ २ त्ता एव जहा पढमाए वि, णवर सव्व पारणए विगइवज्ज पारेइ जाव आराहिया भवइ। तयाणंतर चण तच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेइ २ त्ता लेवाड पारेइ सेस तहेव। एव चउत्था परिवाडी नवर सव्व पारणए आयविल पारेइ, सेस तचेव। पढमंमि सव्वकाम, पारणय बिइयए विगइवज्ज। ततिय मि अलेवाडं आयबिल

यो चउत्थ मि ॥ तएण सा काली अज्जा रयणावली तवो कम्म पचहिं सवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसे हिं अहासुत्त जाव आराहेत्ता जेणेव अज्ज चदणा अज्जा तेणेव उवागया उवागच्छित्ता अज्ज चदण वदइ णमसइ वदित्ता णमसित्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाण भावेमाणी विहरइ ।

भावार्थ –तत्पश्चात् उन 'काली' नामक साध्वीजी ने इस 'रत्नावलि तपस्या' की एक परिपाटी–शृङ्खला कर ली। और उसके साथ ही, वे-दूसरी-परिपाटी- शृङ्खला करने को उद्यत हुई। प्रथम, उपवास किया। उपवास के पारणे में विगय, दूध, दही, मिष्टान्न, तेल, घी, आदि का खाना एकदम बन्द कर दिया। इस प्रकार उपवास के पारणा कर उन ने बेला किया। पारणा में वही विगय बन्द रक्खी। इसी तरह, तेला किया। पारणा करके आठ बेले किये। पारणा करके उपवास किया। बेला किया। तेला किया। यूँ सोलह तक किया। फिर चौंतीस बेले किये। पारणा करके सोलह किये। फिर पन्द्रह, चौदह तेरह, बारह, ग्यारह, दस, नौ, आठ, सात, छ पाँच, चार तीन, दो, और उपवास किया। पारणा करके आठ बेले किये। पारणा करके तेला किया। बेला किया और उपवास किया। सभी पारणों में विगय बन्द रक्खी। जिस प्रकार प्रथम परिपाटी की, उसी तरह दूसरी भी की। इन में विगय तो खाई ही नहीं गई। साथ ही में, रत्नावलि की तीसरी लड़ी भी इसी तरह की। यहाँ तक, कि विगय बन्द रखने

के साथ ही साथ, घी से चुपड़ी हुई रोटी तक न खाई। अर्थात् लेपवाली वस्तुओं का खाना बिलकुल ही छोड़ दिया। तीसरी परिपाटी के पूर्ण होते ही चौथी परिपाटी भी इसी तरह की। पर इसके पारणे के दिन तो, फिर भी आयम्बिल-सूखी रोटी और वह भी चावल या ठण्डे किये हुए गर्म जल में भिगो कर खा लेती थी। इस प्रकार वे 'काली' नामक साध्वी जी 'रत्नावलि तपस्या' करते हुए पूरे-पूरे पाँच वर्ष, दो महीने और अट्ठाइस दिनों में जैसे सूत्र में विधि बतलाई गई है, उसी प्रकार इस तपस्या की आराधना कर, अपनी गुराणी श्री चन्दनबाला आर्याजी के पास वे आई। और, उन्हें विधि-पूर्वक वन्दना कर फिर भी फुटकर उपवास, बेले, तेले, की तपस्या करती हुई, अपनी आत्मा को पवित्र वे करती रहीं।

मूल.—तएण सा काली अज्जा तेण ओरालेण जाव धमणिसतया जायायावि होत्था, से जहा इगाल सगडी वा जाव सुहुय हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेण तएण तव-तेय सिरिए अईव उवसोभे माणी चिट्ठइ।

भावार्थ—तदनन्तर, उन 'काली' नामक आर्याजी का शरीर इस प्रकार की प्रधान तपस्या करने से, प्राय मांस और खून से रहित हो गया। केवल अस्थि-पञ्जर का ढाँचा मात्र वे रह गई। उठते-बैठते, उनकी हड्डियाँ कड़-कड़ शब्द करने लगीं। और उनके शरीर में चहुँ ओर नसों का जाल-सा दिखाई देने लगा। वे अपने अपूर्व-

आत्म-जीवन ही से जीवित थीं। और चलती फिरती थीं। वे इतनी कृश हो गई थीं, कि बोलना तो दूर रहा पर, बोलने के विचार-मात्र से ही उन्हें कष्ट प्राप्त होता था। जिस-प्रकार सूखे काष्ट, सूखे पत्ते या कोयले की भरी हुई गाड़ी चलते समय आवाज करती है, उसी तरह उनकी हड्डियां भी उठते-बैठते, चलते-फिरते आवाज करने लगी थीं। जो भी उन साध्वी के शरीर का माँस एवं रुधिर प्राय सूख गया था, तब भी तप और तेज रूपी लक्ष्मी से वे दिन-दूनी और रात-चौगुनी सम्पन्न हो कर शोभा को प्राप्त होती जा रही थीं।

मूल -तएण तीसे कालीए अज्जाए अगणया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त काले अय अज्झत्थिए जहा खदयस्स चिंता जहा जाव अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार परक्कमे सद्धाधिई संवेगे ताव ताव मे सेय कल्ल जाव जलते अज्ज चदण अज्ज आपुच्छित्ता अज्ज चदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए सलेहणा झूसणा आराहणा भत्तपाण पडियाइक्खे काल अणवकखमाणे विहरेत्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ २ त्ता कल्ल जेणेव अज्ज चदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अज्जचदण अज्ज वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामिण अज्जो! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी सलेहणा जाव विहरेत्तए अहा-

के साथ ही साथ, घी से चुपड़ी हुई रोटी तक न खाई। अर्थात् लेपवाली वस्तुओं का खाना बिलकुल ही छोड़ दिया। तीसरी परिपाटी के पूर्ण होते ही चौथी परिपाटी भी इसी तरह की। पर इसके पारणे के दिन तो, फिर भी आयम्बिल लूखी रोटी और वह भी धावन या ठण्डे किये हुए गर्म जल में भिगो कर खा लेती थी। इस प्रकार वे 'काली' नामक साध्वी जी 'रत्नावलि तपस्या' करते हुए पूरे-पूरे पाँच वर्ष, दो महीने और अट्ठाइस दिनों में जैसे सूत्र में विधि बतलाई गई है, उसी प्रकार इस तपस्या की आराधना कर, अपनी गुराणी श्री चन्दनबाला आर्याजी के पास वे आई। और, उन्हें विधि-पूर्वक वन्दना कर फिर भी फुटकर उपवास, बेले, तेले, की तपस्या करती हुई, अपनी आत्मा को पवित्र वे करती रहीं।

मूल—तएण सा काली अज्जा तेण ओरालेण जाव धमणिसतया जायायावि होत्या, से जहा इगाल सगडी वा जाव सुहुय हुयासणे इव भासरासिपलिच्छण्णा तवेण तएण तव-तेय सिरीए अईव उवसोभे माणी चिट्ठइ।

भावार्थ—तदनन्तर, उन 'काली' नामक आर्याजी का शरीर इस प्रकार की प्रधान तपस्या करने से, प्राय माँस और खून से रहित हो गया। केवल अस्थि-पञ्जर का ढाँचा मात्र वे रह गईं। उठते-बैठते, उनकी हड्डियाँ कड़-कड़ शब्द करने लगीं। और उनके शरीर में चहुँ ओर नसों का जाल-सा दिखाई देने लगा। वे अपने अपूर्व-

ने फरमाया-हे देवानुप्रिये ! जो तुम्हें सुखकर हो वैसा ही करो । इसमें विलम्ब मत करो । बस, इस प्रकार आज्ञा हो जाने पर, उन्होंने संथारा कर लिया । इन साध्वीजी ने अपनी गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी के समीप सामाइक से लेकर ग्यारह अङ्गों तक का सम्पूर्ण ज्ञानाभ्यास किया । पूरे-पूरे आठ वर्ष तक चारित्र पाला । और, एक महीने के सन्थारे में सम्पूर्ण घनघाती कर्मों का एकान्त निकाश्चन कर, अन्तिम श्वासोश्वास के पश्चात्,वे सिद्धगति मोक्ष में पहुँचीं ।

मूल.—उक्खेवओ विय अज्झयणस्स । एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समए ण चपा णाम णयरी, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया, तत्थण सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी होत्था । जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खता जाव बहूहिं चउत्थ अप्पाण भावे माणे विहरइ । तए ण सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचदणा अज्जा जाव इच्छामि ण अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावली तवोकम्म उवसपाज्जित्ताण विहरेत्तए। एव जहा रयणावली तहा कणगावली वि णवर तिसु ठाणेसु अट्ठमाइ करेइ जहा रयणावलीए छट्ठाइ एकाए परिवाडिए

सुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध करेह । तओ काली अज्जा अज्ज चंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा झूसिया जाव विहरइ । सा काली अज्जा अज्ज चंदणाए अंतिए सामाइय माइयाइ एक्कारस्स अंगाइ अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइ अट्ठ संवच्छाराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाण झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठा कीरइ जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा ।

भावार्थ तत्पश्चात्, उन 'काली' आर्याजी को, एक रोज, पिछली रात्रि के समय खन्दक की भाँति ऐसे विचार उत्पन्न हुए, कि मेरा शरीर तपस्या से इस प्रकार कृश हो गया, तब भी मुझ में उत्थान, बल, वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम, श्रद्धा, धृति संवेग और शक्ति आदि अभी तक विद्यमान् हैं । अतएव कल सूर्योदय होते ही मुझे गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी से पूछ कर, आहार-पानी का जीवनभर के लिए परित्याग कर लेना चाहिए । तथा सन्थारा करके, जीवन एवं मृत्यु की आशा-रहित होकर, विचरण करना चाहिए । ऐसा विचार कर, सूर्योदय होते ही होते, वे 'काली' नामक आर्याजी, श्रीमती चन्दनबालाजी के पास आईं । और उन्हें वन्दना कर के बोलीं-महाभागा ! मेरी इच्छा है, कि आप की आज्ञा प्राप्त होने पर, मैं सन्थारा कर के रहूँ । उत्तर में श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी

ने फरमाया—हे देवानुप्रिये ! जो तुम्हें सुखकर हो वैसा ही करो । इसमें विलम्ब मत करो । बस, इस प्रकार आज्ञा हो जाने पर, उन्होंने सन्थारा कर लिया । इन साध्वीजी ने अपनी गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी के समीप सामाइक से लकर ग्यारह अङ्गों तक का सम्पूर्ण ज्ञानाभ्यास किया । पूरे-पूरे आठ वर्ष तक चारित्र पाला । और, एक महीने क सन्थारे में सम्पूर्ण घनघाती कर्मों का एकान्त निकास्चन कर, अन्तिम श्वासोश्वास के पश्चात् ये सिद्धगति मोक्ष में पहुँची ।

मूलः—उक्खेवओ विय अज्झयणस्स । एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समए ण चपा णाम णयरी, पुराणभद्दे चेइए, कोणिए राया, तत्थण सेणियस्स रणो भज्जा कोणियस्स रणो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी होत्था । जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खता जाव वहूहिं चउत्थ अप्पाण भावे माणे विहरइ । तए ण सा सुकाली अज्जा अराणया कयाइ जेणेव अज्जचदणा अज्जा जाव इच्छामि ण अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाया समाणी कणगावली तवोकम्म उवसपाज्जित्ताण विहरेत्तए। एव जहा रयणावली तहा कणगावली वि णवर तिसु ठाणेसु अट्ठमाइ करेइ जहा रयणावलीए छट्ठाइ एकाए परिवाडिए

सुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह। तओ काली अज्जा अज्ज चंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा झूसिया जाव विहरइ। सा काली अज्जा अज्ज चंदणाए अंतिए सामाइय माइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छाराइं सामण्णपरियागं पाउ-णित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठा कीरइ जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा।

भावार्थ तत्पश्चात्, उन 'काली' आर्याजी को, एक रोज, पिछली रात्रि के समय खन्दक की भाँति ऐसे विचार उत्पन्न हुए, कि मेरा शरीर तपस्या से इस प्रकार कृश हो गया, तब भी मुझ में उत्थान, बल, वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम, श्रद्धा, धृति संवेग और शक्ति आदि अभी तक विद्यमान हैं। अतएव कल सूर्योदय होते ही मुझे गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी से पूछ कर, आहार-पानी का जीवनभर के लिए परित्याग कर लेना चाहिए। तथा सन्थारा करके, जीवन एवं मृत्यु की आशा-रहित होकर, विचरण करना चाहिए। ऐसा विचार कर, सूर्योदय होते ही होते, वे 'काली' नामक आर्याजी, श्रीमती चन्दनबालाजी के पास आई। और उन्हें वन्दना कर के बोलीं-महाभागा! मेरी इच्छा है, कि आप की आज्ञा प्राप्त होने पर, मैं सन्थारा कर के रहूँ। उत्तर में श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी

ने फमाया—हे देवानुप्रिये ! जो तुम्हें सुखकर हो वैसा ही करो । इसमें विलम्ब मत करो । बस, इस प्रकार आज्ञा हो जाने पर, उन्होंने संथारा कर लिया। इन साध्वीजी ने अपनी गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी के समीप सामाइक से लगर ग्यारह अङ्गों तक का सम्पूर्ण ज्ञानाभ्यास किया । पूरे-पूरे आठ वर्ष तक चारित्र पाला । और, एक मुहीन के मन्थार में सम्पूर्ण घनघाती कर्मों का एकान्त निकारचन कर, अन्तिम श्वासोश्वास के पश्चात् ,वे सिद्धगति-मोक्ष में पहुँची ।

मूल.—उक्खेवओ विय अज्झयणस्स । एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समए ण चपा णाम णयरी, पुराणभद्दे चेइए, कोणिए राया, तत्थण सेणियस्स रण्णो भज्जा कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी होत्था। जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खता जाव बहूहिं चउत्थ अप्पाण भावे माणे विहरइ । तए ण सा सुकाली अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव अज्जचदणा अज्जा जाव इच्छामि ण अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी कणगावली तवोकम्म उवसपाज्जित्ताण विहरेत्त ए। एव जहा रयणावली तहा कणगावली वि णवर तिसु ठाणेसु अट्ठमाइ करेइ जहा रयणावलीए छट्ठाइ एकाए परिवाडिए

सुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । तओ काली अज्जा अज्ज चंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा झूसिया जाव विहरइ । सा काली अज्जा अज्ज चंदणाए अंतिए सामाइय माइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छाराइं सामण्णपरियागं पाउ-णित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठा कीरइ जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा ।

भावार्थ तत्पश्चात्, उन 'काली' आर्याजी को, एक रोज, पिछली रात्रि के समय खन्दक की भाँति ऐसे विचार उत्पन्न हुए, कि मेरा शरीर तपस्या से इस प्रकार कृश हो गया, तब भी मुझ में उत्थान, बल, धैर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम, श्रद्धा, धृति संवेग और शक्ति आदि अभी तक विद्यमान हैं । अतएव कल सूर्योदय होते ही मुझे गुराणी श्रीमती चन्दनबालाजी से पूछ कर, आहार-पानी का जीवनभर के लिए परित्याग कर लेना चाहिए । तथा सन्थारा करके, जीवन एवं मृत्यु की आशा-रहित होकर, विचरण करना चाहिए । ऐसा विचार कर, सूर्योदय होते ही होवे, वे 'काली' नामक आर्याजी, श्रीमती चन्दनबालाजी के पास आईं । और उन्हें वन्दना कर के बोलीं-महाभागा ! मेरी इच्छा है, कि आप की आज्ञा प्राप्त होने पर, मैं सन्थारा कर के रहूँ । उत्तर में श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी

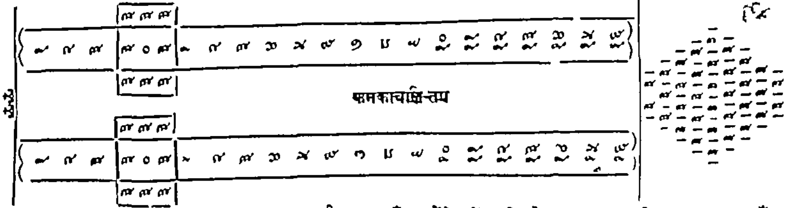

इस तपस्या के समाप्त होने पर, फिर भी कई तपस्याएँ उन्होंने कीं। जिससे उन का शरीर सूख कर काँटा बन गया। अन्तिम दिनों में सन्थारा कर नौ वर्ष का चारित्र पाल कर य भी मोक्ष में पहुँचीं।

मूलः—एव महाकाली वि एवर खुड्डाग सीह निक्कीलिय तवो कम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ, त जहा—चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्व-कामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम

संवच्छरो पंच मासा अट्ठारस दिवसा, सेसं तहेव । नव वासा परियाओ जाव सिद्धा ।

भावार्थ -जम्बू स्वामी ने सुधर्म स्वामी से कहा-भगवन् ! मैंने आपके श्री मुख से प्रथम अध्याय श्रवण कर लिया । आगे दूसरे अध्याय में जो वर्णन है, कृपा कर के अब उसे फरमावें । जम्बू ! सुनो । उस काल में, वही 'चम्पा' नाम की एक नगरी थी । वहां कौणिक राजा राज करता था । श्रेणिक राजा की पत्नी और कोणिक राजा की लघु-माता, सुकाली नाम की एक रानी थी । उन दिनों, यहां एक बार भगवान् महावीर स्वामी पधारे । जिस प्रकार, पहले काली रानी ने दीक्षा धारण की, उसी प्रकार इन सुकाली महारानी ने भी दीक्षा ग्रहण की । एक दिन यही सुकाली नामक साध्वी, श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी के पास आकर, यों बोली-हे महाभागा आर्याजी ! आपकी आज्ञा होने के पश्चात्, मेरी इच्छा है, कि 'कनकावलि' नामक तपस्या की आराधना में करूँ । उत्तर में उन्होंने कहा-जो तुम्हें सुखकर प्रतीत हो, वैसा तुम करो । तदनन्तर, उन सुकाली आर्याजी ने, जिस प्रकार काली आर्याजी ने 'रत्नावलि' तपस्या की थी, उसी प्रकार इन्होंने भी 'कनकावलि' नामक तपस्या की । परन्तु जहाँ रत्नावलि में तीन जगह बेले किये । यहाँ उस जगह तेले किये । इस 'कनकावलि' की एक परिपाटी शृंखला करने में पूरा पूरा एक वर्ष, पाँच महीने और बारह दिन लगते हैं । इस में अट्ठासी दिन पारणे के, और एक वर्ष दो महीने एवं चौदह दिन तपस्या के होते हैं । यों, चारों ही परिपाटी करने में पूरे-पूरे पाँच वर्ष, नौ महीने और अट्ठारह दिन लग जाते हैं । यह 'कनकावलि' तपस्या इस प्रकार है:—

करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता वारसम करेइ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्तय दिवसा, चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा। एव कण्हा वि णवर महालय सीहि णिपकीलिय तवो कम्म जहेव खुड्डाग, णवर चोत्तीस इम जावे णयव्व तहेव ऊसारेयव्व, एक्काए वरिस छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्ह छ वरिसा दो मासा वारसय अहो रत्ता, सेस जहा कालीए जाव सिद्धा।। (८)

भावार्थ –हे जम्बू! इस वर्ग के तीसरे अध्याय में वर्णन है, कि चम्पा नगरी के श्रेणिक राजा की पत्नी

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम्म करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणिय पारेइ२ त्ता सोलसम करेइ२त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ पारेइ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ२त्ता अट्ठारसम करेइ २त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ२ त्ता बीसइम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारस्सम करेइ करेइ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम

करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता वारसम करेइ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्तय दिवसा, चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा। एव कण्हा वि णवर महालय सीहि णिक्कीलिय तवो कम्म जहेव खुड्डाग, णवर चोत्तीस इम जाव णयव्व तहेव ऊसारेयव्व, एक्काए वरिस छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्ह छ वरिसा दो मासा वारसय अहो रत्ता, सेस जहा कालीए जाव सिद्धा। (७)

भावार्थ -हे जम्बू! इस वर्ग के तीसरे अध्याय में वर्णन है, कि चम्पा नगरी के श्रेणिक राजा की पत्नी

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ
२ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-
गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम्म करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बारसम करेइ २
त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता
चोद्दसम [illegible] २ [illegible] म गुणिय पारेई २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-
[illegible] सव्वकाम गुणिय पारेइ पारेइ त्ता वीसइम करेइ २
[illegible] २त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ२ त्ता वीस
[illegible] रेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २
[illegible] चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम
[illegible] इ २ त्ता बारसम करेइ २ त्ता
[illegible] णिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम

करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता वारसम करेइ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगु-णिय पारेइ २ त्ता तहेव चत्तारि परिवाडीओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्तय दिवसा, चउण्ह दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा। एव कण्हा वि णवर महालय सहि णिक्कीलिय तवो कम्म जहेव खुड्डाग, णवर चोत्तीस इम जावे णयव्व तहेव ऊसारेयव्व, एक्काए वरिस छम्मासा अट्ठारस य दिवसा, चउण्ह छ वरिसा दो मासा वारसय अहो रत्ता, सेस जहा कालीए जाव सिद्धा।। (७)

भावार्थ -हे जम्बू! इस वर्ग के तीसरे अध्याय में वर्णन है, कि चम्पा नगरी के श्रेणिक राजा की पत्नी

करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम्म करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेई २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणिय पारेइ२ त्ता सोलसम करेइ२त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ पारेइ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ२त्ता अट्ठारसम करेइ २त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ२ त्ता वीस-इम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारस्सम करेइ करेइ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता सोलमम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम

आराधना की। तत्पश्चात्, फिर भी उन आर्याजी ने फुटकर कुछ तपस्याएँ कीं। अन्तिम समय में सन्थारा कर के कर्मों का सम्पूर्ण नाश हो जाने पर, मोक्ष मे वे पहुँचीं। इसी तरह राजा श्रेणिक की पत्नी और कौणिक की छोटी माता, कृष्णा नामक रानी ने, भगवान् का उपदेश श्रवण कर श्री चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। और, जिस प्रकार महाकाली आर्याजीने 'लघुसिंह निष्क्रीडित' नामक तप में, नौ तक की तपस्या की थी ठीक उसी प्रकार इस तप की प्रथम परिपाटी-श्रृंखला इस प्रकार की -सर्व प्रथम-उपवास किया। पारणा कर के बेला किया। पारणा कर के उपवास किया। यों तेला किया। बेला, चौला, तेला, पँचौला, चौला, छ, पाँच, सात, छ, आठ, सात, नौ, आठ, दस, नौ, ग्यारह, दस, बारह, ग्यारह, तेरह, बारह, चौदह, तेरह, पन्द्रह, चौदह, सोलह, पन्द्रह सोलह चौदह, पन्द्रह, तेरह, चौदह, बारह, तेरह, ग्यारह, बारह दस, ग्यारह, नौ, दस, आठ, नौ, सात, आठ छ, सात, पाँच, छ, चौला, पँचोला, तेला, चौला, बेला, तेला, उपवास, बेला, और फिर पारणा कर के उपवास किया। यों, एक परिपाटी की। जिसमें, इकसठ दिन उन सतीजी ने पारणा-भोजन किया और पूरे-पूरे एक वर्ष, चार महीने तथा सत्रह दिन, अर्थात् चार सौ सत्तानवें दिन तपस्या की। ऐसी एक परिपाटी कर के, साथ ही साथ, दूसरी, तीसरी और चौथी परिपाटी भी की। जिसमें पूरे-पूरे छ वर्ष, दो महीने और बारह दिन लगे। इस 'महानिष्क्रीडित-तप' की एक परिपाटी इस प्रकार है:-

और फॉधिक की छोटी माता महाकाला रानी न भी सुकाली रानी की तरह दीक्षा धारण की । इन महा काली नामक साध्वीजी न ' लघुसिंह निष्क्रीडित ' नामक तप किया । यह इस प्रकार है – सर्वप्रथम उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा कर के उपवास किया। पारणा कर के तेला किया । यों बेला चौला, तेला, पंचोला, चौला छ पाँच सात, छ, आठ सात, नौ आठ, नौ सात, आठ सात, पाँच, छ चौला, पंचौला, तेला, चोला बेला, तेला, उपवास बेला, और उपवास किया । इस प्रकार ' लघुसिंह निष्क्रीडित ' नामक तप की एक परिपाटी की। जिसमें तेंतीस दिन तो पारणा किये और पूरे पाँच महीने एव चार दिन की तपस्या हुई। यों चार परिपाटी इन ने कीं । जिसमें दो वर्ष और अट्ठाइस दिन लगे। इस तपस्या के हार का चित्र निम्न लिखित है —

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९
							लघुसिंहनिष्क्रीडित तप								८
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९

इस प्रकार के 'लघुसिंह निष्क्रीडित' तप की उन महाकाली आर्याजी ने सूत्रों में बताई हुई विधि के अनुसार

आराधना की। तत्पश्चात्, फिर भी उन आर्याजी ने फुटकर कई तपस्याएँ कीं। अन्तिम समय में सन्थारा कर के कर्मों का सम्पूर्ण नाश हो जाने पर, मोक्ष मे वे पहुँचीं। इसी तरह राजा श्रेणिक की पत्नी और कौणिक की छोटी माता, कृष्णा नामक रानी ने, भगवान् का उपदेश श्रवण कर श्री चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। और, जिस प्रकार महाकाली आर्याजीने 'लघुसिंह निष्क्रीडित' नामक तप में, नौ तक की तपस्या की थी ठीक उसी प्रकार इस तप की प्रथम परिपाटी-श्रृङ्खला इस प्रकार की - सर्व प्रथम-उपवास किया। पारणा कर के बेला किया। पारणा कर के उपवास किया। यों तेला किया। बेला, चौला, तेला, पँचौला, चौला, छ, पाँच, सात, छ, आठ, सात, नौ, आठ, दस, नौ, ग्यारह, दस, बारह, ग्यारह, तेरह, बारह, चौदह, तेरह, पन्द्रह, चौदह, सोलह, पन्द्रह, सोलह चौदह, पन्द्रह, तेरह, चौदह, बारह, तेरह, ग्यारह, बारह दस, ग्यारह, नौ, दस, आठ, नौ, सात, आठ छ, सात, पाँच, छ, चौला, पँचोला, तेला, चौला, बेला, तेला, उपवास, बेला, और फिर पारणा कर के उपवास किया। यों, एक परिपाटी की। जिसमें, इकसठ दिन उन सतीजी ने पारणा-भोजन किया और पूरे-पूरे एक वर्ष, चार महीने तथा सत्रह दिन, अर्थात् चार सौ सत्तानवें दिन तपस्या की। ऐसी एक परिपाटी कर के, साथ ही साथ, दूसरी, तीसरी और चौथी परिपाटी भी की। जिसमें पूरे पूरे छ वर्ष, दो महीने और बारह दिन लगे। इस 'महानिष्क्रीडित-तप' की एक परिपाटी इस प्रकार है -

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६
महासिंह निष्क्रीडित तप																													१५
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६

इस प्रकार, कृष्णा आर्याजी ने महानिष्क्रीडित तपस्या विधि-पूर्वक कर के, फिर भी कई फुटकर तपस्याएँ कीं। अन्तिम समय में, सन्थारा कर के, काली आर्याजी के समान ये भी मोक्ष में पहुँची।

मूल'—एवं सुकण्हावि, णवरं सत्तसत्तामियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ एक्केक्कं पाणयस्स दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स दोदो पाणयस्स पडिगाहेइ, तच्चे सत्तए तिण्णि भोयणस्स तिण्णि पाणयस्स, चउत्थे चउ, पंचमे पंच, छट्ठे छ, सत्तमे सत्तए सत्त दत्तीओ भोयणस्स पडिग्गाहेइ सत्त पाणयस्स, एवं खलु सत्त-सत्तामियं भिक्खुपडिमं एगूणपण्णाए राइंदिएहिं एगेणय छन्नउएणं भिक्खासएणं

अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामिणं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरेत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिए मा पडिबंधं करेह।

भावार्थ –इसी तरह, राजा श्रेणिक की पत्नी और कौणिक की छोटी माता, सुकृष्णा नाम की रानी ने भी भगवान् महावीर का उपदेश श्रवण कर, श्रीचन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। तत्पश्चात्, सुकृष्णा आर्याजी ने 'सप्त-सप्तमिका' नामक भिक्षु-पडिमा-अङ्गीकार की वह इस प्रकार है –सात दिन तक नित्यप्रति एक बार गृहस्थों के द्वारा दिये हुए भोजन और पानी पर निर्वाह करना। अर्थात् एक वक्त में रोटी का पाव हिस्सा और एक दार की धारा में, जितना पानी दिया, तो उतना ही उन रोज खाते पीते हैं; किन्तु दुबारा माँग कर फिर नहीं लाते हैं। यही क्रम सात दिन तक रक्खा जाय। इसी को 'सप्त सप्तमिका-भिक्षु पडिमा' कहते हैं। इसी प्रकार, दूसरे सप्ताह में, दो बार का दिया हुआ भोजन और पानी ग्रहण किया। और फिर इसी प्रकार क्रमशः तीसरे सप्ताह में तीन बार, चौथे सप्ताह में चार बार, पाँचवें में पाँच बार, छठ में छ बार और सातवें सप्ताह में सात बार गृहस्थों द्वारा दिये गये भोजन और पानी को ग्रहण कर, उसी पर अपने प्राणों को

प्रति-पालना की। यों, उनपचास दिन-तक-इस-प्रकार-की-सप्त-भिक्षु पडिमा,-सूत्र-में जिस विधि से पाली जाती

सप्त-सप्तमिका

१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७

अष्ट अष्टमिका

१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८

है, उसी प्रकार 'सुकृष्णा' नामक आर्याजी ने इस तपस्या को समाप्त कर, वे श्रीमती चन्दनबालाजी आर्याजी के पास आईं। और उन्हें वन्दना कर के बोलीं-हे देवानुप्रिये! मेरी इच्छा है, कि आपकी आज्ञा होने के पश्चात्, 'अष्ट-अष्टमिका भिक्षु पडिमा' को अङ्गीकार कर के मही में विचरण मैं करूँ। उत्तर में श्री चन्दनबालाजी ने फर्माया, जिस प्रकार भी तुम्हें सुख हो, वैसा ही करो। उसमें विलम्ब को रत्ती-भर भी स्थान न दो।

मूल—तए ण सा सुकण्हा अज्जा अज्जचदणाए अब्भणुण्णायासमाणी अट्ठअट्ठमिय भिक्खु पडिम उवसपाज्जिताण विहरइ, पढमे अट्ठए एकेक भोयणस्सदत्ति पडिगाहेइ एकेकं पाणगस्स दत्तिं जाव अट्ठमे अट्ठए अट्ठट्ठभोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइ अट्ठपाणगस्स। एव खलु एय अट्ठट्ठमिय भिक्खुपडिम चउसट्ठीए राइदिएहिं दोहिय अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्त जाव आराहित्ता नवनवमिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ। पढमे नवए एक्केक्क भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइय एक्केक्क पाणयस्स जाव नवमे नवए नव दत्तिं भोयणस्स पडिग्गाहेइय नवनव पाणयस्स। एव खलु नवनवमिय भिक्खुपडिम एका सीईं राइंदिएहिं चउहि पचोत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहित्ता दस दसमि

प्रति-पालना की। यों, उनपचास दिन-तक-इस-प्रकार-की-सप्त-भिक्षु-पडिमा,-सूत्र-में जिस विधि से पाली जाती

सप्त–सप्तमिका

१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७

अष्ट अष्टमिका

१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	[illegible]
७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८

नित्यप्रति, एक एक दात पानी की और एक-एक दात भोजन की उन्होंने ली । ऐसे ही दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी, सातवीं आठवीं और नौवीं नवमिका में, नित्यप्रति क्रमश दो, तीन, चार पाँच छ , सात, आठ और नौ बार गृहस्थियों द्वारा बहराये गये आहार और पानी को ग्रहण कर उसी से अपना निर्वाह किया । इस ' नव-नवमिका-भिक्षु पडिमा ' में पूरे पूरे इक्यासी दिन लगे । और चार सौ पाँच बार का दिया हुआ आहार-पानी ग्रहण किया गया । इस ' नव नवमिका भिक्षुपडिमा ' को समाप्त कर लेने के पश्चात् उन्होंने ' दस-दशमिका भिक्षु पडिमा ' अङ्गीकार की । प्रथम दशमिका, अर्थात् प्रथम के दश दिनों में, नित्यप्रति एक बार का दिया हुआ भोजन और पानी ग्रहण किया । यों दूसरी, तीसरी चौथी पाँचवीं, छठी, सातवीं, आठवीं नौवीं और दशवीं दशमिका में नित्यप्रति, क्रमश एक से लगाकर दश बार गृहस्थियों द्वारा दिये गये आहार और पानी को ग्रहण कर, उपसर अपना जीवन निर्वाह किया । इस तपस्या को पूर्ण करने में कुल सौ दिन लगे । जिसमें भोजन और पानी की साढे पाँच सौ दात हुईं । इस तपस्या को पूर्ण कर लेने के पश्चात्, उपवास, बेले, तेले, मासखमण, अर्द्ध मास-खमण की भी तपश्चर्या इन्होंने की । जिस से श्री सुकृष्णा आर्याजी का शरीर बड़ा ही कृश हो गया । किन्तु फिर भी, अंतिम समय में, सन्थारा कर के, सम्पूर्ण कर्मों का नाश करती हुई, ये मोक्ष-धाम में पहुँचीं ।

उपरोक्त ' नव-नवमिका ' और ' दश-दशमिका ' भिक्षुपडिमा तप के यन्त्र निम्न प्रकार है -

य भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ। पढमे दसए एक्केक्क भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेइय एक्केक्क पाणयस्स जाव दसमे दसए दस दस भोयणस्स दत्तिं पडिग्गाहेइ दसदस पाणयस्स एव खलुएय दस दसमिय भिक्खुपडिम एक्केण राइदियसएण अद्ध छट्ठेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्त जाव आराहेइ २ त्ता बहूहिं चउत्थ जाव मासद्धमास विविहतवो कम्मेहिं अप्पाण भावमाणी विहरइ। तए ण सा सुकण्हा अज्जा तेण ओरालेण जाव सिद्धा।

भावार्थ —सप्त-सप्तमिका भिक्षुपडिमा कर लेने के बाद उन 'सुकृष्णा'-नामक आर्याजी ने-श्रीमती चन्दनबालाजी से, अष्टम-अष्टमिका भिक्षुपडिमा करने की आज्ञा प्राप्त की और तदनुसार तपस्या करना शुरू किया। प्रथम के अठवाड़ (आठ दिनों) में, नित्यप्रति एक दात पानी की और एक दात भोजन की अर्थात् गृहस्थियों द्वारा दिये हुए एक बार के आहार और पानी को ग्रहण कर, उसी पर निर्वाह किया। इसी प्रकार दूसरे, तीसरे, चौथे पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें अठवाड़े में नित्यप्रति क्रमशः दो, तीन, चार पाँच, छ, सात, और आठ बार गृहस्थियों द्वारा दिये गये आहार और पानी को ग्रहण कर उसी पर अपना जीवन धारण वे करती रहीं। यों सम्पूर्ण पडिमा में कुल चौंसठ दिन लगे। और दो सौ अठासी दात हुई। अर्थात् दो सौ अठासी बार आहार पानी लिया गया। इसी प्रकार नव-नवमिका भिक्षुपडिमा की। प्रथम नवमिका अर्थात् प्रत्येक नौ-नौ दिनों में

मूलः—एव महाकण्हावि णवरं खुड्डाग सव्वओभद्द पडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ त जहा—चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता छट्ठ करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दशम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २त्ता सव्व-कामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता अट्ठम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकाम-

नवम-नवामिका

१	१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	९	९	९

☞ दश दशामिका

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

मूलः—एव महाकरहावि एवर खुड्डाग सव्वओभद्द पडिम उवसपज्जित्ताण विहरइ त जहा—चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता छट्ठ करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दशम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २त्ता सव्व-कामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता अट्ठम करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकाम

गुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ२त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता । एव खलु एव खुड्डागसव्वओ भद्दस्स तवो कम्मस्स पढ़म परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्त जाव आराहेत्ता दोच्चाए परिवाडीए चउत्थ करेइ २ त्ता विगइवज्ज पारेइ विगइवज्ज पारेत्ता जहा रयणावली ए तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ पारणा तहेव । चउण्ह कालो सवच्छरो मासो दस य दिवसा, सेस तहेव जाव सिद्धा ।

गाथार्थ – इसी तरह, राजा श्रेणिक की पत्नी और कौणिक की छोटी माता महाकृष्णा रानी ने, भगवान् महावीर का उपदेश श्रवणकर श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। तत्पश्चात्, श्री चन्दनबालाजी का आज्ञा प्राप्त कर, 'क्षुद्रसर्वतोभद्र' नामक तपस्या की आराधना इन ने की। वह इस प्रकार है सर्व प्रथम, उपवास किया। पारणा कर के बेला किया। पारणा कर के तेला किया। यों, चोला, पँचोला, तेला, चोला, पँचोला,

उपवास बेला, पँचोला, उपवास, बेला, तेला चोला, बेला, तेला, चोला, पँचोला, उपवास, चोला, पँचोला, उपवास, बेला और तेला किया। इस प्रकार ' लघु सर्वतोभद्र ' नामक तप की एक परिपाटी–लड़ी– उन श्री महाकृष्णा आर्याजी ने पूरी की। जिसके करने में कुल पचहत्तर दिन की तपस्या और पच्चीस दिन पारणे के होते हैं। इस परिपाटी को समाप्त कर, साथ ही साथ, दूसरी परिपाटी भी इसी प्रकार की। किन्तु पारणे में दूध, दही, घी, तैल,

लघुसर्वतोभद्र तप

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

मिष्टान्न, खाना बिलकुल बन्द कर दिया। तीसरी परिपाटी में, पारणे के दिन, रूखी रोटी खाना प्रारम्भ किया। अर्थात्, घी, तेल के लेप-मात्र वाली सम्पूर्ण वस्तुओं का खाना ही बिलकुल बन्द कर दिया। और चौथी परिपाटी में पारणे के दिन आयम्बिल किये। जिस प्रकार 'रत्नावलि' तपस्या की चार परिपाटी शृङ्खला होती है, उसी प्रकार इस तपस्या की चारों परिपाटियों की सूत्रानुसार आराधना की। जिसमें पूरे तीन सौ दिन तपश्चर्या के और सौ दिन पारणे क होते हैं।

महाकृष्णा आर्याजी ने इस लघुसर्वतोभद्र तपस्या करने के पश्चात्, फिर भी अनेकों छोटी-बड़ी फुटकर तपस्याएँ कीं। अन्तिम समय में सन्थारा ल अपने सर्व कर्मों को नष्ट करते हुए, उन्होंने सदा के लिए जन्म-मरण से छुटकारा पाया।

मूल—एवं वीर कण्हा वि, णवरं महालयं सव्वतोभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तं जहा चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता छट्ठं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउद्दसं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता सोलसं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता

पढमालया दसम करेइ २त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकाम गुणिय पारेइ २ त्ता चउदस करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वितियालया सोलस करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ ता सव्व कामगुणिय पारेइ २त्ता दसम करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउदस करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तितिया लया। अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता मव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता चउत्थ करेइ

मिष्टान्न, खाना बिलकुल बन्द कर दिया। तीसरी परिपाटी में, पारणे के दिन, सूखी रोटी खाना प्रारम्भ किया। अर्थात्, घी, तेल के लेप-मात्र वाली सम्पूर्ण वस्तुओं का खाना ही बिलकुल बन्द कर दिया। और चौथी परिपाटी में पारणे के दिन आयम्बिल किये। जिस प्रकार 'रत्नावलि' तपस्या की चार परिपाटी शृङ्खला होती है, उसी प्रकार इस तपस्या की चारों परिपाटियों की सूत्रानुसार आराधना की। जिसमें पूरे तीन सौ दिन तपश्चर्या के और सौ दिन पारणे के होते हैं।

महाकृष्णा आर्याजी ने इस लघुसर्वतोभद्र तपस्या करने के पश्चात्, फिर भी अनेकों छोटी-बड़ी फुटकर तपस्याएँ कीं। अन्तिम समय में सन्थारा कर अपने सर्व कर्मों को नष्ट करते हुए, उन्होंने सदा के लिए जन्म-मरण से छुटकारा पाया।

मूल —एवं वीर कण्हा वि, णवरं महालयं सव्वतोभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तं जहा चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता छट्ठं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउद्दसं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता सोलसं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता

त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता छट्ठं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता सत्तमी लया। एक्केक्कलयाए अट्ठ मासा पंच य दिवसा चउण्ह दो वासा अट्ठ मासा वीस दिवसा। सेसं तहेव जाव सिद्धा।

भावार्थ -जम्बू ! अन्तगड-सूत्र के सातवें अध्याय में, वीरकृष्णा, जो कि श्रेणिक राजा की पत्नी और कोणिक की छोटी माता कही गई हैं उन्होंने भगवान् का उपदेश पाकर, श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। जिनका वर्णन है, कि उन वीरकृष्णा आर्याजी ने दीक्षा लेने के अनन्तर अपनी जननी समान श्रीमती गुराणीजी की आज्ञा लेकर 'महासर्वतोभद्र' नामक तपस्या करना प्रारम्भ की। सबसे पहले उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके तेला किया। यों चौला, पचौला छः, सात, चौला, पँचोला, छः, सात, उपवास बेला, तेला, सात, उपवास, बेला, तेला, चौला, पँचोला, छः, तेला, चोला, पँचोला, छः, सात, उपवास, बेला, छः सात, उपवास, बेला, तेला चौला, पँचोला बेला, तेला, चौला, पँचोला, छः, सात, उपवास, पँचोला, छः, सात, उपवास, बेला तेला, और, चौला, किया। इस प्रकार इस तप की यह एक परिपाटी हुई। इसे कर के, साथ ही साथ, दूसरी परिपाटी शुरू की। परन्तु इस बार पारणे में, दूध, दही, घी, आदि विगय

२ त्ता सव्वकागुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ२त्ता चउत्थीलया। चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता पचमीलया। छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता छठीलया। दुवालसम करेइ २त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २

त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता छट्ठ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठम करेइ२ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सतमी लया। एक्केकलयाए अट्ठ मासा पच य दिवसा चउरह दो वासा अट्ठ मासा वीस दिवसा। सेस तहेव जाव सिद्धा।

भावार्थ –जम्बू ! अन्तगढ-सूत्र के सातवें अध्याय में, वीरकृष्णा, जो कि श्रेणिक राजा की पत्नी और कोणिक का छोटी माता कही गई हैं, उन्होंने भगवान् का उपदेश पाकर, श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा धारण की। जिनका वर्णन है, कि उन वीरकृष्णा आर्याजी ने दीक्षा लेने के अनन्तर अपनी जननी समान श्रीमती गुराणीजी की आज्ञा लेकर 'महासर्वतोभद्र' नामक तपस्या करना प्रारम्भ की। सबसे पहले उपवास किया। पारणा करके बेला किया। पारणा करके तेला किया। यों चौला, पचौला छ, सात, चौला, पँचोला, छ, सात, उपवास, बेला, तेला, सात, उपवास, बेला, तेला, चौला, पँचोला, छ, तेला, चोला, पँचोला, छ, सात, उपवास, बेला, छ सात, उपवास, बेला, तेला चौला, पँचोला बेला, तेला, चौला, पँचोला, छ, सात, उपवास, पँचोला, छ, सात, उपवास, बेला तेला, और, चौला, किया। इस प्रकार इस तप का यह एक परिपाटी हुई। इसे कर के, साथ ही साथ दूसरी परिपाटी शुरू की। परन्तु इस बार पारणे में, दूध, दही, घी, आदि विगय

(स्निग्ध पदार्थ) खाना बन्द कर दिया। इसी तरह तीसरी परिपाटी भी की। किन्तु इस तपस्या के पारणे के दिन घी मिष्टान्न, आदि विगयों से लेपित मात्र वस्तुओं तक का परित्याग कर दिया। केवल लूका भोजन किया।

महासर्वतोभद्र तप

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

चौथी परिपाटी की तपस्या के पारणे के दिन तो लूके भोजन को भी पानी में भिगो कर खा लेने का नियम लिया। इस तप की एक परिपाटी करने में तपस्या के दिन एक सौ छानवें लगते हैं। और पारणे के उनपचास दिन होते हैं।

यों, कुल दो सौ पैंतालीस दिन इसमें पारणे लगते हैं। चारों ही परिपाटियों के करने में कुल दो वर्ष, आठ मास और बीस दिन पूरे-पूरे लगते हैं।

उन वीर कृष्णा आर्याजी ने इस 'महासर्वतोभद्र' नामक तपस्या को करने के पश्चात् फिर भी छुटकर तपस्या बहुत की। अन्तिम समय में सन्थारा कर के मुक्ति में पहुँची हैं।

मूल.—एवं रामकण्हावि, णवरं भद्दोत्तरं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ तं जहा—दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चोद्दसमं करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ २ त्ता सोलसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठारसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता बीसइयं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता सोलसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठारसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगु-णियं पारेइ २ त्ता वीसइमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ२ त्ता दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चोद्दसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता वीसइमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं

पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता दुवालसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चोद्दसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता सोलसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता । एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा,चउण्ह कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा,सेस तहेव जहा काली जाव सिद्धा ।

भावार्थ इसी प्रकार, राजा श्रेणिक की रानी और कोणिक की छोटी माता रामकृष्णादेवी भी भगवान महा-

वीर का उपदेश श्रवणकर, श्री चन्दनबालाजी के द्वारा दीक्षित हुई। इन नव दीक्षित श्री रामकृष्णा आर्याजी ने अपनी पूज्या गुराणीजी की आज्ञा प्राप्त कर, 'भद्रोत्तर' नामक तपस्या को नीचे लिखेऽनुसार करना प्रारम्भ किया -सब से प्रथम पँचोला किया। पारणा कर के छ किया। पारणा कर के सात किया। यों आठ, नौ, सात,

भद्रोत्तर तप

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

आठ, नौ पाँच छ, नौ पाँच, छ सात, आठ छ, सात, आठ, नौ, पाँच, आठ, नौ, पाँच छ, और सात, किये। इस प्रकार एक परिपाटी पूरी हुई। यों चार पूरी पूरी परिपाटियाँ उन्होंने कीं। दूसरी परिपाटी के पारणे के दिनों में, समस्त विगय वस्तुओं का सेवन बिलकुल ही छोड़ दिया। तीसरी परिपाटी में, विगय की लेपित मात्र वस्तुओं का त्याग किया। और चौथी परिपाटी के पारणों में आयम्बिल किये। एक बार की परिपाटी-शृङ्खला में

कुल एक सौ पिचहत्तर दिन तपस्या और केवल पचास दिन पारणे के होते हैं। यों, चारों ही में कुल दो वर्ष, दो मास और बीस दिन होते हैं।

रामकृष्णा आर्याजी के द्वारा, इस 'भद्रोत्तर' नामक तप को करने के पश्चात्, छुटकर और भी काफी मात्रा में यह तपश्चर्याएँ की गईं। अंतिम दिनों में सन्थारा कर के मुक्ति में वे पहुँचीं।

मूल —एवं पिउसेणकण्हा वि, णवरं मुक्तावली तवोकम्म उव संपज्जित्ताणं विहरइ,तंजहा- चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता। छट्ठं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता अट्ठमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दसमं करेइ २ त्ता सव्वकाम-गुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता दुवालसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चोद्दसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता सोलसमं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं पारेइ २ त्ता चउत्थं करेइ २ त्ता सव्वकामगुणियं

पारेइ २ त्ता अट्ठारसम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्व-कामगुणिय पारेइ २ त्ता वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता बावीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउवीसइम करेइ २ त्ता सव्कामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेता २ त्ता छव्वीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता अट्ठावीस करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता तीसइम करेई २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वत्तीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्व-कामगुणिय पारेइ २ त्ता चोत्तीसइम करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता सव्वकामगुणिय पारेइ २ त्ता वत्तीसइम करेइ २ त्ता। एव तहेव ओसारेइ जाव चउत्थ

करेइ चउत्थं करेइत्ता सव्वकामगुणियं पारेइ । एकाए कालो एकारस्समासापनरस य दिवसा चउण्हं तिण्हि वरीसा दस य मासा । सेसं तहेव जाव सिद्धा ।

भावार्थ –इसी प्रकार राजा श्रेणिक की रानी और कोणिक की छोटी माता, पितु सेन कृष्णा देवी ने भगवान् का उपदेश श्रवण कर श्रीमती चन्दनबालाजी आर्याजी के शरण में जाकर दीक्षा धारण की। इन पितुसेन कृष्णा आर्याजी ने अपनी गुरुणाजी की आज्ञा प्राप्त कर 'मुक्तावलि' नामक तपस्या नीचे के अनुसार की सर्व प्रथम उपवास किया। पारणा कर के बेला किया। पारणा कर के उपवास किया। पारणा कर के तेला किया। यों, एक-एक उपवास बीच बीच में करती हुई, इनकी संख्या को सोलह तक इन्होंने पहुँचाया। फिर इसी प्रकार बीच-बीच में उपवास करती हुई जिस प्रकार चढ़ी था, उसी प्रकार एक उपवास तक वे उतरीं। इस प्रकार एक परिपाटी हुई। यूँ काली रानी की तरह, चारों ही परिपाटियाँ-लड़ियाँ उन्होंने सम्पूर्ण कीं। इसकी एक परिपाटी में पूरे पूरे उनसाठ दिन पारणा के और अवशेष तपस्या के दिन यू कुल मिला कर ग्यारह महीने और पन्द्रह दिन होते हैं। चारों ही परिपाटियों के करने में कुल तीन वर्ष और दस महीने होते हैं। इस मुक्तावलि तपस्या का यन्त्र इस प्रकार है —

१	२	१	३	१	४	१	५	१	६	१	७	१	८	१	९	१	१०	१	१	१	१२	१	१३	१	१४	१	१५	१	
मुक्तावलि स्थापना																													१६
१	२	१	३	१	४	१	५	१	६	१	७	१	८	१	९	१	१०	१	११	१	१२	१	१३	१	१४	१	१५	१	

मूलः—एव महासेण कण्हा वि, णवर आयविलवड्ढमाण तवोकम्म उवसपज्जित्ताण विहरइ, तजहा—आयविल करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता वे आयविलाइ करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता तिण्णि आयविलाइ करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता चत्तारि आय-विलाइ करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता पच आयविलाइ करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता छ आयविलाइ करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ २ त्ता एकोत्तरियाए वड्ढीए आयविलाइ वड्ढति चउत्थतरियाइ जाव आयविलसय करेइ २ त्ता चउत्थ करेइ ।

भावार्थ—इसी तरह राजा श्रेणिक की रानी और कोणिक की छोटी माता, 'महासेन कृष्णा' नामक देवी ने

भी यथा समय, श्री भगवान् महावीर का धर्मोपदेश सुनकर, श्रीमती चन्दनबाला आर्याजी के पास दीक्षा अङ्गीकार की उन्हों ने अपनी पूजनीया गुरार्याजी की आज्ञा लेकर, 'आयम्बिल-वर्द्धमान' नामक तपस्या की। उसमें सर्व प्रथम, एक आयम्बिल किया। दूसरे दिन उपवास किया। फिर दो आयम्बिल किये। उपवास किया। तीन आयम्बिल किये। उपवास किया। चार आयम्बिल किये। उपवास किया। पांच आयम्बिल किये। उपवास किया। छः आयम्बिल किये। उपवास किया। यों, बीच-बीच में उपवास करते हुए, पूरे-पूरे एक-सौ आयम्बिल किये। और, उपवास किया। इस-तपस्या-का यन्त्र इस प्रकार है —

१	१	२	१	३	१	४	१	५	१	६	१	७	१	८	१	९	१	१०	१	११	१	१२	१	१३	१	१४	१	१५	१
१६	१	१७	१	१८	१	१९	१	२०	१	२१	१	२२	१	२३	१	२४	१	२५	१	२६	१	२७	१	२८	१	२९	१	३०	१
३१	१	३२	१	३३	१	३४	१	३५	१	३६	१	३७	१	३८	१	३९	१	४०	१	४१	१	४२	१	४३	१	४४	१	४५	१
४६	१	४७	१	४८	१	४९	१	५०	१	५१	१	५२	१	५३	१	५४	१	५५	१	५६	१	५७	१	५८	१	५९	१	६०	१
६१	१	६२	१	६३	१	६४	१	६५	१	६६	१	६७	१	६८	१	६९	१	७०	१	७१	१	७२	१	७३	१	७४	१	७५	१
७६	१	७७	१	७८	१	७९	१	८०	१	८१	१	८२	१	८३	१	८४	१	८५	१	८६	१	८७	१	८८	१	८९	१	९०	१
९१	१	९२	१	९३	१	९४	१	९५	१	९६	१	९७	१	९८	१	९९	१	१००	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मूलः—तएण सा महासेन कण्हा अज्जा आयम्बिलवद्धमाण तवो कम्म चोद्दसहिं वासेहिं तिहि य मासहिं वीसाहिय अहोरत्तेहिं अहासुत्त जाव सम्म काएणं फासेइ, जाव

आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थे हिं जाव भावेमाणी विहरइ। तएणं सा महासेन कण्हा अज्जा तेण ओरालेण जाव उवसोभेमाणी चिट्ठइ।

भावार्थ —उन महासेन कृष्णा आर्याजी ने 'आयम्बिल वर्द्धमान' तपस्या करने में पूरे-पूरे चौदह वर्ष, तीन मास और बीस दिन लगाये। जिस प्रकार सूत्रों में विधि-विधान इस तपस्या के लिए बतलाया गया है, उसी प्रकार इन आर्याजी ने सम्यक् प्रकार से इसका आराधन करके श्री चन्दनबालाजी के पास वे आई। और उन्हें वन्दना करके फिर भी छुटकर तपस्या में जुट पड़ीं। ऐसी तपस्या करने से इन महासेन कृष्णा आर्याजी का शरीर, रुधिर और मास से प्राय रहित, अर्थात् दुर्बल हो गया। पर तपस्या के प्रभाव से शरीर इनका तेजोमय और अनुपम कान्तिशाली बना रहा।

मूल —तएणं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्ता वरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव अज्ज चंदणं अज्जं आपुच्छई जाव संलेहणा, कालं अणव कंखमाणी विहरइ। तएणं सा महासेण कण्हा अज्जा, अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सा-

माइयाइ एक्कारस्स अंगाइ अहिज्जित्ता बहू पडि पुन्नाइ सत्तरस वासाइ परियाय पालइत्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव तमट्ठ आराहेइ चरिम उस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा । अट्ठ य वासा आदी एक्कोत्तरीयाए जाव सत्तरस । एसो खलु परिताओ सेणिय भज्जाण णायव्वो ।

भावार्थ —तत्पश्चात्, उन महासेन कृष्णा आर्याजी को एक दिन पिछली रात्रि में, खन्दक की तरह विचार उत्पन्न हुआ, कि जो भी मेरा शरीर इस तपस्या से ऐसा कृश हो गया है । तथापि कुछ और शक्ति मुझ में है । अत कल सूर्योदय होते ही, श्रीमती चन्दनबालाजी से पूछ कर मुझे सन्थारा कर लेना चाहिए । तदनुसार प्रात' काल होते ही उन्होंने अपनी धर्म-जननी गुराणीजी की आज्ञा प्राप्त कर सन्थारा ले लिया । अर्थात् 'यश के लिए मैं अधिक जीऊँ' या 'दुख के कारण मैं शीघ्र ही मरूँ' इन सम्पूर्ण प्रकार के सङ्कल्प-विकल्पों से रहित होकर, समाधिमार्ग में प्रसन्न चित्त से वे रहने लगीं । इन महासेन कृष्णा आर्याजी ने भी चन्दनबालाजी से, सामायिक से लगा कर ग्यारहों अङ्गों तक का सर्वाङ्ग ज्ञानाध्ययन कर लिया । लगातार के सतरह वर्षों तक चारित्र का पालन किया । अन्तिम समय में, पूरे एक मास का सन्थारा कर, अन्तिम श्वासोश्वास में अपने सम्पूर्ण घनघाती कर्मों को नष्ट कर, मुक्ति में वे पहुँचीं । काली आर्याजी ने आठ वर्ष चारित्र पाला । दूसरी सुकाली ने नौ वर्ष । यों क्रमशः

एक एक वर्ष तक महासेन कृष्णा ने पूरे-पूरे सतरह वर्षों तक चारित्र का पालन किया। ये दसों ही राजा श्रेणिक की रानियाँ थी। और, कोणिक की छोटी माताएँ।

मूल —एव खलु जबु ! समणे ण भगवया महावीरेण आइगरेण जाव सपत्तेण अट्ठमस्स अगस्स अतगडदसाण अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि। अतगडदसाण अगस्स एगो सुयखधो अट्ठवग्गा अट्ठ सु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जति, तत्थ पढम वितिय वग्गो दस दस उद्देसगा, तइयवग्गे तेरस उद्देसगा, चउत्थ पचमवग्गो दस दस उद्देसया छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा, सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा, अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा। सेस जहा नाया धम्म कहाण ॥

भावार्थ हे जम्बू! धर्म के प्रकट करने वाले, श्रमण भगवान महावीर जो मोक्ष में पधार गये, उन्होंने आठवें अङ्ग अन्तगड सूत्र' का यह भाव फर्माया है। उसे मैंने ज्यों का त्यों तुम्हारे सामने वर्णन कर दिया। इस अन्तगड में एक श्रुतस्कन्ध और आठ वर्ग हैं। और, जिन्हें केवल आठ ही दिनों में भगवान् ने फर्माया है। इस के प्रथम और दूसरे वर्गों में क्रमश दस-दस अध्याय हैं। तीसरे वर्ग में तेरह, और चौथे तथा पाँचवें वर्गों में फिर दस-दस अध्याय हैं। छठे वर्ग में सोलह अध्याय। सातवें वर्ग में तेरह और आठवें वर्ग में दस अध्याय हैं। शेष ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र के अनुसार जानना चाहिए।

श्री मदन्तकृद्दशांगसूत्र समाप्तम्